एकादश माला, खंड 13, अंक 2

मंगलवार, 22 अप्रैल, 1997
2 वैशाख, 1919 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

LIBRARY
No. 56
Date 24-12-97

चौथा सत्र

(भाग-तीन)

(ग्यारहवीं लोक सभा)

(खण्ड 13 में अंक 1 और 2 हैं)

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्यः पचास रुपये

लोक सभा वाद-विवाद
[हिन्दी संस्करण]

मंगलवार 22 अप्रैल, 1997/2 वैशाख, 1919 [शक]
का
शुद्धि-पत्र

कालम	पंक्ति	के स्थान पर	पढ़िए
11	26	जवानी	जबानी
35	नीचे से 9	"एक दूरदर्शन के साथ....	"दूरदर्शन के साथ एक..
45	14	श्री गीता मुखर्जी	श्रीमती गीता मुखर्जी
56	8	श्री सोहन बीर	श्री सोहनवीर सिंह
99	12	श्री ब्रह्मानन्द मंडल	श्री ब्रह्मानंद मंडल
102	7	श्री रमेश चेन्नट्टाला	श्री रमेश चेन्नितला

श्री एस. गोपालन
महासचिव
लोक सभा

श्री सुरेन्द्र मिश्र
अपर सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक
लोक सभा सचिवालय

श्री केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

श्रीमती वन्दना त्रिवेदी
सम्पादक

श्री पीयूष चन्द्र दत्त
सहायक सम्पादक

श्रीमती अरूणा वशिष्ठ
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।)

विषय-सूची

[एकादश माला, खंड 13, चौथा सत्र (भाग-तीन), 1997/1919 (शक)]

अंक 2, मंगलवार, 22 अप्रैल, 1997/2 वैशाख, 1919 (शक)

विषय	कालम
सभा की बैठकों के बारे में घोषणा	1,156
मंत्रियों का परिचय	1
सभा पटल पर रखे गए पत्र	2
लोक लेखा समिति	
आठवां, नौवां, दसवां, ग्यारहवां और बारहवां प्रतिवेदन—*प्रस्तुत*	2
याचिका समिति	
पहली से छठी बैठकों के कार्यवाही सारांश—*सभा पटल पर रखे गए*	3
संचार संबंधी स्थायी समिति	
दसवां, ग्यारहवां और बारहवां प्रतिवेदन—*प्रस्तुत*	3
रक्षा संबंधी स्थायी समिति	
तीसरा और चौथा प्रतिवेदन—*प्रस्तुत*	3
ऊर्जा संबंधी स्थायी समिति	
दसवां, ग्यारहवां, बारहवां और तेरहवां प्रतिवेदन—*प्रस्तुत*	4
विदेशी मामलों संबंधी स्थायी समिति	
दूसरा, तीसरा और चौथा प्रतिवेदन—*प्रस्तुत*	4
रेल संबंधी स्थायी समिति	
छठा प्रतिवेदन और कार्यवाही सारांश—*प्रस्तुत*	5
शहरी और ग्रामीण विकास संबंधी स्थायी समिति	
आठवां, नौवां, दसवां, ग्यारहवां और बारहवां प्रतिवेदन तथा कार्यवाही सारांश—*प्रस्तुत*	5
मानव संसाधन विकास संबंधी स्थायी समिति	
छप्पनवां, सतावनवां, अठावनवां, उनसठवां, साठवां, इक्सठवां और बासठवां प्रतिवेदन—*सभा पटल पर रखे गए*	5—6
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और वन संबंधी स्थायी समिति	
तैतीलीसवां, चवालीसवां और पैतालीसवां प्रतिवेदन—*प्रस्तुत*	6
मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव	7—155
श्री इन्द्र कुमार गुजराल	7—14, 148—155
श्रीमती सुषमा स्वराज	15—25
श्री शरद पवार	25—37
श्री सोमनाथ चटर्जी	37—48
श्री मुलायम सिंह यादव	48—59

विषय	कालम
श्री मधुकर सरपोतदार	60—67
श्री जी॰जी॰ स्वैल	68
कर्नल राव राम सिंह	69—75
श्री जी॰ वेंकट स्वामी	75—84
श्री पी॰ चिदम्बरम	84—87
श्री सुख लाल कुशवाहा	87—90
प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा	90—97
श्री ब्रह्मानन्द मंडल	97—102
श्री चन्द्रशेखर	104—108
श्री चित्त बसु	108—111
श्री प्रमथेस मुखर्जी	111—113
डा॰ अरविन्द शर्मा	114—115
श्री सुरेन्द सिंह	116—118
श्री ई॰ अहमद	118—120
श्री पी॰सी॰ थामस	120—122
श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी	122—124
श्री शिबु सोरेन	124—126
श्री संतोष मोहन देव	126—135
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	135—148

लोक सभा

मंगलवार, 22 अप्रैल, 1997/2 वैशाख, 1919 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11 बजे समवेत हुई

[अध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए*]

[अनुवाद]

सभा की बैठकों के बारे में घोषणा

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, कल कार्य मंत्रणा समिति और राजनैतिक दलों के नेताओं की एक बैठक हुई थी। उसमें यह निर्णय लिया गया कि विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा तत्काल शुरू की जायेगी और प्रधान मंत्री, यदि पहले नहीं तो सायं पांच बजे चर्चा का उत्तर देंगे ताकि हम 6 बजे तक कार्यवाही सम्पन्न कर सकें।

दूसरी बात यह है कि आज हम आवश्यक सरकारी कार्य अर्थात् वित्तीय कार्य निपटाने के लिए सभा को 30 अप्रैल, 1997 को पुनः समवेत होने के लिए स्थगित करेंगे और सभा की बैठकें 16 मई, 1997 तक जारी रहेंगी। हमने कल की बैठक में ये दो मुख्य निर्णय लिए थे।

क्या प्रधान मंत्री कुछ और नए मंत्रियों, जिनका परिचय कल नहीं कराया जा सका था—का परिचय करवाना चाहेंगे?

पूर्वाह्न 11.03 बजे

मंत्रियों का परिचय

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : अध्यक्ष महोदय, आपको स्मरण होगा कि कल मैंने अपने कुछ साथियों का परिचय करवाया था, दुर्भाग्यवश कुछ साथी उपस्थित नहीं थे...*(व्यवधान)*

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी (हावड़ा) : श्री पी॰ चिदम्बरम का क्या हुआ?...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : इससे आने वाली घटनाओं का पता चलता है...*(व्यवधान)*

महोदय, मैं अपने साथियों का परिचय कराता हूं।

मंत्रिमंडल स्तर के मंत्री

श्री जनेश्वर मिश्र

राज्य मंत्री

श्री सलीम इकबाल शेरवानी

पूर्वाह्न 11.04 बजे

[अनुवाद]

सभा पटल पर रखे गए पत्र

मंत्रि-परिषद का त्याग पत्र

महासचिव : मैं निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं :—

(1) प्रधान मंत्री, श्री एच॰डी॰ देवेगौड़ा का राष्ट्रपति को दिनांक 11 अप्रैल, 1997 का पत्र जिसके द्वारा उन्होंने अपना और अपनी मंत्रिपरिषद् का त्यागपत्र दिया है।

(2) राष्ट्रपति का प्रधान मंत्री, श्री एच॰डी॰ देवेगौड़ा को दिनांक 12 अप्रैल, 1997 का पत्र जिसके द्वारा उन्होंने प्रधान मंत्री और उनके सहयोगियों का मंत्रिपरिषद् से त्यागपत्र स्वीकार कर लिया है और वैकल्पिक व्यवस्था किये जाने तक उनसे अपने पद पर बने रहने का अनुरोध किया है।

पूर्वाह्न 11.04 ½ बजे

लोक लेखा समिति

आठवां, नौवां, दसवां, ग्यारहवां और बारहवां प्रतिवेदन

[अनुवाद]

डा॰ टी॰ सुब्बारामी रेड्डी (विशाखापतनम) : मैं लोक लेखा समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं :—

(1) मोडवेट योजना—धोखाधड़ी से ऋणों का लाभ उठाने के संबंध में लोक लेखा समिति (10वीं लोक सभा) के 104 वें प्रतिवेदन पर की-गई-कार्यवाही संबंधी आठवां प्रतिवेदन।

(2) लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों पर अनुवर्ती कार्यवाही के संबंध में लोक लेखा समिति (10वीं लोक सभा) के 105 वें प्रतिवेदन पर की-गई-कार्यवाही संबंधी नौवां प्रतिवेदन।

(3) विमान का अविवेकपूर्ण ढंग से पट्टे पर दिए जाने के संबंध में लोक लेखा समिति (10वीं लोक सभा) के 109वें प्रतिवेदन पर की-गई-कार्यवाही संबंधी दसवां प्रतिवेदन।

(4) संघ सरकार विनियोग लेखे (1994-95)—डाक सेवाओं के संबंध में ग्याहरवां प्रतिवेदन और समिति की तत्संबंधी बैठकों का कार्यवाही सारांश।

(5) निम्न वर्गीकरण, जिसके कारण 352.30 लाख रुपये का घाटा हुआ है, संबंधी बारहवां प्रतिवेदन और समिति की तत्संबंधी बैठकों के कार्यवाही सारांश।

पूर्वाह्न 11.04 3/4 बजे

[अनुवाद]

याचिका समिति

पहली से छठी बैठकों का कार्यवाही सारांश

श्री दिलीप संघानी (अमरेली) : मैं याचिका समिति की पहली से छठी बैठकों के कार्यवाही सारांश (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं।

पूर्वाह्न 11.05 बजे

[हिन्दी]

संचार संबंधी स्थायी समिति

दसवां, ग्यारहवां और बारहवां प्रतिवेदन

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : महोदय, मैं संचार संबंधी स्थायी समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं :—

(1) डाक विभाग से संबंधित अनुदानों की मांगों (1997-98) पर दसवां प्रतिवेदन।

(2) दूरसंचार विभाग से संबंधित अनुदानों की मांगों (1997-98) पर ग्यारहवां प्रतिवेदन।

(3) सूचना और प्रसारण मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगों (1997-98) पर बारहवां प्रतिवेदन।

पूर्वाह्न 11.05 1/4 बजे

[अनुवाद]

रक्षा संबंधी स्थायी समिति

तीसरा और चौथा प्रतिवेदन

श्री बी॰के॰ गढ़वी (बनासकांठा) : महोदय, मैं रक्षा संबंधी स्थायी समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं :—

(1) तट रक्षक (संशोधन) विधेयक, 1996 संबंधी तीसरा प्रतिवेदन।

(2) वर्ष 1996-97 के लिए रक्षा मंत्रालय की अनुदानों की मांगों संबंधी पहले प्रतिवेदन (ग्यारहवीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की गई कार्यवाही संबंधी चौथा प्रतिवेदन।

पूर्वाह्न 11.05 1/2 बजे

[अनुवाद]

ऊर्जा संबंधी स्थायी समिति

दसवां, ग्यारहवां, बारहवां और तेरहवां प्रतिवेदन

श्री जगमोहन (नई दिल्ली) : महोदय, मैं ऊर्जा संबंधी समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं :—

(1) परमाणु ऊर्जा विभाग की अनुदानों की मांगों (1996-97) के संबंध में पहले प्रतिवेदन (ग्यारहवीं लोक सभा) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की गई कार्यवाही के बारे में दसवां प्रतिवेदन।

(2) अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय की अनुदानों की मांगों (1996-97) के संबंध में तीसरे प्रतिवेदन (ग्यारहवीं लोक सभा) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्यवाही के बारे में ग्यारहवां प्रतिवेदन।

(3) विद्युत मंत्रालय की अनुदानों की मांगों (1996-97) के संबंध में चौथे प्रतिवेदन (ग्यारहवीं लोक सभा) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्यवाही के बारे में बारहवां प्रतिवेदन।

(4) कोयला मंत्रालय की अनुदानों की मांगों (1996-97) के संबंध में दूसरे प्रतिवेदन (ग्यारहवीं लोक सभा) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्यवाही के बारे में तेरहवां प्रतिवेदन।

पूर्वाह्न 11.06 बजे

[हिन्दी]

विदेशी मामलों संबंधी स्थायी समिति

दूसरा, तीसरा और चौथा प्रतिवेदन

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : महोदय, मैं विदेशी मामलों संबंधी स्थायी समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं :—

(1) समिति के भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद संबंधी नौवें प्रतिवेदन (दसवीं लोक सभा) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर की-गई-कार्यवाही संबंधी दूसरा प्रतिवेदन।

(2) विदेश मंत्रालय की वर्ष 1996-97 की अनुदानों की मांगों संबंधी समिति के पहले प्रतिवेदन (ग्यारहवीं लोक सभा) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर की-गई-कार्यवाही संबंधी तीसरा प्रतिवेदन।

(3) वर्ष 1997-98 के लिए विदेश मंत्रालय की अनुदानों की मांगों संबंधी चौथा प्रतिवेदन।

पूर्वाह्न 11.06 1/2

[अनुवाद]

रेल संबंधी स्थायी समिति

छठा प्रतिवेदन तथा कार्यवाही सारांश

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : महोदय, मैं रेल संबंधी स्थायी समिति (1996-97) की रेल मंत्रालय-अनुदानों की मांगें, 1997-98 संबंधी छठा प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) और समिति की तत्संबंधी बैठकों का कार्यवाही सारांश प्रस्तुत करता हूं।

पूर्वाह्न 11.06 3/4 बजे

[अनुवाद]

शहरी और ग्रामीण विकास संबंधी स्थायी समिति

आठवां, नौवां, दसवां, ग्यारहवां और बारहवां प्रतिवेदन तथा कार्यवाही सारांश

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : महोदय, मैं शहरी और ग्रामीण विकास संबंधी स्थायी समिति के वर्ष 1997-98 के लिए अनुदानों की मांगों संबंधी निम्नलिखित प्रतिवेदन तथा कार्यवाही-सारांश (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं :—

(एक) ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मंत्रालय (ग्रामीण विकास विभाग) संबंधी आठवां प्रतिवेदन।

(दो) ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मंत्रालय (बंजर भूमि विकास विभाग) संबंधी नौवां प्रतिवेदन।

(तीन) ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मंत्रालय (ग्रामीण रोजगार तथा गरीबी उन्मूलन विभाग) संबंधी दसवां प्रतिवेदन।

(चार) शहरी कार्य तथा रोजगार मंत्रालय (शहरी विकास विभाग) संबंधी ग्यारहवां प्रतिवेदन।

(पांच) शहरी कार्य तथा रोजगार मंत्रालय (शहरी रोजगार तथा गरीबी उन्मूलन विभाग) संबंधी बारहवां प्रतिवेदन।

पूर्वाह्न 11.07 बजे

[अनुवाद]

मानव संसाधन विकास संबंधी स्थायी समिति

छप्पनवां, सतावनवां, अठावनवां, उनसठवां, साठवां, इकसठवां और बासठवां प्रतिवेदन

श्री सरताज सिंह (होशंगाबाद) : महोदय, मैं मानव संसाधन विकास संबंधी स्थायी समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं :—

(1) शिक्षा विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) की वर्ष 1997-98 की अनुदानों की मांगों के संबंध में छप्पनवां प्रतिवेदन;

(2) परिवार कल्याण विभाग (स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय) की वर्ष 1997-98 की अनुदानों की मांगों के संबंध में सतावनवां प्रतिवेदन;

(3) संस्कृति विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) की वर्ष 1997-98 की अनुदानों की मांगों के संबंध में अठावनवां प्रतिवेदन;

(4) महिला तथा बाल विकास विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) की वर्ष 1997-98 की अनुदानों की मांगों के संबंध में उनसठवां प्रतिवेदन;

(5) स्वास्थ्य विभाग (स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय) की वर्ष 1997-98 की अनुदानों की मांगों के संबंध में साठवां प्रतिवेदन;

(6) भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी विभाग (स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय) की वर्ष 1997-98 की अनुदानों की मांगों के संबंध में इकसठवां प्रतिवेदन;

(7) युवा मामलों और खेल विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) की वर्ष 1997-98 की अनुदानों की मांगों के संबंध में बासठवां प्रतिवेदन।

पूर्वाह्न 11.07 1/2 बजे

[अनुवाद]

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और वन संबंधी स्थायी समिति

तैंतालीसवां, चवालीसवां और पैंतालीसवां प्रतिवेदन

प्रो॰ जितेन्द्र नाथ दास (जलपाईगुड़ी) : महोदय, मैं विभागों से सम्बद्ध विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और वन संबंधी संसदीय स्थायी समिति की अनुदानों की मांगों (1996-97) संबंधी क्रमशः चौंतीसवें, बत्तीसवें और पैंतीसवें प्रतिवेदन पर जैव-प्रौद्यागिकी, इलैक्ट्रानिकी और महासागर विभाग विभागों द्वारा की गई कार्यवाही के बारे में समिति का तैंतालीसवां, चवालीसवां और पैंतालीसवां प्रतिवेदन (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं।

पूर्वाह्न 11.08 बजे

मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं प्रस्ताव करता हूं :—

"कि यह सभा मंत्रि परिषद में विश्वास व्यक्त करती है।"

[हिन्दी]

अध्यक्ष जी, जब मैं सदन के सामने यह बात रख रहा हूं तो मुझे इस बात का पूरा अहसास है कि ऐसे मौके पर जब आज सरकार शुरू हो रही है, उस वक्त मैं आने वाले दिनों की कुछ बातें करूं तो शायद अच्छा भी लगता है और शायद वह काबिले सराही भी हो। लेकिन दरअसल हिन्दुस्तान में हम जब भी पॉलिसियों और आने वाले दिनों की बातें करते हैं तो हमारा पीछे मुड़कर देखना जरूरी भी हो जाता है और आसान भी। और खासकर इस पचासवें साल में जब हिन्दुस्तान आजादी का पचासवां साल मना रहा है, न जाने सदन में मेरे जैसे कितने लोग बैठे हैं, चन्द्रशेखर जी सामने नजर आ रहे हैं और कुछ ऐसे भाई होंगे, जिन्होंने हिन्दुस्तान में आजादी के आने की जंग में हिस्सा लिया था। वह एक अजीब समां था।

कल ही मैं गांधी स्मृति में गया था, जब गांधी जी के कुछ कागज बोम्मई जी ने वहां से लाने का इन्तजाम किया था, जो पेपर्स आज देश को दिये गये हैं। गांधी जी की बात करते-करते मुझ अपनी जिंदगी के कुछ बाब नजर आने शुरू हुए। मैंने उस वक्त बात की थी और शायद दोहरा भी दूं कि पहली दफा मैंने गांधी जी के दर्शन 11 साल की उम्र में किये थे। लाहौर में कांग्रेस का सैशन हो रहा था, गांधी जी वहां पर आये थे और बतौर बच्चे के मैंने उनकी बात सुनी थी, उस वक्त यह कहते हुए कि हिन्दुस्तान को आजादी अब मिल के रहेगी। वह एक ऐसा मौका था, जिसने मेरी सोच पर एक मोहर लगाई और बात मैंने गांधी जी के मुताल्लिक कल और कही थी। गांधी जी ने जब डांडी मार्च शुरू होने की बात की, तो मेरे अपने खानदान में मेरे माता-पिता दो लोग उसके साथ जुड़े हुए थे। जिस दिन सत्याग्रह करना था, मेरे पिताजी से उससे पहली शाम कुछ दोस्त मिलने आये थे, वे ऐसे मित्र थे, क्योंकि मेरे पिता वकील थे, उनके साथ उनका रहना, बैठना, उठना था और मुझे एक बात हमेशा मेरे कानों में गूंजती है। उनके एक मित्र ने उनसे कहा था कि आप क्या सोचते हैं, आप तो पढ़े-लिखे आदमी हैं, वह बूढ़ा तो पागल हो गया है, उसका ख्याल है कि मुट्ठी भर नमक बनाने से यह बड़ी सरकार चली जायेगी। वे बातें मेरे कानों में आती हैं, उस मुठ्ठी भर नमक ने हिन्दुस्तान की तवारीख को बदल दिया था, क्योंकि उस मुठ्ठी भर नमक ने सिर्फ नमक नहीं बनाया था, उसने हमारी परम्पराओं को ऊपर एक नया मोड़ दिया था। उसने हम लोगों से देश वालों से एक वायदा लिया था कि वे लोग उस धर्म पर कायम रहेंगे, जिस धर्म का नाम गांधी जी ने सत्याग्रह रखा था, उस धर्म पर वे कायम रहेंगे जिस धर्म का नाम गांधी जी ने नॉन वायलेंस रखा था, उस धर्म के ऊपर कायम रहेंगे, जो मित्रता की बात थी।

कुछ अखबारों ने मेरे मुताल्लिक पिछले दिनों लिखा कि मुझे लाहौर का नोस्टेल्जिया हैं। जी हां, है, क्योंकि मेरा पहला नोस्टेल्जिया वह है, जो मैंने कांग्रेस का सैशन देखा था और जब कभी मैं लाहौर जाता हूं तो तीन जगह मुझे बहुत याद आती हैं। एक वहां की सैण्ट्रल जेल थी, जहां मेरे पिता जेल में थे, एक वहां की महिलाओं की जेल थी, जहां मेरी मां कैद थीं और एक बच्चों की जेल थी, जिसमें मुझे रखा गया था। उन तीन जगहों पर जब मैं जाता हूं तो फिर उन तमाम परम्पराओं को याद करता हूं और सोचता हूं कि अब जो वायदे हमने किये थे, हम कितने उनको पूर्ण कर चुके हैं, कितने नहीं कर पाये हैं।

जवाहर लाल जी ने इसी सदन में, इसी जगह शायद बैठकर एक बहुत बड़ी बात हमारे सामने कही थी, जिसका नाम उन्होंने ट्रिस्ट विथ डैस्टिनी दिया था। अब जवाहर लाल जी की बात करना छोटा मुंह बड़ी बात है। अब यह तो मैं कह सकता हूं कि जवाहर लाल जी ने जो वायदे किये और जिसके ऊपर वे कायम रहे, उसी से हमारी पालिसियां बनी हैं और मैं अगर फिर छोटा मुंह बड़ी बात कहूं, तो पालिसियां जो यह सरकार बनायेगी, जब तक आप इसको रखेंगे, उसी से चलेगी, जो ट्रिस्ट विथ डैस्टिनी जवाहर लाल जी ने की थी। वे वायदे देश के वायदे हैं, दरअसल वे वायदे कांग्रेस के वायदे नहीं हैं, वे वायदे किसी एक परम्परा के, किसी एक खास सम्प्रदाय के नहीं हैं, उसी वायदे में अटल जी भी शामिल हैं, उसी वायदे में जसवन्त सिंह जी भी शामिल हैं, चन्द्रशेखर जी भी शामिल हैं और गिनता जाऊं, कितने नाम गिनवाऊं कि मैं आज शाम तक गिनता रह जाऊं, शायद उसको पूरा न कर पाऊं।

आज एक ही बात मैं आपसे कहने के लिए खड़ा हुआ हूं, जब मैं आपसे एहतमाद का वोट मांगता हूं तो वोट इस बात के लिए मांगता हूं, उस वायदे को पूरा करने के लिए और गवाही देता हूं, अपने तमाम पास्ट की और गवाही इस बात की देता हूं कि उन परम्पराओं में, जिसमें सैकुलरिज्म की जड़ भरी हुई थी।

एक बात मुझे और याद आई। कांग्रेस का सैशन हो रहा था, मेरे पिता चूंकि कांग्रेस में थे, मुझे भी साथ ले गये, मैं छोटा बच्चा था तो वहां कांग्रेस ने पहली दफा रेजोल्यूशन पास किया था कि यह देश डाइवर्सिटीज का देश है, इसकी यूनिटी ऑफ डाइवर्सिटी रहेगी। इस देश में धर्म अलग-अलग हैं, भाषाएं अलग-अलग हैं, कपड़े पहनने के ढंग अलग-अलग हैं, लेकिन फिर भी हम एक हैं। उस एकता को कायम रखने का जो वायदा कांग्रेस सैशन ने उस वक्त किया था और कांग्रेस उस जमाने की पार्लियामेंटरी पार्टी नहीं थी,

कांग्रेस तो एक प्लेटफार्म था, एक मूमैंट थी, एक तहरीक थी जो देश को आजादी की तरफ ले जा रही थी। वे वादे आज भी कायम हैं। उसका नाम आगे चलकर हमने सेक्युलरिज्म का दे दिया, परिवर्तन का दे दिया। यह कहना शुरू किया कि देशवासी जो भी हैं, चाहे किसी भी धर्म के मानने वाले हों, चाहे किसी जगह के रहने वाले हों, चाहे कोई भाषा बोलते हों, किसी भी धर्म के पीछे जाते हों, हम सब में हम

अलग भी हैं और एक भी हैं। इस एकता के नाम पर मैं दूसरा वादा आपसे करता हूं। वह वादा यह है कि धर्मनिरपेक्षता की जितनी भी परम्पराएं हैं, उनको यह सरकार कायम करने की कोशिश करेगी। लेकिन एक बात ध्यान रखिए, सेक्युलरिज्म रिवाइव्लिज्म से खड़ा नहीं होता। पीछे की तरफ मुड़कर देखेंगे तो हमारी जड़ें मजबूत हैं, हमारी संस्कृति अपनी है और उस संस्कृति पर हमें नाज़ भी है, फख्र भी है, लेकिन उसके साथ-साथ आगे भी हम देखते हैं। यही बात जवाहर लाल जी अक्सर कहा करते थे, वह नाम पहले है साइंटिफिक टैम्पर का, कि हम किसी तरह साइंटिफिकली सोचें। जब कोई बिजली का बल्ब जलता नजर आए तो उसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। बच्चे को समझाना चाहिए कि बिजली जलती कैसे है। इसलिए उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसीको आज सांइटिफिक टैम्पर कहते हैं। आज से बहुत साल पहले, गांधी जी से भी पहले इस देश में बुद्ध आए थे। बुद्ध जी ने एक बात कही थी, उसको मैं हमेशा याद रखता हूं।

[अनुवाद]

> "मुझ पर विश्वास न करें क्योंकि मैं ऐसा कहता हूं। इसलिए विश्वास न करें क्योंकि अमुक-अमुक किताब में ऐसा लिखा है। हमेशा प्रश्न करें।"

जिज्ञासु मस्तिष्क ही 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' कहलाता हैं।

[हिन्दी]

और उसकी तरफ मेरा आपसे तीसरा वादा है कि देश को साइंटिफिक टैम्पर की तरफ ले जाना है।

मेरा एक वादा आपसे और है, वह यह है कि यह देश गरीबों का है, कुचले हुए लोगों का है, जिनको सदियों से इन्साफ नहीं मिला। जिनको अछूत होने का कसूर माना गया है। जिनको हाथ लगाना तो एक तरफ, जिनके साए को भी कभी देख लें तो समझते थे कि धर्म भ्रष्ट हो गया। उसको दूर करने की हम पिछले पचास साल से कोशिश कर रहे हैं, कामयाबी मिली है, लेकिन उतनी नहीं मिली। छुआछूत देश से खत्म नहीं हुआ। कोई यह कहे कि आज अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को अपना हक मिल गया, यह कहना सच नहीं होगा। इसलिए मेरी सरकार की एक कोशिश यह भी होगी कि उन पिछड़े हुए लोगों को जिनको सदियों से इन्साफ नहीं मिला, चाहे उसका नाम सोशल जस्टिस रख लीजिए या सोशलिज्म रख लीजिए, कुछ भी नाम रख लीजिए, एक बात जरूर है और वह यह है कि हिन्दुस्तान आगे नहीं बढ़ेगा जब तक देश में रहने वाले तमाम लोग किसी भी जाति के हों, किसी भी धर्म के हों, किसी इतिहास के हों, हम एक खड़े होंगे, तब देश आगे बढ़ेगा, वरना नहीं बढ़ेगा।

एक बात और ध्यान रखिए कि इस देश में एक और परम्परा हम लोगों ने डाली है। वह यह कि हम लोग सोचते हैं किसी को उसका हक मिल जाए तो हम उस पर दया कर रहे हैं। किसी के ऊपर दया नहीं की जा सकती। यह देश सबका सांझा है। यह हाउस इस लोकतांत्रिक देश की नुमाइंदगी करता है, यह हाउस उन परम्पराओं की नुमाइंदगी करता है जिनको हिन्दुस्तान आगे बढ़ाना चाहता है और बढ़ाने की कोशिश में लगा रहेगा, और उस कोशिश में मैं थोड़ा सा दान दे पाऊं, मेरी उम्र का यह जो हिस्सा है उसमें उसी वादे को पूरा करना चाहता हूं। इसलिए देश को आगे बढ़ाने के लिए एक वादा और करना चाहता हूं वह यह है कि इस देश में हम लोगों ने नई किस्म की परम्पराएं डाली हैं। हम लोग आपस में मिलकर जहां बुनियादी बातें होती हैं, उनमें नेशनल कंसेंसस करते हैं। चाहे विदेश नीति की बात हो, उसमें भी हम नेशनल कंसेंसस की बात करते हैं, हमें इकोनॉमिक पालिसी में भी इसके लिए कोशिश करनी चाहिए।

अध्यक्ष जी, डेमोक्रेसी बुनियादी तौर पर इस चीज का नाम नहीं है कि हम हर चीज में नफा देखें। डेमोक्रेसी इस चीज का नाम है कि अक्सर चीजों में हमारी एक राय है। किसी न किसी चीज पर हमारी एक राय बन सकती है, बिगड़ सकती है। लेकिन एक बात को ध्यान में रखें, इस मुल्क में मेरे भाई चाहे इस तरफ बैठे हों, चाहे उस तरफ बैठे हों, हम एक दूसरे के दुश्मन नहीं हैं। हम एक दूसरे की राय से इख्तिलाफ रख सकते हैं, लेकिन एक दूसरे की मुखालफत नहीं करते हैं। हम लोगों में वही रिश्ता बना रहे, यही तरीका है लोकतंत्र को चलाने का। मेरी तरफ से यही कोशिश रहेगी कि यह परम्परा कायम रखी जाए। यह परम्परा अगर कायम रहेगी तो देश आगे बढ़ पायेगा। आज देश बढ़ते-बढ़ते कोलीशन के युग में चला गया है। मेरी पीछे बैठे हुए मेरे दोस्त, मेरे कोलीशन में मेरे साथ हैं। आज हर जगह कोलीशन है। हम उस तरफ देखते हैं अटल जी की सरकारों में भी कोलीशन नजर आता है। इस तरफ देखते हैं तो इस तरफ भी कोलीशन नजर आता है।

मिलीजुली सरकार बनाना आसान है लेकिन मिलीजुली सरकार के कल्चर को सीखने में टाइम लगता है। आज जब सरकारें बनती हैं और बिगड़ती हैं तो मैं उसे पौजिटिव नजर से देखता हूं और मेरी पौजिटिव नजर यह है कि आखिरकार हम लोगों ने आपस में कोलिएशन सरकार बनाने के पोलिटिकली तो फैसले कर लिए हैं लेकिन एक दूसरे के साथ व्यवहार कैसा हो, वादे किए जाएं तो निभाए जाएं, किस तरह से हम लोग एक दूसरे के साथ बैठें और कोई ऐसा सलूक न करें कि बाद में फिर अफसोस हो। कई दफा मायूसियां भी हो रही हैं। हमें भी हो रही हैं, आपको भी हो रही हैं और सबको हो रही हैं। लेकिन इस मायूसी से मायूस होने का काम नहीं है। इन मायूसियों से भी हमें रास्ता निकालना है।

हमारे सामने कई ऐसी समस्याएं हैं जिनके ऊपर चाहे इधर बैठे हुए लोग हों या उधर बैठे हुए लोग हों, यदि एक तरह से आवाज नहीं उठाएंगे तो बात नहीं बनेगी। मेरे भाई सोज जी बैठे हुए हैं, कश्मीर की नुमाइंदगी करते हैं। आज कश्मीर ने एक नया मोड़ ले लिया है। वहां इलेक्शन हो चुके हैं, सरकार बन चुकी है और आज लोगों की नुमाइंदगी कर रहे हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि दुख-दर्द खत्म हो गया है। दुख-दर्द अभी भी वहां है। इसलिए उसमें भी मैं, चाहे इस तरफ बैठे हुए भाई लोग हैं या उस तरफ बैठे हुए भाई लोग हैं और जब भाई कहता हूं तो बहनें भी उसमें शामिल हैं।

मैं जब सुषमा जी का बात कर रहा हूं तो मैं महिलाओं की बात करना चाहता हूं। इस देश में महिलाओं को उनका हक नहीं मिला है।

[श्री इन्द्र कुमार गुजराल]

यह असलियत की बात है। हम लोग चाहे कहते रहें कि हमारे धर्म में यह लिखा है, हमारे धर्म में वह लिखा है लेकिन घर, समाज और राजनीति में महिलाओं को उनका हक नहीं मिला है। मेरी कोशिश यह होगी कि महिलाओं को उनका हक दिया जाए और उनको उनका हक मिलना चाहिए। यही बात गांधी जी ने कई दफा कही थी। सन् 1937 में जब पहली दफा सरकारें बनी थीं।...*(व्यवधान)* आप बात क्यों कर रहे हैं?...*(व्यवधान)*

कुमारी उमा भारती (खजुराहो) : आपकी बात पर महिलाएं खुश हो रही हैं।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : एक दूसरी बात और कह रहा हूं। जब 1937 में पहली दफा अंग्रेजों के यहां रहते हुए सरकारें बनी थी, उस समय गांधी जी ने दो बातों पर जिद की थी। एक बात उन्होंने कही थी कि कोई ऐसी सरकार नहीं बनेगी जिसमें महिला मिनिस्टर नहीं होगी। दूसरी बात यह कही थी कि कोई सरकार ऐसी नहीं बनेगी जिसमें कोई अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का मिनिस्टर नहीं होगा। यह भी गांधी जी का ही कहना है जो हमको निभाना है। मैं ये बातें बुनियादी तौर पर इसलिए कर रहा हूं...*(व्यवधान)* एक वादा मैं आपसे और भी कर रहा हूं और वह वादा यह है कि हम लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि देश की आबादी कितनी तेजी से बढ़ रही है। मेरे कमरे में तो अभी वह क्लॉक नहीं है लेकिन पहले प्रधान मंत्री जी के कमरे में जब मैं जाता था तो वहां एक पोपुलेशन क्लॉक रखी रहती थी। जब मैं पोपुलेशन का करेंट डाटा देखकर आता था तो मुझे रात भर नींद नहीं आती थी। आज देखा जाता है कि हमारी आबादी 95 करोड़ से ऊपर हो गई है। हम लोगों ने जवानी बहुत कुछ कहा है कि हम यह करेंगे, हम वह करेंगे। कुछ कामयाबी हुई है। लेकिन उतनी नहीं हुई है जितनी होनी चाहिए। एक बात का और ध्यान रखिए कि यह फैमिली प्लानिंग की कामयाबी तभी होगी जब महिलाओं को उनका हक मिलेगा। महिलाओं की अनपढ़ता तब तक खत्म नहीं होगी, जब तक कि हम महिलाओं को स्कूल और कॉलेज में भेजने के लिए समाज में वातावरण पैदा नहीं करेंगे। मेरा आपसे एक वादा यह भी है और मैं उस तरफ जाने की कोशिश करूंगा...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जब प्रधान मंत्री बोल रहे होते हैं तो आप ध्यानपूर्वक सुनें।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : एक बात का और ध्यान रखिए। एक दफा स्वीडन में कांफ्रेंस हुई थी और उसमें एनवॉयरनमेंट के बारे में बात उठी थी। उस जमाने में मैं हाउसिंग मिनिस्टर था। मुझे भी इंदिरा जी के साथ जाने का मौका मिला था। एक बात वहां निकलकर आई थी। वह यह थी कि पौल्यूशन और पॉवर्टी ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और जब तक हम पॉवर्टी में डूबे रहेंगे, हमारे एनवॉयरनमेंट में इम्प्रूवमेंट नहीं हो सकता। इसलिए जब तक गरीबी की बात चलेगी तक तक हम लोग अनपढ़ता भी खत्म नहीं कर पाएंगे। ये दोनों बातें हैं। एक दफा किसी ने कहा था :—

[अनुवाद]

> "मुझे एक ऐसे देश का उदाहरण दें जहां साक्षरता है। लेकिन वह पिछड़ा हो या ऐसा देश बतायें जहां निरक्षता हो लेकिन वह विकसित हो।"

[हिन्दी]

एक वायदा हमको यह भी करना पड़ेगा कि हम लिट्रेसी की तरफ जाने के लिए खास ध्यान देंगे। मैं लम्बी बातें नहीं कहूंगा, एक-दो बातें कह कर खत्म करूंगा।

एक बात यह है कि मेरा इस सरकार से संबंध रहा है, जो आज से पहले थी। उसने एक फॉरन-पालिसी बनाई थी, उस फॉरन-पालिसी पर मुझे आप सब की तरफ से सपोर्ट मिल रही है। फॉरन-पालिसी वही रखी जाएगी। उसी को हम आगे बढ़ायेंगे। उसी से नए किस्म के रिश्ते कायम करेंगे। आज भी मैं जब अपने दफ्तर में पांच मिनट के लिए बैठा, मैं उनके नाम नहीं गिनवाऊंगा, तो हमारे पड़ोसी मुल्कों से मुझे किस किस्म के मैसेज और किस किस्म के प्यार के टेलीफोन आ रहे हैं। वह बदले हुए माहौल का और बदले हुए वातावरण का हिस्सा है, जिसकी हम सराहना करते हैं। मैं यह नहीं कहता हूं कि वह मैंने किया है, वह आपकी कन्सैंसस ने किया है और कन्सैंसस को कायम रखना इस मुल्क की बुनियादी पालिसी होगी। आज आपकी पालिसियों के ऊपर भी वही कन्सैसस हमको बनाना भी है और उसी को आगे बढ़ाना भी है। कन्सैंसस हमारे मुल्क में सोशियल जस्टिस के ऊपर बन चुका है। खुशकिस्मती से आज ऐसी कोई भी पार्टी नहीं है, जो आज इस बात को मानती हो। हमें उसके लिए और कदम उठाने हैं। मैं एक-दो वायदे और करना चाहता हूं।

एक वायदा यह कि जब तक मैं इस सरकार में सरबराह हूं, तब तक यह सरकार ट्रांसपेरेन्ट सरकार रहेगी। यह सरकार पूरी तरह से कोशिश करेगी कि यह एकाउन्टेबल रहे। एकाउन्टेबल आप सब, आप जब भी हमारे कपड़े उतारेंगे, मुझे उसमें शिकायत नहीं होगी। जब भी आप यह कहेंगे कि हमने कहीं गलती की है—कई गलतियां ईमानदारी से होती हैं, तो उनके लिए तो मैं आपसे इन्डलजैंस मांगूंगा—और नीयत खराब होने की वजह से गलती की है, तो उसके लिए बिना शक आप क्रिटिसाइज करिए और उसके लिए मेरा हर साथी जो गलती करेगा, उसकी जिम्मेदारी मैं खुद ओढ़ूंगा और अपने साथी, चाहे इस तरफ के हों या उस तरफ के, मैं इस बात के लिए उसको प्रोटैक्ट नहीं करूंगा। साथ ही साथ इस मुल्क में विच-हंटिंग नहीं होने दूंगा। वह वातावरण नहीं आएगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, विच-हंटिंग नहीं होने दूंगा, यह कहने की जरूरत क्या है। क्या विच-हंटिंग हो रहा है? अभी तक हुआ है? आप इसको रोकना चाहते हैं या यह कह कर कि विच-हंटिंग नहीं होने देंगे, जो मामले पड़े हैं, उन पर पर्दा डालना चाहते हैं?

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : अटल जी, जुम्मा-जुम्मा आठ दिन, मुझे तो 24 घन्टे आए हुए हैं। मैंने फाइलें नहीं देखी हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री प्रमोद महाजन (मुम्बई-उत्तर पूर्व) : इसको आप दो बार कह चुके हैं।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मैंने फाइलें अभी देखी नहीं है। अगर आप मुझसे यह कहते कि बंगलादेश की फाइल क्या है, तो मैं बता देता। अगर आप यह पूछते कि सीटीबीटी क्या है, तो मैं बता देता। लेकिन जो सवाल आपने किए हैं, मुझे कागज देख लेने दीजिए। इसलिए वायदे कर रहा हूं, कागज देखेन के बाद, जो भी आप मुझसे पूछेंगे, उसके लिए मेरी जबावदेही आपके पास रहेगी।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : जब कांग्रेस दल ने इस पार्टी को समर्थन दिया तब इसने कभी भी इस दल को उन मामलों में जो न्यायालय में लम्बित हो, निर्णय लेने को नहीं कहा। हमारा यही कहना है कि हमने कभी भी ऐसा निर्णय नहीं किया है। यह लोग अनावश्यक ही ऐसा कह रहे हैं।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : अध्यक्ष जी, असल में मेरे ख्याल से संतोष मोहन देव जी को मेरा हिन्दी में बोलना समझ नहीं आया। मैंने कभी यह नहीं कहा है, मुझे से किसी ने सिफारिश की है। मैंने कभी यह नहीं कहा है कि मैंने किसी की तरफ उंगली उठाई है। न जाने उन्होंने समझा...*(व्यवधान)* मैं हिन्दी में या उर्दू में बोल रहा हूं। हमारी आज की जुबान एक और तरह की है। न मैं इसे हिन्दी कह सकता हूं...*(व्यवधान)* मैं जिस जुबान में बात कह रहा हूं, वह बात वह है, जिसे कम्युनिकेशन की जुबान कहते हैं और मैं उसी नाते आप से बात कह रहा हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया इस तरह से बाधा न डालें।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मैं एक बात और कह दूं कि इस देश की बुनियाद, इस देश की जड़, इस देश का गौरव हिन्दुस्तान के किसान से है। हिन्दुस्तान के किसान के साथ जब तक सरकार का रिश्ता जुड़ा रहेगा, उसके हितों और कल्याण की तरफ जब तक ध्यान रहेगा तब तक यह सरकार रहेगी और मजबूत रहेगी। मैं आज अपने किसान भाईयों से, उन भाईयों से जो मिल में काम करते हैं, उन भाईयों से जो सारा दिन मेहनत से, मजदूरी से टोकरी उठा कर रात-दिन के लिए रोटी कमाते हैं उनकी तरफ सरकार का पहले से ज्यादा ध्यान रहेगा, यह भी मेरा आपसे एक वायदा है। मैं और लम्बी बात नहीं कहूंगा, शाम को जब सब भाई कह चुकेंगे,

[अनुवाद]

महोदय, मैं उम्मीद करता हूं कि शाम को आप मुझे एक और मौका देंगे और तब मैं उन प्रश्नों का जवाब दूंगा।

[हिन्दी]

इस वक्त मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूं, सबसे बड़ी बात यह है कि हिन्दुस्तान के सामने चेलैंज है—स्टेबिल्टी का, स्टेबिल्टी इंटरनल और स्टेबिल्टी एक्सटरनल। इंटरनल स्टेबिल्टी तो सोशल जस्टिस से, सेक्यूलरिजम से और एक-दूसरे का ध्यान रखने से पैदा होगी और एक्सटरनल स्टेबिल्टी हम सबको मिल कर बात करने से, कंसेंसस से होगी। इसलिए मैं बुनियादी बात कह कर खत्म करता हूं। यह सरकार चलाई जाएगी जब तक मुमकिन हो सकेगा और शायद मुमकिन से भी कुछ ज्यादा चलाएंगे। यह तभी होगा जब हम लोग कंसेसस के साथ बात करेंगे। हमारे बगल में मेरे दोस्त चिदम्बरम जी बैठे हैं और बात खत्म करने से पहले मैं उनका नाम लेना चाहता हूं।

[अनुवाद]

और मुझे उम्मीद है कि अनुवाद के माध्यम से मेरा संदेश उन तक पहुंच रहा है।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : हम उन्हें वहां भेज देंगे।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : तब मैं अंग्रेजी में बोलूंगा। अंग्रेजी में बोलते हुए मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि कृपया वापस आकर अपना पद्भार संभाल लें।...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : वह पहले यहीं से बोले थे। अब वह मेरे बगल में बैठे हैं...*(व्यवधान)* उन्हें वहां भेजा जाएगा...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : यहां उनका स्वागत है।

श्री ए॰सी॰जोस (इदुक्की) : उनके उधर जाने में श्री सोमनाथ चटर्जी ही एक मात्र अड़चन हैं...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : दूसरी बात यह है कि मूपनार जी से मेरी अपील है, मैं आज इस हाउस में भरी सभा में कहा रहा हूं उनको कुछ लोगों से नाराजगी हो सकती है, किसी ने कोई गुस्ताखी भी की होगी। मैं उनके यहां गया भी था, आज सुबह भी गया था और मैंने उनको पंजाबी का एक मुहावरा कहा था। वह यहा था, हमारे यहां कहते हैं कि—"करे दाढ़ी वाला, पकड़ा जाए मूंछों वाला।" आप हमारे पीछे क्यों, मैंने क्या किया।...*(व्यवधान)*

डा॰ मुरली मनोहर जोशी (इलाहाबाद) : प्रधान मंत्री जी, यहां उल्टा है—किया मूंछों वाले ने है और पकड़ा दाढ़ी वाला गया है। ...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मुझे पूरी आशा है मेरी इस अपील का जवाब दिया जाएगा। मैं बहुत आभारी हूं और फिर कहता हूं कि जो तहरीक आपके सामने रखी है मुझे उम्मीद और आशा है कि सारा हाउस मुझे सपोर्ट करेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ :—

"कि यह सभा मंत्रि-परिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

मैं सर्वप्रथम उन सभी माननीय सदस्यों, जो इस चर्चा में भाग ले रहे हैं, से अनुरोध करता हूं कि वे संक्षेप में बोलें। मेरे विचार से लोग भाषण की विषय वस्तु और न कि लम्बे भाषण को सुनना चाहते हैं। अतः कृपया संक्षेप में बोले।

श्रीमती सुषमा स्वराज (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष जी, विश्वास का जो प्रस्ताव भारत के नये प्रधान मंत्री, श्री इन्द्र कुमार गुजराल जी ने अभी सदन में चर्चा के लिए रखा है, मैं अपनी पार्टी की ओर से उसका विरोध करने के लिए खड़ी हुई हूं।

अध्यक्ष जी, परसों जी॰ टी॰वी॰ पर मैं आपका एक इंटरव्यू देख रही थी, जिसमें आपने यह कहा कि 11वीं लोकसभा, जिसकी अध्यक्षता करने का आपको सौभाग्य प्राप्त हुआ है उसकी सबसे ज्यादा संख्या में विश्वास मत लाने के लिए चर्चा होगी। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह बिलकुल सही बात है। आज तक देश में जो नौ कांफीडेंस मोशन हुए हैं उनमें से चार या पांच सिर्फ इसी लोकसभा में टेकअप किए हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, बिलकुल सही कह रहे हैं। वास्तव में देश का कोई पूर्व सूचना और प्रसारण मंत्री पहली बार लोकसभा का अध्यक्ष चुना गया है।

इसलिए इस सरकार ने विश्वास प्रस्ताव का सीरियल बनाने का फैसला किया है जिसका तीसरा एपीसोड आज हम देख रहे हैं। ...*(व्यवधान)* अध्यक्ष जी, अभी विश्वास मत रखते हुए प्रधानमंत्री ने अपने पहले ही वाक्य में कहा कि मैं आने वाले दिनों की कुछ बातें रखूं तो अच्छा होगा। हमने आने वाले दिनों की बातें तो सुनी लेकिन बीते हुए दिनों के बारे में भी कुछ बोलते तो ज्यादा अच्छा रहता। यह सरकार आगे क्या करेगी यह तो हम सब देखेंगे लेकिन यह सरकार अस्तित्व में कैसे आई यदि इसकी भी दास्तान आप सुनाते तो ज्यादा अच्छा होता। अध्यक्ष जी, बीते 10 दिनों में इस देश के राजनीतिक मंच पर जो कुछ घटा है वह बेहद शर्मनाक है। बीते 10 दिनों का इतिहास बेवफाई का इतिहास है। जो मंत्री आज इस तरफ बैठे हैं...*(व्यवधान)* अध्यक्ष जी, आज से दस दिन पहले जब विश्वास प्रस्ताव यहां रखा जाना था उस समय मैं सदन में प्रवेश कर रही थी। मुझसे बाहर एक पत्रकार ने पूछा कि सुषमा जी आज क्या होगा तो मैंने कहा था कि या तो इस सरकार की जान जाएगी या नाक जाएगी। लेकिन उस दिन मैंने यह कल्पना नहीं कि थी कि इस सरकार की एक दिन जान जाएगी और दूसरे दिन नाक भी जाएगी।

जो सरकार 11 अप्रैल को गिरी, आज वही सरकार अपनी प्रतिष्ठा धूल में मिलाकर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की दुनिया में जग-हंसाई करवा कर, खिल्ली उड़वाकर पुनर्जीवित हुई है। जो मंत्री दस दिन पहले इसी सत्र में, इसी सदन में देवगौड़ा जी के साथ जीने-मरने की दुहाई दे रहे थे, आज वही सदस्य गुजराल जी के नेतृत्व में वापस इस तरफ बैठे हैं। उसकी कार्रवाई केवल आपने या मैंने ही नहीं सुनी बल्कि दूरदर्शन पर उस कार्यवाही का सीधा प्रसारण हुआ था। देश के करोड़ों लोगों ने उसे देखा था। राम विलास पासवान जी ने कितना गरजकर कहा था कि कांग्रेसी कहते हैं कि नेता बदल दो। क्यों बदल दो? नेता क्या मजाक की चीज है। मेरे पास राम विलास पासवान के भाषण की प्रति है। मैं उनका एक-एक वाक्य बोलकर सुनाना चाहती हूं। 11 अप्रैल, 1997 को दोपहर के 4 बजकर 12 मिनट पर राम विलास पासवान ने खड़े होकर कहा था कि देश का प्रधान मंत्री क्या कोई मजाक होता है, जब मन में आए प्रधान मंत्री को बदल दो। देवगौड़ा जी प्रधान मंत्री हैं, वे संयुक्त मोर्चा के लीडर हैं। क्या कोई नेता यह कह सकता है कि उनके खिलाफ कोई चार्ज हैं। उसके बावजूद भी यह कहना कि नेता को बदला जाना चाहिए तो मैं नहीं समझता कि क्यों बदला जाना चाहिए। यह प्रश्न इन्होंने कांग्रेस के साथियों से किया था। मैं पूछना चाहती हूं कि आज आप इस बात के लिए जवाब देंगे क्योंकि सदन के पटल पर कोई बात यूं ही नहीं कह दी जाती है। आज पूरा सदन जानना चाहता है कि जब तक देवगौड़ा जी के साथ आपकी रेल ठीक-ठाक चल रही थी तो आप उस रेल में बैठे रहे और जैसे ही केसरी ने जंजीर खींचकर ट्रेन रोकी तो आप बदल करके फटाक से गुजराल की रेल में बैठ गये। इसका क्या कारण है...*(व्यवधान)*

रेल मंत्री (श्री राम विलास पासवान) : सुषमा जी, आप क्या कहना चाहती हैं? कल यदि अटल जी के बदले वहां अगर मुरली मनोहर जोशी या आडवाणी जी आ जाएं तो क्या आप पार्टी छोड़ देंगी?...*(व्यवधान)*

श्रीमती सुषमा स्वराज : सदन में ऐसा नहीं होगा जैसा देश के साथ आपने मजाक किया है।...*(व्यवधान)* राम विलास पासवान ही क्या यहां अगली बैंच पर श्री इन्द्रजीत गुप्त बैठे हैं जो उस समय गृह-मंत्री थे। इस समय पता नहीं पोर्टफोलियो क्या होगा क्योंकि स्वयं होम छोड़ना चाहते हैं। नाम जरूर इनका गुप्त है लेकिन अपने मनोभावों को वे गुप्त नहीं रख सकते हैं। जो मन में होता है, वह बाहर बोलते हैं। उस दिन कांग्रेस को कोसने में सबसे ज्यादा गुप्त जी आगे बढ़े थे। उनके भाषण की प्रति मेरे पास है। रात को नौ बजकर अठारह मिनट पर भाषण इस बात से शुरू किया था। यह गुप्त जी की बात वरबैटिम लिखी हुई है।

[अनुवाद]

"यह सरकार जाने वाली है। कांग्रेस दल द्वारा मूर्खतापूर्ण और गैर-जिम्मेदाराना कार्य के फलस्वरूप इस सरकार की बलि चढ़ा दी गयी। इनके नेताओं ने इस सरकार की इस अनुभव की गला घोंट दिया। अतः संयुक्त मोर्चा

सरकार का खून उनके मांथों पर लगा है। उन्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।"

[हिन्दी]

मैं इन्द्रजीत गुप्त जी से पूछना चाहती हूं कि क्या आज आप उन्हीं कातिलों से मिल गए?

[अनुवाद]

क्या आप इन हत्यारों के साथ मिल गए?

[हिन्दी]

यह आज नहीं मिले, इनकी कलाबाजी की भनक हमें उसी दिन लग गई थी, जिस दिन अखबार में इन्द्रजीत गुप्त जी का बयान निकला था कि संकट को पैदा करने के लिए कांग्रेस पार्टी नहीं देवेगौड़ा जिम्मेदार हैं। इन्होंने कहा था कि 140 सदस्यों की पार्टी की उपेक्षा और तिरस्कार करके वह कैसे सरकार चला सकते हैं। उस दिन हमें जो शक हुआ था, आज इन्हें वापस इस कुर्सी पर बैठा देख कर हमारा शक सच में बदल गया। मैं एक-एक मंत्री की बात क्या कहूं, स्वयं प्रधान मंत्री इन्द्र कुमार गुजराल जी बैठे हुए हैं। जाते-जाते आपसे देवेगौड़ा जी ने सवाल किया था क्योंकि उन्हें आभास हो गया था कि ये लोग केवल इस सदन के भीतर साथ दे रहे हैं, बाहर जाते ही पीठ में छुरा भोंकने का काम करेंगे। इसलिए उन्होंने फ्लोर पर कमिटमैंट लिया था, जाते-जाते नसीहत दी थी और प्रश्न भी किया था। देवेगौड़ा जी की रिप्लाई का जो भाषण है, उसकी प्रति मेरे पास है। रात को साढ़े दस बजे भाषण समाप्ति की ओर था देवेगौड़ा जी कह रहे थे

[अनुवाद]

"इस देश का प्रधान मंत्री, चाहे जो भी हो, के पद का सम्मान और गरिमा जब समाप्त हो जाएं तब उन्हें किसी अन्य की दया पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। फिर से हमें क्या चर्चा करनी है। श्री गुजराल आप किस शक्ति से बाहर जाएंगे। कुछ लोग आपको प्रधान मंत्री बनाना चाहते हैं। आप उनके वरिष्ठ नेता हैं। मैं यह स्वीकार करती हूं लेकिन इस स्थिति में नहीं।

[हिन्दी]

श्री गुजराल जी ने सिर हिला कर सहमति नहीं दी थी, उन्होंने बोल कर कहा था कि मैं पूरी तरह आपसे सहमत हूं।

मैं गुजराल जी से पूछना चाहती हूं कि क्या आप आज भी उनसे सहमत हैं? क्या आप उन्हीं लोगों के रहमोकरम पर दोबारा प्रधान मंत्री बन कर नहीं आए हैं जिन्होंने एक सप्ताह पहले आपके नेता देवेगौड़ा के साथ यह हश्र किया। सच तो यह है कि इस सरकार के निर्माण की कहानी इन्सानी रिश्तों के घटियापन की कहानी है और मुझे सबसे ज्यादा दुख इस बात का है कि इस कहानी के चरित्र कल्पित नहीं है, इमैजनरी नहीं है। किसी फिक्शन राइटर ने यह उपन्यास नहीं लिखा है। रंग मंच पर खेलने वाले पात्र इस देश के वे महान राजनेता हैं जो अपने आप को इस देश के कर्णधार कहते हैं, जो अपने आप को इस देश के उज्जवल भविष्य का रक्षक कहते हैं। इन दस दिनों में ऐसा उपन्यास रचा गया जिस में हर व्यक्ति दूसरे को धोखा दे रहा था।

[अनुवाद]

जहां हर व्यक्ति एक-दूसरे को धोखा दे रहा है।

[हिन्दी]

जहां बेवफाई की कलम से ऐसी कलयुगी रामायण रची गई थी जहां लक्ष्मण ने ही राम का राज लपक लिया। यह रामायण केवल यहां रची गई।

जब अखबारों में यह खबरें आती थीं तो मेरे मुंह से केवल दो पंक्तियां निकलती थीं। अगर देवेगौड़ा जी हिन्दी समझते तो बोल सकते थे कि :

"दोस्तों ने दोस्ती में इस कद्र की दुश्मनी,
दुश्मनों की दुश्मनी का सब गिला जाता रहा।"

गुजराल जी, इस पृष्ठभूमि के साथ जो सरकार आई है, वह देश का क्या भला करेगी, यह प्रश्न मेरे सामने हैं। जहां तक आपका व्यक्तिगत ताल्लुक है, आप बजाते खुद एक बहुत अच्छे इन्सान हैं। आप मेरे व्यक्तिगत मित्र भी हैं। लाख लालू जी कहें कि आप पटना के निवासी हैं, मुझे गर्व है कि आप मेरे संसदीय क्षेत्र के स्थायी निवासी हैं। मेरे निर्वाचन क्षेत्र ने देश को प्रधान मंत्री दिया है लेकिन आपके इस पद को ग्रहण करने पर मुझे खुशी कम चिन्ता ज्यादा सता रही है क्योंकि आप बेड़ियों में जकड़ें हुए प्रधान मंत्री बने हैं। आप जिस यूनाइटेड फ्रंट के लीडर हैं, वह यूनाइटेड फ्रंट कोई कोहैसिव यूनिट नहीं है, वह एक चक्रव्यूह है, जिस चक्रव्यूह में सबसे पहले राजनीतिक दल हैं, एक-दो नहीं पूरे चौदह।

उसके बाद यूनाईटेड फ्रंट में दो और फ्रंट हैं—एक है फैडरल फ्रंट और दूसरा है लैफ्ट फ्रंट। उसके ऊपर है यूनाईटेड फ्रंट और उस युनाईटेड फ्रंट के ऊपर कांग्रेस से बात करने के लिये को-आर्डिनेशन कमेटी है। आपकी हालत तो ऐसी है कि जैसे संयुक्त परिवार में एक बहू होती है जिसके दर्जन सास-ससुर होते हैं और आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं मगर अच्छा कहलाने के लिये उस बहू को सब को खुश रखना पड़ता है। गुजराल साहब, मुझे आप पर तरस आता है कि आपने यह रोल क्यों लिया। यह भूमिका आप कैसे निभा पायेंगे? आप जानते हैं कि प्रोसीक्यूशन और डिफेंस के बीच में पालिटिकली फ्रंट पर आप उलझे हुये प्रधानमंत्री हैं। आपका एक पार्टनर चाहता है कि इनको फंसाओ और दूसरा पार्टनर चाहता है कि अपने आपको बचाओ। दोनों ने अपनी-अपनी उम्मीद रखकर आपको चुना है। दोनों की उम्मीदों पर आपको खरा उतरना है आप कैसे उतर पायेंगे? एक तरफ आपसे कहा जायेगा कि बोफोर्स की जांच जल्दी करवानी है और दूसरी तरफ आपसे कहा जायेगा कि 10-जनपथ पर आंच नहीं आने देनी है। एक तरफ आपको देवेगौड़ा की धमकी से

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

डरना है—खबरदार, अगर कांग्रसियों के केस वापस लिये तो? दूसरी तरफ आपको केसरी और नरसिंह राव को खुश रखना होगा। एक तरफ आपको चतुरानन मिश्रा के दबाव को मानना है तो दूसरी तरफ आपको अपने अध्यक्ष और आपके 'किंगमेकर' लालू प्रसाद यादव की प्रतिष्ठा को बचाना है। आप यह सब कैसे कर पायेंगे? इसलिये मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि आर्थिक फ्रंट पर भी...*(व्यवधान)* अध्यक्ष जी, आर्थिक फ्रंट पर भी ऐसी ही दुविधा का सामना करना होगा। ये कहते हैं कि इकोनोमिक रिफार्म्स को आगे बढ़ायेंगे। आर्थिक नीति तय करते समय आपको सोमनाथ चटर्जी और डा॰ मनमोहन सिंह को साथ लेकर चलना है। आपको वैस्ट बंगाल और वर्ल्ड बैंक को ध्यान में रखना है। इन बेमेल बातों में कैसे मेल बिठा पायेंगे? शायद आपको खुशफहमी है कि कांग्रेस अभी-अभी समर्थन वापस करने की भूल कर चुकी है, दुबारा यह भूल नहीं दोहरायेगी, इसलिये आपका कार्यकाल लम्बा हो जायेगा। गुजराल जी अंग्रेजी में कहते हैं :

[अनुवाद]

एक बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों के अनुभव से सीखता है।

[हिन्दी]

लेकिन शायद इस सदन में किसी ने किसी से न सीखने की कसम खाई है। हर उस व्यक्ति ने, जिसने कांग्रेस का समर्थन लिया इस खुशफहमी में लिया कि मुझसे कांग्रेस अपना समर्थन वापस नहीं लेगी। चौ॰ चरण सिंह के अनुभव से माननीय चन्द्रशेखर जी ने नहीं सीखा, चन्द्रशेखर जी के अनुभव से देवेगौड़ा जी ने नहीं सीखा और देवेगौड़ा जी के हाल ही के ताजा अनुभव से आपने नहीं सीखा। शायद आपको पता नहीं कि कांग्रेस का समर्थन बेताल की कथा की तरह होता है। बेताल पीठ पर चढ़ता है...*(व्यवधान)* अध्यक्ष जी, बेताल की कथा आपने सुनी होगी। उसको पीठ पर बैठाया जाता है। आधे रास्ते चलकर कहानी सुनाता है। बाद में कठिन सवाल पूछता है और साथ ही यह धमकी भी देता है कि बोल नहीं तो तेरे सिर के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और जैसे ही राजा बोलता है बेताल वापस पेड़ पर बैठ जाता है। इस प्रकार कितनी बार ये पीठ पर बैठाये गये और कितनी ही बार इन्होंने आधा सफर तय किया और कितनी ही बार उलटे-सीधे सवाल पूछे लेकिन राजा का मुंह खुलते ही बेताल पेड़ पर जा बैठा। इसलिये मैं आपसे कहना चाहती हूं कि आप इस खुशफहमी में क्यों हैं। ऐसा लगता नहीं कि इनको क्रेडिटब्लिटी की परवाह है। जिसे विश्वसनीयता की परवाह होती है, वो तोल-पजोख कर निर्णय लेता है। और कांग्रेस के निर्णय तो शुद्ध स्वार्थ से प्रेरित होते हैं। आज यहां राजेश जी नहीं बैठे हैं। उस दिन तो बढ़-चढ़कर कह रहे थे कि आप कांग्रेस पर सत्ता-लोलुप होने का इलजाम लगाते हैं। कांग्रेस सत्ता-लोलुप कहां है?

उसने पंजाब का समझौता किया, उसने असम का समझौता किया, उसने मिजोरम का समझौता किया और समझौता करके अपनी सरकारें अन्य राजनीतिक दलों को सौंप दीं। अगर राजेश पायलट जी यहां होते तो मैं उनसे पूछती कि क्यों हर बार आधी बात बताकर रह जाते हैं? यह बात उन्होंने पहली बार नहीं, बीसियों बार पहले भी कही है। जरा यह भी बताएं कि कश्मीर का अकोर्ड आपने किया मगर फारूख अब्दुल्ला की सरकार किसने गिराई? पंजाब का समझौता किया मगर बरनाला की सरकार किसने गिराई? असम का समझौता किया मगर एजीपी की प्रफुल्ल महन्त की सरकार किसने गिराई? मिजोरम का समझौता किया मगर लालडेंगा की सरकार किसने गिराई? आप सत्ता-लोलुपता की बात करते हैं? 40 साल राज में रहने की जो आदत आपकी पड़ गई है, आप राज के बाहर नहीं रह सकते। अध्यक्ष जी, यह तो इस बार इनका तीर चूक गया वरना इस बार भी जो निर्णय किया गया था, वह किसी और कारण से नहीं बल्कि यह सोचकर किया था कि...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांत रहें।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, इस बार बार का निर्णय भी. ..*(व्यवधान)*

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (चांदनी चौक-दिल्ली) : कांग्रेस को ये राजनीति सिखाएंगे...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अग्रवाल जी नहीं। काफी हो चुका।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : धीरज रखें। आपको अन्य सदस्यों के विचार भी सुनने चाहिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह क्या है।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, इस बार का निर्णय भी यह सोचकर किया गया था कि उधर वह गिरे और इधर हम आएं। यह तो तीर सही निशाने पर बैठा नहीं, इसीलिए रोज-रोज स्टैण्ड बदला, सुबह और शाम स्टैण्ड बदला। पहले दिन कहा कि यूनाइटेड फ्रंट की कम्यूनल पोलिसीज के कारण हम समर्थन वापस लेते हैं क्योंकि ये कम्यूनलिज्म को देश में कनटेन करने में विफल रहे हैं। दूसरे दिन कहा कि यूनाइटेड फ्रंट कम्यूनल नहीं है। अगर ठीक था तो बदला क्यों? फिर कहा कि यूनाइटेड फ्रंट कम्यूनल नहीं है, देवेगौड़ा कम्यूनल हैं। तीसरे दिन कहा कि मैं वी॰पी॰ सिंह की बात से पिघल गया और चौथे दिन देवेगौड़ा के बारे में जो कहा, मैं दोहराना नहीं चाहती क्योंकि वे शब्द संसदीय भाषा के शब्द नहीं हैं, शालीनता के शब्द नहीं हैं। पांचवें दिन कहा कि हम यूनाइटेड फ्रंट को समर्थन देते रहे सकते हैं। छठे दिन कहा कि पत्र वापस लेंगे मगर तब जब यूनाइटेड फ्रंट का लीडर

बदल दिया जाएगा। यह तो जब राष्ट्रपति जी ने साफ-साफ शब्दों में मांग की कि अपना स्टैण्ड बताओ वरना हाउस डिसोल्व होने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, तब लिखकर देना पड़ा, वरना बीच-बीच में इस बार भी हुड़क उठती रही कि दांव लग जाए तो उधर बैठ जाएं। कभी लगा कि अपनी सरकार नहीं बना सकते तो इसी में चले जाएं। यह तो सोमनाथ चटर्जी और चन्द्रबाबू नायडू की जिद के कारण बाहर बैठे हैं, लेकिन आज भी अगर इनके बस में हो, तुरंत छलांग लगाकर ट्रैजरी बैन्चेज पर बैठना चाहते हैं। यह धोखाधड़ी की कहानी यूं ही नहीं थी। केसरी की लालू से बात हो गई थी, मूपनार से बात हो गई थी। जिस धोखे के प्रकरण की बात मैं कर रहीं हूं, वह ऐसे ही थोड़े है कि सीताराम केसरी, नरसिंहराव को धोखा दे रहे थे, करूणानिधि, मूपनार को धोखा दे रहे थे। लालू प्रसाद यादव कैमरे पर आकर कह रहे हैं डंडा ठोककर कि कह दो चचा केसरी से कि नेता नहीं बदला जाएगा, चुनाव होगा, चलो गांव की ओर। और अंदर खाने अपने ही दल के नेतृत्व परिवर्तन के हस्ताक्षर करवा रहे थे और एक साहसी मंत्री जिसने हस्ताक्षर करने से इंकार किया, आज उसका चेहरा इस मंत्रिमंडल से नदारद है। चंद्रशेखर जी कह रहे थे कि यह अंतर्राष्ट्रीय साजिश के कारण हुआ। नहीं चंद्रशेखर जी, अगर यह अंतर्राष्ट्रीय साजिश होती तो रूस के सबसे करीबी विदेश मंत्री को प्रधान मंत्री नहीं बनाते। केवल सत्ता-लोलुपता और केसों से बरी होने की विवशता इन लोगों के विदड्रोल ऑफ सपोर्ट का एकमात्र कारण था। मैं अब आपके माध्यम से पूछना चाहती हूं कि 11 अप्रैल को यह यक्ष प्रश्न बार-बार पूछा गया। हर विपक्ष के नेता ने पूछा।

उधर से भी यह सवाल पूछा गया कि बताओ सपोर्ट विदड्रा क्यों की गई थी, जवाब नहीं आया। लेकिन आज मेरा प्रश्न है, दोबारा समर्थन क्यों दिया गया, जरा इसका तो जवाब दे दो। विदड्रा ऑफ सपोर्ट के समय चार पत्रों की चार्जशीट दी थी। आज कौन सा गुप्त एम॰ओ॰यू॰ साइन हुआ है जरा उसकी तो चार दफायें बता दो। अध्यक्ष जी, अभी हमारे नये प्रधान मंत्री श्री गुजराल साहब स्टेबिलिटी की बात कर रहे थे कि यह सरकार स्थिर सरकार होगी। गुजराल जी आपकी गाड़ी स्टार्ट करने से पहले ही श्री मूपनार ने फ्रंट व्हील पंक्चर कर दिया है, गाड़ी तो स्टार्ट ही नहीं हुई। तमिल मानिला कांग्रेस के नेता श्री पी॰ चिदम्बरम जी बैठे हैं। वे देश के बहुचर्चित वित्त मंत्री, लोकप्रिय वित्त मंत्री, आधुनिक बजट के जन्मदाता, आधुनिक ड्रीम बजट के जनक हैं। मैं चिदम्बरम जी से पूछना चाहती हूं।

[अनुवाद]

क्या यह आपका बच्चा था? आपने हमेशा कहा है "यह मेरा बच्चा है" आज आपका बच्चा रो रहा है। उसके पिता सभा से बाहर क्यों हैं?

[हिन्दी]

यह कैसी सरकार है। अभी प्रधान मंत्री कह रहे थे गाड़ी चलेगी, जितना मुमकिन हो उतना चलेगी। जितना मुमकिन होता है उससे भी ज्यादा चलेगी। लेकिन बेमेल पहियों की गाड़ी कैसे चलेगी। जवाब में जो कहा जायेगा हां वह मुझे मालूम है कि चलेगी नहीं दौड़ेगी। भाजपा को रोकने के लिए चलेगी, साम्प्रदायिकता को कंटेन करने के लिए चलेगी, धर्मनिरपेक्षता को स्ट्रैन्थन करने के लिए चलेगी। यही तर्क आयेंगे, यही जवाब आयेंगे। वही घिसे-पिटे तर्क जो 28 मई, 1996 से लेकर 12 अप्रैल, 1997 तक हम सुन रहे हैं। वही धुरी, वही राग, वही भय कि भाजपा आ जायेगी, भाजपा आ जायेगी, वही चुनावों का डर। एक-एक व्यक्ति चाहे वह समर्थक हो या विरोधी, ने 11 अप्रैल को बोला कि...*(व्यवधान)* अध्यक्ष जी, यह मैं नहीं कह रही हूं, जरा इन्हें बता दीजिए, आपने भी वह डिबेट सुनी थी, आप ही बता दीजिए। यह मैं नहीं कह रही थी, उस दिन बोलने वाला एक-एक वक्ता चाहे इस तरफ का था या उस तरफ का था, उसने बार-बार यह कहा कि आपने यह काम क्यों किया है। क्या करने से पहले आपने सोचा नहीं कि इसका फायदा केवल भाजपा को होगा और अगली बार भाजपा आ जायेगी। यह मैंने नहीं कहा यह डर आपने दिखाया...*(व्यवधान)* अध्यक्ष जी, मैं इनसे पूछना चाहती हूं कि क्या ये भाजपा को रोक पायेंगे या ये भाजपा को रोक पाये हैं, क्या भाजपा रूक गई। जरा सचाई का सामना करके देखो, क्या भाजपा रूक गई। महोदय, 28 मई को इस सदन में राजनीति का एक सूत्रपात हुआ था। एक सिंगल सूत्र दिया गया था, भाजपा को रोको, भाजपा को उखाड़ो। 28 मई के बाद जब-जब शक्ति परीक्षण के लिए जनता के मैदान में उतरे हैं और जितना जोर से इन्होंने कहा कि भाजपा को रोको, उससे ज्यादा जोर से जनता ने कहा कि भाजपा को सत्ता सौंपो। एक-एक करके देखते जाओ...*(व्यवधान)* पहले लोक सभा के तीन चुनाव हुए हैं... *(व्यवधान)* गांधीनगर, भुवनेश्वर और नांदयाल। तीन अलग-अलग पार्टियों ने वे सीटें खाली की...*(व्यवधान)* राधनपुर की सीट कभी भाजपा के पास नहीं थी। मैं तो वह बताती हूं जो हमारे पास थीं।. ..*(व्यवधान)* जरा पेशेंस रखो, धीरज से सुन लो। मैं तथ्य बता रही हूं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप में भाषण सुनने की क्षमता क्यों नहीं है?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

मध्याह्न 12.00 बजे

अध्यक्ष महोदय : आप बाद में रिप्लाई दे सकते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जोशी जी, प्लीज।

श्रीमती सुषमा स्वराज (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष जी, गांधीनगर की सीट आदरणीय वाजपेयी जी ने खाली की थी, भुवनेश्वर की सीट स्वर्गीय बीजू पटनायक ने खाली की थी और नान्दयाल की सीट, यहां बैठे कांग्रेस के सबसे बड़े नेता और भूतपूर्व प्रधानमंत्री, आदरणीय नरसिंह राव जी ने खाली की थी। हमने गांधीनगर की सीट को केवल बरकरार ही नहीं रखा बल्कि हमने भुवनेश्वर की सीट भी उनसे छीनी है लेकिन जनता दल के भुवनेश्वर की सीट खोई और कांग्रेस ने नान्दयाल की सीट खोई।

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

उसके बाद नागौर और छिन्दवाड़ा के उपचुनाव आए। मैं पूछना चाहती हूं कि क्या ये दोनों कांग्रेस के सबसे बड़े गढ़ नहीं माने जाते थे क्योंकि सन् 1977 के चुनावों में भी, पूरे उत्तर भारत में केवल ये दो सीटें ऐसी थी जो कांग्रेस ने नहीं हारी थी। आप सोचिए कि किन कारणों से नागौर की सीट आपके हाथ से भाजपा ने छीन ली और छिन्दवाड़ा से भाजपा का ध्वज फहराते हुए, श्री सुन्दर लाल पटवा आज लोकसभा में अगली बैचों पर पहुंच गए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष जी, उसके बाद पंजाब विधान सभा के उपचुनाव आए। सोमनाथ जी, कामरेड सुरजीत जो पूरे देश की राजनीति के चाणक्य बनते हैं, आप जरा उनसे पूछिए कि उनके होम स्टेट में क्या हुआ, कांग्रेस और कम्युनिस्टों को धराशायी करते हुए, 117 में से 93 सीटें अकाली दल और भाजपा गठबन्धन ने जीती। उसके बाद जब नगर निगमों के चुनाव हुए, चाहे चंडीगढ़ नगर निगम के चुनाव हों, दिल्ली नगर निगम के चुनाव हों, मुम्बई नगर निगम के चुनाव हों या छोटे से निकाय दिल्ली छावनी बोर्ड के चुनाव हों, सब पर भारतीय जनता पार्टी का कब्जा होता चला गया। इसलिए कोसने से आप भाजपा को रोक नहीं पाओगे। अब समय भाजपा को कोसने का नहीं है, बल्कि अपने-अपने दिलों में झांककर अपने लिए आत्म-चिन्तन करने का है।

अब समय आ गया है जब कांग्रेसजनों को सोचना चाहिए कि क्या कारण हैं कि एक समय इस देश के स्वतंत्रता संग्राम की अगवाई करने वाली कांग्रेस, इस देश की सियासी जमात के रूप में नहीं बल्कि कौमी तहरीक के रूप में जानी जाने वाली कांग्रेस आज क्यों चन्द सूबों तक सिमट कर रह गई है? आप हपने गिरहबान में झांकिए तो आपको जवाब मिलेगा। आपके लिए यह आत्म-चिन्तन को विषय है...*(व्यवधान)*

आप सोचिए तो आपको जवाब मिलेगा कि राज्यों की नैचुरल लीडरशिप को डिमौलिश करके अपनी पार्टी को सत्ता में बिठाने की श्रीमती इन्दिरा गांधी की शैली ने कांग्रेस को डुबोया। आपको जवाब मिलेगा कि राजीव गांधी के दुस्साहसी एडवैंचरिज्म ने कांग्रेस को डुबोया। आपको जवाब मिलेगा कि श्री नरसिंह राव के राज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार और पोलिटिकल प्रौसीक्यूशन की शैली ने कांग्रेस को डुबोया। आपको जवाब मिलेगा श्री सीताराम केसरी के अविवेकपूर्ण फैसलों ने कांग्रेस को डुबोया। उस दिन देवेगौड़ा जी यहां लंदन टाइम्स दिखाकर कह रहे थे—

[अनुवाद]

यह बुजुर्ग जल्दी में हैं। नहीं, केसरी जी जल्दी में नहीं केसरी जी चिंतित थे।

[हिन्दी]

केसों से बरी होने की बरी उन्हें थीं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री बी॰के॰ गढवी (बनासकांठा) : आप उस नेता का नाम ले रहे है जो इस सभा में उपस्थित नहीं है।...*(व्यवधान)* यह उचित नहीं है।

[हिन्दी]

श्री इलियास आजमी (शाहबाद) : जो व्यक्ति इस हाउस का मैम्बर नहीं है, उसका नाम यहां लेकर कुछ नहीं कहा जाना चाहिए, यह हाउस की परम्परा है। माननीय सदस्य लगातार कुछ व्यक्तियों के नाम लेती जा रही हैं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैंने कुछ नहीं कहा हैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : क्या अब आप अपनी चर्चा समाप्त कर रही हैं?

श्रीमती सुषमा स्वराज : आपने संक्षेप में कहने को कहा है। और मैं संक्षेप में बोलूंगी...*(व्यवधान)* मैं तीन मिनट में अपनी चर्चा समाप्त कर दूंगी।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बाद में जवाब दे सकते हैं। आप बैठिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : यहां सबका नाम लिया गया है, पिछली बार 50 बार नाम लिया गया है...*(व्यवधान)*

श्रीमती सुषमा स्वराज (दक्षिण दिल्ली) : यहां सबका नाम लिया गया है, 50 बार नाम लिया गया है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, आपका संकेत हो गया है। मैं तीन मिनट में समाप्त करूंगी। मैं अपने भाषण के बिलकुल अंतिम भाग पर जा रही हूं। आज युनाइटेड फ्रंट वालों के लिए भी आत्मचिन्तन का समय है कि जिस सोश्यल जस्टिस का नारा लेकर आप आए थे, उसके बावजूद आपका जनाधार खिसक रहा है? आज आत्मचिन्तन का समय है कि क्यों देवेगौड़ा सरकार का पतन हुआ? मैं चाहूंगी कि देवेगौड़ा जी जहां कहीं भी मेरी बात सुन रहे हों, क्योंकि वे इस सदन के सदस्य तो हैं नहीं हैं, इसलिए यहां बैठकर तो सुन नहीं सकते हैं,लेकिन शायद दूरदर्शन पर कहीं बैठकर मेरी बात सुन रहे हों, तो वे भी जरा अपनी आत्मा टटोलें और देखें कि इस सरकार का पतन क्यों हुआ? आज यह मुक्का मार-मार कर सदन में कहना कि "मैं दिखाऊंगा कि देवेगौड़ा क्या है" यह ऐरोगैंट शैली, इस पत्तन के लिए जिम्मेदार है। जरा एक बार वे इस पर सोचें कि उनका क्या स्टाइल आफ फक्शनिंग था—हेगड़े को हड़काओ, मेनका को धमकाओ, लालू को लतियाओ, केसरी को कसो और केवल नरसिंहराव से बतियाओ। यह जो शैली थी, यह शैली ही आज आपकी सरकार के जाने का कारण बनी। इस पर जरा सोचे और आत्मचिन्तन करें कि यह दिन क्यों देखना पड़ा।

यहां हमारे वामपंथी साथी बैठे हैं। आज आपके लिए भी आत्मचिन्तन का समय है। जरा सोचिए, सोमनाथ दा, जो कम्युनिस्ट विचारधारा पूरे विश्व से उखड़ती जा रही है आप उसे भारत में जमाने

की नाकाम कोशिश क्यों कर रहे हैं। अरे आपको मालूम है कि जो रैड फ्लैग रैड स्कैवैयर से उतारा जा चुका है, उसी रैड फ्लैग को आप भारत के रैड फोर्ट पर फहराने का सपना देख रहे हैं। यह सपना कैसे साकार होगा? उस विचारधारा का समय जा चुका है, लेकिन हमारे वामपंथी साथियों की एक तकलीफ यह है कि वे अपनी गलती को स्वीकार तो करते हैं, लेकिन समय निकल जाने के बाद। 1940 की गलती को 1947 में स्वीकार किया। सी॰पी॰आई॰ ने इमरजेंसी में कांग्रेस को समर्थन देने की गलती स्वीकार की, लेकिन इमरजेंसी के बाद। नेताजी सुभाष चन्द बोस को क्या-क्या कहा, अब उनकी स्वर्ण जयन्ती पर जाकर उनको माला पहनाते हुए वह गलती स्वीकार की। यह गलती भी आप स्वीकार करेंगे सोमनाथ दा कि कांग्रेस के समर्थन से बनी सरकार को प्राणदान देने का जो काम किया, यह आपकी भूल थी। यह आप स्वीकार करेंगे, लेकिन तब, जब समय निकल चुका होगा। तब पोलित ब्यूरो की एक मीटिंग होगी और उसमें प्रस्ताव पास होगा कि कामरेड मिस्टेक हो गया, गलती हो गया। तब समय जा चुका होगा। इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं कि यह कम्युनिस्ट विचारधारा का समय चुक गया है, समाप्त हो गया है। आज राष्ट्रवादी विचारधारा का समय भारत में शुरू हुआ है। इसके बाद इस देश में जो भी नीति चलेगी, वह चाहे आर्थिक नीति हो, विदेश नीति हो या राष्ट्र नीति हो, केवल राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित होगी। इस देश में इकनौमिक लिबरलाइजेशन भी होगा, तो पैट्रियोटिक फ्लेवर लेकर होगा। उसके बिना नहीं हो सकेगा। अब विकृत धर्मनिरपेक्षता पर आधारित नीति का समय खत्म हुआ।

अध्यक्ष महोदय, आज मुझे हैरानी भी होती है और दुख भी होता है जब श्रीनगर में बैठे हुए युनाइटेड फ्रंट के घटक दल सेना को बैरकों में वापस भेजने की वकालत तो करते हैं, लेकिन निर्दोष कश्मीरी पंडितों की जब हत्या होती है, तो उनकी मौत पर उनकी आंखें नम नहीं होती। मुझे दुख होता है कि बंगलादेश से होने वाली घुसपैठ की जस्टीफिकेशन इस सरकार के रक्षा मंत्री ह्यूमैनिटी के तर्क देत हैं, लेकिन अपने ही देश के अंदर बोलांगीर और कालाहांडी की भूख इन्हें दिखाई नहीं देती। इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि अब इस देश का राज राष्ट्रवादी शक्तियों के माध्यम से चलेगा। इस सदन में चूंकि संख्या आ चुकी है इसलिए तिकड़म भिड़ाकर या संख्या बल के आधार पर इस सदन में तो हमें विपक्ष में बैठाये रखा जा सकता है, लेकिन मैं एक भविष्यवाणी करना चाहती हूं कि अगला शक्ति परीक्षण (व्यवधान) जब भी होगा, तो भा॰ज॰पा॰ विरोधी शक्तियां राजनीति के हाशिए पर उतार दी जाएंगी और भारतीय जनता पार्टी वाले हम लोग देश के राजनीतिक पटल पर पन्ना-दर-पन्ना लिखते जाएंगे, बिना किसी पूर्ण विराम के, बिना किसी अर्धविराम के। यही चेतावनी देते हुए मैं इस विश्वास मत का विरोध करती हूं।

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष जी, सुषमा जी के विचार सुनने के बाद मुझे यह याद आ गया कि तेरह दिन की सत्ता जाने के बाद उनको कितना गहरा जख्म हुआ है। 10-11 महीने हो गए लेकिन वे भूल नहीं सकीं। जिन्होंने लोहिया जी के विचारों से अपने राजनैतिक प्रवास की शुरूआत की, कुछ दिन हम लोगों के साथ कांग्रेस में काम किया और भारतीय जनता पार्टी...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्रीमती सुषमा स्वराज : महोदय, यह बहुत खराब बात है।... *(व्यवधान)* यह ठीक नहीं है।

[हिन्दी]

श्री प्रमोद महाजन (मुम्बई-उत्तर पूर्व) : अगर सच है तो उल्टा है। शरद जी आठ साल मेरे साथ बैठे थे।...*(व्यवधान)*

श्री शरद यादव (मधेपुरा) : ये 10-15 साल समाजवादी पार्टी में रहकर वहां पहुंचे हैं। ये ठीक कह रहे हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : वह समर्थन नहीं कर रहे हैं। कृपया उन्हें बाधा न पहुंचायें।

[हिन्दी]

श्री भीमराव विष्णु जी बडाडे (कोपरगांव) : इनको कोई अधिकार नहीं है।...*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : आपने कितनी बार कांग्रेस छोड़ी थी। ...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार (बारामती) : मैंने कभी कांग्रेस नहीं छोड़ी थी, मैं जन्मभर कांग्रेस के विचारों के साथ ही रहा। आपको मालूम नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया इसे और अधिक जटिल न बनायें।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : आज प्रधानमंत्री श्री आई॰के॰ गुजराल सदन के सामने जो प्रस्ताव लाए हैं, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। यह समर्थन सास और ससुर के नाते से नहीं है, यह समर्थन सिद्धान्तों का पुरस्कार करने का समर्थन है, साझा कार्यक्रम का पुरस्कार करने का समर्थन है और इस देश में जिन शक्तियों के साथ मजबूती से लड़ाई करने की जरूरत है, उस काम के लिए यह समर्थन है, यह मैं शुरू में सदन के सामने रखना चाहता हूं।

पिछले 10-15-20 दिनों में देश में एक अलग तरह का वातावरण पैदा हुआ था।...*(व्यवधान)* सब बताता हूं, जरा सुनिए। लेकिन इसके लिए जब लोक सभा के चुनाव हुए थे, मुझे वहां तक जाना पड़ेगा। देश में पहली बार एक अजीब परिस्थिति पैदा हुई थी। किसी राजनैतिक दल को बहुमत नहीं था। इससे पहले हमने यहां इतने बड़े पैमाने पर अपने राजनैतिक दलों की प्रैजौंस कभी नहीं देखी और यहां सरकार बनने की परिस्थिति बिल्कुल नहीं थी। अटल जी ने प्रयास किया लेकिन सदन के बहुसंख्य सदस्य सतर्क थे और इसलिए तेरह दिन के बाद उनको राष्ट्रपति भवन में जाना पड़ा। हम सोचते थे कि देश में जो परिस्थिति पैदा हुई है, उस परिस्थिति से रास्ता निकालने के लिए संयुक्त सरकार का विचार आना स्वीकार करना पड़ेगा।

[श्री शरद पवार]

यह बात सच है कि कांग्रेस ने कई सालों तक अपनी संख्या और बल के ऊपर इस देश की जिम्मेदारी संभाली थी, मगर पिछले चुनाव की परिस्थिति अलग थी। देश के लिए एक स्थाई सरकार की जरूरत थी, जो एक आर्थिक नई दिशा देश के सामने कांग्रेस के नेतृत्व ने दी थी, उससे आगे जाने की जरूरत थी। देश की एकता मजबूत रखने की जरूरत थी, देश में स्वास्थ्य की जरूरत थी और इसी काम के लिए साझा कार्यक्रम और कुछ सिद्धान्तों के ऊपर, जहां समानता आ सकती है, ऐसे साथियों को मिलकर देश के सामने सरकार देने की जरूरत थी और यह काम हम सब लोगों ने किया था।

दुनिया में कई देशों में आज हम देखते हैं, जापान में देखते हैं, इजराइल, फिनलैंड, मलेशिया, यहां कोलिशन सरकार बड़ी अच्छी तरह से चालू हैं। मलेशिया की परिस्थिति और भारत की परिस्थिति में बहुत साम्य है। वहां भी अलग-अलग धर्म के लोग हैं, उनकी पार्टी हैं और वहां भी 14 पार्टियों की सरकार पिछले कई सालों से डा॰ महातिर के नेतृत्व में अच्छी तरह से काम कर रही है, उसने स्थिरता दी है और देश तरक्की के रास्ते पर जा रहा है। यह उदाहरण हम सब के सामने हैं।...*(व्यवधान)* सवाल पैदा होता है कि कई सालों से यूनाइटिड फ्रंट में शामिल होने वाली पार्टियों से कांग्रेस की कई स्टेट्स में लड़ाई होती थी, फिर भी हम लोग एक साथ आ गये। पहला कारण देशवासियों ने स्पष्ट बहुमत किसी को दिया नहीं था, दूसरा जो प्रधान मंत्री जी ने यहां कहा कि देश को स्टेबिलिटी चाहिए और खास तौर पर जब इण्टरनल स्टेबिलिटी चाहिए, तब सोशल जस्टिस और सैकुलरिज्म को शक्ति देने की जरूरत है और इसलिए सैकुलर फोर्सेज को मदद करने के लिए इस सरकार को समर्थन देने का काम हम लोगों ने किया था। तीसरा, देश को तरक्की करने के लिए, विषमता दूर करने के लिए, गरीबी दूर करने के लिए और एकता निर्मिती के लिए साझा कार्यक्रम की जरूरत थी। उस साझा कार्यक्रम पर हमने इस यूनाइटिड फ्रंट को समर्थन दिया था और हमारी यह विचारधारा है कि जब तक साझा कार्यक्रम लेकर सैकुलर फोर्सेज को मदद करके देश में एक स्थिरता हम पैदा नहीं करेंगे, तब तक देश गरीबी से दूर जा नहीं सकता, तरक्की के रास्ते पर नहीं जा सकता हैं।

कांग्रेस ने कोई डिमाण्ड रखे बिना यह समर्थन दिया था। इस समर्थन के बारे में हमने दस महीने में कुछ देखा। कुछ अच्छी बातें हुई, पहली बार हमने यह देखा कि रीजनल पोलिटिकल पार्टीज राष्ट्रीय स्तर पर आ गई और राष्ट्रीय दृष्टि से देश के बारे में सोच करने की शुरूआत रीजनल पार्टियों में हुई। मुझे लगता है कि देश के लिए यह बहुत अच्छी बात है। उस दिन अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो कहा था, उससे मैं पूरी तरह सहमत हूं। साथ-साथ यह भी एक बात माननी होगी कि पिछले 10 महीने में कुछ नीतियां रही, जैसे हमारे देश की विदेश नीति है, जिसमें देश में एक राय बनाने की कोशिश करने की पद्धति पंडित जवाहर लाल नेहरू से शुरू हुई थी, वह आज भी कायम रही। विकास के लिए जो आर्थिक कार्यक्रम की जरूरत है, उसको आगे ले जाने के लिए सहमति की आवश्यकता थी, वह सहमति बनाने में भी हम लोग कामयाब हो गए। सबसे खुशी की बात कांग्रेस के लिए यह थी कि जो आर्थिक नीति इस देश को नए रास्ते पर ले जाने के लिए देश के सामने रखी थी, वह आर्थिक नीति लेकर संयुक्त मोर्चा ने अपना कारोबार करने की शपथ ली थी। इसलिए हम सब लोग एक हो गए। सवाल आया कि क्यों हम दूर हो गए? विचारों से हम दूर हुए, ऐसी परिस्थिति ज्यादा नहीं थी। बात कुछ जरूर थी। एक बात माननी होगी कि संयुक्त सरकार चलाने के लिए जिस तरह की मानसिकता की जरूरत है, उस मानसिकता का अभाव हम संयुक्त मोर्चा में कुछ महीनों से देख रहे थे।

अपराह्न 12.21 बजे

(उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए।)

मुझे खुशी है कि देश के गृह मंत्री ने कुछ इंटरव्यू में और शायद राज्य सभा में भी एक बार कहा था कि संयुक्त सरकार चलाने का अनुभव हम लोगों को कम है इसलिए कुछ सवाल पैदा हो रहे हैं। संयुक्त सरकार चलाने के लिए जो मानसिकता की जरूरत है, उसका अभाव एक महत्वपूर्ण कारण था।

हमारे सामने दूसरा प्रश्न था कि जब संयुक्त सरकार चलाने की बात आती है, परिस्थिति पैदा होती है तब संयुक्त सरकार चलाने वाले नेता को समर्थन करने वाली पार्टी के साथियों को साथ लेकर चलने की कोशिश करनी चाहिए। जब धर्मनिरपेक्ष ताकतों को मजबूती देने के लिए कांग्रेस ने समर्थन दिया और पिछले दस महीनों में जब हमने देखा कि साम्प्रदायिकता का बढ़ावा हो रहा है, उसकी कीमत पूरे देशवासियों को आज नहीं तो कल देनी पड़ेगी, उनको रोकने के लिए जिस तरह के कदम उठाने की जिम्मेदारी संयुक्त मोर्चे के नेतृत्व की थी, उसमें कमियां आ रही हैं, अगर ऐसी ही परिस्थिति कायम रही तो देश का नुक्सान हो जाएगा इसलिए समर्थन वापस लेने का काम कांग्रेस को करना पड़ा।

तीसरी बात यह है कि सरकार में बैठे लोगों को प्रशासनिक यंत्र को साथ लेकर सरकार चलाने की कोशिश करनी चाहिए। हमने एक दिन देखा कि भारत के प्रधान मंत्री ने राज्य सभा में एक स्टेटमेंट दिया कि देश की ब्यूरोक्रैसी मेरी नहीं सुनती, मैं जो कुछ कहता हूं सचिव उस पर अमल नहीं करते, यह बात बिलकुल गलत है। जो राज चलाने वाले हैं, जब प्रशासन की पूरी जिम्मेदारी उनके हाथ में आती है, तब उनको प्रशासनिक यंत्र को साथ लेकर अपनी तयशुदा नीतियों पर अमल करना चाहिए। अगर घोड़े पर बैठने वाला सवार घोड़े पर ठीक तरह से नहीं बैठेगा तो घोड़ा ठीक रास्ते पर नहीं ले जा सकता। वही परिस्थिति यहां के नेतृत्व की हुई थी। इसलिए हमें कुछ कदम उठाने पड़े। एक सवाल और है कि जब सरकार चलाने की बात आती है, सरकार की जिम्मेदारी प्रशासन चलाने की होती है, मगर पिछले कुछ दिनों में कई राज्यों में, खासतौर पर जहां राष्ट्रपति का राज था वहां की हालत खराब हुई थी जिसको आदरणीय उपाध्यक्ष जी आपने भी अपने निर्णय में स्वीकारा था। यह परिस्थिति देश के लिए ठीक नहीं थी। इसलिए हमें सोचना पड़ा। हम लोगों को इस पर कोई निर्णय लेना पड़ा...*(व्यवधान)*

श्री राम नाईक : क्या उसमें था?

श्री शरद पवार : हां था। आपने पढ़ा नहीं था। आपने बिल्कुल नहीं पढ़ा है। आपको मालूम नहीं है, इसका उल्लेख था। उसमें आगे की परिस्थिति का भी उल्लेख था और खासकर उत्तर प्रदेश का उल्लेख था।...*(व्यवधान)* इसलिए समर्थन वापस लने के बारे में कुछ कदम उठाने पड़े। जब हम हमेशा सोचते हैं कि भारत को एकसंग रखना हो, उसकी इंटरनल स्टैबिलटी रखनी हो तो सोशल जस्टिस और सैकुलेरिज्म के बारे में हम कभी भी काम्प्रोमाइज नहीं कर सकते। लेकिन इस देश में यह साम्प्रदायिक शक्ति तेरह दिन की हुकूमत जाने के बाद फिर अपने रास्ते पर जाने लगी और परिस्थिति देश में कैसे खराब हो सकती है, इस बारे में कुछ कदम उठाने की तैयारी उन्होंने भी की थी।...*(व्यवधान)* पिछले साल जब मई के महीने में अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधान मंत्री बने थे तो अन्य पार्टीज का समर्थन प्राप्त करने के लिए भा॰ज॰पा॰ ने हिन्दुत्व की रामनामी उतार दी और उदारता का चेहरा दिखाया था। लेकिन तुरंत हुकूमत जाने के बाद जून में इस पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने अपने भोपाल अधिवेशन में अयोध्या के राम मंदिर के मामले को पुनर्जीवित करने की कोशिश की और मंदिर का निर्माण करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की तथा ऐसा प्रस्ताव भी किया था।...*(व्यवधान)* इस मंदिर के विवाद से भारत के कई राज्यों के बेकसूर लोगों को जबर्दस्त कीमत चुकानी पड़ी। मैं जिस स्टेट से आता हूं, स्टेट की जो मुम्बई राजधानी है, वहां की जो परिस्थिति थी, उसे हमारे कई साथियों ने देखा था। हजारों लोगों की वहां खून-खराबी हो गई थी। खून सड़क पर बहता था।... *(व्यवधान)* आपको मालूम नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवधान न डालें।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार ; आपको मालूम नहीं है। यह करने के लिए कौन जिम्मेदार है?...*(व्यवधान)*

कुमारी उमा भारती (खजुराहो) : आप हैं।...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : यह बात आज श्रीकृष्ण कमीशन के माध्यम से देश के सामने आ रही है और मुझे विश्वास है कि इसमें जो कोई गुनहगार हैं, उनका चेहरा देशवासियों के सामने आएगा। यह बात केवल मुम्बई तक सीमित नहीं थी। बल्कि मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और कई जगह पर इस तरह की खूनखराबी हुई थी। वहीं मंदिर का सवाल लेकर आज वही साम्प्रदायिक शक्ति देश की भावना को उत्तेजित करना चाहती है। हम लोगों को यह बहुत बड़ा संकट आज देश के सामने दिखाई दे रहा है।...*(व्यवधान)* ये साम्प्रदायिक शक्तियां बदलती परिस्थिति का चेहरा है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : उमाजी, कृपया बैठ जाइयें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जायें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया आप अपनी चर्चा जारी रखें।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : जब देश की हुकूमत चाहिए तब उनका चेहरा और उनका बोलना अलग होता है। यह हमने इस सदन में देखा था। विश्व हिन्दू परिषद ने मथुरा-काशी आंदोलन छेड़ने की कोशिश की और कृष्ण जन्मभूमि के लिए करोड़ों रुपया इकट्ठा करने का ऐलान किया था। तब भारतीय जनता पार्टी ने मथुरा-काशी पर मौन रखना शुरू किया।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जायें।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवधान न डालें।

[हिन्दी]

कुमारी उमा भारती : मैं विश्व हिन्दू परिषद की सदस्या हूं और उसके बारे में आपको मुझे सवाल करने का मौका देना पड़ेगा। उपाध्यक्ष जी, यह सदन के अंदर गलतबयानी कर रहे हैं।...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : मथुरा-काशी आन्दोलन छेड़ने की कोशिश विश्व हिन्दू परिषद् ने की थी और कृषि भूमि के लिए...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जायें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : उन्हें अपनी बात कहने दें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जायें।

(व्यवधान)

श्री संतोष मोहन देव (सिलचर) : महोदय, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप उनसे कहें कि वे व्यवधान न डालें ...*(व्यवधान)* मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी से भी अनुरोध करता हूं। हमने श्रीमती सुषमा स्वराज के भाषण में व्यवधान उत्पन्न नहीं किया...*(व्यवधान)* आप भी व्यवधान न डालें।

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री मृत्युञ्जय नायक : उपाध्यक्ष महोदय, जब सुषमा जी भाषण दे रही थी, तो हम लोगों ने इतनी टोका-टाकी नहीं की। जब हम लोग कुछ कह रहे हैं, अगर ये टोका-टाकी करेंगे, तो जब वाजपेयी जी बोलने के लिए खड़े होंगे, फिर हम भी उनको बोलने नहीं देंगे। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : मैं अपने दल के सदस्यों से कहूंगा, कोई माननीय सदस्य कितनी ही गलत बयानी करे, सदन को उसको सुनना चाहिए और अपना नम्बर आने पर उत्तर देना चाहिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : इस दल में मात्र आप ही एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार (बारामती) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहता था, विश्व हिन्दू परिषद् ने आन्दोलन छेड़ने की कोशिश की और कृष्ण जन्म-भूमि के जरिए करोड़ों रुपया जमा करने का एलान किया। इस बारे में चार फरवरी की 'हिन्दू' की रिपोर्ट है। यह ठीक है कि भारतीय जनता पार्टी ने उस समय मौन रहना पसन्द किया।... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जायें। कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

(व्यवधान)

श्री ए॰सी॰जोस (इंदुक्की) : वह समाचार पत्र से उद्धृत कर रहे हैं। यदि ऐसे ही व्यवधान डाला जाता रहा तो हम भी हस्तक्षेप करेंगे। वह समाचार से उद्धत कर रहे हैं। उन्हें उद्धृत करने की अनुमति दी जाए...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जायें। उन्हें कुछ कहने दें। छोटी-मोटी नोंक-झोंक समझ में आ सकती है, लेकिन रनिंग कमेट्री ठीक नहीं है। उन्हें समाप्त करने दें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य, कृपया अपना स्थान ग्रहण करें। आप सुनते क्यों नहीं हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री शरद पवार (बारामती) : ऐसी परिस्थिति में भारतीय जनता पार्टी ने मौन रहना पसन्द किया...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण करें। मैं आपको अनुमति नहीं देता हूं।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप अपने नेताओं की बात भी नहीं सुन रहे हैं। कृपया अपना स्थान ग्रहण करें। यह ठीक नहीं है।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : उन्हें कहने दें। पहले बोल चुका हूं।

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी (दमदम) : विपक्षी नेता यह कहें कि उनके सदस्यों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। वह खड़े होकर कहें कि उनका उन पर कोई नियंत्रण नहीं है।...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : भारतीय जनता पार्टी ने यह जरूर जाहिर किया था कि काशी और मथुरा हमारे एजैंडा में नहीं है। विश्व हिन्दू परिषद् के महामंत्री, आचार्य गिरिराज किशोर ने भी कहा था।

मुझे पक्का विश्वास है कि मथुरा और काशी भाजपा के एजेंडा पर नहीं, मगर हमारा आंदोलन लोकप्रिय आंदोलन बनेगा तब भाजपा उसमें कूद पड़ेगी। ऐसी ही पुराना आंदोलन भारतीय जनता पार्टी का है। जब विश्व हिन्दू परिषद का राम जन्म भूमि आंदोलन शुरू हुआ तो कई साल भारतीय जनता पार्टी चुप थी। मगर 1991 के आम चुनाव से पहले अपने पालनपुर अधिवेशन में भारतीय जनता पार्टी ने विश्व हिन्दू परिषद की इस मांग का समर्थन प्रस्ताव पारित किया था और रथ यात्रा निकाली। तब दंगे हो गए, खून-खराबे हो गए और जो कुछ छः दिसम्बर को होना था वह भी हो गया। यह भी सच है कि जसवंत सिंह जी जैसे भारतीय जनता पार्टी के कुछ नेताओं ने दिसम्बर, 1992 में जो भी अयोध्या में हुआ उसकी जिम्मेदारी कबूल की है। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। क्या श्री शरद पवार किसी दस्तावेज में से पढ़ रहे हैं या अपना भाषण तैयार करवा लाए हैं उसको पढ़ रहे हैं। उनके हाथ में क्या है, यह हम जानना चाहते हैं।...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार (बारामती) : मैं आपको देने के लिए तैयार हूं। ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : वह अपना रिप्लाई दे देंगे।

(व्यवधान)

श्री शरद पवार (बारामती) : जसवंत सिंह जी ने कबूल किया था और गलती पर उन्होंने मांग की थी, मगर मुझे याद है कि श्री एल॰के॰ आडवाणी या जिन्होंने भी 6 दिसम्बर के बाद जो कुछ हुआ वह ठीक नहीं हुआ था, इस तरह की बात देश के सामने रखी थी। मगर कुछ दिनों बाद मार्च, 1993 में मद्रास में एक उत्सव में उन्होंने कहा और यहां तक कहा कि स्वाधीनता का दिवस और छः दिसम्बर हमारे राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण दिन है।...*(व्यवधान)*

कुमारी उमा भारती : महोदय, आडवाणी जी सदन में मौजूद नहीं हैं।...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : भारत की एकता पर हमला हुआ। वह दिन देश का एक महत्वपूर्ण दिन है।...*(व्यवधान)* इस तरह से कहा गया और जो हमारा समर्थन है वह इसीलिए हमारा समर्थन था कि जो साम्प्रदायिक शक्ति देश की एकता के लिए संकट है, जिनकी कथनी और करनी में अंतर है, ऐसी शक्तियों के खिलाफ मजबूती से खड़े रहने की जरूरत थी। युनाइटेड फ्रंट के नेतृत्व वालों को ये जिम्मेदारी अपने पास रखने की जरूरत थी, मगर इस पर उनका ज्यादा ध्यान नहीं था। इनमें कई साथियों को गैर कांग्रेसवाद उससे ज्यादा पसंद पड़ता था, इसलिए उन्होंने इस साम्प्रदायिक शक्ति से भी कांग्रेस को कमजोर करने में बड़ा संतोष माना था। कई साथियों ने हमले किए थे, गैर कांग्रेसवाद को स्वीकार करके कांग्रेस पर जगह-जगह पर हमले किए। एक साथी ने तो कहा कि राजनीति में कांग्रेस और बी॰जे॰पी॰ को हम अछूत समझते हैं।...*(व्यवधान)*

श्री राम नाईक : आप नाम बताइए।...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : मुझे जरूरत नहीं है, आपको मालूम है। ...*(व्यवधान)* भारतीय जनता पार्टी के विचारों से, उनकी भूमिका से हम लोग दूर हैं और दूर रहेंगे। मगर राजनीति में हम अछूतापन मानना नहीं चाहते, अछूतापन मानने की भूमिका हम पसंद नहीं करते और अछूत कहना भी ठीक नहीं समझते। धर्मनिरपेक्ष विचारों पर प्रतिबद्धता रखने वाली कांग्रेस किसी को अछूत कहने के विचारों पर कभी सहमत नहीं हो सकती।

गैर-कांग्रेसवाद कहां तक गया, यह पिछले महीने में हमने देखा था। गैर-कांग्रेसवाद के नाम पर कांग्रेस पर प्रहार की परवाह हम लोगों ने नहीं की। लेकिन साम्प्रदायिक शक्तियों के खिलाफ हम सब लोग साथ आते हैं तब भी गैर-कांग्रेसवाद से छुटकारा नहीं हुआ तो इससे हमें दुःख हुआ। डा॰ राम मनोहर लोहिया जी ने कोटा अधिवेशन में कहा था कि गैर-कांग्रेसवाद हमारा सिद्धांत नहीं है यह एक रणनीति है। शायद मुलायम सिंह जी वहां रहे होंगे। मगर संयुक्त मोर्चा के कई साथियों की रण-स्थिति बदल जाने के बाद भी उस रणनीति से दूर जाने की उनकी तैयारी नहीं थी। इसलिए आज की परिस्थिति यहां तक आ गयी।...*(व्यवधान)* संयुक्त मोर्चा सरकार बनाते समय सेक्यूलर शक्तियों को ताकत देने की बात आई थी और कांग्रेस से समर्थन मांगा था तब अन-कंडीशनल सपोर्ट देने का काम कांग्रेस ने किया था। हमने कोई मांग नहीं की, कोई जगह नहीं मांगी। सुषमा जी, कई सालों से हम लोग हुकूमत में बैठे हैं इसलिए हुकूमत जाने का दुःख कांग्रेस को नहीं होता है। जब 13 दिन से आपको इतनी तकलीफ होती है तो 40 साल की कांग्रेस के बारे में आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। हमने कोई हिस्सा नहीं मांगा, हमने तो बाहर से समर्थन दिया था। बैकसीट ड्रॉइविंग की जिम्मेदारी भी हमने सीपीएम पर रखी थी। हमने इस बारे में कोई काम नहीं किया था, सत्ता में कोई हिस्सा नहीं मांगा था। मुझे खुशी है कि देवगौड़ा ने जिस दिन यहां जवाब दिया था उस दिन उन्होंने कहा कि —

[अनुवाद]

कांग्रेस ने सरकार के कार्यकरण में कभी दखल नहीं दिया।

[हिन्दी]

सरकार के फंक्शन में कांग्रेस ने कभी हस्तक्षेप नहीं किया। यह विधान यहां इस सदन में भूतपूर्व प्रधान मंत्री देवगौड़ा जी ने किया था। इसलिए हम चाहते थे कि साम्प्रदायिक शक्तियों के खिलाफ खड़ी होने वाली शक्तियां मजबूत होनी चाहिए। लेकिन कोलीशन सरकार चलाने के लिए जिस तरह की मानसिकता और माहौल आवश्यक है उसकी याद उनके मन में नहीं रही थी और खाली गैर-कांग्रेसवाद को बार-बार इस देश के सामने रखने का काम उन्होंने किया था।...*(व्यवधान)* कई नेताओं ने बहुत कुछ सवाल किये थे। कांग्रेस के 142 लोगों के समर्थन से यह सरकार चली थी लेकिन उसी पर छींटाकशी नेताओं ने की। किसी एक महोदय ने कहा कि समर्थन वापस लेंगे तो लोग जूते से मारेंगे। किसी ने कहा कि कहां जाएगी कांग्रेस, समर्थन देना उनकी लाचारी है। यह मानसिकता संयुक्त सरकार चलाने की मानसिकता नहीं है। इसलिए 16 फरवरी को कांग्रेस ने कांग्रेस कार्यकारिणी में प्रस्ताव पारित किया था और प्रस्ताव पारित करके सूचना दी थी। हमने पहले प्रस्ताव 4 नवम्बर को पारित किया था और 4 नवम्बर को यह कहा था :—

[अनुवाद]

> "राष्ट्रीय इतिहास की संकटपूर्ण घड़ी में हमने अपना समर्थन संयुक्त मोर्चा को दिया था और अब भी यह महसूस करता हूं कि धर्म निरपेक्ष दलों को एकजुट होकर साम्प्रदायिक ताकतों से लड़ने की आवश्यकता है। कांग्रेस इस लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रति अपनी जिम्मेवारी से वाकिफ है। तथापि, संयुक्त मोर्चा, जिसने धर्म-निरपेक्ष के प्रति अपनी वचनबद्धता का वायदा किया था, को समय के प्रति जवाबदेह होना चाहिए था। कांग्रेस के समर्थन को पक्का या दल की कमजोरी या बाध्यता नहीं समझना चाहिए। साम्प्रदायिक ताकतों से कांग्रेस ने हमेशा ही लड़ाई लड़ी है और भविष्य में भी लड़ती रहेगी। कांग्रेस संयुक्त मोर्चा से अनुरोध करता है कि वह अपने व्यवहार में परिवर्तन लाये और कांग्रेस को गाली देने के बजाय सुधारात्मक कदम उठाये और केन्द्र में सरकार बनाते समय देश के लोगों से जो वायदे किए थे, उन्हें पूरा करने की कोशिश करे। कांग्रेस कार्यकारी दल समय-समय पर स्थिति की समीक्षा करती रहेगी।"

[हिन्दी]

16 फरवरी को फिर एक नोटिस दिया गया और उसमें साफ तौर पर कहा था कि

[अनुवाद]

> "कांग्रेस कार्यकारी दल की यह बैठक संयुक्त मोर्चा से यह अनुरोध करती है कि वह अपने कार्य निष्पादन की जांच और आलोचनात्मक समीक्षा करे। उन्हें कांग्रेस के

[श्री शरद पवार]

समर्थन को शून्य या पक्का नहीं मानकर धर्मनिरपेक्ष ताकतों को एकजुट करना चाहिए। अतः, इस मुद्दे पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है। कांग्रेस कार्यकारी दल यह संकल्प करती है कि अब संयुक्त मोर्चा को कांग्रेस का समर्थन किसी शर्त पर आधारित न होकर मुद्दों पर आधारित होगा। कांग्रेस अध्यक्ष ऐसे मुद्दों पर सम्बद्ध नेताओं से बातचीत करने के लिए प्राधिकृत किए जाते हैं।"

[हिन्दी]

सवाल यह है कि सदन में यह कहना कि इसकी हमें सूचना नहीं मिली थी...*(व्यवधान)* वहीं मैं बताना चाहता हूं कि 16 तारीख को यह प्रस्ताव कांग्रेस कार्यकारिणी ने पास किया और 17 फरवरी को इस प्रस्ताव की कापी श्री एच॰डी॰ देवेगौड़ा, प्रधान मंत्री, 7 रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली पहुंची। उनके दफ्तर के सिग्नेचर मेरे पास हैं। बाकी सभी पॉलेटिकल पार्टीज जो इनके साथ हैं, वह उनको भी मिली थी। वह मिली नहीं है, यह कहना ठीक नहीं है। 30 मार्च को समर्थन वापस लेने का काम कांग्रेस ने एक दिन में नहीं किया। 16 फरवरी को प्रस्ताव पास हुआ और 30 मार्च को समर्थन वापस लेने का खत भेजा गया। कांग्रेस ने उन्हें डेढ़ महीने का समय दिया। हमने सोचा था कि वे डेढ़ महीने में रास्ता निकालने की कोशिश करेंगे लेकिन उनकी सोच गलत थी। वह ऐसा सोचते थे कि हमें कांग्रेस का समर्थन मिलता रहेगा। इसका कारण हमें समर्थन वापस लेना पड़ा। इसमें व्यक्तिगत झगड़ा किसी के साथ नहीं था, मगर खास तौर पर यूनाइटेड फ्रंट की सरकार का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति की ज्यादा जिम्मेदारी होती है। यह काम ठीक करने की जिम्मेदारी उनकी थी। इसमें कापियां आई और वे उसे दुरूस्त नहीं कर सके। इसलिए पूर्व सूचना देकर कांग्रेस ने कुछ कदम उठाया।

मुझे एक बात की खुशी है कि जो कुछ कदम हम लोगों ने उठाया और जो परिस्थिति पैदा हुई, उसका स्वागत करने में देश के गृह मंत्री श्री इन्द्रजीत गुप्त जी आगे आए थे। 'होम' टेलिविजन के इंटरव्यू में उन्होंने कहा

[अनुवाद]

यह 18 अप्रैल, 1997 के हिन्दुस्तान टाईम्स में प्रकाशित हुई है। मैं उसे उद्धृत करता हूं :—

"एक दूरदर्शन के साथ साक्षात्कार में गृह मंत्री श्री इन्द्रजीत गुप्त ने कांग्रेस के साथ संबंध रखने पर प्रधान मंत्री श्री एच॰डी॰ देवेगौड़ा के बर्ताव की आलोचना की है और कहा कि संयुक्त मोर्चा ने इस दल के साथ भविष्य में अपने संबंधों में सुधार करने के लिए एक संस्थागत तंत्र संबंधी में सुधार करने के लिए एक संस्थागत तंत्र संबंधों योजना के बारे में सूचित किया है। श्री गुप्त ने कहा कांग्रेस के साथ खराब संबंधों के लिए मुख्यतः जिम्मेवार प्रधान मंत्री हैं और यह माना कि श्री देवेगौड़ा संबंधों को सुधारने में असफल रहें। उन्होंने कहा श्री गौडा को अपेक्षित अनुभव नहीं है।

होम टी॰वी॰ के साथ एक साक्षात्कार, जिसका पहला भाग शुक्रवार को प्रसारण किया जाएगा, में करण थापड़ के साथ एक भेंटवार्ता, जिसमें कार्यक्रम के एक विशेष संस्करण में श्री गुप्त ने कहा कि यद्यपि कांग्रेस दल ने उपेक्षा का भाव व्यक्त नहीं किया है, हमें इसकी कल्पना करनी चाहिए थी। साक्षात्कार में गृह मंत्री ने यह भी स्वीकार किया है कि कांग्रेस दल के प्रति उनकी आलोचना का उन्हें दुःख है और व्यक्तिगत तौर वह यह कोशिश करेंगे कि भविष्य में उनके प्रति विनम्र और व्यवहार कुशल रहें। उन्होंने कहा था कि कांग्रेस का समर्थन पक्का मान लिया गया था और आगामी प्रधान मंत्री को यह सुझाव दिया कि कांग्रेस दल के साथ 'अक्सर और व्यापक' विचार विमर्श किया जाना चाहिए।"

[हिन्दी]

पूछा गया कि उचित तंत्र क्यों, वगैरह-वगैरह कहने को तो बहुत कुछ है मगर मैं तो कुछ ज्यादा कहना नहीं चाहता। इसलिये जो कुछ हो गया, हो गया।

[अनुवाद]

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी (हावड़ा) : श्री इन्द्रजीत गुप्त हमेशा सच बोलते हैं और वह बिना किसी डर के बोलते हैं।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : उपाध्यक्ष जी, यहां पर कुछ साथियों ने बताया कि 11 तारीख को आप क्यों नहीं बोले? सवाल यह था कि हमारी यहां पर भूमिका स्पष्ट थी कि संयुक्त मोर्चा की सरकार चलनी चाहिये। नेतृत्व की तरफ से जो कमियां आई हैं, उसपर विचार कर उनको स्वीकार करना चाहिये और आगे के लिये भी नेतृत्व बदलने के बाद पूरी ताकत से हम उनको सहयोग देने की मनःस्थिति में आज हैं, तो कल भी रहेगी, इसमें कोई दो राय नहीं हैं। पिछली बार जब इस सदन में बहस हुई तो हम लोगों को दोनों तरफ से कटघरे में रखकर हमला हो रहा था, तब भी हम लोगों ने शान्ति दिखाई ताकि आगे जो सरकार बनने की प्रक्रिया है, उसमें कोई रूकावट नहीं आनी चाहिये। इन सब बातों का फायदा जो साम्प्रदायिक ताकतें उठाना चाहती हैं, हमें पूरा विश्वास है कि इस देश की जनता इन साम्प्रदायिक ताकतों को कभी कोई मोका नहीं देगी। इससे पहले भी हमने देखा है और भले ही ये लोग यह कहते हैं कि वहां से यहां आने के लिये कोशिश करेंगे मगर ये इससे आगे नहीं जा सकेंगे, इस बात पर हम लोगों को पूरा विश्वास है...*(व्यवधान)* हम लोगों की भूमिका उस सदन में कटुता टालने की थी।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवस्था बनाये रखें।

श्री शरद पवार : हम लोगों के आपस में ठीक रिश्ते रहने की जरूरत थी और इसीलिये हम लोगों ने उस दिन सदन में संयम दिखाया और मुझे खुशी है कि आज के प्रधानमंत्री उस दिन जब बोले या श्री चिदम्बरम जी ने अपने विचार रखे तो दोनों के भाषण संयम को दर्शाने वाले थे। हमारे कुछ साथियों के विचार अलग थे जिनमें श्री पासवान, श्री इन्द्रजीत गुप्त और श्री सोमनाथ बाबू थे। उनका जो रवैया दिखाई दिया, मैं उनको दोष नहीं दूंगा क्योंकि साम्प्रदायिक ताकतों या गैर-कांग्रेसवाद के साथ लड़ाई का विचार शायद बचपन से उनके दिमाग में आया है। मैं यह समझ सकता हूं। मुझे खुशी है कि श्री इन्द्रजीत जी अब बदल रहे हैं और मैं इस बदलाव का स्वागत करता हूं। इन सब परिस्थितियों को देखने के बाद जो हो गया, वह हो गया।

उपाध्यक्ष जी, आज गुजराल जी जैसे समझदार व्यक्ति देश की बागडोर संभालने के लिये आगे आये हैं। मैं उन युनाईटेड फ्रंट के साथियों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने श्री गुजराल जैसे व्यक्ति का सलैक्शन किया। अब प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी उनपर है जो अनुभवी प्रशासक हैं। उनकी सकुलरिज्म और डैकोक्रेसी के बारे में प्रतिबद्धता है। वे कई वर्षों से सांसद रहे हैं जिनको देश-विदेश की राजनीति का गहरा अनुभव है। वे एक विनयशील व्यक्ति हैं और हमारा विश्वास है कि उनके नेतृत्व में सैकुलर फोर्सेज मजबूत होगी।

इसलिए हम उनको पूरी ताकत से समर्थन देंगे और जिस तरह से उन्होंने आज शुरूआत की, इसी तरह से उनका काम हमेशा रहेगा, और हमारा समर्थन इस लोक सभा के पूरे समय तक इनको रहेगा और आगे जो राजनीति चलनी है, वह करने में भी उनको ठीक तरह से सहयोग देने का काम कांग्रेस की तरफ से होगा। इतना ही कहकर इस मोशन का समर्थन करके मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, यदि मैं अपना भाषण अब शुरू करूं तो बीच में व्यवधान आ जाएगा। अतः कृपया मध्याह्न भोजन के लिए अब सभा स्थगित कर दें और मैं अपना भाषण मध्याह्न भोजन के उपरान्त शुरू करूंगा।

अपराह्न 12.56 बजे

तत्पश्चात लोक सभा मध्याह्न भोजन के लिये अपराह्न 2.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।

अपराह्न 02.04 बजे

मध्याह्न भोजन के पश्चात् लोक सभा अपराह्न 02.04 बजे पुनः समवेत हुई।

(उपाध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए*)

श्री सोमनाथ चटर्जी : उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव के समर्थन में खड़ा हूं। मैं उन्हें व उनकी सरकार को शुभकामनाएं और समर्थन देता हूं जिससे सरकार लोगों से किए गए अपने वायदे पूरे कर सके।

महोदय, मुझे पूरी उम्मीद और विश्वास है कि तमिल मनिला कांग्रे के हमारे दोस्त सरकार में जरूर शामिल होंगे और मुझे विश्वास है कि चिदम्बरम ने सत्ता पक्ष की प्रथम पंक्ति में अपने आरक्षित स्थान पर जाकर सही स्थान चुना है।

मेरे पास छिपाने वाली कोई बात नहीं है। मीडिया का कुछ भी विचार रहा हो या तमिल मनिला कांग्रेस के मेरे दोस्तों के दिमाग में कोई भी बात हो सकती है, परन्तु मैं सभी से और देश से यह कह सकता हूं कि हमारे नेता कामरेड ज्योति बसु ने स्वयं जाकर श्री मूपनार से बात की और उनसे सरकार में शामिल होने का अनुरोध किया। मुझे भी श्री चिदम्बरम से बात करने का मौका मिला था। सम्भवतः, पिछले दो दिनों में मैंने कई अवसरों पर बात की। यह किसी वस्तु के आगे या किसी व्यक्ति के आगे झुकने वाली बात नहीं है क्योंकि जहां तक वर्तमान सरकार का सम्बन्ध है हम वर्तमान परिस्थितियों से संघटनात्मक शक्तियों द्वारा निपटना चाहते हैं। इसलिए मैं पूर्ण विश्वास रखता हूं कि इस पर पुनर्विचार होगा और जल्दी ही श्री चिदम्बरम देश के वित्त मंत्री के कठिन कार्य को फिर से सम्भालेंगे और वित्त विधेयक को प्रस्तुत करेंगे।

महोदय, आज सुबह सभा में दूरदर्शी भाषण के लिए मैं प्रधानमंत्री महोदय को बधाई देना चाहता हूं। जब मैं उन्हें सुन रहा था, मुझे महसूस हुआ कि यह वह भाषण था जिसे हम हमारे विश्वास और वचनबद्धता का प्रतीक और देश के लोगों के लिए आशा की किरण मान सकते हैं।

महोदय, माननीय प्रधान मंत्री ने कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों का उल्लेख किया और उनसे निपटने के लिए सरकार के संकल्प को व्यक्त किया। उन्होंने जिन मुद्दों की बात की, उसमें से विशेष रूप से सामाजिक न्याय, देश की आर्थिक प्रगति का मैं उल्लेख करना चाहूंगा। उन्होंने महिलाओं की समस्याओं का भी उल्लेख किया और महिलाओं के विकास में सहायता के अपने संकल्प का उल्लेख किया। उन्होंने शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता के बारे में कहा। उन्होंने पर्यावरण के प्रति अपनी चिन्ता दर्शायी। उन्होंने गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को जारी रखने के अपने संकल्प के प्रति वचनबद्धता दर्शायी। उन्होंने जनसंख्या वृद्धि पर अपनी चिन्ता दर्शायी जो कि उन समस्याओं में से एक है जिसका सामना देश कर रहा है। उन्होंने विदेश नीति के बारे में बात की जो कि सर्व सम्मति पर आधारित है। उन्होंने पारदर्शिता और उत्तरदायिता के प्रति अपनी वचनबद्धता दी। उन्होंने अपनी वचनबद्धता दी कि किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा और जो भी दोषी होगा, उसे सजा दी जाएगी। उन्होंने कृषकों और कार्मिकों, पर विशेष जोर दिया। उन्होंने देश में स्थायित्व, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय की आवश्यकता पर जोर दिया और उन्होंने सत्ता को चलाने में भी सर्वसम्मति की अपील की।

महोदय, मैं जानना चाहूंगा कि इसके कौनसे भाग से भाजपा सहमत नहीं है। भाजपा के मेरे दोस्तों ने उसको अस्वीकार कर दिया।

[श्री सोमनाथ चटर्जी]

इसकी ओर बनाए गये सहयोग के हाथ को उन्होंने झटक दिया क्योंकि भाजपा सहयोग में विश्वास नहीं रखती है। वह केवल संघर्ष में विश्वास रखती है। वे महसूस करते हैं कि वे उससे ही कुछ लाभ उठा पाएंगे।

महोदय, मैं बिना किसी बाधा, जैसी उस ओर से उत्पन्न किए जाने के हम आदी है, के श्रीमती सुषमा स्वराज के जोरदार भाषण को सुन रहा था। अब, महोदय, टेलिविजन पर प्रसारण हम में से कईयों को प्रोत्साहित कर रहा है। सभा में हमारे प्रदर्शन में नाटकीय भी एक तत्व बन गई है।

कुछ लोग ज्यादा कुशल हैं और कुछ लोग कम कुशल हैं। मेरे जैसा आदमी तो, जहां तक नाटकीयता का सम्बन्ध है, पूरी तरह असफल होगा। परन्तु मुझे एक भी ऐसा शब्द नहीं मिला जहां उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा दी गई वचनबद्धताओं का प्रतिवाह किया हो या उनके द्वारा उल्लेखित किए गए किसी मुद्दे का प्रतिवाद किया हो। उन्होंने उन सब बातों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। उन्होंने यह नहीं कहा कि माननीय प्रधानमंत्री द्वारा व्यक्त की गई नीति का वह कौन सा भाग है जिससे भाजपा सहमत नहीं है। बेशक, उन्होंने हमें उपदेश दिया। मैं उनमें से कुछ दोहराता हूं।

आजकल भाजपा प्रजातंत्रिक राष्ट्रीय मोर्चा और साथ ही राष्ट्रीयता की बात करती है जैसे कि वह उनका एकाधिकार हो और जैसे कि राष्ट्रीयता की उनकी वचनबद्धता उनका एकाधिकार है। हम भी राष्ट्रवादी हैं। परन्तु हम शक्तिशाली, प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष भारत की बात करते हैं परन्तु भाजपा नहीं करती।

श्री सनत मेहता : अब उन्हें इस बात का अहसास हुआ है।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं समझ सकता हूं कि वे क्यों उद्विग्न है। मैंने प्रस्ताव किया था और यहां उपस्थित कुछ मित्रों नें भी ऐसा प्रस्ताव किया था कि इस विश्वास मत प्रस्ताव को बिना किसी बहस के पारित किया जा सकता है क्योंकि दस या ग्यारह दिन पहले ही उस दिन हमने बड़ी सुदीर्घ चर्चा की थी। परन्तु भाजपा इस बात पर अड़ी रही और इस ओर के मेरे कुछ मित्रों को, मेरे विचार से, उस के प्रति उनके विरोध पर पुनर्विचार करना पड़ा। किसी तरह, हम यह चर्चा कर रहे हैं। परन्तु अब मैं समझ सकता हूं कि वे विरोध करने में इतने प्रचण्ड क्यों थे। ऐसा इसलिए क्योंकि उन्हें एक बार फिर से पता चला कि देश की धर्म निरपेक्ष ताकतों नें एक बार फिर प्रदर्शित किया कि वे एक नेता के नेतृत्व में एकजुट रहना चाहते है परन्तु वे देश के धर्मनिरपेक्ष ढांचे को बनाए रखने के प्रति वचनबद्ध है और किसी भी परिस्थिति में रूढ़िवादिता के समक्ष झुकेंगे नहीं।

भाजपा के मेरे दोस्त यह नहीं समझते हैं कि इतनी बड़ी संख्या में दल – पूरी तरह से भिन्न – हमारी अलग-अलग नीतियां हैं, अलग कार्यक्रम हैं और अलग विचारधाराएं हैं – इस सरकार को भीतर और बाहर से क्यों समर्थन दे रहे हैं और वो क्यों चाहते हैं कि यह सरकार चले और न्यूनतम साझा कार्यक्रम में किए अपने वायदों को पूरा करें। भाजपा इस तथ्य पर ध्यान देना नहीं चाहती कि इस देश में कई राजनीतिक दल हैं जो एक बड़े बहुमत का निर्माण करते हैं – कांग्रेस के सदस्यों और इस ओर बैठने वाले सदस्यों द्वारा देश के कम से कम 75 प्रतिशत जनता का प्रतिनिधित्व किया जाता है, और यह अन्य पक्ष – देश में फैलाए गए सांप्रदायिक दुष्प्रचार से प्रभावित नहीं हुए और देश में धर्मनिरपेक्ष ताकतों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एकजुट रहे। इसलिए हम भाजपा के अपने मित्रों से कहना चाहते हैं कि 'कृपया इस तथ्य पर ध्यान दें।' आप लोग किसी गणित के अनुसार आज सबसे बड़ी पार्टी होंगे परन्तु आप देश की जनता के सबसे बड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। आपके पक्ष में मतदान कुल मिलाकर 25 प्रतिशत से ज्यादा नहीं है। अभी श्रीमती सुषमा स्वराज ने कुछ उपचुनावों का उल्लेख किया और वे कहती है वे देश का एकमात्र संघटनात्मक दल है।

हम गुजरात में देख चुकें है कि 70 वर्षों से भी अधिक वृद्ध सज्जन अपनी नग्नता को छुपाने के लिए लड़ रहे थे। किसी को उन्हें धोती देना पड़ा था और वह भी भाजपा के शीर्ष के नेताओं की उपस्थिति में।

श्री सनत मेहता : उन्हें एक बैनर दिया गया था।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं नहीं जानता कि बाद में उन्होंने आप का पीछा किया या आपने उनका पीछा किया। मुझे आशा है आपने उनका पीछा नहीं किया होगा।

श्री सनत मेहता : उन्होंने आपका पीछा किया था।

श्री सोमनाथ चटर्जी : हां। उन्होंने मेरा पीछा किया और नग्नता छिपाई।

यह बात है। एक राज्य आपके नियंत्रण से बाहर है। राजनीति के विद्यार्थी के रूप में, मुझे दुख है कि दल व्यक्तियों के आधार पर बार बार विभाजित हो रहे हैं न कि नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर।

परन्तु ऐसा आपके दल में हुआ। आप विलाप कर रहे हैं। यह सरकार या अच्छी कोई भी सरकार कैसे चलेगी यदि यह संघटनात्मक नहीं है। आप कैसे अपेक्षा करते हैं कि 13 दल एक साथ रहे। उनके पूर्णतः भिन्न कार्यक्रम हैं, भिन्न महत्वाकांक्षाएं हैं। इसमें क्षेत्रीय पार्टियां भी है जिन्होंने कभी भी राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम नहीं चलाए हैं। उनकी महत्वाकांक्षाएं पूरी तरह भिन्न हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि हमें इसे चलाना है और कतिपय बुनियादी मूल्यों को कायम रखना है। इसी कारण, कांग्रेस पार्टी के साथ हमारे रूढ़िगत भिन्नताओं के बावजूद– सभी इस बात को जानते हैं, इसे छुपाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है – हम चाहते हैं कि कम से कम ऐसी सरकार होनी चाहिए जो संवैधानिक आदेश में विश्वास रखती हो, जो देश के धर्म निरपेक्ष ढांचे में विश्वास रखती हो, जो न्यूनतम साझा कार्यक्रम के कार्यान्वयन का समर्थन करें जिस पर हम कुछ स्वीकार्यता को प्राप्त करने में समर्थ रहे। हमें कम से कम ऐसा तो करने दीजिए। इस देश के केन्द्र दिल्ली में एक राजनीतिक शून्यता या प्रशासनिक शून्यता को नहीं ला सकते हैं। एक सरकार होनी चाहिए।

आप किस प्रकार की सरकार चाहते हैं? हमें हमेशा यह याद दिलाया जाता है कि हमने जनबूझकर 28 मई को एक गम्भीर अपराध किया है। आज फिर से इसका उल्लेख सुषमा जी ने किया। मेरे मतानुसार 28 मई राष्ट्रीय निर्णय का दिन है क्योंकि उस दिन वाजपेयी सरकार गिरी थी। वे मेरे विचार से सहमत नहीं होंगे। परन्तु उन्हें सरकार में बनाए रखने के लिए मेरी क्या प्रतिबद्धता थी? हम हमेशा कहते रहे कि हम भाजपा सरकार को गिराना चाहते हैं। हां, मैं चाहता था कि उनकी सरकार गिरे। मैं हर समय इस बात के लिए संघर्ष करूंगा कि वो फिर से सत्ता में वापस न आएं। मेरे मन में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के प्रति सम्मान, भावना के बावजूद भी मैंने यह कहा। मैं कह चुका कि उन्हें स्थायी रूप से भूतपूर्व प्रधान मंत्री बनाया या रहने दिया जाय और मेरे कुछ मित्रों को स्थायी भूतपूर्व मंत्री बना दिये जाएं।

[हिन्दी]

श्रीमती भावनाबेन देवराज भाई चिखलिया (जूनागढ़) : यह तो समय बताएगा।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : मुझे वो 13 दिन याद है। यहां तक कि हमारे अच्छे मित्र श्री सिकन्दर बख्त ने चार दिन गंवा दिए क्योंकि वो उस कार्यालय को नहीं गए जो उनके लिए चुना गया था। उन्हें अपने हथियार डालने पड़े थे। मैं उनसे देश को बताने के लिए कहता हूं। उन्होंने उन 13 दिनों में अपनी अल्पमत सरकार को चलाने के उद्देश्य से लोगों को अपनी ओर मिलाने की कोशिश करने के सिवाय और क्या किया। मुझे वह सूचना मिली थी। वाजपेयी जी ने अल्पाहार विश्राम के समय यह कहते हुए अपना धारा प्रवाह भाषण रोक दिया था कि हमें इससे छुटकारा चाहिए। उन्होंने एनरॉन परियोजना को अनुमोदन दिया था। मैं किसी दुर्भावना से यह सब नहीं कह रहा हूं। परन्तु उस दिन उन्होंने किस प्रकार की शासन पद्धति को दर्शाया था। उस दिन उन्होंने किस प्रकार की वचनबद्धता का प्रदर्शन किया था। वे जानते थे कि वे अल्पमत में हैं। उन 13 दिनों के प्रत्येक पल वे जानते थे कि वे अल्पमत में है। कुल मिलाकर, मैं पहले भी कह चुका हूं कि जहां तक मेरा एक संवैधानिक इतिहास के विद्यार्थी के रूप में सम्बन्ध है, वह एक बुरा दिन था जब कि राष्ट्रपति जी को अपना आश्वासन दिये बिना कि वे बहुमत के समर्थन को प्राप्त करने की स्थिति में होंगे, आप सरकार बनाने के लिए सहमत हो गए। उन्होंने सरकार भी बनाई थी। उन्होंने 13 दिन बाहरी समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया और वे समर्थन प्राप्त नहीं कर सके। अन्ततः, वाजपेयी जी में इतना साहस भी नहीं था कि वे सभा में मत विभाजन का सामना करते। 28 मई के बारे में विलाप करने में अच्छी बात क्या है। क्या हुआ था? क्या वे यह अपेक्षा कर रहे थे कि सी॰पी॰एम॰ उनका समर्थन करेगी? क्या वे यह अपेक्षा कर रहे थे कि जनता दल उनका समर्थन करेगा? मैं नहीं जानता कि क्या उन्होंने ऐसा सोचा होगा कि कांग्रेस उनका समर्थन करेगी।

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : वे ऐसा सोच भी नहीं सकते।

श्री सोमनाथ चटर्जी : श्री संतोष मोहन देव का कहना है कि उनको ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए।

[हिन्दी]

श्री रघुनंदन लाल भाटिया (अमृतसर) : उनसे कोई झगड़ा नहीं है, वे यहां रह सकते हैं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : बहुत-बहुत धन्यवाद। आपको मुझे याद दिलाने की आवश्यकता नहीं थी। मैं उसी बात पर आ रहा हूं।

हां। मैं जानता हूं, मुझे यहां उपस्थित होने का विशेषाधिकार मिला है। मैं संसदीय राजनीति में नौसिखिया हूं और मुझे श्री वी॰पी॰ सिंह के घर पर उपस्थिति दर्ज कराने का बहुत अनुभव है।

श्री संतोष मोहन देव : प्रत्येक गुरूवार को नाश्ते पर।

श्री सोमनाथ चटर्जी : नाश्ते पर नहीं, रात्रिभोज पर।

श्री संतोष मोहन देव : रात्रिभोज।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप रात्रिभोज से ईर्ष्या क्यों करते हैं? आपने काफी समय तक अनुमति नहीं दी थी...*(व्यवधान)*

श्री वी॰पी॰ सिंह के घर पर हम क्या कर रहे थे। हम यह चर्चा करने का प्रयास कर रहे थे कि क्या किया जाना चाहिए : हम किसी प्रकार का समन्वय स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे, किसी प्रकार की कामचलाऊ व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे क्योंकि आप जानते हैं वे आपातकाल के परिणामी दिन थे। देश के लोगों ने कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर दिया था...*(व्यवधान)*

कई माननीय सदस्य : नहीं, नहीं...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : हो सकता है आपातकाल के काफी दिनों बाद। परन्तु वो तब भी वहां पर भी।

श्री मृत्युंजय नायक : दादा ने भी यही कहा। आपको उनके साथ शामिल होना चाहिए था परन्तु कांग्रेस के साथ नहीं...*(व्यवधान)*

श्री राम नाईक (मुम्बई-उत्तर) : गलत वकालत कर रहे हैं ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : बहुत-बहुत धन्यवाद। वैसे भी मैं बूढ़ा हो रहा हूं। मैं बूढ़ा हो चला हूं। आजकल हम इतने निकट है कि कांग्रेस का प्रभाव मुझ पर भी पड़ रहा है।

यह तथ्य है, श्री वी॰पी॰ सिंह की सरकार से भाजपा ने अपना समर्थन वापस लिया था और उसी दिन, जैसाकि आपने 11 अप्रैल को किया था, आपने कांग्रेस के साथ मिलकर उस सरकार को सत्ता से बाहर करने के लिए मतदान किया। तो फिर आज आपके क्या उपदेश हैं? वे श्री वी॰पी॰ सिंह सरकार को सत्ता से बाहर करने के लिए कांग्रेस के साथ मिलकर मतदान सकते थे। वे उसी दिन श्री देवेगौड़ा सरकार को गिराने के लिए कांग्रेस से मिल सकते हैं। आज जब हम सरकार में शामिल हुए बिना धर्मनिरपेक्ष ढांचे को बनाए रखने के उद्देश्य से एकजुट हुए हैं तो वो मुझे उपदेश दे रहे हैं। क्या वे ऐसा समझते हैं

[श्री सोमनाथ चटर्जी]

कि देश की जनता इस बात को स्वीकार करेगी। उन्होंने अपनी आशाओं और आकांक्षाओं को व्यक्त किया है...*(व्यवधान)*

महोदय, सुषमा जी ने कहा कि कांग्रेस का समर्थन निश्चित नहीं है। यहां ऐसी स्थिति हो सकती है। क्या किया जा सकता है? मैं अभी नहीं जानता हूं कि उन्होंने समर्थन वापस क्यों लिया था। आज श्री शरद पवार ने पूरा प्रयास किया है। उन्होंने कुछ कहा है। फिर भी इसका फैसला उन्हें कराना है। मुझे याद है पिछली बार भी, ११ अप्रैल को मैंने उनसे अपील की थी कि यदि उनके पास कोई मुद्दा है तो मेरे पास आकर मुझसे चर्चा करें। परिपक्व व्यक्तियों के समान उनको टेबल पर आमने-सामने बैठकर निर्णय लेना चाहिए था। मैं यह कह चुका हूं। हम सभी परिपक्व व्यक्ति है।

श्री संतोष मोहन देव : आपने नहीं समझा कि हमने क्यों समर्थन वापस लिया। क्या आपने समझा उन्होंने क्यों समर्थन वापस लिया? अब इसे सुलझाने की कोशिश कीजिए।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप मुझे उत्तेजित नहीं कर सकते।

श्री मृत्युंजय नायक : आप पहले से ही उत्तेजित हैं ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : उपाध्यक्ष महोदय, उन्होंने इस सरकार की आर्थिक नीति का उल्लेख किया है। आजकल हम समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि इस सरकार की नीतियों का आडवाणी जी प्रबल समर्थन करते हैं। डॉ॰ मुरली मनोहर जोशी को कुछ हिचक है, मैं जानता हूं। कुछ मामलों में हम सहमत हो रहे हैं। मैं नहीं जानता, इसके लिए उनकी पार्टी में उनकी क्या स्थिति है।

डॉ॰ मुरली मनोहर जोशी (इलाहाबाद) : हमारी पार्टी एकमत है...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : विभाजन है। जहां पर विभाजन होता है, वहां पर विचारों में भिन्नता हो सकती है...*(व्यवधान)*

डा॰ मुरली मनोहर जोशी : आप इस सरकार की नीति से ज्यादा सहमत दिखते हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : एक या दो मुद्दों पर। हां, क्योंकि आप आपकी पार्टी की मुख्यधारा से अलग है।

श्रीमती सुषमा स्वराज ने श्री चिदम्बरम के शिशु के प्रति गम्भीर चिन्ता दर्शायी है। मां के कहीं और व्यस्त होने के कारण पिता ने शिशु को त्यागा नहीं है। हमें शिशु की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। आज की तारीख में माता पिता को मनाने में सफल हो गई है और पिता आएंगे और सदन में अपना स्थान ग्रहण करेंगे। परन्तु तथ्य यह है। इस सरकार की आर्थिक नीति के प्रति उनकी आपत्तियां क्या हैं? कुछ शंकायें हैं।

आज यह एक राष्ट्रीय मांग है कि हमें कार्य करने के लिए, सरकार बनाने के लिए एक समान न्यूनतम आधार तलाशना होगा। वे यहां की साझा राजनीति के साथ संगति बिठाने में असमर्थ हैं परन्तु वे क्या कर रहे हैं। मैंने अपने पिछले भाषण में उल्लेख किया था कि वे स्वयं विभिन्न राज्यों में विभिन्न पार्टियों के साथ तरह-तरह की व्यवस्थाओं में सम्मिलित हो रहे हैं। वे अब एक 'राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक मोर्चे' की बात कर रहे हैं, इसमें टी॰एम॰सी॰ को शामिल करना चाहते हैं और सभी को इसमें समाविष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। ये 'राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक मोर्चा' किन घटकों से बनेगा। इसमें कौनसी पार्टियां हैं, इस प्रकार वे स्वयं भी साझा संघटन बनाने का प्रयास कर रहे हैं। वे वास्तव में साझा राजनीति को कार्यरूप प्रदान कर रहे हैं।

पश्चिम बंगाल में, पिछले बीस वर्षों से हम साझा सरकारें चला रहे हैं और अब भी ये सिलसिला जारी है। मेरी पार्टी, सी॰पी॰आई॰ (एम) प्रत्येक बार सरकार अपने बूते पर बना सकती है परन्तु हमने ऐसा नहीं किया। हमारे पास वामपंथी राजनीति का व्यापक आधार है। वामपंथी पार्टियां एक जुट हुई। बीस वर्ष हम ऐसा करने में समर्थ रहे।

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता-दक्षिण) : वहां आपको बहुमत प्राप्त है।

श्री सोमनाथ चटर्जी : हां, हमें पूर्ण बहुमत प्राप्त है। यह सही है। परन्तु वहां अन्य पार्टियां भी हैं। वे पश्चिम बंगाल सरकार के माननीय मंत्री है। इसलिए इन वास्तविकताओं को स्वीकारना होगा।

वे स्वयं इसका अनुसरण करते हैं, परन्तु वे दूसरों को, देश को प्रवचन देते हैं। इसको समझना कठिन है। वे आशा कर रहे हैं कि यदि किसी तरह जल्द ही चुनाव होते हैं तो वे उससे लाभान्वित होने की कल्पना कर रहे हैं। ऐसा इस सोच के कारण कि वे चाहते हैं कि देश में प्रत्येक वर्ष चुनाव होने चाहिए। यही चिन्ता हम व्यक्त करते हैं। हम कहते हैं कि वामपंथी पार्टियां चुनावों का सामना करने के विरोध में नहीं हैं। परन्तु क्या यह देश के लिए अपेक्षित है? हम इतना धन खर्च करते हैं। सभी प्रकार की विकास प्रक्रियाएं रुक जाती है क्योंकि प्रत्येक बार जब चुनावों की घोषणा होती है तो दो या तीन महीनों तक कुछ भी नहीं किया जा सकता है। सरकार को नए नीति निर्णय, विकास पर किसी नई गतिविधि या कार्य को कार्यान्वित करने से रुकना पड़ता है। इससे किसको लाभ मिलेगा। यह केवल उनका सपना है। वे महसूस करते हैं कि-उनका एक सपना है-यदि चुनाव होते हैं तो वे सत्ता को वापस प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए हमने दूसरी पार्टियों के साथ मिलकर हमारे सिद्धांतों और नीतियों से समझौता किए बिना, यथासंभव, चुनावों को टालने का प्रयास किया।

यह आज की स्थिति है। श्री एच॰डी॰ देवेगौडा ने त्यागपत्र दे दिया; संयुक्त मोर्चा ने एक नेता चुना; हम अभी भी बाहर हैं; और कांग्रेस अभी भी सरकार से बाहर है। उन्होंने कहा कि वे सरकार का समर्थन करेंगे। मुझे खुशी है कि श्री आई॰के॰ गुजराल ने इस महत्वपूर्ण कार्यालय का कार्यभार सम्भाला। उन्हें देश में और बाहर से मिल रही प्रशंसा और समर्थन से, मैं समझता हूं, उन्होंने एक अच्छी शुरूआत की है और मैं इस सरकार को अपना समर्थन व्यक्त करता हूं।

श्रीमती सुषमा स्वराज आज कुछ अपनी भावनाओं में बह रही थी। उन्हें मेरी पार्टी, हमारे सिद्धांतों, हमारी वचनबद्धताओं, हमारी नीतियों और हमारा क्या होगा इस की बड़ी चिन्ता है। उन्हें चिन्ता है

कि क्या हम मार्क्सवाद और समाजवाद के प्रति अपनी वचनवद्धता को निभा पाएंगे।

उनकी पूर्ण वचनबद्धता 6 दिसम्बर, 1992 को जो घटना घटी उसके साथ है। 6 दिसम्बर, 1992 को जो हुआ उसे राष्ट्र कैसे भूल सकता है। मैं जानता हूं कि वे उस घटना के बारे में याद दिलाया जाना पसन्द नहीं करते हैं...*(व्यवधान)* मैं जानता हूं कि वे 6 दिसम्बर, 1992 के बारे में याद दिलाया जाना पसंद नहीं करते हैं। मैं पहले भी कह चुका हूं और अब भी कहता हूं कि वह दिन देश के लिए शर्म की बात है। वह दिन ऐसा था जब जानबूझकर ऐसी परिस्थितियों को लाने का प्रयास किया गया था जिसे सोचकर देश के लोगों के रोगटें खड़े हो जाते हैं।

[हिन्दी]

श्री गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : आप कह रहे थे गौरव का दिन था। क्या अटल बिहारी वाजपेयी ने उस दिन इसे गौरव का दिन कहा था, नहीं। नहीं कहा था।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : हममें से कई लोगों की सहानुभूति श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ है। वे वहां पूरी तरह गेरूए कपड़े पहने सज्जनों के बीच बन्दी है। मैं जानता हूं उनकी पहली प्रतिक्रिया दुःख की प्रतिक्रिया थी। उन्होंने लगभग माफी ही मांगी थी, चाहे पूरी तरह से नहीं। परन्तु फिर उन्हें टाल-मटोल करना पड़ा। उन्होंने जो कहा उसे श्री लालकृष्ण आडवाणी को भी स्वीकारना पड़ा और श्री जसवंत सिंह चुप रहे। उन्होंने अपना मुंह नहीं खोला था। अन्यथा, फौजी अनुशासन के प्रति उनकी वचनबद्धता प्रकट हो जाती। डा॰ मुरली मनोहर जोशी दूसरी सभा में आराम कर रहे थे, जहां ज्यादा तनाव नहीं था।

महोदय, दुनिया को इससे क्या संदेश मिला था। देश को क्या संदेश दिया गया था। आज दूसरी ओर मित्र है जो काशी और मथुरा के बारे में बात करने का साहस करते रहते हैं। क्या यह सब भाजपा के राष्ट्रीय एजेण्डा का हिस्सा है, क्या वे भाजपा के कार्यक्रमों और नीतियों का हिस्सा है?

मैं श्री सुरजीत सिंह बरनाला के बारे में नहीं जानता हूं। पंजाब की बाध्यताओं के कारण, शायद आपने भाजपा के साथ गठजोड़ किया होगा। परन्तु मैं जानता हूं जल्दी ही भाजपा के प्रति आपका भ्रम टूट जाएगा। मेरे विचार से यह बात शुरू हो गई है। श्री नीतीश कुमार को पहले ही दरार मिल चुकी है। मैं इस बेमेल गठजोड़ के बारे में नहीं जानता हूं। आप जानते हैं कौन किसको समाप्त कर पायेगा। हम समझने की कोशिश कर सकते हैं।

आज मैं इस प्रस्ताव के समर्थन में बोल रहा हूं क्योंकि इस देश को बचाना है, देश की जनता की रक्षा करनी है, देश को तरक्की की राह पर ले जाना है, देश को प्रगति करनी है और देश के आम आदमी की देख-रेख की जानी है। हमें शिक्षा का प्रसार करना है। हमें गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को कार्यान्वित करना है। मुझे आशा है यह सरकार देश की संस्कृति को और देश की सच्ची मर्यादा को, जो सांप्रदायिकता और विभाजन की प्रवृत्ति से लड़ रही है, बनाए रखने के लिए पूर्णतः समर्पित होगी।

मैं समझ सकता हूं कि श्री जसवंत सिंह ने सभा में इस प्रस्ताव पर चर्चा के लिए समय के लिए अनुरोध क्यों किया है। मैंने यह पाया है भाजपा के मेरे दोस्त इस प्रकार के वाद-विवाद जो कि प्रसारित होते हैं, में भाग लेते समय सभा के सदस्यों को सम्बोधित नहीं करते हैं अपितु बाहर की जनता को सम्बोधित करते हैं। यह आपके उद्देश्य को कुछ समय के लिए फायदा पहुंचा सकता है परन्तु अन्ततः यह काम में नहीं आएगा। मैं निश्चिंत हूं कि देश के धर्म निरपेक्ष लोग न आज और न ही भविष्य में भाजपा की सरकार को कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे।

महोदय, अपना स्थान ग्रहण करने से पहले क्या मैं एक या दो मिनट और ले सकता हूं?

[हिन्दी]

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण-मध्य) : मैं पूछना चाहता हूं क्या कांग्रेस सैकुलर है,...*(व्यवधान)* उन्होंने पांच साल से यहां लगातार कहा था कि कांग्रेस सैकुलर नहीं है।...*(व्यवधान)*

मैं नहीं बोला। वे ही बोल रहे थे। इन्द्रजीत गुप्त जी बोल रहे थे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मेरे शिव सेना के मित्र श्री मोहन रावले सदन से बाहर सज्जन व्यक्ति हैं वो बाहर बहुत ज्यादा अच्छे हैं। मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है कि ऐसे अच्छे लोग स्वयं को ऐसी पार्टियों से जोड़कर कैसे रखते हैं।

[हिन्दी]

श्री मोहन रावले : आप भी अच्छे हैं। यह कैसा आपका तरीका है। आप सदन में पांच साल बोले कि कांग्रेस सैक्युलर नहीं है। इन्द्रजीत गुप्त जी बोल रहे थे। अभी शदर पवार जी ने बताया। क्या आपमें परिवर्तन हुआ है?

श्री सोमनाथ चटर्जी : यह मैंने नहीं कहा। हमारा परिवर्तन नहीं हुआ है। उसका परिवर्तन हुआ है। वे सैक्युलर को पूरा सपोर्ट करते हैं।

[अनुवाद]

अब आप मुझसे यह पूछ रहे हैं कि कांग्रेस पार्टी धर्मनिरपेक्ष है या नहीं। परन्तु कांग्रेस पार्टी ने यह वायदा अब किया है। कम से कम आप तो इस बात को मानिए कि आप धर्मनिरपेक्ष नहीं है।

[हिन्दी]

श्री मोहन रावले : अब हो जाएगा। आपने सदन में कहा कि सैक्युलर नहीं है। अब आप घुटने टेक कर सपोर्ट ले रहे हैं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपके नेता ने आपको देख लिया है। मैं ज्यादा समय लेना नहीं चाहता हूं। मुझे कहना चाहिए श्री शरद पवार ने आज बहुत ही अच्छा संतुलित भाषण दिया है। पिछली बार उन्हें बोलने का मौका नहीं दिया गया था...*(व्यवधान)* क्या उन्हें बोलने का मौका दिया गया था? ठीक है, क्षमा चाहता हूं, पिछले बार उन्होंने अपने आपको एक वक्ता के रूप में प्रस्तुत नहीं किया था परन्तु आज उन्होंने प्रतिशोध के साथ इसको पूरा किया।

मुझे लगा कि यह अच्छी बात है। अब मैं फिर से कहता हूं कि मैं सही कारण को समझ नहीं पाया हूं। उन्होंने अब जो कुछ भी कहा उससे मैं समझता हूं कि इस सरकार को समर्थन जारी रखना चाहते हैं। उन्होंने सी॰पी॰आई (एम) पार्टी द्वारा पीछे से हांकने वाली बात पर कुछ चिन्ता दर्शायी है...*(व्यवधान)* उन्होंने कहा कि...*(व्यवधान)*

श्री संतोष मोहन देव : यह सही है। परन्तु 'मूंछवाला' और 'दाढ़ीवाला' के बारे में प्रधान मंत्री ने जो कुछ कहा था वो कुछ और है। हमें उसके बारे में चिन्ता है।...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : उन्होंने मेरा उल्लेख नहीं किया है। वे जानते हैं कि उन्होंने किसका उल्लेख किया है...*(व्यवधान)* श्री इन्द्र कुमार गुजराल इतने भोले नहीं है कि वे आपके जाल में फंस सकें।

ठीक है, वे अब पीछे से हांकने पर आपत्ति करने लगे हैं, और इसलिए, वे सामने के स्थान पर आ गए हैं...*(व्यवधान)*। अब एक स्वीकृति है वे अग्रिम पंक्ति में आना चाहते हैं और यह कि वे अग्रिम स्थान के पीछे पहुंच चुके हैं। परन्तु कृपया आप यह देखें कि कहीं आप नाव को अस्थिर तो नहीं कर रहे हैं।

इसलिए जो हम चाहते हैं वह ये बात है। हम एक महान प्रयोग कर रहे हैं और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक ऐसा प्रयोग है जिससे हम वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति के सन्दर्भ में कर रहे हैं जबकि किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला है। एक बात पूरी तरह स्पष्ट है। लोक सभा चुनावों के बाद भी उत्तर प्रदेश की जनता के उत्तर प्रदेश चुनावों में किसी भी एक पार्टी को बहुमत नहीं दिया। जनता किसी भी पार्टी को पूर्ण सत्ता या पूर्ण समर्थन देने के पक्ष में नहीं है। तब फिर क्या होगा? क्या हम अपने हथियार फेंक दें और कहें कि देश में कुछ भी नहीं हो सकता, देश में सरकार नहीं बन सकती और यह कि किसी भी प्रकार का प्रशासन नहीं होगा? हमारे लिए सरकार का होना आवश्यक है; हमारे लिए प्रशासन का होना आवश्यक है।

इस संदर्भ में, हमें इस बात का पता लगाना होगा कि हम किस प्रकार से देश की जनता की सेवा बेहतर ढंग से कर सकते हैं। यह वह मंच है जिस पर सभी लोगों की दृष्टि जमी हुई है। संसद को एक विधि खोजनी होगी; लोक सभा को एक विधि खोजनी होगी क्योंकि सरकार लोक सभा के प्रति उत्तरदायी होती है : देश को सरकार कैसे दी जाएं? इसलिए, हमारी अत्यधिक इच्छा थी कि जब एक नई सरकार आएं तो इसका समर्थन किया जाए। हम पूर्ववर्ती सरकार का भी समर्थन कर रहे थे; हम श्री देवेगौड़ा का समर्थन कर रहे थे। परन्तु वे इस समय यहां पर उपस्थित नहीं हैं। हमारे अपने यशस्वी मित्र और देश के नेता, श्री आई॰के॰ गुजराल अब इस पद पर हैं और पद की शोभा बढ़ा रहे हैं। इसलिए हम महसूस करते हैं कि इसके लिए राष्ट्र उनका आभारी है; संसद पूर्ण समर्थन देकर अपना आभार व्यक्त करती है।

एक बार फिर मैं उनसे अपील करता हूं जैसा कि प्रधानमंत्री महोदय ने किया था। उन्होंने अत्यधिक महत्वपूर्ण मामले उठाए थे। मेरे विचार से कोई भी पार्टी सरकार में क्यों न हो, इनमें से कुछ मुद्दे राष्ट्रीय कार्यसूची में सम्मिलित किए जाने चाहिए जैसे आर्थिक प्रगति का प्रश्न, जनसंख्या का प्रश्न, शिक्षा और सामाजिक न्याय। क्या ये पार्टियों और राजनीति के मुद्दे हैं? परन्तु हम उन पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। यदि देश के लोगों में और विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में श्री इन्द्र कुमार गुजराल यह भावना जगा पाते हैं तो उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

महोदय एक बार फिर मैं उन्हें उनके इस महान प्रयास में और जो यात्रा उन्होंने आज शुरू की है, के लिए सफलता की शुभकामना देता हूं। हम सभी को यह बात समझनी चाहिए कि किसी से और किसी भी पार्टी और किसी भी नेता से यह देश बड़ा है। इसलिए हमें इस देश की अत्युत्तम परम्पराओं, जिनमें से कुछ का हमारे प्रधान मंत्री महोदय ने उल्लेख किया है, को बनाए रखना चाहिए। महोदय, हम उन्हें सफलता की शुभकामना देते हैं और हमें स्वयं को देश में समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता की महान परम्पराओं को बनाए रखने के लिए समर्पित करना होगा। इसलिए मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

रक्षा मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव) : माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय प्रधानमंत्री जी ने विश्वास मत का प्रस्ताव पेश किया है, उसका समर्थन करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं।

जहां तक संयुक्त मोर्चा का सवाल है, संयुक्त मोर्चा क्यों बना। यह देश की जनता ने संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए जनादेश किया, क्योंकि किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला तो यह जनादेश जनता का है। इस जनादेश को मानने के लिए हम तैयार हैं, उसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते हैं। जहां तक संयुक्त मोर्चा का दूसरा लक्ष्य, संकल्प और कार्य है-वह है देश की रक्षा और अखंडता। क्योंकि देश के अंदर अल्पसंख्यकों की तादाद बहुत है और माननीय सोमनाथ चटर्जी जी ने सही कहा कि हम छः दिसम्बर की याद बार-बार दिलाएंगे, जिससे हमारे भाईयों की बुद्धि में फर्क आए। ...*(व्यवधान)* हमसे तो ये घबराते हैं हम जानते हैं हमसे आप बहुत घबराते हैं।

महोदय, छः दिसम्बर, 1992 के बाद और मस्जिद ढहाने के बाद इस देश के अल्पसंख्यकों के दिलों में दहशत पैदा हो गई और इतने बड़े सम्प्रदाय में दहशत पैदा होना देश की एकता और अखंडता के लिए एक अच्छा संकेत नहीं है, इसलिए हमने संयुक्त मोर्चा बनाया।

संयुक्त मोर्चा बना करके हम हिन्दुस्तान के अल्पसंख्यकों के दिलों में यह भावना पैदा करना चाहते हैं कि जो पंडित जवाहर लाल नेहरू, गांधी जी और मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 15 अगस्त, 1947 को वायदा किया था कि हिन्दुस्तान के अल्पसंख्यक, विशेषकर मुसलमानों के साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा, उनको इंसाफ मिलेगा, इज्जत मिलेगी, सम्मान मिलेगा। लेकिन छः दिसम्बर, 1992 के बाद उनका विश्वास डिग गया। उनके विश्वास को जमाए रखने के लिए संयुक्त मोर्चा बना। आपको याद होगा हमने कहा था कि संविधान और कानून का पालन अयोध्या में करेंगे, हमारी सरकार जाए या बचे। हम अपनी सरकार को कुर्बान कर सकते हैं लेकिन गांधी जी, नेहरू जी, लोहिया जी और मौलाना अबुल कलाम आजाद के वायदे को पूरा करेंगे और उस वायदे को आज हम पूरा कर रहे हैं। इसलिए हमारे साथ ये समर्थन कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)* आप कितने भी प्रयास करें, मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि यह संयुक्त मोर्चा चट्टान की तरह एक है।

जहां तक बीच-बीच में मतभेद होने का सवाल है तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में बीच-बीच में मतभेद तो होंगे ही। मतभेद होना स्वाभाविक बात है, मामूली बात है। हमने भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी साबित कर दिया है कि धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भाषा के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर, औरत-मर्द के नाम पर भेदभावों को मिटाकर हम एक हुए हैं।...*(व्यवधान)* हम आपको समझाना चाहते हैं कि यह सरकार...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : नो रनिंग कमेंटरी प्लीज।

श्री मुलायम सिंह यादव : यह बात 30 साल बाद आपको समझ में आ जाएगी। यहां परिस्थितियां बहुत तेजी से बदल रही हैं लेकिन हम उस पर नहीं जाना चाहते हैं। हमने यह विश्वास पूरे विश्व में दिखा दिया है कि हम देश की मजबूती से रक्षा कर रहे हैं। जहां तक देवेगौड़ा जी को हटाने का सवाल है, आप हमें बता रहे हैं कि हमने नेता बदल लिया...*(व्यवधान)* आप शांत रहिये, हम इन्हें जानते हैं।...*(व्यवधान)* आप पूरा सुनिये, आप समय क्यों बर्बाद कर रहे हैं।

मान्यवर, देवगौड़ा जी के इस्तीफा देने के बाद अल्पसंख्यकों के दिलों में और दहशत पैदा हो गयी और साम्प्रदायिक शक्तियों के लिए जो चुनौती हमने स्वीकार की थी वह और बढ़ गयी। उस चुनौती का अनुभव हम तो कर ही रहे थे लेकिन हमारे कांग्रेस के भाइयों ने भी उस चुनौती का अनुभव किया। इसीलिए उन्होंने पुनः समर्थन दे दिया। हम दुबारा से उन बातों को दोहराना नहीं चाहते हैं।...*(व्यवधान)* सोमनाथ चटर्जी ने बता ही दिया कि आपने समर्थन वापस लिया। आपने एक बार समर्थन वापस नहीं लिया बल्कि आपने 1990 में यहां भी समर्थन वापस लिया और साढ़े चार महीने की उत्तर प्रदेश की सरकार में भी समर्थन वापस लिया। आपका चेहरा डबल है, हमारा एक चेहरा है...*(व्यवधान)* सिद्धांतों के प्रति हमारा एक चेहरा है। हम अपने सिद्धातों पर अटूट और अडिग हैं। अपने वचन पर हम अटलजी अटल हैं और माननीय अटल जी आप अटल होते हुए भी पलटते देर नहीं लगाते...*(व्यवधान)* यह सही है कि हमारे मन में जो आप कह रहे हैं वह भावना है। हालांकि प्रधान मंत्री होने के बाद जब मैंने इनका भाषण सुना और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की परिभाषा और हिंदुत्व की परिभाषा सुनी, तो मेरा विश्वास इनके प्रति डिगा है।... *(व्यवधान)* अब आप इनकी कितनी भी तारीफ करें, हम इनकी तारीफ नहीं करेंगे।...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : आदमी अच्छा है, कंपनी बैड है।

श्री मुलायम सिंह यादव : जब तक आप इस ग्रुप को नहीं त्यागेंगे, तब तक हम आपकी तारीफ नहीं करेंगे।...*(व्यवधान)* यह सच्चाई है।

श्री लालमुनी चौबे (बक्सर) : जैसे-जैसे आप पर आरोप हैं, आप किसी की प्रशंसा न करें तो उसकी इज्जत बची रहेगी।

उपाध्यक्ष महोदय : ऑनरेबल मेम्बर, कभी-कभी टोका-टाकी ठीक है लेकिन हर बार ठीक नहीं है।

श्री मुलायम सिंह यादव : हमारे नए प्रधान मंत्री बने हैं और जहां तक गुजराल साहब का सवाल है, यह सही है कि हमारे कुछ साथियों को पता है और उन्होंने खुद भी कहा कि इनकी मां और पिताजी की प्रेरणा से यह राजनीति में आए। जैसा कि इन्होंने स्वयं बताया और इतिहास जानता है कि यह कांग्रेस पार्टी में रहते हुए गांधी जी के नेतृत्व में जेल भी गए। यह हमेशा धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखने वाले बाप के बेटे हैं। पढ़ाई-लिखाई और अपनी योग्यता तथा क्षमता की वजह से उन्होंने सारे जीवन धर्मनिरपेक्षता के लिए ही संघर्ष किया... *(व्यवधान)* मैं आगे जाकर बताऊंगा कि रूस से आपको क्यों परेशानी हो रही है। मुझे आपकी यह बात सुनकर आश्चर्य हुआ। मैं इस बारे में बाद में बताऊंगा। इन्होंने कहा कि रूस में रहने वाले व्यक्ति को प्रधान मंत्री बना दिया। मुझे यह सुनकर ताज्जुब हुआ। यह देश के प्रति कितने निष्ठावान हैं, वह भी मैं बताऊंगा। इनके रूस में रहने के बाद हमारी रूस के साथ कितनी मित्रता बढ़ी है, वह भी हम बता देंगे। आज मुझे खुशी है कि वह अपने पिताजी के रास्ते पर चलकर हमारा नेतृत्व कर रहे हैं, संयुक्त मोर्चा का नेतृत्व कर रहे हैं और देश का नेतृत्व कर रहे हैं। इनके नेतृत्व में साम्प्रदायिक शक्तियां पराजित ही नहीं होंगी, नष्ट भी हो जाएंगी। साम्प्रदायिक शक्तियों और कट्टरवादी ताकतों को नष्ट करने के लिए हम एक हुए हैं-चाहे कितने ही मतभेद बने रहें...*(व्यवधान)* आप खुलकर कहिए।

संयुक्त मोर्चा की सरकार के बनने से हमारे सामने बैठे हुए साथियों और भाइयों के दिलों में आग लग गई और ऐसी आग लगी कि इन्होंने समझा कि अब हमें मौका मिल गया।

जैसा कि इन्होंने नेशनल फ्रंट बनाने की बात कही और कहा कि हमें क्षेत्रीय पार्टियां भी समर्थन देंगी, हमें टी॰एम॰सी॰ समर्थन देगी। चिदम्बरम साहब यहां बैठे थे। अब वह चले गए हैं। क्या वह आपको समर्थन देंगे? वे तो बहुत जल्दी सरकार में शामिल होंगे। हम सब उनसे अपील कर रहे हैं। अपील का असर है कि वे हम से इस बारे में बातचीत कर रहे हैं। आपके दिल में जो आग लगी है, उसको बुझाने के लिए एक ही रास्ता है कि साम्प्रदायिक शक्तियां सबसे पहले धारा 370 की मांग को बंद करें।

प्रो॰ रासा सिंह रावत (अजमेर) : अब खुलकर आए हो।

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, खुल कर आया हूं। मैं खुला ही रहता हूं। आप समान नागरिकता या पर्सनल लॉ की बात बंद कीजिए।

[श्री मुलायम सिंह यादव]

अयोध्या, मथुरा, काशी का एजेंडा हमेशा के लिए समाप्त कीजिए। तब तो आप इधर आ सकते हो। माननीय अटल जी ने कहा कि अभी नहीं, एजेंडा कभी नही। मैं विश्वास दिलाता हूं कि जब तक हम जैसे लोग बैठे हुए हैं, आप एक जन्म क्या सात जन्म तक भी यहां नहीं आ सकते। हमें इस बात का आत्मविश्वास है।

श्री उत्तमसिंह पवार (जालना) : आपको इस बात का जनता जवाब देगी।

श्री मुलायम सिंह यादव : जनता ने ही हमें चुना है। हम आपके द्वारा नहीं, जनता द्वारा चुने गए हैं। हम आज की बात नहीं कह रहे हैं। मैं देश के सामने यह बात रखना चाहता हूं। यहां बहुत विद्वान और दूसरे सभी लोग बैठे हुए हैं। यह लड़ाई हिन्दुओं और मुसलमानों की नहीं है। यह लड़ाई हिन्दुस्तान में हमेशा कट्टरवादी हिन्दुओं उदारवादी हिन्दुओं के बीच चल रही लड़ाई है। आप पुराना इतिहास उठा कर देख सकते हैं। मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता लेकिन इतना जरूर कहना चाहता हूं कि कभी कट्टरवादी इस भारत के अन्दर नहीं जीते हैं। वे हमेशा पराजित हुए हैं। जब तक आपमें कट्टरवादिता रहेगी, आप इधर नहीं आ पाएंगे।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष जी, गांधी जी, डा॰ राम मनोहर लोहिया और नेहरू जी ने धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के बारे में जो कहा था, हम उन नीतियों को लेकर चलेंगे और साम्प्रदायिक शक्तियों पर ऐसा अंकुश लगायेंगे कि हमेशा-हमेशा के लिये ये लोग सबक सीखेंगे, यह हमारी नीति है।

उपाध्यक्ष जी, जहां-जहां इन लोगों की सरकार आती है, वहां अल्पसंख्यकों पर जुल्म शुरू हो जाते हैं। हमने इतिहास में दिलेरगंज जैसी घटना में किसी तानाशाह और निरंकुश राज में नहीं सुनी। वहां पर 8-8, 14-14, 16-16 साल की लड़कियों को नंगा किया जाय और प्रतापगढ़ में मुसलमानों के 31 घर जलाये जायें, 8 साल की लड़की की टांग चीर कर दिखायी जाये। उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में यह सब हो रहा है जहां ये लोग सरकार को समर्थन दे रहे हैं। दुनिया के अंदर यह पहली मिसाल है कि पोस्टमार्टम मुआयना हुआ लेकिन उसको दफनाने का काम प्रतापगढ़ या दिलेरगंज में न कराकर इलाहाबाद में किया गया और उसकी जांच भी नहीं कराई गई है। पुलिस द्वारा गाजियाबाद में मुसलमानों को गोली से उड़ा दिया गया, रामपुर में दो नौजवानों को जान से मार दिया गया...

डा॰ रमेश चन्द तोमर (हापुड़) : आप गलत कह रहे हैं। गाजियाबाद में हम मौजूद हैं। खुद वहां के लोगों ने झगड़ा करवाया था और आपके लोग पूरे उत्तर प्रदेश में झगड़ा करवा रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, रामपुर में दो मुसलमान नौजवानों को गोली से उड़ा दिया गया। मथुरा, गाजीपुर और मऊ में इस सरकार ने जुल्म शुरू कर दिया। हम ज्यादा नहीं कहना चाहते क्योंकि फिर मामला ज्यादा लम्बा हो जायेगा। हमारी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं की किस प्रकार से हत्यायें की जा रही हैं, इसका उदाहरण देना चाहता हूं। काशी विद्यापीठ में छात्र संघ के अध्यक्ष की 5-6 तारीख को हत्या की गई, बहराइच में हमारी पार्टी के जनरल सैक्रेट्री की हत्या की गई। उन हत्याओं में कौन लोग हैं? कहीं कोई गिरफ्तारी नहीं की गई है और न किसी के खिलाफ कोई कार्यवाही की गई है। इस कारण से अल्पसंख्यकों के मन में दहशत है और उस दहशत को समाप्त करने के लिय हम लोग सदैव एक रहेंगे। हमारी संयुक्त मोर्चा सरकार पूरा समय चलेगी जैसाकि श्री शरद पवार ने कहा है...*(व्यवधान)*...आप लोगों में सुनने की सहनशीलता नहीं है। आप तो अनुशासित पार्टी के हैं। राष्ट्रवाद के बारे में बात कहते हैं तो मैं इसके बारे में बाद में चलकर कहूंगा। अटल जी जानते हैं कि आपकी पार्टी कितनी अनुशासित है और जब वे प्रधानमंत्री थे तो गुजरात में क्या हुआ था? अगर आपने अंकुश लगाया होता तो गुजरात में आपकी पार्टी का यह हाल नहीं हुआ होता। आप तो स्थायी सरकार चलाने की बात करते हैं। गुजरात में तो आपको संपूर्ण बहुमत था, फिर क्यों नहीं चला सके? हमारी सरकार की ओर से राजस्थान में कोई हस्तक्षेप नहीं किया वरना राजस्थान सरकार तो एक हफ्ता भी नहीं चल सकती।...*(व्यवधान)*

प्रो॰ रासा सिंह रावत (अजमेर) : क्या आप कभी जयपुर गये हैं?

श्री मुलायम सिंह यादव : अब आप दुष्प्रचार करने में इतने माहिर हैं। मैं जयपुर में केवल 32 मिनट भाषण करके कानपुर लौट आया क्योंकि वहां पर एक मौत हो गई थी और हमारे कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन भी था।

अपराह्न 2.59 बजे

(श्री नीतीश कुमार *पीठासीन हुए*)

कानपुर पहुंचकर उनका दाह-संस्कार किया लेकिन आप लोगों ने तो दुष्प्रचार, अफवाह फैलाने की हवा बना रखी है, इस बात में कोई दो राय नहीं। अब आप जान गये होंगे कि मैंने जयपुर की यात्रा क्यों की?

जहां तक मिली-जुली सरकार का विरोध करने वाले लोग हैं, चाहे वे किसी भी पार्टी के हों, वे नासमझ और स्वार्थी लोग हैं। यह हम आपसे नहीं कहते लेकिन इस देश के सामने आज मिली-जुली सरकार चलाने के अलावा और क्या उपाय है?

अपराह्न 3.00 बजे

जब एक दल का बहुमत नहीं है तो मिली-जुली सरकार चलानी पड़ेगी। बार-बार चुनावों की बात की जाती है कि चुनाव होने चाहिए और चुनाव ही स्थायी सरकार देगा। हम चुनावों से डरते नहीं हैं। लेकिन चुनावों की इस समय आवश्यकता नहीं है। हम कांग्रेस पार्टी को धन्यवाद देंगे और यह सच्चाई है कि हमें समर्थन देकर उन्होंने चुनावों को टाल दिया, देश को चुनावों में जाने से बचा लिया। मगर आप लोगों का तो देश के विकास से, पानी से, बिजली से, सड़कों से कोई वास्ता नहीं है। नफरत फैलाना, दंगे कराना, हिंसा कराना ही आपका कार्यक्रम है और आपका ऐजेण्डा है। इसलिए बार-बार कहते

हैं कि चुनाव होने चाहिए, चुनाव ही इसका हल है। ऐसा लग रहा है कि चुनाव होते ही देश की जनता इनको सिर पर उठा लेगी, जैसे उत्तर प्रदेश में दो बार हो चुका है।...*(व्यवधान)* अभी हम बताएंगे कि भारतीय जनता पार्टी बहुमत की तरफ बढ़ रही है या घट रही है। आप यहां पर ऐसे आंकड़े पेश कर रहे हैं जिनसे देश की जनता को भ्रमित करने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन देश की जनता आपको अच्छी तरह से पहचान गई है। हम उन बातों को दोहराकर समय नहीं लेना चाहते।

मिली-जुली सरकारें चल रही हैं। शदर पवार जी भी कह चुके हैं कि सारे देश में कई जगह चल रही हैं, हिन्दुस्तान के कई राज्यों में चल रही हैं। आप खुद महाराष्ट्र में चला रहे हैं। आप उत्तर प्रदेश में भी चलाने लगे हैं। आपकी तरह थोड़े ही हम चलाएंगे कि तीन महीने आप, छः महीने आप, तीन महीने हम और चार महीने हम। यह क्या है? क्या यह स्थायित्व है? यह स्थायित्व नहीं है और यह सिद्धांत नहीं है। यह सिद्धांतविहीन है और केवल सत्ता का लालच है। सत्ता से चिपके रहने के लिए तौर-तरीके अपनाए जाते हैं कि छः महीने आप और छः महीने हम। अगर आपको वास्तव में सत्ता का लालच नहीं है तो सदन में घोषणा करवाएं कि उत्तर प्रदेश में सरकार को हमेशा समर्थन देते रहेंगे, हम वहां हमेशा लड़ते रहेंगे और जुल्म सहते रहेंगे। उत्तर प्रदेश के हमारे जितने कार्यकर्त्ता हैं, उनमें हजारों पर जुल्म हो रहा है, यह सही है। हम उसको सहन करेंगे। लेकिन अगर आपका स्वार्थ नहीं है, आपका कोई सिद्धांत है, सत्ता से चिपके रहने के लिए आप लालायित नहीं हैं तो घोषणा करें कि हम उत्तर प्रदेश में लगातार समर्थन देंगे जैसे शरद पवार जी ने कहा कि हमें लगातार समर्थन देते रहेंगे। इसलिए आप स्थायी सरकार नहीं चला सकते।

जहां तक आपके सिद्धांतों का सवाल है, वह हमेशा एक पक्षीय रहते हैं। इस देश के बारे में सोचने और चिन्तन करने, देश का विकास करने या सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के बारे में आपके एक भी भाषण में कोई बात नहीं है। हमारे कुछ भाई-बहिन हैं जो अपने भाषण में कहते हैं कि मुलायम सिंह खड़े हो जाएं तो उत्तेजना हो जाती है। हम कभी उत्तेजना नहीं फैलाते हैं। हम सिद्धांतों की बात करते हैं और फिर कर रहे हैं। देश को शक्तिशाली बनाने के लिए हम ऐसा करते हैं। आप आज हंसते हैं और तब भी हंसते थे। पाकिस्तान में चुनाव हुए। पहले नवाज शरीफ ने भारत के खिलाफ प्रचार करके वोट मांगा था और जब हमने महासंघ की बात उठाई तो वहां के नौजवानों में बात पहुंची, बंग्लादेश में बात पहुंची। अब जब नवाज शरीफ ने चुनाव लड़ा तो कहा कि चुनावों के बाद अगर हम जीतकर आए तो भारत से अच्छे संबंध बनाएंगे और वह चुनाव जीत गए। महासंघ बनेगा। आज नहीं तो कल, नहीं तो 50 साल बाद बनेगा। मजबूर होंगे बनाने के लिए।

महासंघ बनेगा और हम लोग शक्तिशाली रहेंगे। अपनी बात जनता में रखने के लिए या पहुंचाने के लिए हम एक वातावरण तैयार करेंगे तथा हिंदुस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश का महासंघ बनेगा और महासंघ बनाने के अलावा इस देश को शक्तिशाली बनाने के लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं है। आप हमेशा मजाक करते थे, हंसते थे...*(व्यवधान)* अब हम रक्षा मंत्री रहेंगे, प्रधान मंत्री रहेंगे या मुख्य मंत्री रहेंगे, वह जनता तय करेगी...*(व्यवधान)* हम एका चाहते हैं और इसलिए चाहते हैं कि देश इससे शक्तिशाली होगा और जब देश शक्तिशाली होगा तो दुनिया में सबसे शक्तिशाली यही महासंघ होगा और दुनिया का कोई मुल्क आपको आंख उठाकर नहीं देखेगा। इसके लिए हमारा अपना वातावरण और हमारी जिम्मेदारी है और समाजवादी पार्टी ने जो सपना देखा है, इस सपने को पूरा करने के लिए हम जीवन भर संघर्ष करते रहे हैं, चाहे सत्ता में आयें या नहीं आयें, यह जरूरी नहीं है। यह तो हमने सुकरात से सीखा है...*(व्यवधान)* सिद्धांत तो बाद में आता है। गांधी जी शहीद हो गये, लेकिन गांधी जी के नाम को आप नहीं मिटा सकते हो, पाठ्यक्रम चाहे कितने ही बदल दो। जहां आपकी राज्य सरकारें हैं, वहां पाठ्यक्रमों में जो गांधी के बारे में लिखा है, उसको आप अलग कर रहे हो। जहां यह सरकार उत्तर प्रदेश में आई तो वहां पर बच्चों या छात्रों को जो पढ़ाया जाता था उन पन्नों या पाठों को आपने हटा दिया। गांधी जी को आप नहीं मिटा सकते। आप कभी कहते हैं कि हम गांधी जी को राष्ट्रपिता मानेंगे। कभी कहते हैं कि राष्ट्रपिता नहीं मानेंगे। ऐसा लगता है कि जैसे आपने ही उन्हें राष्ट्रपिता बनाया था। देश के लिए कुर्बानी करने वाले और शहीद होने वाले सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें राष्ट्रपिता कहा था। क्या आपने कहा था या हमने कहा था। आप तो गांधी जी को राष्ट्रपिता मानने के लिए तैयार नहीं है। जिस गांधी जी ने दुनिया को अहिंसावादी रास्ते पर चल करके दिखा दिया, आपको उनकी विचारधारा में विश्वास नहीं है। पहले 1980 में आपने कहा कि हम गांधी वादी रास्ते पर चलेंगे और 1985 में आकर बदल गये। पता नहीं अटल जी ने यह पक्ष रखा तो था मुझे पता है लेकिन अटल जी की बात चल नहीं पाई।

श्री शरद पवार (बारामती) : नागपुर में माना था।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी) : हां, नागपुर में माना था, लेकिन उसके बाद बदल गये। इनके चेहरे बदलते ही रहते हैं, बुरा मान जाते हैं, बदलते रहते हैं। आदरणीय सोमनाथ जी आप इनको याद दिलाओ। यहां पर तो माननीय अटल जी ने खेद व्यक्त किया और इनके एक साथी कलकत्ता में जाकर कहते हैं कि जो मजदूर तीन महीने में मस्जिद गिरा सकते थे वह हमने तीन घंटे में गिरा दी। मुझे गर्व है, मुझे फख्र है। यह इन्होंने कलकत्ता में कहा था। कलकत्ता के सारे साथी चाहे वे किसी भी दल के हों, यहां पर हैं। आपके दो चेहरे हैं, सदन के अंदर खेद व्यक्त करते हो और आपका साथी कलकत्ता में जाकर भाषण देता है कि तीन महीने में मजदूर मस्जिद गिरा सकते थे उसे हमने तीन घंटे में गिरा दिया, जिसका मुझे गर्व और फख्र है, मुझे पश्चाताप नहीं है। तो हम आपसे उम्मीद नहीं कर सकते हैं कि आप अपने सिद्धांतों पर कभी टिकेंगे। कभी उन्हीं को गाली देंगे और कभी उन्हीं का विरोध करेंगे और कभी उनसे मिल लेंगे। हमारे सिद्धांत तो साफ हैं। हमारी और आपकी दूरी बहुत कम हो जायेगी जैसा मैंने बताया कि आप रास्ता बदल दो, मुसलमानों के बारे में राय बदल दो, अयोध्या, काशी, मथुरा के बारे में राय बदल दो, मुस्लिम पर्सनल लॉ के बारे में राय बदल दो, धारा 370 के बारे में राय बदल दो, इससे हमारी और आपकी दूरी कम हो जायेगी और देश मजबूत होगा। लेकिन आप जानते हैं कि ये रास्ते बदल देंगे तो आपका नुकसान होगा। जो हिंदू बहुमत में हैं आप केवल उनकी भावनाओं को

[श्री मुलायम सिंह यादव]

भड़काकर सत्ता में आना चाहते हैं। मैंने शुरू में ही कह दिया कि कट्टरवादी और उदारवादी हिंदुओं के बीच लगातार संघर्ष रहा है और रहेगा। मैं मुसलमान भाइयों से सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि उनको चिंता नहीं करनी चाहिए। जब तक हम सब लोग बैठे हैं और उदारवादी बैठे हैं, तब तक मुसलमानों को आगे आने की जरूरत नहीं है। मैं पूरे देश से कहना चाहता हूं और हम लड़ाई जीतेंगे ...*(व्यवधान)*

श्री सोहन वीर (मुजफ्फरनगर) : मुलायम सिंह जी क्या आपने साम्प्रदायिकता, गुंडागर्दी और जातिवाद को बढ़ावा नहीं दिया? ...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी) : इसलिए साम्प्रदायिक शक्तियों को कमजोर करने के लिए हम इकट्ठे हैं। हम यह बार-बार दोहराते हैं कि हम सत्ता के लिए इकट्ठे नहीं हैं।

प्रो॰ रासा सिंह रावत (अजमेर) : क्या साक्षात उम्मीदवार हो गये हैं?

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, उम्मीदवार हो गये हैं। उसमें क्या था उसमें एक भी हो गये हैं।

हम एक हो गए, इससे आपको परेशानी हो गई, इसीलिए आपके दिल में आग लगी हुई है। यह बात सही है और मुझे खुशी है, अभी हमारे साथी बेनी प्रसाद वर्मा जी ने मुझसे पूछा था कि जब हम बोला करते थे, आदरणीय चन्द्रशेखर जी के सामने भी गए, एक बड़े नेता के जन्म-दिवस पर 21 मार्च, 1991 को मैंने गैर-कांग्रेसवाद पर लखनऊ में बोला था क्योंकि पहले हम लोग भी उस पार्टी में काम करते थे, विधायक थे और कोटा में जब हमारा प्रस्ताव पास हुआ था, उसके बाद प्रैस ने हमसे पूछा था कि क्या यही आपका सिद्धांत है-मैंने कहा कि यह सिद्धांत नहीं है बल्कि यह राजनैतिक रणनीति है क्योंकि हम भुक्तभोगी हैं, 1967 में जब हम जनता के बीच वोट मांगने जाते थे तो हमसे लोग यही कहते थे कि वोट हम आपको जरूर देंगे लेकिन सरकार कांग्रेस की ही बनेगी। मतलब यह है कि उस समय लोगों में ऐसी भावना पैदा हो गई थी कि पूरे हिन्दुस्तान में कांग्रेस पार्टी को अब कोई हटा नहीं पाएगा। इसलिए एक बार जनता में अहसास कराने के लिए हमने 1967 में गैर-कांग्रेसवाद की रणनीति बनाई जिसमें आप भी शामिल हो गए और उसी के परिणाम-स्वरूप देश के 9 राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं। चौधरी चरण सिंह उस समय उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री बने थे। उस वक्त कांग्रेस की मोनोपोली थी और जनता को यही दिखाने के लिए की अब कांग्रेस की मोनोपोली हिन्दुस्तान में नहीं है, हमने वह रणनीति बनाई थी। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले अनेक नेता जैसे आचार्य नरेन्द्र देव, जय प्रकाश आदि लोग उसमें थे...*(व्यवधान)*

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : कांग्रेस की मोनोपोली कहां थी...*(व्यवधान)* कोई मोनोपोली नहीं थी।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : इसमें किसी की मोनोपोली की बात नहीं है, वहीं मैं कह रहा हूं। राष्ट्रीय आन्दोलन में आचार्य नरेन्द्र देव, जय प्रकाश, डा॰ लोहिया, अरुणा आसफ अली, अच्युत पटवर्धन जैसे क्रांतिकारी थे और कांग्रेस पार्टी के साथ उन्होंने काम किया था। यह सच्चाई है।

आज जब पूरे देश में, सभी राज्यों में किसी का एकाधिकार नहीं है तो हमारी समाजवादी पार्टी की सबसे नजदीकी, सबसे निकट विचाराधारा वाली पार्टी अगर कोई हो सकती है तो वह कांग्रेस पार्टी हो सकती है, इसमें कोई दिक्कत नहीं है और यह समय की आवश्यकता है। इसमें हम दो तरह की बात नहीं करते हैं। यही बात हमने 23 मार्च, 1991 को आदरणीय चन्द्रशेखर जी के सामने कही थी क्योंकि हमें कहा जाता था कि ये डरते हैं, ये एक लड़ाकू नेता के अनुयायी रहे हैं-जिसके उत्तर में हमने कहा कि ऐसा नहीं है बल्कि यह देश की और समय की आवश्यकता है।

जहां तक लोक सभा के उप-चुनावों की बात अभी कही गई कि हम सभी उपचुनाव जीते और भारतीय जनता पार्टी लगातार बढ़ रही है, मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि पिछले लोक सभा चुनावों में उ॰प्र॰ में आपकी पार्टी 236 से 240 वि॰ सभा क्षेत्रों में स्थानों पर नम्बर एक पर आई थी जबकि हम लगभग 76 स्थानों पर आ गए और आप 240 से घटकर 174 स्थानों पर चले गए-फिर आप ही बताइए कि भारतीय जनता पार्टी आगे बढ़ रही है या घट रही है-सब कुछ सामने आ गया है। आपने यहां बड़े आंकड़े देकर बताया कि हम मध्य प्रदेश में जीते, राजस्थान में जीते और हम लगातार बढ़ते चले जा रहे हैं लेकिन जनता ने तत्काल जवाब दे दिया।

गुजरात में क्या हुआ, वैसे तो आप अपने को एक अनुशासित पार्टी कहते हो लेकिन हमने आपका अनुशासन और चरित्र-निर्माण सब कुछ देखा है। हम आज तक आपकी राष्ट्र की परिभाषा समझ नहीं पाए, जितने हमारे साथी सामने बैठते हैं, वे राष्ट्र की परिभाषा कैसे करते हैं। दिलेरगंज में जो कुछ हुआ, क्या वही आपकी नीति है। सूरत में कांच की बोतलें तोड़कर, लड़कियों को नंगा करके खड़ा कर दिया-क्या यही आपकी राजनीति है...*(व्यवधान)* आप आग लगाते हो, यह बात सही है तभी आपको परेशानी हो रही है।...*(व्यवधान)*

श्रीमती भावनाबेन देवराज भाई धिखलिया (जूनागढ़) : आप ऐसी बात सदन में नहीं कह सकते हैं। सूरत में ऐसा कुछ नहीं हुआ है।...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आप बैठिए। मुलायम सिंह जी आप अपना भाषण जारी रखिए।

(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : सारी दुनिया में मानवाधिकार की दुहाई देने वाला, हमारा भारत विश्व में जाना जाता था, लेकिन 6 दिसंबर के बाद, सूरत, मुम्बई और कानपुर में क्या हुआ।...*(व्यवधान)*

श्री अशोक प्रधान (खुर्जा) : यह कोई विधान सभा नहीं है। ...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : आप हमारे कोई हैडमास्टर नहीं हैं जो आप हमें सिखाएंगे कि विधान सभा क्या है और लोक सभा क्या है।...*(व्यवधान)*

श्री राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव (पूर्णिया) : अरे गठबंधन हटा लो तो चित्त हो जाओगे।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : बरनाला साहब, सुन लीजिए। जहां तक पंजाब के लोगों की और सिख भाइयों की समस्या थी, यह ठीक है कि उनका आंदोलन था, लेकिन उस आंदोलन में आपने घी डालने का काम किया और आंदोलन को चौपट कर दिया। आपने चन्द्रशेखर की बात नहीं मानी, लेकिन हमने आपकी बात मानी, लेकिन उसके बाद कहां तक उग्रवाद बढ़ा। उसका नतीजा यह हुआ कि इंदिरा जी भी शहीद हुई, लौंगोवाल जी भी शहीद हुए और जनरल वैद्य की हत्या हुई। उसके बाद आज सरोपा किन को भेंट किया जा रहा है? क्या यही राष्ट्रवाद है, क्या यही राष्ट्रवाद का चेहरा है? क्या आप इसको समझोगे? आप अकाली दल के बल पर जीत कर आए हैं। यदि अकाली दल आज अपना समर्थन वापस ले ले और फिर चुनाव करवा लो तो, आपको मालूम हो जाएगा आप की क्या स्थिति है और आप यहां राष्ट्रवाद की बात कर रहे हैं। यदि ऐसा नहीं, तो जिनको सरोपा भेंट किया जा रहा है, उसका विरोध करिए। अगर आप विरोध नहीं करते हैं, तो यह राष्ट्र की सेवा नहीं होगी। इस प्रकार से आप राष्ट्र की सेवा नहीं कर सकते। आप सरोपा किन को भेंट कर रहे हैं। आपके दो चेहरे हैं। इसलिए आपको यह कभी भी नहीं सोचना चाहिए। हमारा मन साफ है। हमारा सिद्धांत साफ है। प्यार करो तो जमके और नफरत करो तो जमके। इनके अलावा यदि कोई तीसरा गुण होगा, तो वह कोई देवता होगा या राक्षस। मानव के दो ही गुण हो सकते हैं-नफरत या प्यार। इसलिए सभापति महोदय, आज मैं सदन के माध्यम से पूरे देश के सामने इनके चेहरे को रखना चाहता हूं। पंजाब में उग्रवाद को जो बढ़ावा दिया, उसके चलते, नेताओं, साहित्यकारों और पत्रकारों की हत्याएं हुई थीं। उसके बाद आप सरोपा किन को भेंट करवा रहे हैं? हैं हिम्मत?

श्री पी॰ आर॰ दासमुंशी (हावड़ा) : श्री मुलायम सिंह जी ने जो बात कही वह सही बात है। इसमें पार्टी की भावना को छोड़कर... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

दलगत संबंधों के बावजूद, पूरी सभा को इस घटना की भर्त्सना करनी चाहिए। राष्ट्र को इसकी भर्त्सना करनी चाहिए। यह बहुत खतरनाक प्रवृत्ति है।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : जहां तक आप कहते हैं। ...*(व्यवधान)* आपको तो चुनाव की बहुत जल्दी है कि शायद आपको सत्ता मिल जायेगी। हम चुनाव से डरते नहीं लेकिन देश की आर्थिक स्थिति को देखते हुए और जनता की समस्याओं को देखते हुए उनकी जो समस्यायें-बिजली की, पानी की, रोटी की, कपड़े की, मकान की, सड़क की, पढ़ाई-लिखाई की और नौकरी आदि की हैं। इसलिए आज हम देश में जनहित में चुनाव नहीं चाहते हैं। लेकिन जब कभी भी चुनाव आयेगा तो हम उससे डरेंगे नहीं।...*(व्यवधान)* हम जानते हैं कि आप उत्तर प्रदेश में किसके बलबूते पर बोल रहे हैं। आप जैसा करेंगे तो आप रात को सोते ही रह जाओगे और मामला बदल जायेगा। आप ऐसा मत समझिये। अगर यहां मजबूती है तो मामला बदल जायेगा। जिसके सहारे आप इतरा रहे हो वह बता भी नहीं चलेगा। आपको नींद आ जायेगी और आप बैठे रह जाओगे।... *(व्यवधान)* उत्तर प्रदेश में ताकत आपके हाथ में नहीं है। किसी दूसरे के सहारे पर हो। हम किसी के सहारे पर बात नहीं कर रहे हैं। हम सबका सहयोग लेंगे।...*(व्यवधान)*

दस माह पहले आप विश्वास प्राप्त नहीं कर सके और आप बीच में ही भाग गये। हमने तो पहले भी इसको पास किया था और अब फिर करेंगे। मैं रक्षा मंत्री हूं इसलिए हमें चिन्ता है कि हिन्दुस्तान के अपने पड़ोसी देशों बंगलादेश, पाकिस्तान के साथ अच्छे रिश्ते कायम हों। हम यह चाहते हैं और उनको तो समझ में नहीं आयी थी। ...*(व्यवधान)* हमने यह थोड़े ही कहा है कि वह छोड़ेगें, काशी, अयोध्या और मथुरा को नहीं छोड़ेंगे।...*(व्यवधान)* जहां तक आपने कहा कि ऐसा बना दिया।...*(व्यवधान)* हमें गर्व है कि रूस हमारा मित्र है क्योंकि जब कभी भी हिन्दुस्तान पर मुसीबत आयी तो रूस हमारा सच्चा मित्र साबित हुआ। अगर हमारे प्रधानमंत्री का रूस से अच्छा रिश्ता है तो इससे ज्यादा गर्व की बात कोई दूसरी नहीं हो सकती। इससे तो हमें खुशी है और यह सच्चाई है।

आप जो यह कहते हैं कि आप भी साथ-साथ उम्मीदवार थे। हां थे लेकिन साम्प्रदायिक शक्तियों को समाप्त करने के लिए हम बड़ी से बड़ी कुर्बानियां भी कर सकते हैं। हम जानते थे कि मेरे उम्मीदवार बने रहने से मतभेद हो सकते हैं ओर संयुक्त मोर्चा कमजोर हो सकता है। लेकिन हमें देश दिखाई दिया और हमने अपना नाम वापिस ले लिया। यह तो मामूली बात है। प्रधानमंत्री पद क्या है? साम्प्रदायिक शक्तियों से देश को मजबूत बनाने के लिए हिन्दू, मुसलमान सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध और जैन की एकता को बनाये रखने के लिए प्रधानमंत्री पद छोटी चीज है। अगर हमारी जान भी चली जाये तो हम संघर्ष करते रहेंगे। हम अपने सिद्धांतों पर कभी भी नहीं झुके हैं। जब हम अलग हुए थे तो सारे लोग मजाक करते थे। हम चिन्तित थे और हमने सोचा कि अगर हम सिद्धांतों पर चलेंगे तो पार्टी बनेगी। हम उन्हीं सिद्धांतों, विचारों पर चले तो आज साढ़े तीन साल में हम लखनऊ से बम्बई तक पहुंच गये। क्या हम बहुत खूबसूरत हैं या बहुत लम्बे चौड़े हैं? हमारा विचार है, हमारा सिद्धांत है। हिन्दुस्तान के लोग समाजवादी विचाराधारा को पकड़ेंगे। मुझे खुशी है कि हमारे देश का प्रधानमंत्री समाजवादी है। जो नेहरू जी का रिश्ता और उन्होंने जो कहा कि हम धर्मनिरपेक्षता के विश्वास को बनाये रखेंगे तो उससे हमें अपने प्रधानमंत्री पर गर्व है कि वह समाजवादी हैं। इसलिए हमने बधाई देते हुए कह दिया कि आपकी योग्यता, क्षमता, विश्वास, निष्ठा के साथ हम जैसे संघर्ष करने वाले लोग उनके साथ हैं।...*(व्यवधान)* जब भी चुनाव का मौका आये। हम चुनाव से नहीं डरते हैं हम चुनाव के समक्ष दिखा देंगे। आप तो 1993 में ईंट लेकर गांव-गांव में फिरते थे। न हमारी पार्टी और न हमारा चिह्न। कहीं साईकिल, कहीं ऊंट, कहीं घोड़ा और हमने आपको हरा दिया।

इतना हमको चुनाव, चुनाव न कहें। हमारे भाई बैठे हुए हैं। हम शरद पवार जी और अपने सभी साथियों श्री वेंकट स्वामी, श्री संतोष मोहन देव और ममता बहन से अपील करना चाहते हैं कि यदि हम

[श्री मुलायम सिंह यादव]

इसी तरह से बैठे रहेंगे तो देश को शक्तिशाली बनाएंगे, उनको इधर कभी नहीं आने देंगे। मैं सच्चाई से कह रहा हूं। मैं देश को वचन दे रहा हूं।...*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : गैर-कांग्रेसवाद छोड़ दीजिए।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी) : वह तो मैंने छोड़े दिया आज मेरे सामने गैर-कांग्रेसवाद नहीं है। मैं दोहराना चाहता हूं कि कांग्रेस हमारे लिए अछूत नहीं है। मैंने कह दिया जब तक मोनोपली थी तब तक गैर-कांग्रेसवाद था, अब गैर-कांग्रेसवाद नहीं है और हमारे लिए कांग्रेस पार्टी अछूत नहीं है। हम समर्थन ले चुके हैं। ...*(व्यवधान)* अब तो कट्टरवादियों के खिलाफ, साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष चलेगा और भाईचारे के पक्ष में देश को एक बनाए रखने के लिए संयुक्त मोर्चा और हमारे सभी कांग्रेस के भाई मिलकर इसे मजबूत बनाएंगे। संयुक्त मोर्चे को मतलब देश की एकता है, धर्मनिर्पेक्षतावाद, जातिविहीन और वर्गविहीन समाज है।...*(व्यवधान)* जातिवादी कौन है? चुनाव में दो बार कसौटी पर उतर चुके हैं। हमारे पालियामेंट के भले ही 17 मैम्बर हैं, विधान सभा में हमारे 110 मैम्बर हैं। जरा पढ़ा-लिखा करो। बी॰जे॰पी॰ से बड़ी जातिवादी पार्टी कौन हो सकती है। अटल जी जैसे जब प्रधानमंत्री बने थे तो उसमें एक भी पिछड़ी जाति का मिनिस्टर नहीं था। इससे ज्यादा क्या चेहरा दिखाते हैं। हम ज्यादा नहीं कहना चाहते, ज्यादा समय नहीं लेना चाहते क्योंकि हमारे प्रधानमंत्री जी बोलेंगे, अन्य माननीय नेता बोलेंगे। वर्ना हम आपको एक नहीं दर्जनों उदाहरण दे सकते हैं कि आप कितने राष्ट्रवादी हैं, कितने नैतिकवादी हैं। हमने जेल में भी देखा है कि कितने चरित्रवाले हैं। सब पता है।

अपराह्न 3.27 बजे

(अध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए)*

हम इस देश को एक रखेंगे, देश को मजबूत बनाएंगे। देश की रक्षा के लिए और इंसान-इंसान के बीच भेद मिटाने के लिए गरीब, झोपड़ी वाले, खेत में काम करने वाले जो किसान हैं, उनकी पैदावार बढ़ाएंगे, लूट को बंद कराएंगे, दाम बांधो नीति चलाएंगे, मंहगाई पर रोक लगाएंगे, भ्रष्टाचार पर रोक लगाएंगे और संयुक्त मोर्चे को मजबूत करेंगे। संयुक्त मोर्चे को मजबूत करने का मतलब इस देश को मजबूत करना है।

इन्हीं शब्दों के साथ प्रधानमंत्री जी जो विश्वास का प्रस्ताव लाए हैं, मैं उसका समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : आप कृपया दस मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : आपने उनको पचास मिनट दिए हैं। उनके 17 मैम्बर हैं। मेरे लिए दस मिनट दे रहे हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मुझे आज देर तक बैठने में कोई एतराज नहीं है। निर्णय लेना सभा का काम है। सूची बहुत लम्बी है और सूची में स्वतंत्र संसद सदस्यों के नाम भी नहीं हैं। मेरे विचार में पिछली चर्चा के दौरान हमने स्वतंत्र संसद सदस्यों के अवसर को समाप्त कर दिया है। मुझे स्वतंत्र संसद सदस्यों को अवसर देना होगा। इसलिए कृपया संक्षेप में बोलिए।

श्री मधुकर सरपोतदार : मैं संक्षेप में बोलने की पूरी कोशिश करूंगा।

संसदीय कार्य मंत्री तथा पर्यटन मंत्री (श्री श्रीकान्त जेना) : महोदय, कार्य मंत्रणा समिति में यह निर्णय लिया गया था कि माननीय प्रधानमंत्री 5 बजे बोलेंगे।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सरपोतदार : यह क्या अभी याद आया? ...*(व्यवधान)*

श्री श्रीकान्त जेना : मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि यदि पांच बजे प्रधानमंत्री बोलेंगे तो हम छः बजे डिबेट खत्म कर सकते हैं।

गवर्नमेंट साइड से केवल मुलायम सिंह जी ही बोले हैं। मैं सोचता हूं कि बी॰जे॰पी॰ से एक वक्ता और जो मेजर पार्टीज हैं, उनसे एक-एक वक्ता बोल दें तो हम रैस्ट्रिक्ट करके छह बजे तक इस डिबेट को शायद खत्म कर सकते हैं।...*(व्यवधान)* टाइम को रैस्ट्रिक्ट करने के लिए मैं यह मांग कर रहा हूं।

[अनुवाद]

महोदय, आप भाषणों की समय सीमा निर्धारित कर सकते हैं। यही मेरा अनुरोध है।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सरपोतदार : अध्यक्ष जी, गत 10 महीनों के अन्दर यह शायद चौथा मौका है कि विश्वास प्रस्ताव के ऊपर और तीसरे प्रधान मंत्री जी ने यहां पर रखा हुआ है जिस पर मैं अपने विचार प्रकट कर रहा हूं। मेरे हिसाब से, मेरे ख्याल से यह विश्व का अनोखा रिकार्ड है।

गत तीन हफ्तों का यदि हम घटनाक्रम देखते हैं तो इस तरफ ध्यान जाता है। हमें इस बात का पता भी नहीं लगता कि ऐसा क्यों हुआ, किसलिए हुआ, किसने किया, किसने क्या खोया, किसने क्या पाया, मेरी समझ में नहीं आता? हिन्दुस्तान में जनता जनार्दन, जिसकी बदौलत आप और हम सब यहां पर हैं, वह क्या सोचती होगी, यह मेरे सामने सबसे बड़ा एक अहम सवाल है।

हम सरकार का समर्थन निकालेंगे, हमारी मर्जी है। हम प्रशासन को ठप्प करेंगे, मेरी मर्जी है। बहुमत न होकर भी सरकार बनाएंगे, हमारी मर्जी है। जो चाहे वह खिलवाड़ करेंगे, वही मेरी मर्जी है। गलती हुई तो नहीं मानेंगे, क्योंकि वह भी मर्जी है। इसी ढंग से इस देश का कारोबार आज चालू है, ऐसी चंगेजखानी की वजह से प्रशासन में अस्थिरता पैदा हो गई है।

क्या वजह थी, क्या संकट पैदा हुआ था? नेता बदलो, नहीं बदलेंगे। इस्तीफा दे दो, नहीं देगें। यह क्या नीति चल रही है, मेरी समझ में नहीं आता। हम चुनाव से नहीं डरते, अभी मैंने सुना। कोई

चुनाव से नहीं डरता, लेकिन अन्तरात्मा से पूछोगे तो हम यहां पर जो सब सांसद हैं, हर व्यक्ति यदि किसी से डरता है तो चुनाव से डरता है। ऊपर से क्या बोलते हैं, हम किसी से नहीं डरते, हम तो मर्द हैं, मर्द के माफिक जाकर जनता के सामने जाएंगे, मुकाबला करेंगे, लेकिन हकीकत में जो कुछ चल रहा है, इसकी वजह केवल डर है, अन्य दूसरी वजह कोई नहीं हो सकती।

देवेगौड़ा जी विश्वास मत हार गये। हारना ही था, उनके पास रास्ता क्या था। लेकिन हारते-हारते सोच रहे थे, शरद पवार जी उस समय में चुप्पी लगाये बैठे थे, शायद वह कुछ मदद करेंगे, साथी क्षिप तोड़कर उनकी सहायता करेंगे। आखिरी वक्त पर पलटी कैसे मारी जाती है, यह राजनीति में काम करने वाले आजकल के जो आसमान की तरह नेता बनते हैं, वे बहुत अच्छी तरह जानते हैं। वे घड़ी में एक बात करेंगे, घड़ी में कहेंगे, मैंने ऐसा कुछ कहा ही नहीं है, यहां का यह रवैया चल रहा है। राम विलास जी, आप तो जानते हैं, मैंने उसी दिन बोला था। अभी प्रधान मंत्री जी यहां नहीं हैं। उनको मैं बताना चाहता था, उस समय भी यही बोल रहा था कि देवेगौड़ा जी विश्वास के साथ कहते थे कि हमारा पूरा साझा मोर्चा उनके साथ है, जैसा मुलायम सिंह जी कहते थे।

आत्मविश्वास था, आत्मसम्मान था और पूरे विश्वास से बोल रहे थे कि पूरी दुनिया को उन्होंने बता दिया। लेकिन आखिर में कांग्रेस ने उनको ऐसा सबक सिखाया, जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी। उनके दिल में उस समय यह भावना थी कि मोर्चे वाले आखिर तक उनका साथ देंगे। यदि मोर्चा वाले साथ हैं तो केसरी जी को सबक सिखाने में देर नहीं लगेगी, यह भावना उनके दिल में थी। यह भावना उनके दिल में क्यों पैदा हुई, इसका भी कारण है। मेरे पास सब अखबारों की कटिंग्स हैं। मैंने उनको देखा, उसमें यह बताया था कि सी॰एम॰ इब्राहिम साहब ने उनको कहा था कि कांग्रेस में विभाजन होगा और करीब 90 सांसद हमारे पास आ जाएंगे। इसलिए आप डरें नहीं और जो चाहे स्टैंड ले लें, हम उनका मुकाबला करेंगे। जो बगल में दोस्त बैठते थे, जिन पर भरोसा था, उन्होंने उनकी बात सुनी और आखिर में देवेगौड़ा जी को क्या करना पड़ा, यह पूरे देश की जनता जानती है। उस पर बहस की आवश्यकता नहीं है।

आज शरद पवार जी ने यहां भाषण दिया। मुझे बड़ी खुशी हुई। उसकी वजह यह थी कि उस दिन भी मुझे इंजतार था कि वे बोलेंगे। आखिर कांग्रेस राष्ट्रीय दल है और बरसों से है। इतनी बड़ी पार्टी है जिसके पास इस सदन में 142 सदस्य हैं। मुझे इंतजार था कि वे बोलेंगे और बताएंगे कि उन्होंने क्यों समर्थन वापस लिया। यह बताने का काम पवार जी को ही करना था, क्योंकि वे कांग्रेस दल के यहां पर नेता हैं। लेकिन वे उस दिन नहीं बोले। आज जो कुछ बोले, उसमें यह नहीं बताया कि समर्थन वापस लेने का वास्तविक कारण क्या था। केवल यही कहा, जिसको पहले भी दोहरा चुके हैं कि 6 दिसम्बर, 1992 को बाबरी मस्जिद गिर गई, साम्प्रदायिकता बढ़ गई इसलिए हम सब लोग साम्प्रदायिक लोगों के खिलाफ लड़ने के लिए इकट्ठे हुए हैं। उस दिन यानि पिछले साल 11 जून को भी इन्होंने यही कहा था कि हम सब सेक्युलरवादी हैं। इसका मतलब यह हुआ कि हम लोग साम्प्रदायिक हैं इसलिए हमारे खिलाफ लड़ने के लिए यहां पर ये लोग बैठे हैं। क्योंकि हम धर्म को मानते हैं इसलिए साम्प्रदायिक हैं और ये अधर्म वाले लोग हैं, ये सेक्युलर हैं। इसलिए हम धर्म वाले इन अधर्म वालों के बीच में छिड़ी लड़ाई उस दिन देख रहे थे कि कौन किस पर तीर चला रहा है, हमें बड़ा मजा आ रहा था। हमें पता नहीं था कि देवेगौड़ा जी के बाद अन्य कौन नेता आयेगा। उस दिन से लेकर अब तक जो खेल-तमाशा हुआ, और जिस ढंग से मुलायम जी बोल रहे थे। मुझे याद है कि आप भी प्रधान मंत्री बनने की दौड़ में थे और मैदान में डटे हुए थे। मैंने पहले भी कहा था और आज फिर कह रहा हूं कि राम विलास पासवान जी भी रेस में थे। बेचारे मूपनार जी, जो इस दौरान दिल्ली भी नहीं आए, उनका भी नाम लिया गया। जब वे यहां बुलाए गए तो मैंने देखा कि किस तरह से हार और फूलों से उनका स्वागत किया गया। लगता था कि वहीं संयुक्त मोर्चा के अगले नेता होंगे। लेकिन यहां से चाबी हिलाने वाला कोई और ही है और वह आपकी बगल में बैठा हुआ है। आप बोलते हैं कि हम भी बार-बार आपके पास आते थे। लेकिन पर्दे के पीछे राजनीति कौन कर रहा था, जिनके पास रिमोट कंट्रोल है, जो कोई जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते, लड़ने के लिए स्वंय मैदान में नहीं आना चाहते, वे लोग पीछे से कहते हैं कि यह करो, ऐसे खेलो। अपने कमरे में बैठकर ये लोग आपको सलाह देते हैं कि आपका नेता कौन होगा। अगर उनकी मर्जी होगी तो राम विलास जी भी प्रधान मंत्री बन सकते हैं। सी॰पी॰आई॰ (एम॰) वालों की मर्जी चलती है, ये कुछ भी करा सकते हैं। सी॰पी॰आई॰ (एम॰) के हाथ में चाबी है और इन्होंने ही सबको इकट्ठा करके संयुक्त मोर्चा का नाम दिया है।

देवेगौड़ा जी वहां चीफ मिनिस्टर थे। अच्छी जगह छोड़कर उनको यहां लाया गया और वह बेचारे फंस गए। क्या उनको वहां पर काम नहीं था? यह क्या कर रहे हैं? वह सैकुलर लीडर हैं। वह सबसे बड़े सैकुलर लीडर थे लेकिन यहां आने के बाद वह कम्युनल बन गए। यह कांग्रेस वालों की मेहरवानी है। देवेगौड़ा जी वहां से यहां आ गए और कम्युनल बन गए। मेरे दिल में आशंका यह है कि यदि नए प्रधान मंत्री जी वाजपेयी जी से मुलाकात करेंगे या बाबा साहब ठाकरे जी से मिलेंगे तो कहीं इनके ऊपर साम्प्रदायिक होने की तोहमत न लग जाए। लेकिन हमारे देश के अंदर जब जनता दल की सरकार आई और वी॰पी॰ सिंह जी स्वयं उठकर जामा मस्जिद में गए और शाही इमाम से जाकर मिले।...*(व्यवधान)* तो वह साम्प्रदायिक नहीं थे। लेकिन देवेगौड़ा जी मुम्बई में गए थे और वहां पर बाल ठाकरे जी से मुलाकात करते हैं तो साम्प्रदायिक हो जाते हैं। यह कौन से सिद्धांत की बात करते हैं? मैं यह जानना चाहता हूं कि आप झगड़ा क्यों फैलाना चाहते हैं? यहां पर मैंने इनका, उनका, सबका भाषण सुना। हर व्यक्ति 6 दिसम्बर और बाबरी मस्जिद की ही बात करता है। अन्य कोई बात ही नहीं है। हम सैकुलर हैं और सब साम्प्रदायिक हैं और दोनों के दरम्यान लड़ाई चल रही है। यदि यही भावना है तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या मूपनार जी सैकुलर नहीं हैं? क्या पासवान जी सैकुलर नहीं हैं? यदि आप भी सैकुलर नहीं हैं तो आप रेल में कैसे पिछड़े हुए हैं? मुझे तो यह बताया गया कि मुलायम सिंह जी प्राइम मिनिस्टर बन रहे हैं। हमारे लिए कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि आप सब इकट्ठा होकर एक फैसला करते हैं कि यह हमारे नेता हैं। इन्द्रजीत गुप्त जी का नाम प्रधान मंत्री बनने की रेस में नहीं था। मैं

[श्री मधुकर सरपोतदार]

उनको धन्यवाद देना चाहता हूं क्योंकि वह रेस में नहीं थे। रेस में जाने से क्या होता है? देवेगौड़ा जी का उन्हें अनुभव था। हर व्यक्ति को दिल में यह आशंका थी कि आज हमें आगे धकेल दिया और कल वहां से हटाऐंगे और दूसरे नेता की खोज में लग जाएंगे। जिस दिन देवेगौड़ा जी यहां पर हाउस में बात कर रहे थे, उसी समय इन लोगों की सीताराम केसरी जी को खुश करने के लिए मीटिंग चल रही थी कि दूसरा प्रधान मंत्री कौन बनेगा?

हमारी लोक सभा में जो लोग आते हैं, जनता में से चुनकर आते हैं। यदि यहां का कोई प्राइम मिनिस्टर बनता है तो यहां से किसी को भी बना दो। चन्द्र शेखर जी बैठे हैं, उनको बना दो। उनके अंदर क्या खराबी है? उनको तो कोई कम्युनल नहीं कहेगा...*(व्यवधान)* हमारे वाजपेयी जी साम्प्रदायिक हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इस तरह मत करें।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सरपोतदार : अध्यक्ष जी, जो बात हो गई है, उसी बात की मैं खोज में हूं। यदि हुई तो क्यों हुई? इसलिए मैं जानना चाहता हूं कि देवेगौड़ा जी की हकीकत में क्या गलती थी? इन्द्रजीत गुप्त जी जानते हैं। बहुत अच्छे ढंग से जानते हैं। लेकिन बात नहीं करेंगे। किसके कौन से केसेज हो चुके हैं। कौन लोग केस में बंद होने वाले हैं। वह सब जानते हैं। हमारे बाबा साहब ने दो-तीन मीटिंग में कहा था और मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने एक सुझाव दिया था कि हमारे देश के अंदर बहुत से वनप्राणी उद्यान हैं। वहां पर जो शेर, हाथी या अन्य वन्य जीव हैं, सबको छोड़ दीजिए और हमारे देश के अंदर जो लोग भ्रष्टाचार में शामिल हैं या भ्रष्टाचार में पकड़े गए हैं, उनको यदि जेल में रखना है तो जल की जगह उस जगह पर उनको रखिए। जनता को आकर देखने दो कि हमारे देश के नेता कैसे हैं; यह उनका सुझाव था। बहुत अच्छा हो जाएगा क्योंकि इंसान को इससे बहुत अच्छा सबक मिलेगा। जानवर का क्या कसूर है? हाथी को क्यों बंद करके रखा हुआ है? वह बिचारा जंगल में रहेगा तो अपनी मर्जी से रहेगा। लेकिन उसको बंद करके रखा हुआ है और यहां पर जिन लोगों ने देश का सत्यानाश कर दिया, वही लोग डिसाइड करते हैं कि किसको प्राइम मिनिस्टर बनाना है, किसको सपोर्ट देना है, किसको निकालना है, यह सोचने की बात वही लोग करते हैं।

रामविलास जी जरा गौर से सोचिए। आपकी सौलह पार्टियां हैं, कोई एक या दो नहीं है।...*(व्यवधान)* कांग्रेस के ऊपर मुझे बहुत तरस आता है। पता नहीं कांग्रेस को क्या हो गया है। यदि आप सैक्युलरवाद के साथ लड़ना चाहते हैं, तो अकेले लड़ो तुम्हारे में हिम्मत है। लेकिन लगता है कि हिम्मत खो गई है। यहां पर ममता बनर्जी जी बैठी हुई हैं और दूसरे अनुभवी लोग बैठे हुए हैं, उनको जिन्दगी का अनुभव है...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री कोडीकुन्नील सुरेश (अडूर) : वे आपके विरूद्ध लड़ रहे हैं।

श्री मधुकर सरपोतदार : आप लड़ सकते हैं। हम आपके अथवा किसी अन्य के खिलाफ लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। मुद्दा यह नहीं है। मुद्दा यह है कि आपकी मित्रता उन्हीं लोगों के साथ है जिन्होंने उन पर और कुमारी ममता बनर्जी पर प्रहार किए हैं। उससे भी अधिक आप यह कह रहे हैं : "हम सब एक हैं और हम सब धर्म-निरपेक्ष शक्तियां है।" लेकिन इसके साथ ही, आप एक दूसरे को मारने की कोशिश कर रहे हैं। क्या यही विचारधारा है आपकी? यही मेरा प्रश्न है।

[हिन्दी]

इसलिए मैं कहना चाहता हूं, यदि वे मैदान में आकर खेलते तो मैं समझ सकता था। सत्ता में सहभागी होने के लिए वे लोग तैयार नहीं है। अखबार में लिखा हुआ है, मैंने पढ़ा है, प्राइम मिनिस्टर का फैसला हो गया था, लेकिन जिसके हाथ में रिमोट-कन्ट्रोल था, वह एरोप्लेन में बैठ कर रूस में बैठा था। उनके साथ एक और व्यक्ति चली गई थी, उनका मुलायम सिंह जी से ज्यादा संबंध नहीं था। उनको प्राइम मिनिस्टर बनाने का सवाल चल रहा था। बहुत बड़ी बात है। लेकिन क्या हुआ, मालूम नहीं, आप अच्छी तरह से जानते हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : आप बता दो।

श्री मधुकर सरपोतदार : मुझे नहीं मालूम, आप जानते हैं। मैं नहीं जानता हूं। इस बारे में अखबार में आया है। यदि आप चाहते हैं तो मैं वह पढ़ने के लिए दे दूंगा। सवाल यह है, काम्युनिस्ट्स को बोला गया-काम्रेड्स बी क्लीयर। जो कुछ बोलना चाहते हैं, खुल कर बोलिए। सोमनाथ चटर्जी जी यहां पर सदन में बोलते हैं। मेरे पास ये उनका बयान है, उनके लैक्चर हैं। यहां पर जब भी बोलते हैं, पहली बात 6 दिसम्बर बाबरी मस्जिद की उठाते हैं। उनके पास और कोई नया सब्जैक्ट नहीं है। मैं कांग्रेस के लोगों को बताना चाहता हूं। जनता पार्टी का राज जब देश के अन्दर आया, तो उस समय मोरारजी देसाई प्राइम मिनिस्टर बनें। उस समय आप लोगों का याद होगा, एक ही कार्यक्रम था, श्रीमती इंदिरा गांधी। उनके खिलाफ कैसे केसेस करने हैं, उनको कैसे बदनाम करने की कोशिश करनी है। उनको राजनीति से कैसे निकालना है। उस समय सिर्फ यही मसला चल रहा था और आज भी वही चल रहा है। आप लोगों के पास दूसरी कोई बात नहीं है। प्राइम मिनिस्टर को विश्वास मत हासिल करना है और आप लोगों को विश्वास दिलाना है। उनको पता है, हम लोग वोट देने के लिए तैयार नहीं है। यह उनको पूरा पता है, लेकिन आपके वोट उनको मिलेंगे या नहीं मिलेंगे, यह विश्वास उनके दिल में नहीं है। इसलिए यह प्रस्ताव रखा गया है। आप लोगों को बोलना चाहिए था, आपके कार्यक्रम क्या है, आप क्या करना चाहते हैं, आप क्यों मदद देना चाहते हैं, आप क्यों उनको वोट देना चाहते हैं और कैसे हमारे इन्द्र कुमार गुजराल जी अच्छे हैं। यह आप को बताना चाहिए था। लेकिन ये सब बातें आपने छोड़ दी और यूपी की पोलिटिक्स को ले आए। उत्तर प्रदेश में जो कुछ करना है, आप करिए। मैं महाराष्ट्र की बात नहीं कहता हूं। आपके 21 लोग चुनकर आए, मुझ से आकर मिलें, तो मैंने उनका अभिनन्दन किया। कोई पार्टी मुम्बई में आकर काम करती है और कांग्रेस को हरा देती है तथा कारपोरेशन में उनके लोग चुनकर आते हैं। इसका मतलब है कि हम लोगों ने कुछ गलती की

है, इसलिए उनको मौका मिला है। अगर हमारे से गलती नहीं होती, तो उनको मोका नहीं मिलता। 21 सदस्य कारपोरेशन में चुनकर आए हैं, बहुत अच्छी बात है। मैं आपको एक सलाह देना चाहता हूं — आप इसको माने या नहीं माने, यह मैं आपके ऊपर छोड़ता हूं — जिस बस्ती से ये लोग चुनकर आए हैं, वहां पर कौन सी नीतियां चल रही हैं इसका भी आप थोड़ा खोज कीजिए।

मैं आज बोल रहा हूं, मुझे पता है जनता देख रही है मैं क्या बोल रहा हूं। मुंबई के लोग भी आज हमारी बात सुन रहे हैं। इसलिए मैं बताना चाहता हूं आपका, हमारा और यहां आने वाली हर पार्टी का यह काम है कि हमें अपने देश की जनता के लिए काम करना है। उनके लिए हम क्या कर सकते हैं, यह सबसे बड़ी ऊंची बात है। आपके पास झंडा कौन सा है, यह बात इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, आपका प्रोग्राम क्या है, आप क्या करना चाहते हैं, किस को खुश करना चाहते हैं, किस को नाराज करना चाहते हैं। मुसलमानों को राजी करना चाहते हो लेकिन वे अब राजी नहीं होंगे। मैंने स्वयं अनुभव किया है, वे बोलते हैं कि कांग्रेस का अनुभव बहुत हो गया, अब हम उनके पीछे नहीं जाने वाले हैं। इसलिए अब कांग्रेस वाले क्या करते हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया समाप्त कीजिए। आपको नौ मिनट दिए जाने थे और मैंने आपको 20 मिनट बोलने दिया है।

श्री मधुकर सरपोतदार : महोदय, पहले ही कुछ लोग 50 मिनट तक बोले हैं।

अध्यक्ष महोदय : सत्ताधारी दल को एक घंटा 11 मिनट मिला हैं जिसमें से वे 45 मिनट ले चुके हैं। हम संख्या के अनुसार समय दे रहे हैं। अतः आप सत्तारूढ़ दल के वक्ताओं के साथ अपनी तुलना नहीं कर सकते क्योंकि एक घंटा ग्यारह मिनट में से 45 मिनट उन्होंने ले लिए हैं।

श्री मधुकर सरपोतदार : महोदय, कृपया मुझे कुछ समय और दीजिए। मेरे पास अनेक मुद्दे हैं।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। मैं आपको पांच मिनट और देता हूं।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई-उत्तर-पश्चिम) **:** यदि यह बात ये लोग नहीं छेड़ते तो मैं जवाब नहीं देता। इनको जो बात इस पर करनी चाहिए थी वह बात इन्होंने नहीं की, अन्य बातों को हाथ लगाया। जब सम्प्रदाय को ले करके ये लोग हमारे ऊपर हमला करेंगे तो उसका जवाब देना हमारा काम है। आज यह जनता सुन रही है, नहीं तो जनता की भावना यह होगी कि ये लोग बोलते हैं और हम लोग चुप बैठते हैं। इसलिए इनके दिल में यह भावना नहीं होनी चाहिए कि हम कुछ जवाब देना नहीं चाहते। हमारे यहां प्राइम मिनिस्टर कौन डिसाइड करता है? हमारे एम.पीज, हमारे देश के तीन या चार राज्यों के जो चीफ मिनिस्टर्स हैं वे लोग इकट्ठे बैठते हैं और वे लोग डिसाइड करते हैं कि हमारे देश का प्राइम मिनिस्टिर कौन होगा। आंध्र प्रदेश के चन्द्र बाबू नायडू, करूणाकरण जी, ज्योति बसु जी, जो वेस्ट बंगाल से आते हैं वे डिसाइड करते हैं कि हमारे देश का प्राइम मिनिस्टर कौन रहेगा।

महोदय, आज तक यह था जब कांग्रेस पार्टी के पास मेजोरिटी होती थी, जवाहर लाल नेहरू जी डिसाइड करते थे, प्रेसीडेंट हिसाइड करते थे, नहीं तो उनसे कंसेंसस लिया जाता था, उसके ऊपर फैसला होता था। आपके साथ 180 मेम्बर्स,

[अनुवाद]

उनके 182 सदस्य हैं। यदि आप एक जुट हैं तो आपने इन 182 सदस्यों की सहमति क्यों नहीं ली? आप संयुक्त मोर्चा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए आपको इन 182 सदस्यों को बुलाना चाहिए था, उनकी राय लेनी चाहिए थी और यह देखना चाहिए था कि किसे प्रधानमंत्री के रूप में चुना जाए। आपने ऐसा नहीं किया।

[हिन्दी]

इसलिए इतने लोग कम्पीटिशन में आ गए। आज तमिल मनीला कांग्रेस नाराज होकर बाजू में बैठ गई। आज फाइनेंस मिनिस्टर के लिए हर व्यक्ति उठता है और इनको बोलता है कि कैसे भी करो लेकिन हमारी गवर्नमेंट के अंदर आ जाओ। यह सवाल क्यों? ऐसा मौका क्यों आ गया, यह हालत क्यों आ गई? यह आशंका है कि और दस महीने के बाद दोबारा ऐसा करने का मौका न आ जाए। यदि यह सिचुएशन एवाइड करनी है, मैंने उस समय भी बोला था कि अगर आपको सबसे ज्यादा बच कर रहना है तो कांग्रेस वालों से बच कर रहना है। इनके दिल में यदि आता है कि नहीं, गुजराल जी ने उनकी मर्जी के खिलाफ कुछ काम कर दिया तो राम विलास जी आप कितना भी हंस कर बात करोगे तो भी इनके ऊपर असर नहीं होगा, बिलकुल नहीं होगा। लालू प्रसाद यादव जी, जो चीफ मिनिस्टर हैं वह डिसाइड करते हैं।

[अनुवाद]

मैं राजा बनाने वाला हूं। मैं यह निर्णय करूंगा कि प्रधानमंत्री कौन बनेगा।

[हिन्दी]

इसका नाम डेमोक्रेसी है। आप उसको कहते हैं कि यह रिमोट कंट्रोल है। यदि हमारे बालासाहब ठाकरे कुछ कहते हैं तो आप हमारे ऊपर हमला करते हैं कि रिमोट कंट्रोल चलता है, महाराष्ट्र स्टेट की गवर्नमेंट रिमोट कंट्रोल से चलती है। हमारे ऊपर हमला करने वाले हमलावर स्वयं यह नहीं जानते कि अपने घर में क्या चल रहा है, यह देखने की कोशिश नहीं करते। इसलिए मैं आपको बताना चाहता हूं।

सबसे बड़ी ताज्जुब की बात भारत के उद्योगपतियों के बर्ताव से लगी। हमारे प्रधान मंत्री कल बने। हमारे प्रधान मंत्री का सबसे पहले किसी ने स्वागत किया तो देश के सरमायेदारों ने किया। यह एक खुशी की बात है लेकिन किसी भी मजदूर वर्ग ने और खेती करने वाले किसानों ने उनका स्वागत नहीं किया। रोज सैनसैक्स देखा जाता है। मुम्बई में जो सट्टा बाजार है, उसके अन्दर कभी आंकड़ा ऊपर जाता है और कभी नीचे जाता है। जैसे ब्लडप्रेशर का हिसाब रहता है, वह

[श्री मधुकर सरपोतदार]

हिसाब हमारी अर्थ नीति का हमारे देश में बन गया है। अगर उसकी फीगर्स ठीक हैं तो हमारे देश की अर्थ नीति की तबीयत ठीक है और अगर फीगर्स नीचे हैं तो वित्त मंत्री का ब्लडप्रेशर बढ़ता है या लो होता है, मुझे पता नहीं। ऐसी अर्थ नीति कभी हमारे देश में नहीं थी। वह ऐसी क्यों हो गई है? हमारे देश का रिश्ता हर व्यक्ति से है। गरीब किसानों, मजदूरों और सरमायेदारों से है। इनके बारे में हम क्या करेंगे और उनका ख्याल कौन करेगा? इनके बारे में तीन-चार प्वाइंट रखे गए। मैं गुजराल साहब को धन्यवाद देना चाहता हूं। उनके सामने उन्होंने जो समस्याएं रखीं, वे ठीक समस्याएं हैं। यदि उन्हें काम करने का मौका मिलेगा तो वे जरूर काम करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। सवाल यह है कि क्या आप उनको काम करने का मौका देंगे? चौदह पार्टियां यदि चारों तरफ से उन्हें खीचेंगी तो वह क्या करेंगे? अभी उनकी उम्र 78 वर्ष की है। उनकी रैजिस्टैंस कैपेसिटी नहीं है। यदि आप उन पर दबाव डालेंगे तो उनका क्या हाल होगा। मेरे दिल में सबसे ज्यादा चिन्ता इस बात की है। आज के प्रस्ताव पर स्पीकर साहब ने मुझे थोड़ा समय दिया। मैं ऐसा समझता था कि मुझे 30-40 मिनट का समय मिलेगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : काश, मैं ऐसा कर सकता।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सरपोतदार : मैं सब प्वाइंट्स बना कर लाया था। यदि आपने मुझे समय के बारे में याद दिलाया है तो आपकी रिसपैक्ट करना मेरा फर्ज है। मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं लेकिन एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि यदि गुजराल जी हमारे देश में अच्छा काम करेंगे, तो आप लोगों का अच्छा साथ रहेगा। यदि यह सरकार पांच साल रही तो मैं सबसे पहले कांग्रेस वालों को धन्यवाद दूंगा। इसका श्रेय उनको जाएगा, आप किसी को नहीं। इसलिए कांग्रेस वालों की मर्जी है, उनको वहां रखना है या नहीं रखना। उनको खुश रखने का काम आप लोगों का है। उनको कैसे खुश करना है, किस बात पर खुश करना है, क्या देकर खुश करना है, इन सब सवालों पर आप फैसला करें। आप ये सवाल कैबिनेट मिनिस्ट्री में ले जाएं।

यहां बैठने वाले एम•पीज• की भी कुछ समस्याएं हैं। उनका भी ख्याल करना होगा क्योंकि एम•पीज• से ही अभी आपको वोट मिलने वाले हैं। अन्य किसी के हाथ में यह चीज नहीं है। इसलिए मैं आप सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने प्रधान मंत्री दे दिया है। यह राज आगे बढ़ने वाला है लेकिन जिस ढंग से प्रधान मंत्री को चुना गया है, उसका मैं विरोध करता हूं। मैं इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए इन्हीं चन्द बातों को कहते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपने समय का ध्यान रखा, उसके लिए धन्यवाद। प्रो• जी•जी• स्वैल आपके पास सात मिनट हैं। क्या यह काफी होंगे?

श्री जी•जी• स्वैल (शिलांग) : यही काफी होगा। मैं उस प्रकार का व्यक्ति नहीं हूं जो समस्याएं पैदा करे।

मैं यह कहना चाहूंगा कि अभी हाल ही के उलझाव, हाल ही की दुर्व्यवस्था, हाल ही के दुःस्वप्न में इस देश के लिए और इस सभा के लिए जो अच्छी बात हुई है वह हैं श्री इन्द्र कुमार गुजराल। वे कई दशकों से मेरे मित्र रहे हैं। हम विशेष रूप से विदेशी मामलों के क्षेत्र में एक साथ कार्य करते रहे हैं। हमने इकट्ठे यात्रा की है और अनेक अवसरों पर एक साथ खड़े हुए हैं। जिस तरह आज प्रातः उन्होंने अपना भाषण दिया है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ था। उनके दिमाग के दायरे, स्वतंत्रता संग्राम में उनके व्यक्तिगत योगदान, स्वतंत्रता संग्राम में उनके परिवार के योगदान, उनका प्राथमिकता संबंधी अभिज्ञान, उनकी संजीदगी आदि बातें ही हैं जो कल्पनाशक्ति को आकर्षित करती हैं। यही बातें संकट की स्थिति में देश को नेतृत्व प्रदान कर सकेंगी।

महोदय, हमारा संसदीय लोकतंत्र एक नये चरण में प्रवेश कर चुका है।

अपराह्न 4.00 बजे

पहले सभी महान नेताओं द्वारा सभी बड़े निर्णय यहां दिल्ली में लिये जाते रहे हैं। लेकिन अब निर्णय दिल्ली में नेताओं द्वारा नहीं लिये जाते बल्कि अब यह राज्य में नेताओं द्वारा लिये जाते हैं। यह संपूर्ण राष्ट्र की सच्ची भागीदारी को दर्शाता है। यह सही मायने में संघीय शासन है। इस समय देश को नेतृत्व प्रदान करने के लिए हमें श्री इन्द्र कुमार गुजराल जैसे शिष्ट समझदार तथा दूर दृष्टि रखने वाले व्यक्ति की आवश्यकता है। वह एक सफल नेता के रूप में सभी-गुणों से परिपूर्ण हैं। मैं उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। मैं उन्हें अपना पूर्ण समर्थन देता हूं और यह देश भी उन्हें एक अवसर देगा।

आज विश्व के इतिहास में भारत का नाम हैं। हजारों वर्ष पुराने इस देश के महान् इतिहास के दौरान हमने अनेक बातों का सामना किया है। अब यह एक अन्य चरण है। भारत में क्या हो रहा है विश्व इस बात पर नजर रखे हुए है। लेकिन भारत में आज ऐसा कुछ नहीं हो रहा है। मैं समझता हूं कि इस समय मुझे कांग्रेस की भी प्रशंसा करनी चाहिए। यद्यपि कांग्रेस ने देश को स्वतंत्रता दिलाई तथा राष्ट्र के संविधान का निर्माण किया लेकिन उनका समय ठीक नहीं चल रहा है और वह उन आदर्शों से विचलित हो गए हैं, जिससे इस राष्ट्र से आकार मिला था फिर भी इस संकट की घड़ी में कांग्रेस की महानता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। यही कारण है कि कांग्रेस ने संयुक्त मोर्चे को शासन करने का एक अवसर प्रदान किया है। इसके लिए मेरे मन में कांग्रेस के लिए सम्मान है, हम एकजुट हैं। मैं आशा करता हूं कि जिस तरह की प्रणाली वे अपना रहे हैं जिसमें प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में पांच सदस्य संयुक्त मोर्चा के होंगे और पांच सदस्य कांग्रेस के होगें, से सभी बाधायें तथा गलतफहमियां दूर हो जायेंगी और हम एक राष्ट्र के रूप में कार्य करेंगें जो कि बहुत प्रगति करेगा। भारत क्या कर रहा है, यह विश्व देखेगा।

धन्यवाद। मैं और समय नहीं लेना चाहता।

कर्नल राव राम सिंह (महेन्द्रगढ़) : माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि समय सीमित है, मुझे चर्चा में अपने समय में कटौती करनी पड़ेगी।

जब कांग्रेस अध्यक्ष की अप्रत्याशित कार्यवाही से यह संकट उत्पन्न हुआ और उसके परिणामस्वरूप यह सरकार सभा में हार गई तो मैंने हरियाणा के पिछड़े हुए तथा ग्रामीण क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण और व्यापक दौरा किया। मैं यह कहना चाहूंगा कि उस 12 घंटे की चर्चा के दौरान, जब वह चर्चा चल रही थी, गांवों में कृषक तथा गरीब लोग टेलीविजन से चिपके हुए थे। मेरे विचार में उस दिन की चर्चा का स्तर काफी ऊंचा था। आज की चर्चा में श्रीमती सुषमा स्वराज ने चर्चा का स्तर ऊंचा उठाया है। लेकिन मुझे यह कहते हुए दुख है कि जनता की नजरों में इन 14 अथवा 15 अथवा 16 दलों के समूह के नेताओं की विश्वसनीयता समाप्त हो चुकी है।

अपराह्न 4.04 बजे

(श्री पी॰सी॰ चाको *पीठासीन* हुए)

उस चर्चा के दौरान जब श्री देवेगौड़ा प्रधान मंत्री निर्वाचित हुए थे, जैसा कि श्रीमती सुषमा स्वराज ने भी कहा है, संयुक्त मोर्चा के प्रत्येक सदस्य ने श्री देवगौड़ा के प्रति अटूट निष्ठा की शपथ ली थी किन्तु कांग्रेस पार्टी के एक झटके से ही यह सारी निष्ठा गायब हो गई और एक ही झटके में उन्होंने अपने नेता श्री देवेगौड़ा को खाई में धकेल दिया और भुला दिया। यह एक शर्मनाक बात है, कि हम इस तरह का व्यवहार करते हैं और फिर भी उसी दिखावे के साथ वापस आ जाते हैं जो कि इन पिछले पन्द्रह दिनों में देखा गया है।

श्री मुलायम सिंह कहते हैं कि कांग्रेस ने अपना एकाधिकार बना लिया है तथा अन्य दल कांग्रेस के विरूद्ध एक जुट हो चुके हैं। अब सभी दल भारतीय जनता पार्टी के विरूद्ध इकट्ठे हो गए हैं। क्यों? क्योंकि यह एकाधिकार भारतीय जनता पार्टी के पास चला गया है। यह प्रकृति का साधारण कानून है कि यह अधिकार भा॰ज॰पा॰ के पास चला जाएगा। इसलिए, सभी अन्य दल धर्मनिरपेक्षता, छद्म-धर्मनिरपेक्षता, और कट्टरवाद के संबंध कुछ बहाने बना रहे हैं। लेकिन उनमें से कितने वास्तव में धर्म निरपेक्ष हैं? यह, मैं नहीं समझता इससे किसी का संपर्क भी रहा है। लेकिन भा॰ज॰पा॰ के विरूद्ध 'भेड़िया आया' का डर पैदा करके वे काफी लम्बे समय तक टिके नहीं रह सकते। एक दिन ऐसा आएगा जब भारतीय जनता के सामने असलियत का पता चल जाएगा।

अब देखें कि इस 30 मार्च से 20 अप्रैल के बीच के समय के ड्रामे के दौरान क्या-क्या उपलब्धियां हुईं। इन पिछले 20 दिनों के दौरान देश में ठीक तरह से कार्य नहीं हो पाया। यह पूरा तर्कविहीन तथा असंगत कार्य जिसे कांग्रेस नेता शरद पवार ने अचानक किसी घटना के घटने का नाम दिया है, ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की कि कांग्रेस ने अपना समर्थन वापस क्यों लिया। मैं यह मानता हूं कि यह वह भाषण था जो उन्होंने 11 तारीख के लिए तैयार किया था और 11 तारीख को महान् मराठा चुप्पी साधे बैठे थे और उस दिन बोल नहीं पाए। न केवल वही बल्कि उस दिन कांग्रेस का कोई भी वरिष्ठ नेता नहीं बोल पाया। श्री नरसिंहराव, श्री शरद पवार, और श्री संतोष मोहन देव जैसे नेताओं की प्रथम पंक्ति चुप्पी साधे बैठी थी और समर्थन वापस लेने के लिए भेजे गए अपने पत्र का बचाव नहीं कर पाई। अतः उन्हें दूसरी पंक्ति के नेताओं को भाषण देने के लिए कहना पड़ा।

तत्पश्चात् एक चाय पार्टी हुई, मुझे विश्वास है कि श्री शरद पवार को केसरी जी से फटकार सुननी पड़ी। इसलिए उन्होंने अपना 11 तारीख का भाषण आज पढ़ा...*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : वे भी सभा के एक सदस्य हैं।

सभापति महोदय : कृपया बीच में नहीं बोलिए। कृपया अपने स्थान ग्रहण करिए।

कर्नल राव राम सिंह : महोदय, मैं काफी लम्बे समय तक कांग्रेस पार्टी में रहा हूं।...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया अपना स्थान धारण करिए और उन्हें बोलने दीजिए।

कर्नल राव राम सिंह : मेरा कांग्रेस दल के साथ किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में काफी लम्बे समय तक साथ रहा है। कांग्रेस पार्टी को यह भ्रम है कि यह सरकार वे चला रहे हैं। उन्हें कितनी गलतफहमी है?

यह सरकार आधुनिक चाणक्य श्री एच॰एस॰ सुरजीत द्वारा चलाई जा रही है। यह सरकार इस वर्ष के सर्वश्रेष्ठ सांसद श्री सोमनाथ चटर्जी द्वारा चलाई जा रही है। इनके समर्थन से यह सरकार चल रही है। मैं, कांग्रेस के संबंध में बोलते हुए श्री सोमनाथ चटर्जी की भाषा पर हैरान हूं। उनका मनोबल इतना गिर चुका हैं कि वे अपना बचाव भी नहीं कर सकते। मैं इतना अधिक तो नहीं कहूंगा कि उन्होंने अपना सम्मान खो दिया है। यह बहुत चकित कर देने वाली बात है। जब श्री पी॰वी॰ नरसिंह राव वहां बैठा करते थे और श्री चन्द्रशेखर उन्हें 'मौनी नाना' कहते थे। अब, सभी उच्च श्रेणी के कांग्रेस नेता 'मौनी बाबा' बन गए हैं। यह संक्रामक बीमारी है। वे अपना बचाव नहीं कर सकते।

ठीक है, कांग्रेस पर प्रबल प्रहार भी एक पहलू है। अब, सी॰पी॰आई॰ (एम) अपने अगले प्रिय खेल में व्यस्त है। शुक्र है, श्री पी॰ चिदम्बरम् अब यहां आ गए हैं। कांग्रेस के प्रहार उनका प्रथम खेल था, अब वे अपने दूसरे मुख्य खेल पर आ गए हैं अर्थात् टी एम सी पर प्रहार। वे अब टी एम सी पर प्रहार करने में लगे हुए हैं। सी पी आई (एम) कहती है कि श्री जी॰के मूपनार कांग्रेस के एजेन्ट हैं। इसके बाद, वह यह कहते हैं कि न केवल वे 'कांग्रेस के एजेन्ट' हैं बल्कि वे 10 जनपथ' के भी एजेन्ट हैं, इसका कुछ भी अर्थ हो सकता है। यह नई सरकार गठित की जा चुकी है। मैं समझता हूं कि टी एम सी जो सर्वाधिक समर्थन दे रही थी उसे पूरी तरह दर-किनार कर दिया गया है। तमिलनाडु के लोग बहुत ही भावुक और बहादुर हैं। किसी ने समाचार पत्र में पढ़ा कि आत्मदाह किए जा रहे हैं; लोग मिट्टी का तेल या पैट्रोल डालकर अपने आपको जला रहे हैं। क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि तमिलनाडु के गौरव पर ऊंगली उठाई गई है। सी पी आई (एम) द्वारा श्री मूपनार और श्री चिदम्बरम् पर किए गए प्रहारों को वे महसूस कर रहे हैं।

आज, निश्चय ही श्री सोमनाथ चटर्जी ने मौका विलम्ब के बाद संशोधन करने की कोशिश की है। उन्होंने कहा, आइए, श्री चिदम्बरम्,

[कर्नल राव राम सिंह]

हम आपको आमंत्रित करते हैं। मैं रूकावट हूं आप पार करके वहां जाइए। ऐसा शायद इसलिए हुआ है क्योंकि उन्होंने यह जान लिया है कि पीछे की सीट पर एक ही चालक काफी है। अब तक, श्री हरकिशन सिंह सुरजीत और श्री सोमनाथ चटर्जी ही पीछे की सीट पर बैठकर इसे चला रहे थे। लेकिन यदि टी एम सी पीछे बैठकर उनका साथ देती है और कांग्रेस ब्रेक संभालती हैं तो वाहन बहुत थोड़े से समय में ही निष्क्रिय हो जायेगा। श्री एच॰डी॰ देवेगौड़ा दस महीने तक पदासीन रहे। वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री काफी प्रबुद्ध व्यक्ति हैं। वे उच्च योग्यता सम्पन्न व्यक्ति हैं। लेकिन अपने आस-पास की ताकतों के साथ, यदि श्री देवेगौड़ा दस महीने तक बने रहे, तो मैं इस सरकार को अधिक से अधिक दो महीने का समय दूंगा। इसलिए आज बहुत देर से श्री सोमनाथ चटर्जी ने यह माना कि टी एम सी पर किए गए प्रहारों से उन्हें कोई विशेष लाभ नहीं होगा इसलिए उन्होंने आज कुछ संशोधन करने की कोशिश की।

श्री शरद पवार द्वारा समर्थन वापस लेने के बारे में स्पष्टीकरण देने की सभी कोशिशों के बावजूद मैं यह नहीं समझता कि इस विषय पर कुछ प्रकाश पड़ा है।

हम अभी भी यह नहीं जानते कि यह स्थिति उत्पन्न करने के पीछे क्या बात है। निश्चय ही, वर्ष 1993 से संबंधित मामले के बारे में वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं तथा सैन्ट्रल हॉल में बैठे मेरे मित्रों के बीच काफी कानाफूसी हो रही थी। उसके पश्चात् मीडिया में कुछ रिपोर्टें भी प्रकाशित हुई कि कुछ वरिष्ठ नेता, उनका नाम न दिए जाने की शर्त पर कुछ कहने के लिए तैयार थे। कांग्रेस के नेता इतने अनैतिक हो गए हैं कि वे बातों का खुलासा तो करना चाहते हैं लेकिन अपना नाम खतरे में नहीं डालना चाहते। श्री देवेगौड़ा द्वारा श्री राजेश पायलट के एक पत्र के बारे में कुछ उल्लेख किया गया था। लेकिन वे इस बात को स्पष्ट नहीं कर पाए कि वह पत्र क्या था। अब वह बात समाप्त हो गई है।

प्रधानमंत्री यहां उपस्थित हैं। आज, प्रधानमंत्री ने इस बात का उल्लेख किया है कि किसी के विरूद्ध बदले की भावना से कार्य नहीं किया जाएगा। अपराधी अंतरात्मा दिमाग को धिक्कारती है। श्री संतोष मोहन देव तत्काल खड़े हुए और उन्होंने उस पर कुछ टिप्पणी की कि ऐसा कोई गुप्त समझौता नहीं हुआ है कि ऐसे सभी मामलों को समाप्त कर दिया जाएगा। प्रधानमंत्री के लिए राष्ट्र को आश्वस्त करना आवश्यक है कि जहां जांच एजेंसियां कार्य कर रही हैं वहां किसी तरह का कोई हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा। मेरे विचार में प्रधानमंत्री के लिए यह आवश्यक है कि वे सभा को यह विशेष आश्वासन दें। अन्यथा विश्वसनीयता और भी नीचे गिर जायेगी। लोग पहले से ही यह कह रहे हैं कि कोई गुप्त समझौता हुआ है इसलिए श्री सीताराम केसरी अपना समर्थन वापस लेने में इतने उल्लसित दिखाई दे रहे हैं? स्पष्ट शब्दों में इस बात को स्पष्ट कर देना चाहिए कि क्या कोई गुप्त समझौता हुआ है।

महोदय, समर्थन वापस लेने संबंधी राष्ट्रपति को लिखे गए पत्र में एक कारण यह भी बताया गया कि देवेगौड़ा सरकार के अंतर्गत राष्ट्र की सुरक्षा को भारी खतरा उत्पन्न हो गया था। इसके विपरीत मैं समझता हूं कि उस संकट की घड़ी में समर्थन वापस लेने में कांग्रेस अध्यक्ष के असामजिक तथा अविवेकपूर्ण कार्य से राष्ट्र की सुरक्षा को भारी खतरा उत्पन्न हो गया था। जब गुट निरपेक्ष देशों का सम्मेलन चल रहा था तो भारत की विश्वसनीयता शून्य हो गई थी, उसके बाद राष्ट्रपतिजी को एक पत्र भेजा गया।

श्री जी॰ वेंकट स्वामी (पेडापल्ली) : क्या आप श्री देवेगौड़ा का समर्थन कर रहे हैं?

कर्नल राव राम सिंह : मैं श्री देवेगौड़ा को समर्थन नहीं दे रहा हूं। मैं बिना किसी सदस्य की जानकारी के कांग्रेस अध्यक्ष की तर्कविहीन तथा गैर-जिम्मेदारान कार्यवाही की बात कर रहा हूं।... *(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : आप किस आधार पर ऐसा कह रहे हैं कि यह एक गैरकानूनी कार्यवाही थी?...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : माननीय सदस्यो, कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। श्री कोडीकुन्नील सुरेश, कृपया अपना स्थान ग्रहण करिए।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया व्यवस्था बनाए रखें।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया हस्तक्षेप नहीं करिए।

(व्यवधान)

कर्नल राव राम सिंह : न केवल गुट-निरपेक्ष देशों का सम्मेलन चल रहा था बल्कि भारत और पाकिस्तान के बीच सचिव स्तर की बातचीत भी चल रही थी। काफी अन्तराल के बाद, मेरे विचार में पंद्रह से बीस वर्ष के अन्तराल के बाद श्री देवेगौड़ा और श्री नवाज शरीफ दो देशों के बीच के संबंधों को सामान्य बनाने के लिए सचिव स्तर की बातचीत के लिए तैयार हुए थे। उस समय विदेश सचिव स्तर की बातचीत हो रही थी। सरकार द्वारा समर्थन वापस लिए जाने के साथ ही बातचीत का कोई अर्थ नहीं रहा। मैं कांग्रेस के सदस्यों से यह पूछना चाहूंगा कि क्या समर्थन वापस लेने का वह सही समय था।

उन्हें इसे न्यायासंगत सिद्ध करना चाहिए। महोदय, कांग्रेस दल की एक संस्कृति है जिसमें नेता...*(व्यवधान)*

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : आपकी उत्पत्ति तथा विकास कांग्रेस में ही हुआ है...*(व्यवधान)*

कर्नल राव राम सिंह : इसलिए मैं कांग्रेस दल की मनोवृत्ति को किसी अन्य की मनोवृत्ति से अधिक जानता हूं...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आप भाषण सुनते क्यों नहीं हैं?

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया अध्यक्षपीठ को सम्बोधित करिए।

(व्यवधान)

कर्नल राव राम सिंह : एक अन्य मुद्दा जिसका उन्होंने उस पत्र में उल्लेख किया है वह यह है कि श्री देवेगौड़ा साम्प्रदायिक ताकतों को रोकने तथा आन्तरिक सुरक्षा को बचाने में असफल रहे।

श्री संतोष मोहन देव : मैं उससे सहमत हूं।

कर्नल राव राम सिंह : महोदय, अब मैं एक बात और दोहराऊंगा। राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृष्य के बारे में क्या वास्तविकता है? उसके बाद क्या हुआ? पाकिस्तानी ताकतों ने भारत में अस्थिरता का फायदा उठाकर कारगिल में आगे की सेना पर 130 एम॰एम॰ की तोपों से गोलाबारी करवा दी। लद्दाख में अधिकतर बौद्ध लोग रहते हैं। लेकिन कारगिल में 90 प्रतिशत मुस्लिम जनसंख्या है। पाकिस्तानी सेनाओं ने कारगिल के मुस्लिमों को निकालने के लिए एक बड़ी सैन्य कार्यवाही में कारगिल पर गोलाबारी आरम्भ की। कश्मीरी पंडितों को पहले ही निकाला जा चुका है। अब, लद्दाख से मुस्लिमों को निकाले जाने की बारी है। कांग्रेस दल इस राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृष्य में सुधार करना चाहता है। महोदय स्थिति बद्तर होती जा रही है।

जैसा कि मैंने कहा है, दूसरा मुद्दा आन्तरिक सुरक्षा के बारे में है। बिहार में क्या हो रहा है? पिछले दस दिनों से बिहार में हो रहे नरसंहार के बारे में हम समाचार-पत्रों में पढ़ते आ रहे हैं। क्या यह आन्तरिक सुरक्षा की स्थिति में सुधार हो रहा है? क्या इस संबंध में कांग्रेस दल प्रसन्न है? यह घटनाएं श्री देवेगौड़ा के समय में भी हो रही थी। लेकिन अब यह घटनायें दस गुना अधिक हो रही हैं।

अब हम यहां उन्हीं लोगों को देख रहे हैं—श्री मुलायम सिंह यादव, श्री शरद यादव, श्री राम विलास पासवान, जो कि किसानों तथा पिछड़े वर्ग के हिमायती हैं। किसे हटाया गया है? कृषक समुदाय के एक अन्य प्रतिनिधि श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव को कैबिनेट से हटा दिया गया है। अन्य सभी लोग कैबिनेट में है।

प्रधान मंत्री ने आज यह भी कहा है कि वे कृषकों के लिए कुछ भी कर सकते हैं। फिर आपने अपने मंत्रिमंडल से दो किसान मंत्रियों को अलग क्यों किया? मैं समझता हूं कि इन दोनों किसानों को मंत्रिमंडल से हटाने के संबंध में प्रधानमंत्री को कुछ स्पष्टीकरण देना चाहिए। उन्होंने क्या अपराध किया है? श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव ने क्या अपराध किया है? जब आप अन्य सभी को मंत्रिमंडल में शामिल कर रहे हैं तो आपने बिहार से एक गरीब किसान के बेटे को ही मंत्रिमंडल से क्यों निकाला...*(व्यवधान)* माननीय प्रधानमंत्री, मैं यह कहना चाहूंगा कि श्री मुलायम सिंह यादव अल्पसंख्यकों के हिमायती हैं। कृपया उन्हें अपने मंत्रि मंडल में उप प्रधानमंत्री बनाइए क्योंकि मेरे विचार में आप ऐसा करके अल्पसंख्यक समुदाय के लिए बहुत बड़ा काम करेंगे।

श्री संतोष मोहन देव : आप ऐसा करके उनके लिए मंत्रालय बना रहे हैं।

कर्नल राव राम सिंह : ऐसा इसलिए है क्योंकि अल्पसंख्यक समुदाय के बीच काफी निराशा है कि श्री मुलायम सिंह यादव को उप प्रधानमंत्री नहीं बनाया गया। वास्तव में, उन्हें प्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए था, लेकिन यह एक भिन्न कहानी है।...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया शान्त रहिए।

कर्नल राव राम सिंह : भारतीय संसदीय लोकतंत्र के भीतर जो एक अन्य परम्परा आ गई है वह यह है। मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि राज्य सभा से प्रधानमंत्री बनने की एक परम्परा शुरू हो गई है। कुछ समाचार-पत्र वाले मुझसे पूछ रहे थे कि क्या भविष्य में प्रधानमंत्री के राज्य सभा से चुने जाने के बारे में कोई संवैधानिक संशोधन करने के लिए बातचीत हुई है। यहां तक कि जब श्री नरसिंहराव प्रधानमंत्री बने, तब वे भी वृद्ध थे, उनके पास नान्दयाल से चुनाव लड़कर लोक सभा में चुने जाने की हिम्मत थी। उनके पास मतदाताओं का सामना करने का साहस था। अब, यह परम्परा आरम्भ हो गई है कि न केवल प्रधानमंत्री बल्कि अधिकतर मंत्री भी राज्य सभा से लिए जायेंगे। यह एक बहुत बड़ा फायदा है। अब उन्हें वोट मांगने के लिए नहीं जाना पड़ेगा। उन्हें अपने मतदाताओं के पास नहीं जाना पड़ेगा। इसका एक नुकसान यह है कि प्रधानमंत्री या मंत्री बनने वाले लोक सभा के सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्र में धनराशि का गलत इस्तेमाल करेंगे। लेकिन यहां, कोई निर्वाचन क्षेत्र ही नहीं है। अतः उस पूरे राज्य में संतुलित विकास होगा जिससे वह राज्य सभा का सदस्य संबंध रखता है। अतः यह एक बहुत अच्छे विचार की शुरूआत है।

महोदय, एक अन्य बात है, जिसकी ओर मैं प्रधानमंत्री का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। हम प्रायः गुजराल सिद्धांत के बारे में सुनते हैं। मैं यह अवश्य मानता हूं कि विदेश मंत्री के रूप में श्री इन्द्र कुमार गुजराल ने बहुत अच्छा कार्य किया। लेकिन गुजराल सिद्धांत क्या है? क्या कहीं-कहीं इसकी विस्तृत व्याख्या की गई है? हम सुन रहे हैं कि गुजराल सिद्धांत के अंतर्गत पड़ौसी देशों को एकपक्षीय रियायतें दी जायेंगी। कूटनीति की किस पुस्तक में लिखा हुआ है कि आपका हृदय इतना विशाल होना चाहिए कि आप पड़ोसी देशों को एकपक्षीय रियायतें देते जाएं। क्या गंगा जल का बंटवारा गुजराल सिद्धांत का ही भाग है?

श्री संतोष मोहन देव : वे सब दो तरफा हैं।

कर्नल राव राम सिंह : वे सब दो तरफा ही होने चाहिए। मुझे विश्वास है कि वीजा के संबंध में कुछ समझौता हुआ है। क्या यह भी एकपक्षीय आधार पर है? अब क्या होगा? क्या हम एकपक्षीय आधार पर साइचन ग्लेशियर से सेना वापस बुला लें और इसे पाकिस्तान को सौंप दें? हम इस संबंध में माननीय प्रधानमंत्री से एक स्पष्ट बयान चाहते हैं कि इन एकपक्षीय रियायतों की कुछ सीमा होगी। निश्चय ही, मैं एक बात कहूंगा। नेपाल और भूटान का आधार भिन्न है। वे भिन्न आधार पर हैं। परन्तु उसके अतिरिक्त, भारत की कोई स्थिति नहीं है और मुझे आशा है कि भारत के प्रधानमंत्री देश को यह बताएंगे कि गुजराल सिद्धान्त की कीमत पर राष्ट्रीय हितों का बलिदान नहीं किया जाएगा।

निष्कर्षतः, मैं यह दुबारा कहना चाहूंगा कि शायद यह भ्रम पैदा हो गया है कि संयुक्त मोर्चे के नेता का चुनाव और परिणामस्वरूप प्रधान-मंत्री का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ। देखने से तो यही प्रतीत होता है कि यह चुनाव सुविधा की दृष्टि से किया गया। यहां सर्वसम्मति नहीं थी। यह सुविधाजनक चुनाव था और संयुक्त मोर्चो को इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए। मैं एक और विचार रखना चाहता हूं। उसी दिन, यह निर्णय लिए जाने के बाद श्री चन्द्रबाबू नायडू ने टी॰वी॰ पर एक वक्तव्य दिया, कि अब वह युग आ गया है जब दिल्ली के पास कोई शक्तियां नहीं रहेंगी।

[कर्नल राव राम सिंह]

समस्त सत्ता राज्यों के पास होगी। मैं राज्यों की स्वायत्तता का पक्षधर हूं। परन्तु यदि इसका अर्थ निर्बल और प्रभावशून्य केन्द्र से हो, तो यह बहुत बुरी स्थिति होगी। मुझे लगता है कि इस सम्बन्ध में भी स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

बहुत पहले, ग्रामोफोन बना करते थे तो जब सुई अटक जाती थी, तो एक ही पंक्ति बार-बार दोहराई जाने लगती थी। मुझे लगता है कि वही हालत कांग्रेस और सी॰पी॰एम॰ की हो गई है। एक ही पंक्ति बार-बार दोहराई जा रही है—छद्म धर्मनिरपेक्षता, कट्टरवादिता, सांप्रदायिकता और ऐसी ही अन्य बातें।

मैं सदन के माननीय सदस्यों के विचारार्थ एक विचार रखता हूं। चुनाव करवाये जाएं। प्रधानमंत्री का प्रत्यक्ष चुनाव हो तो ईमानदारी से सोचें, कौन प्रधानमंत्री चुना जाएगा...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी कह रहे थे कि अग्रिम पंक्ति में बैठने वाले भगवा वस्त्रधारी लोगों को केवल पच्चीस प्रतिशत मतदाताओं का समर्थन प्राप्त है। मैं कहता हूं ठीक है। यदि आप ऐसा ही समझते हैं तो आप सीधे प्रधान मंत्री का चुनाव करवाइए और देखिए हमारे पास 25 प्रतिशत वोट हैं या 75 प्रतिशत। यदि आप में हिम्मत है, तो आप आजमा लीजिए।

मैं माननीय प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

[हिन्दी]

श्री जी॰ वेंकट स्वामी (पैदापल्ली) : सभापति जी, बहुत इंतजार के बाद मुझे पहले भी समय नहीं मिला था और आज सारा मूड ठंडा होने के बाद समय मिला है। मैं आज देवेगौड़ा जी के बारे में कुछ बोलना नहीं चाहता था लेकिन बी॰जे॰पी॰ से एक चैम्पियन कर्नल राव राम सिंह श्री देवेगौड़ा सरकार को सपोर्ट करने के लिए निकल गए। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि वाजपेयी जी की पार्टी में देवेगौड़ा जी के सपोर्टर भी हैं और वे हमारे बोर में कह रहे हैं कि हमारी जुबान क्यों बंद थी। हमारी जुबान इसलिए बंद थी क्योंकि हम दोनों एक मकान में रहते हैं और आईन्दा भी उसी मकान में रहना है। उस दरवाजे को तोड़ देने से हम उस मकान में नहीं रह सकते, आप जैसे लोगों से चोरी होने का डर रहता है। इसलिए हमने कुछ नहीं कहा। कहने के लिए बहुत कुछ था। हमने देवेगौड़ा जी की सरकार के खिलाफ सपोर्ट विदड्रा क्यों किया, इस बारे में बहुत सारी बातें हैं। कर्नल राम सिंह जी चले गए, मैं उनको बताना चाह रहा था।...*(व्यवधान)*

कई माननीय सदस्य : उधर से आ रहे हैं।

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : वे एक न एक दिन आ जाएंगे।

सभापति जी, ऐसा लगता है—

इस दिल के टुकड़े हजार हुए
कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा।

यह हालत है कि हमारे अंदर से ही निकलकर लोग कुछ न कुछ बन गए। ऐसे-वैसे लोग कैसे-कैसे हो गए और कैसे-कैसे लोग ऐसे-वैसे हो गए।...*(व्यवधान)* मैडम, मैंने कुछ बोला नहीं है, आप क्यों मेरा मुंह खुलवाना चाहती हैं।

आज कांग्रेस एक बहुत बड़ी जमात है जिसके बारे में अभी हमारे मुलायम सिंह जी ने कहा कि मोनोपोली होने की वजह से हम सबने उस समय रैजोलूशन पास किया था। आज मुलायम सिंह जी गले मिलने के लिए आ रहे हैं। आ जाइए, हम गले मिल लिए और मिलकर चलना तय कर लिया। लेकिन उनको क्यों जलन हो रही है। क्या वजह है कि हम मिलना चाहते हैं।

हम मुद्दा बनाना नहीं चाहते, हम दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहते हैं और वह दोस्ती का हाथ इसलिए बढ़ाना चाहते हैं कि डैमोक्रेसी इस देश में आई है। सुबह गुजराल जी ने कहा...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कोई टीका टिप्पणी नहीं।

[हिन्दी]

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : यह लैंग्वेज नहीं है। सभापति जी, जरा आप उन्होंने जो बोला है, उसको एक्सपंज करिये। सीनियर मैम्बर्स को इनको सिखाना चाहिए।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव : महोदय, इसे कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

सभापति महोदय : कृपया इस तरह की टीका-टिप्पणी न करें।

[हिन्दी]

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : इस तरह की बात अगर हुई है तो यह बहुत बुरी बात हुई है। ये जानते नहीं हैं कि पार्लियामेंट के अन्दर कैसे रहना है, कैसे उठना है, कैसे बैठना है और कैसे बात करना है। इसलिए...*(व्यवधान)* अगर मेरे बारे में पूछना चाहते हैं तो वाजपेयी जी से पूछिये, इस हाउस के अन्दर अगर कोई सीनियर मैम्बर्स हैं तो वाजपेयी जी, इन्द्रजीत गुप्ता जी, चन्द्रशेखर जी और वेंकटस्वामी हैं। आप सीखो, आप क्या बात करते हो। आज हम इतने सीनियर होकर भी अपनी जुबान बन्द करके बैठे हैं, क्यों जुबान नहीं खोलते हैं। यह बात बहुत बुरी बात है। पार्लियामेंट के मैम्बर्स को ऐसी बात करनी चाहिए, पार्लियामेंट की इज्जत को रखने की बात करनी चाहिए। इस तरह से पार्लियामेंट की लज्जा और पार्लियामेंट की इज्जत को देखने वालों के सामने पार्लियामेंट के मैम्बरों को हंसी मजाक में नहीं उड़ाना चाहिए।

मैं यह बात बताना चाह रहा था कि कर्नल राम सिंह अगर नहीं बताते तो मैं छेड़ना भी नहीं चाहता था कि हमने विथड्रा क्यों किया। आज मैं थोड़े में बता देता हूं। ज्यादा नहीं, थोड़े में बता देना चाहता हूं। तंग आकर, दम घुटने की नौबत पर, कांग्रेस की इतनी बड़ी जमात को हालात मजबूत करके विथड्रा करने की तरफ ले गये। इस तरह

से मजबूर किया कि कांग्रेस 112 साल की जमात खामोश क्यों बैठी हुई है। दस महीने के अन्दर जो कांग्रेस की गवर्नमेंट ने किया था, उसको किस तरह से नीचे लाये, उसके आपको मैं एक-दो इंसीडेंट बता दूं। हर एक कहने लगा कि यह प्राइम मिनिस्टर ऑफ इंडिया है या प्राइम मिनिटर ऑफ कर्नाटक है, अखबारों ने भी लिखा, यानि 20 मर्तबा दस महीने के अन्दर वे कर्नाटक गये और रेल्वे के टोटल बजट का 30 परसेंट कर्नाटक में दिया और एक्स्ट्रा 1200 करोड़ रुपया कर्नाटक को दिया है। अपने गांव के लिए रेल ही नहीं, हवाई जहाज का अड्डा भी ले गये। बोलिए आप, ये सारी चीजें छुपकर रह नहीं सकती। ये कब तक छुपेंगी।

ये छोटी-छोटी बातें मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। देश का जो उत्पन्न है...*(व्यवधान)* गुजराल जी, सोचने की बात है कि ये दस महीने के अन्दर देश किधर का किधर गया। चार रुपये किलो गेहूं मिलता था, आप आज जाइये, दस रुपये से कम है क्या? प्राइस राइज इस तरह से आगे बढ़ गया, कर कर रही है, जनता देखना चाहती है कि कांग्रेस क्या कर रही है। दिल्ली की किसी गली में जाइये, प्राइस राइज के बारे में क्या बोल रही है, बिजली के बारे में क्या बोल रही है। बहुत सारी चीजें हैं, जिनकी मैं डिटेल में जाना नहीं चाहता था, लेकिन आज मैं आपको साफ-साफ बताना चाहता हूं कि प्राइस राइज अंगार और आग बाजार में लग रही ही है तो कांग्रेस मुंह बन्द करके खामोश नहीं बैठी हुई थी, सिवा विथड्राल के कुछ नहीं कर सकती थी। तो मेन वजह है...*(व्यवधान)*

श्री ए॰सी॰ जोस (इदुक्की) : हमारे राज्य के लिए तो केवल घोषणाएं ही होती हैं...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : टीका-टिप्पणी बन्द कीजिए।

[हिन्दी]

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : भाई साहब बोलने दो। कर्नल राव राम सिंह के बोलते हुए मैंने कुछ नहीं बोला, आप हमको बोलने का मौका दो। अगर आप डिस्टर्ब करते हैं तो मैं बैठ जाऊंगा। मैंने यही सीखा हूं।

मैं यह बताना चाह रहा था कि मोटी-मोटी बातें मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। देश किधर जा रहा है। कांग्रेस की गवर्नमेंट में जो देश की ग्रोथ रेट थी, वह 7.2 परसेंट ग्रोथ रेट थी।

जो दस महीने के अंदर 6.8 प्रतिशत हो गया। इंडस्ट्रियल ग्रोथ रेट जो कांग्रेस के समय 12.2 प्रतिशत थी, इन दस महीनों में 9.5 प्रतिशत पर आ गई। यही नहीं, एक्सपोर्ट के बारे में भी देखें, कांग्रेस के समय 21 प्रतिशत था, लेकिन अब 5.5 प्रतिशत पर आ गया। ...*(व्यवधान)*

श्री ब्रह्मानंद मंडल (मुंगेर) : समर्थन वापस लिया था तो क्या ये कारण राष्ट्रपति जो को लिखकर दिए थे?

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : इन्फ्लेशन रेट जो पहले 5 प्रतिशत था, जब हमने समर्थन वापस लिया तो 7.5 प्रतिशत पर आ गया। यहीं नहीं, शेयर मार्केट कांग्रेस के समय 4000 पाइंट पर थी, इनके समय में 2000 पाइंट पर आ गई।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : क्या आप श्री मनमोहन सिंह के लिए श्री चिदम्बरम को दोषी ठहरा रहे हैं?

[हिन्दी]

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : मैं नहीं बोलता, मुझे कर्नल राव राम सिंह जी ने छेड़ा इसलिए मैं बता रहा हूं। यह राजनैतिक दल का फर्ज है जनता को बताना, इसलिए मैं बता रहा हूं। अब मैं ह्युमिलिएशन के बारे में बताना चाहता हूं। दोस्ती होती है आपस में मिलकर चलने के लिए। सुषमा जी बोल रही थी कि आप पंजाब में हारे, राजस्थान में हारे, मध्य प्रदेश में हारे, लेकिन हराने वाले ये लोग ही थे। देवेगौड़ा के लोगों ने भी हमारे खिलाफ कांटेस्ट किया और ये लोग हम लोगों की लड़ाई में जीत गए। क्या यह ह्युमिलिएशन नहीं है? कांग्रेस के सपोर्ट करने के बावजूद भी यह ह्युमिलिएशन है। इसलिए उन्होंने हमें समर्थन वापसी के लिए मजबूर किया। गठजोड़ की बात हो सकती है, गुजराल साहब आपके अंदर भी कांग्रेस का खून है, कहीं वह हरकत न करे। देवेगौड़ा जी के अंदर भी कांग्रेस का खून था। इसलिए इन सारी चीजों का ख्याल रखें। नाव चल रही है, ये लोग देख रहे हैं, कब लड़खड़ाएगी और फिर डूबेगी इसलिए आप इसको लड़खड़ाने न दें और इनको हंसने का मौका न दें। अगर देश को मजबूत करना है तो पहले मिलकर चलने की नींव डालें। हमें आगामी चार साल के अंदर चुनाव में न जाना पड़े, यह तय करें इसीमें हम सबका फायदा है। अगर परसों यूनिटी नहीं होती तो देश पर पांच हजार करोड़ रुपये का चुनाव का बोझ पड़ जाता।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पांच हजार करोड़ रुपये या पांच सौ करोड़ रुपये?

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : आप हिसाब लगा लें, एक करोड़ से कम एक क्षेत्र पर नहीं लगेगा। अगर कोई इससे कम बोलता है तो वह बहुत बड़ा आदमी है। मैं सब खर्चा मिलाकर बोल रहा हूं।

आज चुनाव के लिए कोई पार्टी तैयार नहीं है, सिर्फ लीडर तैयार हैं। मैंने स्वयं सदस्यों से बात की है। मेरी कमेटी में बी॰जे॰पी॰ के भी सदस्य हैं। उन्होंने भी कहा कि अभी चुनाव न कराएं, चाहे किसी को भी बनाएं। क्या यही डेमोक्रेसी का मतलब है कि दस महीने में फिर चुनाव हो? इसलिए इसके लिए आप लोगों ने मिलकर गुजराल साहब को नेता चुना है, ये हमारे पुराने दोस्त हैं।

अगर यह भी करेंगे तो वही हालत होगी। यह साफ-साफ बात है। कांग्रेस को आइंदा आप खीचेंगे तो आपको 12 लाख वोटों के लिए जाना पड़ेगा।...*(व्यवधान)* यह नहीं होगा। यह साफ-साफ बात है। आज जो भी फैसला हुआ है, जो भी फैसला करके गुजराल साहब को प्राइम मिनिस्टिर बनाकर हम लोग यहां पर लाए हैं और कांफीडेंस भी सारे हाउस में मिल जाएगा। मैं गुजराल साहब से कहना चाहता हूं कि आपको बहुत सालों का अनुभव है तथा आप बड़े समझदार माने जाते हैं। मैं ट्रेड यूनियन मूवमेंट से आता हूं। पचास साल ट्रेड यूनियन की लड़ाई लड़ी है।

आज पब्लिक सैक्टर में क्या हो रहा है? मैं पब्लिक सैक्टर अंडरटेकिंग का चेयरमैन हूं। 266 इंडस्ट्रीज पब्लिक सैक्टर में हैं और

[श्री जी. वेंकट स्वामी]

दस महीने तक देवेगौड़ा जी से इंक्लूडिंग सी•पी•एम• के लोग और बी•जे•पी• के लोग सारे लोग कहते रहे कि 70 इंडस्ट्रीज बी•आई•एफ•आर• को रेफर हो गई हैं, 110 इंडस्ट्रीज लॉस में जा ही हैं और कभी भी वे बी•आई•एफ•आर• को रेफर हो सकती हैं। पब्लिक सैक्टर इंडस्ट्रीज जो कंट्री का बैकबोन है, वे बर्बादी की तरफ जा रही हैं और हम खामोश होकर देखते रहें? अगर यह कुछ समय और कंटीन्यू करते तो दस महीने के अंदर सारी की सारी 266 इंडस्ट्रीज बर्बाद हो जाती। इसलिए हमको यह करना पड़ा। आपको और बताता हूं। मैं जब टैक्सटाइल मिनिस्टर था,...*(व्यवधान)* एन•टी•सी• के बारे में यह हाउस भी जानता है, सब मेम्बर्स भी जानते हैं। मैंने हाउस में एनाउंस किया था जब मैं कैबिनेट मिनिस्टर था। टैक्सटाइल की 122 इंडस्ट्रीज उस जमाने में ही नहीं आज भी वर्ल्ड में सैकेंड प्रोडक्टिविटी पर आती हैं और सारे टैक्सटाइल मजदूर अपनी वेजेज के लिए चीख-चिल्ला रहे हैं तथा आज वे मोहताज हैं। उनके लिए मैंने एक रास्ता निकाला।

श्रीमती भावनाबेन देवराज भाई चिखलिया (जूनागढ़) : चालीस साल क्या किया?

श्री जी• वेंकट स्वामी : अभी बता रहा हूं। मैं जब कैबिनेट मिनिस्टर बना, ये सारे मेम्बर्स उसमें मेम्बर थे। आप लोग भी थे। मैंने रिसर्च टैक्सटाइल रिसर्च एसोसिएशन को दिया। 125 साल मशीनरी काम नहीं कर सकती थी। वर्ल्ड कम्पीटिशन में यह कपड़ा पैदा नहीं कर सकती थीं। यह स्पिनिंग नहीं कर सकती थी। वे सारे के सारे सिटरा, बिटरा, टेरा, निटरा चार टैक्सटाइल रिसर्च एसोसिएशंस को दिया। उन लोगों ने 2005 करोड़ की मौडरनाइजेशन की स्कीम की रिपोर्ट दी है। डा• मनमोहन सिंह ने कहा कि यह पैसे मैं नहीं दूंगा। माननीय सदस्य जानते हैं कि मनमोहन सिंह जी की छः महीने की लड़ाई के बाद भी इन्होंने नहीं माना और फिर मैंने कहा कि मैं पैसा लाता हूं और उसकी सरप्लस जमीन और प्रोपर्टीज बेचकर हमने एक स्कीम तैयार की। लेबर मिनिस्टर के पास मीटिंग में सभी सदस्यों ने इस पर एग्रीड किया और उसके बाद हमने कहा कि कैबिनेट ने सैक्शन करके रखा है। हमने देवेगौड़ा जी से रिक्वेस्ट की यह कैबिनेट का डिसीजन है। यह एक लाख सत्तर हजार वर्किंग क्लास का मसला है। सारी मुम्बई, कानपुर, गुजरात, बंगाल, मध्य प्रदेश और इंदौर के अंदर टैक्सटाइल की इंडस्ट्रीज हैं। ये सारे सिटीज बर्बाद हो रहे हैं। इनको बर्बाद होने से बचाइए। वह बोले कि टैक्सटाइल मिनिस्टर और सेक्रेटरी को बुलाकर बात करिए। हमने सेक्रेटरी से बात की तो सेक्रेटरी को मालूम ही नहीं कि क्या करना है। कैबिनेट डिसीजन को निकालकर उन्होंने पढ़ा तक नहीं है। मैंने उनको समझाया कि यह मजदूरों का सवाल है। आप कुछ कीजिए। बोलने के बाद भी तीन महीने हो गए और आज तक उनको समझ में नहीं आ रहा है। खाली इम्पलीमेंटेशन का सवाल है। कर्नल राम सिंह जी तो देवेगौड़ा जी के बहुत बड़े सपोर्टर निकले। मैं यह सारी बात आपको इसलिए बताना चाहता हूं कि ये सारे इश्यूज थे, इसलिए हमको अपना सपोर्ट विदड्रा करना पड़ा।...*(व्यवधान)* गलत बोला...*(व्यवधान)* समझदार आया, मसले को समझ सके और समस्या को हल कर सके और हिन्दुस्तान के भविष्य को बनाने के लिए आगे बढ़े। हम लोगों ने जो सपोर्ट विद्-ड्रा किया, वहीं मैं आपको बताना चाह रहा हूं।

महोदय, कहा गया कि हम लोग शरीक क्यों नहीं हुए। परसों उफ भी नहीं किया। अरे भाई, मेरा तो नाम था और मैं सात बजे तक बैठा रहा, लेकिन नाम नहीं आया, क्या करें। संतोष मोहन जी मौजूद हैं, बैठा रहा, लेकिन नाम नहीं आया। चले गए, तो शिवराज पाटिल को बुला लिया। चाय पीने गए, तो 'आजतक' ने बुला लिया। इसके अलावा शरद पवार जी ने बताया, कल उनसे हाथ मिलाकर चलना है, तो आज मुक्का बताकर मत जाओ। आज मुक्का बतायेंगे, कल हाथ मिलायेंगे, तो मजा नहीं आएगा। उस रोज मुझे मालूम है, सीताराम केसरी जी पर पर्सनल अटैक बहुत हुए हैं, जबकि जाने वाले प्राइम मिनिस्टर को इस बुरी तरह से नहीं बोलना चाहिए था।...*(व्यवधान)* सीताराम केसरी जी के बारे में उनको बोलने की जरूरत नहीं थी। एआईसीसी के प्रैजीडेंट सीताराम केसरी जी वे खुद बोले कि मुझे लैटर नहीं मिला है और लैटर मिला होता, तो एक्नालिजमेंट आफिस में होता। यहां बेधड़क उनको गालियां दी गई, लेकिन गालियां देने से कुछ नहीं मिलता है, इसलिए हम चुप बैठे रहे और हमने जाने वाले कई प्राइम मिनिस्टर्स को देखा है। वे बोले, इसलिए कि टीवी था। अब टीवी आ गया है और सारा हिन्दुस्तान देख रहा है। कई प्राइम मिनिस्टर गए उस वक्त टीवी नहीं था, केवल नरसिम्हा राव को छोड़ कर। पहले कुछ भी बोलो, तो चल जाता था। इस तरह हम लोगों ने सब्र किया कि जो कहते हैं, कहने दो। जाने वाला चार गालियां देकर जाएगा। वह यह कह कर तो नहीं जाएगा कि सीताराम केसरी बढ़िया आदमी है, इसलिए विद्-ड्रा किया। यह तो वह नहीं बोलेगा। जब-तब सोमनाथ चटर्जी जी भी चुटकियां लेते हैं। वाजपेयी जी को सीताराम वाजपेयी बोले। वह समझ में नहीं आया। वाजपेयी जी, इसके बारे में रिसर्च करना पड़ेगा कि सीताराम वाजपेयी और वाजपेयी जी में क्या है।... *(व्यवधान)* अटल बिहारी वाजपेयी जी को सीताराम वाजमेयी बोले। यह मिली-जुली बात है। उस रोज तो चन्दशेखर जी भी पूरी तरह से जितना बोल सकते थे, बोले और देवगौड़ा जी को जितना सपोर्ट करना था, किया।...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर (बलिया) : आप हम को तो मत कोट कीजिए। कांग्रेस के कल्चर को मैं जानता हूं। न मैंने सीताराम केसरी जी के बारे में एक शब्द कहा और न देवेगौड़ा जी की तारीफ करने से कुछ मिलने वाला है। लेकिन मैं इस परम्परा को नहीं मानता, जो प्रधान मंत्री उस दिन था, जो जवाब दे सकता था, उस वक्त आप लोग चुप रहे और आज जब वे सदन में नहीं है, तो सारी बातें कह रहे हैं। यह कांग्रेस का शिष्टाचार नहीं है और देश का शिष्टाचार नहीं है।

श्री जी• वेंकट स्वामी : चन्द्रशेखर जी माफ करेंगे। आप उस वक्त बैठे हुए थे, क्या सीताराम केसजी जी यहां पर थे। आप उस वक्त कैसे खामोश बैठे रहे। सीताराम केसरी यहां पर नहीं थे, इसलिए यहां धज्जियां उड़ायी गई और उस वक्त आप चुप बैठे रहे।... *(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर : मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं, सीताराम केसरी जी का, जितना कहा गया, वह कम था।

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : मैं आपको पुराने साथी की हैसियत से कहना चाहता हूं। आपको सीताराम केसरी जी के बारे में यह कहना शोभा नहीं देता है।

श्री चन्द्रशेखर : हमें सीताराम केसरी जी के बारे में कुछ नहीं कहना है।

[अनुवाद]

वह मेरे विचारों के केन्द्र नहीं हैं।

[हिन्दी]

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : आपने अभी कहा है, जो भी कहा है, कम है, उससे ज्यादा कह सकते थे।...*(व्यवधान)*

आपने कहा है, अभी कहा है। खैर जो भी है, है, जो हो गया सो हो गया, उसके बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। मगर यह जरूर कहूंगा आपने एक बात सच्ची कही कि जो आदमी यहां नहीं है उसके बारे में नहीं बोलना चाहिए, यह सही बात है। लेकिन आपने सीताराम केसरी जी के लिए उस रोज क्या नहीं बोला, हर बात बोली गई। मगर उसके बावजूद भी हमने सब्र किया और आज भी सब्र कर रहे हैं। इसलिए सब्र कर रहे हैं, ये अंदरूनी तरीके से जिन्दगीभर कम्युनिस्ट्स को गाली देकर, हाथ मिला कर कभी भी हम इलेक्शन में नहीं गए। हमने सेक्यूलरिजम के लिए नारा बुलन्द किया।...*(व्यवधान)* मैं माफी चाहता हूं और कहना चाहता हूं कि वक्त आने पर सारी पार्टियां बी॰जे॰पी॰ से मिली है। क्या जनता पार्टी में रहने पर आप लोगों ने उनके बगैर गवर्नमेंट नहीं बनाई? अभी-अभी वी॰पी॰ सिंह जी के टाइम में जरूरत पड़ी तो बी॰जे॰पी॰ से मिले हैं। कांग्रेस एक ऐसी जमात है जो कभी भी उनसे नहीं मिली। यह सेक्यूलरिजम पर जिन्दा रही और उस पर अटल रही।...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय, कांग्रेस के सेक्यूलरिजम पर मुझे मान है। गुजराल साहब यहां से चले गए हैं। मैं यह जानना चाहता था कि वह गरीबों के लिए क्या कर रहे हैं? हमने मेमोरेंडम दिया, 150 एम॰पीज, एस॰सी॰, एस॰टी॰, जिनको देवेगौड़ा जी ने हैदराबाद हाउस में दावत दिया, मैं उसका चेयरमैन हूं, हम सब ने मिल कर मेमोरेंडम दिया कि एस॰सी॰, एस॰टी॰ के बारे में कुछ कीजिए। उन्होंने कहा कि ठीक है मैं कर दूंगा। उस वक्त सब लोग समझे कि देवेगौड़ा जी कर देंगे। मैं आपको वजह बता रहा हूं कि हमने क्यों विदड्रा किया। वीकर सैक्शन प्रोग्राम के अंदर कोई ऐसा मेम्बर है, वीकर सैक्शन को लात मार कर जीतने वाला कोई ऐसा है तो आप मुझे बताइए। हरेक को वीकर सैक्शन की सपोर्ट चाहिए, हर पार्टी को चाहिए। उन मसलों को टटोल कर हमने देवेगौड़ा जो के सामने रखा, मैं आपको आज यह बताना चाहता हूं। फिर एग्जीक्यूटिव बैठ कर बोली कि क्या यह अमल नहीं कर रहे। फिर हम डेप्यूटेशन लेकर गए लेकिन इन्होंने कुछ नहीं किया। वीकर सैक्शन के मसले उनके सामने रखे। यह बहुत गंभीर बात है।...*(व्यवधान)*

रेल मंत्री (श्री राम विलास पासवान) : वीकर सैक्शन के लिए किस ने क्या किया है,...*(व्यवधान)*

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : अगर पासवान साहब बोलना चाहते हैं कि मैं जो बोल रहा हूं वह गलत है तो आप जरूर बोलिए। मैं बैठ जाता हूं।

श्री राम विलास पासवान : हम लोगों ने जिस दिन लास्ट में मेमोरेंडम दिया, सभी एस॰सी॰, एस॰टी॰ के माननीय सदस्यों को मालूम है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री कोडीकुन्नील सुरेश (अडूर) : हमने अपना ज्ञापन दे दिया है। कांग्रेस ने अपना ज्ञापन प्रस्तुत कर दिया है।...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जाएं। श्री वेंकट स्वामी की अनुमति से श्री पासवान बोल रहे हैं।

श्री राम विलास पासवान : सभापति जी, मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि जो माननीय सदस्यों ने कहा, एस॰सी॰, एस॰टी॰ फोरम के संबंध में हम लोग जब पिछली बार मिले, आपको सोचना चाहिए था उसके दस या 12 दिन के बाद समर्थन वापिस हो गया।...*(व्यवधान)*

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : अगर 10-12 दिन में हो गया, ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : श्री वेंकट स्वामी, आपका समय पूरा हो गया है, कृपया अपना भाषण समाप्त करें...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अमर राय प्रधान (कूचबिहार) : यदि आपकी राय थी, फिर आपको डेप्यूटेशन की क्या जरूरत थी?...*(व्यवधान)*

अपराह्न 5.00 बजे

(व्यवधान)

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठें।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : श्री वेंकट स्वामी के भाषण के अतिरिक्त कुछ भी कार्यवाही वृतान्त में शामिल नहीं किया जाएगा।

[हिन्दी]

श्री जी॰ वेंकट स्वामी : मैं पासवान जी की जगह जब बैठता था तो वह यहां बैठते थे। पासवान जी उस समय वही बोलते थे जो मैं आज बोल रहा हूं। आज वे वहां बैठे हुए हैं, इसलिए ऐसा बोल रहे हैं। उनके दिल में क्या है, उसे मैं जानता हूं। इन मसलों को हल करने के लिए हमें कुछ काम करना चाहिए। पासवान जी आज गुजराल साहब के साथ बैठे हुए हैं। वीकर सैक्शन प्रोग्राम के लिए जो हमने मैमोरंडम दिया है, उसके लिए मैं उन्हें एक महीने का समय देता

[श्री जी. वेंकट स्वामी]

हूं। वह उसे कराएं वह सभी लोगों का काम है। मैं तभी समझ पाऊंगा कि वह दस दिन नहीं थे...*(व्यवधान)*

सभापति जी, मैं आखिर में इतना कह सकता हूं कि हम गुजराल साहब की प्रोग्रैसिव आइडॉलोजी पर विश्वास रखते हैं। देश का वीकर सैक्शन विश्वास करके बैठा हुआ है कि गुजराल साहब गरीबों के लिए काम करेंगे। मुझे विश्वास है कि गुजराल साहब इस तरफ ध्यान देंगे।

अपराह्न 5.02 बजे

(उपाध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए*)

मैं दो बातें कह कर अपनी बात समाप्त करूंगा। इंडिया की वर्किंग क्लास की जो बरबादी हो रही है, आप उसे बचाएं। वीकर सैक्शन के बारे में जो मैमोरंडम 150 एम•पीज• ने दिया है, उसको आप पूरा करें।

उपाध्यक्ष जी, उस मैमोरंडम को देते समय आप भी थे। वह रूक गया है। उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई इसलिए हम इस दिशा में आगे बढ़े। उस बारे में कुछ नहीं हुआ।

मैं अंत में दो-तीन मुद्दे रख कर अपनी बात समाप्त करूंगा। इंडिया के मैप में पब्लिक सैक्टर इंडस्ट्रीज की जो बरबादी हो रही है, उसको बचाने की जरूरत है। हम आजादी की 50वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। आप आज भी गांव में जाकर देखें। आज भी गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग भूख और प्यास से मर रहे हैं। उनके पेट में भूख की आग जल रही है। उनका विभाग जल रहा है। इसको देखकर क्या किया जाए? उनके बारे में हम डिमांड करना चाहते हैं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री एन•के• प्रेमचन्द्रन (क्विलोन) : विगत चालीस सालों में आपने क्या किया है?...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया उन्हें अपना भाषण पूरा करने दें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : उन्हें अपना भाषण पूरा करने दें; कृपया।

श्री जी• वेंकट स्वामी : मैं आखिर में यह कहना चाहता हूं कि डैमोक्रेसी का जो मन्दिर बना हुआ है, लैजिस्लेचर, एग्जीक्यूटिव... *(व्यवधान)* मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि कांग्रेस की जो तीन-चार महत्वपूर्ण मांगें हैं, उसे आप पूरा करें। हमारे प्राइम मिनिस्टर इन वीकर सैक्शन्स के मसलों को हल करें। वीकर सैक्शन्स के 170 एम•पीज• ने जो मैमोरंडम दिया है, उसे आप पूरा करें। हिन्दुस्तान का वार्किंग क्लास कई करोड़ों में है। वे आज दबाव में हैं। पब्लिक सैक्टर बरबाद हो रहा है। उसकी बरबादी को आप दूर करें...*(व्यवधान)* आप पब्लिक सैक्टर इंडस्ट्रीज को बचाएं। आज इसको बचाने की जरूरत है। यह बहुत महत्वपूर्ण प्वाइंट है। मेरी इस बारे में इंडस्ट्री मिनिस्टर और टैक्सटाइल मिनिस्टर से बात हुई थी। जब देवेगौड़ा जी प्राइम मिनिस्टर थे तो उनसे भी बात हुई थी, मगर मसला वैसे का वैसा है।

अगर जल्दी नहीं कर सके तो इंडिया की जो सही प्रोडक्टिव बोन है, वह तबाह और बरबाद हो जायेगी। मैंने जो वर्किंग क्लास और वीकर सैक्शन की बात बताई है, इन सारी चीजों पर प्राईम मिनिस्टर श्री गुजराल साहब से गुजारिश करूंगा कि इस तरफ ध्यान देंगे। मैं इस विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करते हुये विश्वास करूंगा कि वे हमारी डिमांड्स पर गौर फरमाकर उन्हें कबूल करेंगे।

[अनुवाद]

श्री पी• चिदम्बरम् (शिवगंगा) : उपाध्यक्ष महोदय, अपनी पार्टी तमिल मनिला कांग्रेस की ओर से, मैं प्रधानमंत्री द्वारा पेश किए गए उस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं जिसमें उन्होंने अपने नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद में विश्वास मत मांगा है।

केवल दस दिन पहले ही हमने एक अन्य बहस में भाग लिया था। उस बहस का परिणाम या उस मत विभाजन का परिणाम उसी समय ज्ञात था, जब प्रधान मंत्री वह प्रस्ताव पेश करने के लिए खड़े हुए थे। मात्र दस दिनों के अन्दर ही देश के राजनीतिक दलों के राजनीतिक समीकरणों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। पिछले बीस दिनों में घटी घटनाओं के संबंध में विश्लेषण हेतु मैं बस थोड़ा सा समय ही लूंगा। मैं बड़ी ईमानदारी ये यह आशा करता हूं और मेरी पार्टी को भी आशा है कि इस सदन के सभी घटकों ने उन घटनाओं से महत्वपूर्ण सबक सीखे होंगे जो 30 मार्च, 1997 के बाद देश में घटी हैं।

महोदय, हमारे देश में कुल छः या सात मुख्य राजनीतिक दल हैं। शेष सभी क्षेत्रीय पार्टियां हैं। भारत की राजनीति किसी न किसी राजनीतिक दल के ही इर्द-गिर्द चक्कर काटेगी। क्षेत्रीय पार्टियां देश के शासन में अधिक से अधिक हिस्सा मांग रही हैं। अतः यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि जो पुरुष अथवा महिलाएं बड़े-बड़े पदों पर आसीन है, विशेषकर ऐसे महत्वपूर्ण पद जैसे राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी के नेता, उच्च पद जैसे प्रधानमंत्री, वे बड़ी गरिमा से उस पद के कर्तव्य निभाएं। विगत तीन सप्ताहों के दौरान सार्वजनिक बहस गाली-गलौज के रूप में बदल गई है। इसका अन्त अवश्य हो जाना चाहिए। लाहौर में जन्मे, स्वतंत्रता संग्राम में पले स्वतन्त्रता सेनानियों की छत्र-छाया में विकसित हुए ऐसे स्कूलों, कालेजों में पढ़े जहां उदार-शिक्षा की प्रथा थी, भारत की बहुल्यवादी संस्कृति में फले-फूले, धर्म-निरपेक्षता में तथा रीति-रिवाजों में दृढ़-विश्वास रखने वाले प्रधान मंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल के आगमन से, मुझे पूरी आशा है कि भारत में सार्वजनिक बहस का स्तर ऊंचा होगा और हम गर्व और शान से अपने लोगों में खड़े हो सकेंगे।

महोदय, 31 मार्च, 1997 को सम्पन्न होने वाला वर्ष संतोषजनक वर्ष रहा है। चाहे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री देवेगौड़ा के साथ सदन के विभिन्न पक्षों के कुछ मतभेद विद्यमान रहे हो, परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी सरकार ने काम नहीं किया। सरकार के पतन के अवसर पर जितने भी सम्पादकीय लिखे गए, सब में सरकार के कार्यनिष्पादन को सराहनीय बताया गया है।

श्री वेंकट स्वामी ने जो प्रश्न उठाए हैं, मैं उनके साथ नहीं जुड़ना चाहता? अतः कुछ बातों को उजागर किया जाना चाहिए।

4 अप्रैल, 1996 को भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 17.18 बिलियन डालर था। वर्ष के अन्त में यह 22-34 बिलियन डालर था। और यह तब था जब हमने समस्त भारत विकास बांड का निष्क्रय कर लिया था तथा सभी अन्तर्राष्ट्रीय देयता का भुगतान कर दिया था। 29 जून, 1996 को मुद्रा-स्फीति का सूचकांक निम्नतम 4.18 प्रतिशत था। यह तो प्रमाण है कि मुद्रा-स्फीति फिर बढ़ गई क्योंकि पैट्रोल की कीमतों को सही करना पड़ गया तो लगभग ढाई वर्ष से वैसी की वैसी थी। 15.2.1997 को मुद्रा-स्फीति 7.99 प्रतिशत हो गई परन्तु तत्पश्चात् दो महीने बाद 5.4.1997 को मुद्रा-स्फीति पूरा एक अंक घट कर 6.99 प्रतिशत हो गई। मुझे इस बात पर गर्व है कि श्री देवेगौड़ा ने जब अपना पद छोड़ा, मुद्रा-स्फीति फिर 7 प्रतिशत से कम हो गई थी।

वित्तीय प्रबन्धन 1996-97 में उत्कृष्ट रहा। 1994-95 के दौरान 'ब्रोड मनी' 22 प्रतिशत से भी अधिक बढ़ गया। 1995-96 में यह और बढ़ गया और 'ब्रोड मनी' में 13.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पहली बार, हम इसे संतुलित कर पाए हैं। वर्ष 1996-97 में दी 'ब्रोड मनी' 15.6 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी और विश्वास कीजिए यदि हम तीन वर्षों तक लगातार विकास की दर 15 से 16 प्रतिशत के बीच रखने पर जमे रहते हैं, तो हमने मुद्रा-स्फीति को समाप्त कर दिया होता और मुद्रा-स्फीति संबंधी संभावनाओं को भी समाप्त कर दिया होता।

कांग्रेस शासन के प्रारंभिक चार वर्षों के दौरान मुद्रा-स्फीति की औसत दर दस प्रतिशत रही। 1995-96 में औसत मुद्रा-स्फीति 7.8 प्रतिशत रही तथा 1996-97 में औसत मुद्रा-स्फीति 6.3 प्रतिशत रही। इसके पीछे बहुत से कारण, बहुत सी बातें और अनेक रुकावटें थीं। एक है आरोप का विभाजन न करना। 1991-92 से 1993-94 तक के वर्ष कठिन वर्ष रहे। 1996-97 का वर्ष अपेक्षाकृत एक आसान वर्ष रहा। अतः मतभेद तो रहेंगे। मुद्दा यह है कि आज हम अपेक्षाकृत मजबूत भूमि पर खड़े हैं, हमारी अर्थव्यवस्था अधिक मजबूत हैं, अतः हम एक साथ मिलकर अधिक मजबूत अर्थव्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं।

मुझे विश्वास है, महोदय, कि हम विकास की दर सात प्रतिशत बनाए रख सकते हैं। दो-तीन वर्ष में हम विकास की दर 8 प्रतिशत भी कर सकते हैं। मैं श्री-वेंकट स्वामी से हाथ मिला कर कह सकता हूं, "चलिए, हम विगत पांच-छः वर्षों में किये गए कामों पर निर्माण करने के लिए मिलकर काम करें।"

महोदय, आज हस्तक्षेप करने का मेरा उद्देश्य आर्थिक कार्य-प्रणाली निष्पादन को उजागर करना नहीं था। मैं कुछ और मुद्दों की ओर अपना ध्यान देना चाहता हूं।

मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री ने अपना भाषण श्री जवाहर लाल नेहरू की पुस्तक "ट्रस्ट विथ डेस्टिनी" को स्मरण करके आरंभ किया। मैं प्रधानमंत्री के उस वक्तव्य का भी स्वागत करता हूं जिसमें शपथ लेने के तुरन्त बाद उन्होंने यह कहा कि यह सरकार किसी भी बाद के 'विरोध' में नहीं है, अतः इस सरकार में कांग्रेस-विरोध का भी कोई स्थान नहीं है। शायद यह बहुत बुद्धिमतापूर्ण और सही वक्तव्य है। इस सरकार और कांग्रेस को मिलकर काम करना है और उचित समय आने पर, कम से कम कुछ मुद्दों पर यह सरकार और भा॰ज॰पा॰ मिलकर काम कर सकते हैं। जैसा कि श्री सोमनाथ चटर्जी ने कहा हम इस सभा के गठन को निर्धारित नहीं करते, इसके गठन का निर्धारण तो भारत की जनता करती है। हमारा काम तो जनादेश को पहचानना, उसे ठीक-ठीक पढ़ना और सरकार में पांच वर्ष तक काम करना है।

महोदय, पंडित जवाहर लाल नेहरू का "ट्रस्ट विथ डेस्टिनी" आज भी एक अवधारणा, एक उद्देश्य और एक सपना है और मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल ने भारत की स्वतन्त्रता के समय किए गए वायदों को पूरा करने की शपथ ली है। मैं केवल पांच मुद्दों, पांच विषयों पर बोलना चाहता हूं और मैं किसी के भी विस्तार में नहीं जाऊंगा।

इसमें, प्रधानमंत्री जी, सर्वप्रथम हैं "कृपया वायदा करें कि आपकी सरकार सहकारी संघीय शासन को बढ़ावा देगी" राज्यों के मुख्यमंत्रियों के सम्पूर्ण सहयोग से केन्द्र सरकार का शासन चलाना कोई शर्म की बात नहीं।

वास्तव में, सब भारतीय बड़े गर्व और शान महसूस करेंगे, जब वे यह जानेंगे कि भारत सरकार केवल चालीस-पचास पुरुषों-महिलाओं का कार्य-व्यापार नहीं, अपितु यह सभी राज्यों और देश के राज्यों के सभी मुख्यमंत्रियों का संयुक्त कार्य-व्यापार है। भा॰ज॰पा॰ क्या कर रही है? वह भी एक प्रकार के सहकारी संघीय शासन की ओर बढ़ रही है। यदि इस स्थिति की हल्के शब्दों में व्याख्या करूं तो ये वैसे ही है जैसे आप भाड़े की टैक्सियों में यात्रा करने वाले यात्रियों की तरह हों। पंजाब में आप अकाली दल द्वारा खींची जा रही कार में सवार हैं; हरियाणा में हरियाणा विकास पार्टी द्वारा चलाई जा रही कार में सवार है, महाराष्ट्र में शिव सेना द्वारा चलाई जा रही कार में, उत्तर प्रदेश में कुमारी मायावती द्वारा चलाई जा रही कार में, आप अन्य ऐसी कारों और चालकों की तलाश में हैं, जो आपको आगे बढ़ा सके। अब यह मात्र सुविधा का प्रश्न नहीं रह गया, इसमें कुछ गलत नहीं क्योंकि यह भारत में शासन के सिद्धांत पर आधारित है जिसका नाम है सहकारी संघीय शासन। मैं आपके लोकतांत्रिक राष्ट्रीय मोर्चे के लिए शुभ कामना प्रकट करता हूं, केवल इस आशा के साथ कि आप और नई पार्टियां नहीं बनाएंगे ताकि आप मोर्चे को मजबूत बना सकें।

प्रधानमंत्री महोदय, मेरा आपसे दूसरा निवेदन यह है कि आप वायदा करें कि आप, सी॰एम॰पी॰ के शब्दों में, शासन के वैकल्पिक तरीके का अनुसरण करेंगे। हमने शासन का एक वैकल्पिक ढंग अपनाने की शपथ ली है, एक ऐसा ढंग जिसमें पारदर्शिता, जवाबदेही वार्तालाप और सर्वोच्च-पारस्परिक सम्मान, शिष्टाचार हो, सरकार चाहे कोई भी बनाए। आप स्वभाव से ही मेल-मिलाप करवाने वाले व्यक्ति हैं। यदि आप ऐसे न होते, तो आप एक सफल राजनयिक न होते। इस देश में हम मुकाबला करने वाले नहीं बन सकते। हम किससे मुकाबला कर रहे हैं? यदि हम किसी का मुकाबला करना चाहते हैं अथवा किसी वस्तु को मिटाना चाहते हैं अथवा उसे परास्त करना चाहते हैं तो वह है गरीबी, बीमारी और महामारी। हम सदन में

[श्री पी॰ चिदम्बरम]

बैठकर प्रतिदिन एक दूसरे को चुनौती नहीं दे सकते और एक दूसरे को मिटाने का प्रयत्न नहीं कर सकते। चुनावों के दौरान पांच वर्षों में एक बार ऐसा होता है। परन्तु जब चुनाव सम्पन्न हो जाते हैं, मैं प्रधानमंत्री से अनुरोध करता हूं, कि प्रधानमंत्री सी॰एम॰पी॰ द्वारा सुझाये गए वैकल्पिक शासन पद्धति को अपना लें जिसमें अविश्वास, आशंका, परदे की पीछे की गतिविधियों, अपरिभाषित शब्दावली-बदले की भावना से प्रेरित कार्यवाही के लिए कोई स्थान न हो, समझौते, नागरिक वार्तालाप, शिष्टाचार और पारस्परिक सम्मान के लिए स्थान अवश्य हो।

प्रधानमंत्री महोदय, मेरा तीसरा अनुरोध यह है कि कृपया सामाजिक-राजनीतिक सूची को जिसके प्रति हम सब वचनबद्ध है, सबसे ऊपर रखें। मैं केवल पांच बातों का जिक्र करूंगा। पहले, लोकपाल विधेयक को पास किया जाए, दूसरे महिलाओं के आरक्षण संबंधी संविधान (संशोधन) विधेयक को पारित किया जाए; तीसरे पंचायती राज संस्थाओं को शक्तियां दी जाएं, जिनके प्रतिनिधि तो चुने जाते हैं परन्तु जिनके पास कोई धन, कोई अधिकार नहीं होता; चौथे सरकारी गोपनीयता अधिनियम को दुबारा बनाया जाए और पांचवा, सूचना की स्वतन्त्रता संबंधी अधिनियम पारित किया जाए। चलिए वर्ष 1997 में ही इन सब कामों को पूरा करने की शपथ लें।

प्रधानमंत्री जी, मेरा चौथा निवेदन यह है : कृपया 'गुजराल सिद्धांत' का अनुपालन जारी रखें। और इस सिद्धांत को न समझने वालों की ओर ध्यान न दें। इसकी व्याख्या करने का मौका आपको मिलेगा। कृपया इस सिद्धांत का कार्यान्वयन जारी रखें। यह किसी आदान-प्रदान की नीति पर आधारित नहीं है और यह सही भी है। भारत एक बहुत बड़ा देश है। दक्षिण एशिया में भारत सबसे बड़ा देश है और पड़ोसियों के साथ हमारे संबंध हर मामले में आदान-प्रदान पर आधारित नहीं हो सकते। जब मैं वाणिज्य मंत्री था, तो यह सच है कि मैंने इस प्रस्ताव को पेश किया था कि हमें दक्षिण एशियाई साथियों को एकतरफा व्यापार रियायतें देनी चाहिए। इसी से 'साप्ता' बल लागू हुआ तो साफ्ता बन जाएगा। अतः गुजराल सिद्धांत को जारी रखना चाहिए, क्योंकि राष्ट्र के लिए यही सही सिद्धांत है, इस युग के लिए यही सिद्धांत है और हम आपका समर्थन करेंगे।

प्रधानमंत्री जी, मेरा आखिरी निवेदन यह है, मैं इस पर अधिक विस्तार में नहीं जाना चाहता; यह ऐसा मामला है जिससे श्रीमती सुषमा स्वराज को हार्दिक प्रसन्नता होगी; 'चिदम्बरम् बजट' को पारित कीजिए।

[हिन्दी]

श्री सुख लाल कुशवाहा (सतना) : आदरणीय उपाध्यक्ष जी, इस सदन में माननीय प्रधान मंत्री जी ने विश्वास-मत प्राप्त करने के लिए जो प्रस्ताव रखा है, मैं उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। अभी इस सदन में कई वरिष्ठ माननीय सदस्यों ने इस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में अपने-अपने विचार व्यक्त किए, मैं उन बातों को दोहराना उचित नहीं मानता। मैं इस सदन में पहली बार निर्वाचित होकर आया हूं। इसे सौभाग्य कहिए या दुर्भाग्य कहिए कि पहली बार इस सदन में आने के बाद, आज मैं चौथी बार सदन में विश्वास-मत पर होने वाली बहस में भाग ले रहा हूं, विश्वास या अविश्वास मत पर चार बार माननीय सदस्यों के भाषण सुनने और देखने का मुझे मौका मिला है।

जब मैं भारत के इतिहास का पुनरीक्षण करता हूं, भारतीय लोकतंत्र का पुनरीक्षण करता हूं, यहां की व्यवस्था का पुनरीक्षण करता हूं तो 1947 से लेकर आज तक 50 सालों में लगातार इस देश के दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और मूल निवासी गरीबों के मामले में लम्बी पंचायतें हुई हैं लेकिन इस सबके बावजूद अभी तक उनकी बेरोजगारी, भुखमरी, लाचारी, जुल्म, अत्याचार, सामाजिक असमानता और गैर-बराबरी का अंत नहीं हुआ, कोई पटाक्षेप नहीं हुआ।

उपाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि अभी यहां अनेक माननीय सदस्यों ने इस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में बोला, अभी कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ सदस्य श्री जी॰ वेंकट स्वामी के भाषण में गरीबों, मजदूरों और किसानों की लम्बी पंचायत सुनकर मुझे बड़ा तरस आया, बड़ी तकलीफ हुई। उनके दर्द को देखकर मेरा अन्तःकरण विदीर्ण हो गया क्योंकि जब उनके हाथ में सत्ता थी, आजादी से लेकर आज तक उनकी पार्टी ने गरीबों और मजलूमों के सामने गांधी और नेहरू का काल्पनिक बछड़ा खड़ा करके सत्ता का सुख भोगा। आप जानते हैं कि जब किसी दुधारू गाय या भैंस का कोई बछड़ा मर जाता है तो उसकी बौडी में कुहाल भरकर गाय या भैंस के सामने खड़ा करके उससे दूध निकाल लिया जाता है, उसी तरह इस देश के गरीबों और मजलूमों के सामने कांग्रेस पार्टी ने काल्पनिक बछड़ा खड़ा करके सत्ता का सुख भोगा और आज यहां उनके प्रति घड़ियाली आंसू बहाए जा रहे हैं। मुझे उनकी बातें सुनकर तरस आता है।

बस्ती के सारे लोग अतिस परस्त थे,
घर जल रहा था और समुन्दर करीब था।

जब आपके हाथों में सत्ता थी, शासन की बागडोर थी, उस समय आप क्या कर रहे थे? आज परिस्थितियां कितनी विषम हैं। जब भी हम लोग अपने क्षेत्र में गरीबों और दलितों के बीच जाते हैं और मुझे उसी समाज में जन्म लेने का सौभाग्य मिला है, मैं देखता हूं कि वे लोग पीने के पानी के लिए तरसते हैं, बहुत सी जगह गरीबों के बच्चे रोटी के अभाव में मर जाते हैं लेकिन हम यहां उनके प्रति बोलकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं-इससे समस्या का अंत होने वाला नहीं है। हमें इस समस्या के दूसरे पहलू को भी सामने रखना होगा।

अभी हमारी बहन सुषमा स्वराज जी ने बहुत सी बातें कहीं। मैंने उनके दर्द को भांपा है। उनके वक्तव्य में कसक और टीस मैंने देखी। उन्होंने कहा कि 13 पार्टियों की सरकार 10 महीने चली और गिर गई, अब 16 में से 13 पार्टियां रह गई हैं, फिर से हमारे सामने विश्वास-मत आया है, फिर से सब लोग एक हो गए।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस बात को कहना चाहूंगा कि इस देश में कहीं कुछ हो जाए और जो कुछ हो जाए वह कम है। इस देश में आज

की जो व्यवस्था है और सचमुच में अगर सामाजिक न्याय की बात हो, समानता की बात हो, गरीबी मिटाने की बात हो, तो मनुष्य का जो जन्मसिद्ध अधिकार है इज्जत से जीने का, वह इस देश में नहीं मिला है। किसी आदमी का यदि कत्ल कर दिया जाए, तो जितना दोष लगता है उससे कहीं ज्यादा दोष इस बात से लगता है कि किसी समाज में किसी विशेष जाति के लोगों के प्रति यह भावना पैदा कर दो कि तुम नीच हो, तुम अछूत हो, यह सबसे बड़ा और महापाप है और यह पाप इस देश में हुआ है। मनु स्मृति के कारण इस देश में यह पाप हुआ है। मनु स्मृति को इस देश में बड़ी शक्ति के साथ और बड़े संकल्प के साथ लागू किया गया। इसलिए जब तक मनुवाद के खिलाफ लड़ने का साहस हम नहीं जुटा पाएंगे तब तक इस देश में इस बात का पटाक्षेप नहीं हो सकेगा।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस मामले में कहना चाहूंगा कि अगर सीता को अग्नि परीक्षा लेकर और गर्भावस्था में जंगल में फिकवा दिया जाए और ऐसे व्यक्ति को यदि इस देश में मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जा सकता है, तो आप स्वयं अनुमान लगाइए कि यह कैसा सामाजिक न्याय है। यह बात तो कोई सुख लाल नहीं कह रहा है। यह बात तो इस देश में जो संस्कार डाले गए हैं, जो पढ़ाया गया है, जो सुनाया गया है, जो सिखाया गया है, वह बोल रहा है। अगर इस देश में अपने छोटे भाई की पत्नी को शौर्यता से, पराक्रम से जब जीत नहीं सके, उस द्रोपदी को धोखे से पांचाली बना दें और उस व्यक्ति को इस देश में यदि धर्मराज कहा जा सकता है, तो आप स्वयं अनुमान लगाइए कि यह कैसा सामाजिक न्याय है। इस देश में लोग कान से, आंख से, नाक से और मुंह से पैदा हो सकते हैं, तो 13 दलों की सरकार बन जाना कोई अस्वाभाविक बात नहीं लगती है।

उपाध्यक्ष महोदय, इस मामले में मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि इस देश की आज बार-बार पंचायत होती है कि शक्ति परीक्षा कर लो। मैं अपने भारतीय जनता पार्टी के साथियों से कहना चाहता हूं कि वे कांग्रेस के साथियों को एक सलाह और दे दें कि आज देश में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की संख्या 40 करोड़ है और जब देश आजाद हुआ था, उस समय देश में इनकी संख्या केवल 10 करोड़ थी और वह 10 करोड़ की आबादी का ग्राफ बढ़कर 40 करोड़ हो गया और कांग्रेस के लोगों ने अपनी सुख और सुविधा के लिए अपने फायदे के लिए सत्ता का इस्तेमाल किया। वे कम से कम अब तो करोड़ों लोगों की तरफ ध्यान दें और इस चिलचिलाती धूप में दो-दो और पांच-पांच साल के जो बच्चे आज पानी के लिए तरस रहे हैं, कम से कम अब तो उनकी तरफ ध्यान दे और अपनी सुख सुविधा का ही ध्यान न रखें बल्कि वास्तव में देश की गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के कल्याण के लिए कार्य करे।

उपाध्यक्ष महोदय, देश में जो अपराध और अन्याय बढ़ रहा है, इस पर आरोप और प्रत्यारोप की जरूरत नहीं है, हमारे सभी साथी इसको समझ लें। इस देश में हमें जो पढ़ाया जाता है उसमें कहा गया है :-

सौराष्ट्र सोमनाथं च शैले मल्लिकार्जुनम।
उज्जयियं महाकालम् ओंकारम्।।
परालपां वैद्यनाथम च डकिन्यांभीमसकरमं।
सेतु बन्धुत्व च रमेशम् नागेशम् दारूकबने
एतानि ज्योतिर्लिंगानि शापं प्रातः पठेन्तरः
वाराणस्याम् विश्ववेंश त्रयम्बकम् गौतमी तटे
हिमालये सू केदारम् घृष्णेषम शिवालये।।
सप्तजन्म कृतम् पापम् स्मारेण विनष्यन्ति।।

अर्थात चाहे कितने जुर्म करो, घोटाले करो, हवाले करो, सब खत्म। 100 अपराध करो सब खत्म और एक जन्म नहीं, सात जन्म तक करो, सिर्फ एक बार यह श्लोक पढ़ दो, सारे खत्म। यह जो संस्कार इस देश में दिया जाता है, पहले इसका पटाक्षेप किया जाएं।

उपाध्यक्ष महोदय, हमें इस विश्वास मत में संदेह है, शंका है कि जो बातें रक्षा मंत्री जी ने कही हैं, उनसे मुझे ऐसा लगता है और शंका व संदेह होता है। महोदय, कुछ परिस्थितियों के कारण हम लोग जेल में हुआ करते थे। एक दिन जेल में हमें एक बात सुनने को मिली कि दलित और पिछड़ों का एक गठबंधन उत्तर प्रदेश में हुआ है, तो सारे देश के लोगों ने एक आशा भरी निगाह से देखा, लेकिन बाद में पता चला कि टकराव हुआ और यह गठबंधन टूट गया। हमारे रक्षा मंत्री श्री मुलायम सिंह जी की एक क्वालिटी यह है कि वे जिसके साथ रहले हैं उसको हजम कर जाते हैं और इस कारण जो समझौता हुआ और जिस दल के साथ हुआ, उस दल को वे हजम कर गए। पूरे देश में वह दल नहीं है। कहते हैं कि यू॰पी॰ में कुछ बचा है। इसलिए मेरी गुजराल जी को सलाह है कि वे मुलायम सिंह जी से बच कर रहें।

उपाध्यक्ष महोदय, चूंकि समय कम है, इसलिए मैं इस विश्वास मत का विरोध करता हूं और आपको धन्यवाद देकर, अपनी बात समाप्त करता हूं।

प्रो॰ प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (पटियाला) : डिप्टी स्पीकर साहब, मैं समझता हूं कि नई सरकार के फारमेशन का देश को कोई लाभ नहीं हुआ है लेकिन मैं समझता हूं कि इस हाउस को जरूर होगा। केवल जून और मई की गर्मी के दो महीनों के लिए बचा लिया और इससे कोई फायदा नहीं लग रहा है। जहां तक नये प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल का सवाल है, वह बहुत अच्छे स्वभाव के हैं, विद्वान हैं और जहां भी इन्होंने देश की ड्यूटी संभाली उसको उन्होंने बड़ी अच्छी तरह से पूरा किया। हमारी इनके साथ भावुक सांझ है। मैं समझता हूं कि इन्होंने पंजाब की समस्या को सही रूप में जाना है और उसके बारे में उस समय बोला जब पंजाब जल रहा था, पंजाब सड़ रहा था। कांग्रेस ही पंजाब की समस्या के लिए जिम्मेवार है। इन्होंने कहा था कि पंजाब के लोगों को प्यार से जीता जा सकता है। आज सुबह भी कांफिडेंस मोशन रखते समय इन्होंने जो स्पीच दी उसमें भी उन्होंने ऐसा ही विचार दिया है। मैं समझता हूं कि पंजाब के लोगों के बारे में पंजाबी के जो बोल हैं कि

"प्यार नाल ये करन गुलामी,
तेह न झलदे किसी का"

उसको यह सही रूप में समझते हैं। मैं पंजाब समस्या के बारे में डिटेल में नहीं जाना चाहता लेकिन उसको हल करने में आप योगदान

[प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा]

देंगे क्योंकि इनके पास देश की सबसे बड़ी पदवी है। श्री देवेगौड़ा जी ने पंजाब के लोन ऑफ वेव करने की जो कमिटमैंट की थी और इन्होंने देश के किसानों की बात भी उस समय कही थी। यह विदेशों को 700 रुपये प्रति क्विंटल गेहूं का दाम देते हैं लेकिन अगर देश के किसानों के प्रति इनका प्यार है तो श्री देवेगौड़ा जी ने 600 रुपये क्विंटल गेहूं देने के लिए कमिटमैंट की थी, उसका यह ऐलान करेंगे ऐसी मेरी भावना है, आशा है।

दूसरी बात क्षेत्रीय पार्टियों की च्वाइस है। क्षेत्रीय पार्टियों के साथ हमारी भावुक सांझ है। इसके रीयल फेडरल स्ट्रक्चर का शिरोमणि अकाली दल चैम्पियन रहा है। 25 वर्ष पहले शिरोमणि अकाली दल ने जो बात कही थी जिसे आज चिदम्बरम जी कह रहे हैं। जिसे आज अखबारों में, समाचार-पत्रों में चन्द्रबाबू नायडू कह रहे हैं और विकेन्द्रीकरण की नीति डीसैंट्रलाईजेशन ऑफ पावर की नीति जिसका अकाली दल चैम्पियन रहा है, उसकी आज बात चलने लगी है। पहले दिल्ली से आदेश दिये जाते थे कि किस प्रदेश का मुख्यमंत्री कौन हो। लेकिन मुझे खुशी है कि आज प्रदेशों से हुक्म होते हैं कि इस देश का प्रधानमंत्री कौन हो। इस बात की रिजिनल पार्टियों को खुशी होनी चाहिए।

जहां तक गुजराल साहब का सवाल है। उन पर हमें भरोसा है मगर जिनको लेकर यह चल रहे हैं, जिन पर इनको भरोसा है उन पर हमको भरोसा नहीं है। कांग्रेस पर इस देश के लोगों का कभी भरोसा नहीं रहा। कांग्रेस ने हर देश की पार्टी के साथ धोखा किया। इस देश को दगा दिया और कोई भी पार्टी ऐसी नहीं होगी जिसके साथ इन्होंने धोखा न किया हो। क्या इन्होंने डी•एम•के• को छोड़ा? क्या इन्होंने असम गण परिषद को छोड़ा? इन्होंने हमको ज्यादा चोट लगायी क्योंकि हमने इमरजेंसी का विरोध किया था। हम इमरजेंसी के दिनों में जेलों मे रहे और अकाल तख्त साहिब से मोर्चा लगाया। हम उस समय तक जेलों में रहे जब तक हमने सब देशों के लोगों को जेलों में से निकाल न लिया और काले बुरे दिनों को खत्म न कर लिया और लोगों को लिखने-पढ़ने की आजादी न दिलवा ली। उसका सबक सिखाने के लिए कांग्रेस ने हमारी हर बार सरकार तोड़ी। कांग्रेस ने हमारे अकाल तख्त साहब पर फौजें चढ़ा दीं, टैंक चढ़ा दिये। देश की आजादी के लिए लड़ने वालों में से इस प्रदेश के 93 प्रतिशत लोगों ने फांसी के रास्ते चूमे। 85 प्रतिशत लोगों ने काले पानी की तकलीफें सहीं।...*(व्यवधान)* आप सुन तो लीजिए।...*(व्यवधान)* आप ऐसे गर्म न हों।...*(व्यवधान)* आप चुपचाप बैठकर सुनिये। जब मुझे समय मिला है तो मैं सच्चाई बताऊंगा।...*(व्यवधान)* हमको खूंखार दरिंदे बनाकर पेश किया। हमको देश का गद्दार बनाया, ये देशवासी बने बैठे हैं। हमने कहा कि तोपों के सौदे में दलाली खाई है, हमने कहा कि चीनी के स्कैंडल किए हैं, हमने कहा कि तंदूर कांड किया है, हमने कहा कि यूरिया के स्कैंडल किए हैं। हम तो देश के गद्दार बन गए और ये देशभक्त बन गए, देश के रखवाले बन गए। ऐसे हमें दुख होता है।

उपाध्यक्ष महोदय, जब भी बोला जाता है तो कहते हैं कि देश के लोगों ने जो जनादेश दिया है, उसको लेकर हर सरकार की फौर्मेशन की है। कभी कहते हैं कि कम्युनलिज्म के विरोध में जनादेश आया है। कभी कहते हैं कि सैकुलर फोर्सेस के हक में जनादेश आया है। असल में जनादेश कांग्रेस के विरोध में आया है। लोगों ने बंगाल में सोचा कि कांग्रेस को सी•पी•एम• हरा सकती है तो सी•पी•एम• को वोट डाल दिए। गुजरात, राजस्थान, दिल्ली जैसे प्रदेश में सोचा कि बी•जे•पी• हरा सकती है तो बी•जे•पी• को वोट डाल दिए। हरियाणा में सोचा कि हरियाणा विकास पार्टी हरा सकती है तो हरियाणा विकास पार्टी को वोट डाल दिए। यह कांग्रेस के विरोध में जनादेश था। मैं आज प्रधानमंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि आपके पीछे जितने भी लोग बैठे हैं, क्या ये लोगों को यह कहकर नहीं आए थे कि हमें वोट डालो, हम कांग्रेसियों को सबक सिखाएंगे, हम उनके घोटाले, उनके स्कैंडल नंगे करेंगे। उन्होंने जो देश को लूटा है, देश को बर्बाद किया है, उसका हिसाब लेकर देंगे। पासवान जी, मुलायम सिंह जी कहते रहे, जो चुनाव लड़कर आए वे कहते रहे कि हम कांग्रेसियों को उल्टा लटकाएंगे। मैं कह सकता हूं कि यदि गैर-कांग्रेसी सरकार जनादेश के अनुसार बनती और देश के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी होते तो आज कांग्रेसियों से रिकवरी करके इतना पैसा इकट्ठा हो जाता कि हमारा सारा हाल नोटों से भर जाता। यह आज क्या तमाशा हो रहा है। देश भुखमरी से तड़प रहा है। लोगों को आटा नहीं मिलता, दाल नहीं मिलती, रोजगार नहीं मिलता और ये तमाशा करते रहते हैं कि इसको बदल दो, उसको न बदलो। कहीं युनाइटेड फ्रंट अच्छा लगने लगा, कहीं फिर माड़ा लगने लगा, कहीं फिर अच्छा लगने लगा। ये सैकुलरिज्म की बात करते हैं। मुलायम सिंह जी ने कहा तो हमें दुख हुआ। क्या ये सैकुलर हैं? कांग्रेसी सैकुलर नहीं हो सकते और सत्ता हासिल करने के लिए यदि किसी गुरुद्वारे को गिराना पड़ा तो कांग्रेस ने गिराया।...*(व्यवधान)* राजसत्ता के लिए मंदिर में गायों की पूछें कटवाई। मैं गवाह हूं। इन्होंने सत्ता के लिए मस्जिद गिरवाई और ये सैकुलर हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या ये इनका सैकुलरिज्म है कि देश की बहु-बेटियों की इस देश की सड़कों पर इज्जत लूटी गई, बच्चों के गले में टायर डालकर जलाया गया और लहूलुहान किया गया। वे कौन लोग थे, मैं पूछना चाहता हूं? वे किसके बेटे थे? वे गुरु गोविंद सिंह के बेटे थे जिन्होंने नौ साल की आयु में अपने पिता को इस देश के धर्म के लिए, इस देश की आन के लिए चांदनी चौक में शहादत के लिए भेजा और उन्होंने दिल्ली में अपना सिर दिया। उन्होंने बोला था—

खालसा मेरा रूप है खास
खालसे में हूं करूं निवास।

खालसे का कत्लेआम करके ये सैकुलर कहलाते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि ऐसे हालात किन्होंने पैदा किए?

यहां मेरे मित्र राजेश पायलट नहीं बैठे हैं। वे कह रहे थे कि जो मारते हैं तुम उनके भोगों पर जाते रहे और हम मरने वालों के भोगों पर जाते रहे। मैं पूछना चाहता हूं कि संत हरचंद सिंह लोंगोवाल ने इस देश के लिए शहादत दी तो उनके भोग पर इस देश का कौन सा

प्रधानमंत्री गया था? और हम सब थे, पंजाब का दुश्मन समझते थे और बेअन्त सिंह जी को सबसे बुरा मानते थे। हमारे प्रधान प्रकाश सिंह बादल, उसके संस्कार पर गये, सरदार बरनाला गये, मैं खुद गया और इनके प्रधान और देश का प्रधान मंत्री सिर्फ दो मिनट के लिए गये। हम वहां दो घंटे रहे। हमारे सरदार बलवन्त सिंह जी शहीद हुए तो इनके प्रधान और देश के प्रधानमंत्री नहीं जा सके। इनके पांडे जी ने जो लुधियाना में शहादत दी, मैं और बलवन्त सिंह उसके संस्कार पर गये, तो आप ही आग लगाते हैं और आपही बुझाने चले जाते हैं और आप कहते हैं कि भोगों पर जाते हैं, इनकी तो यह बात है। हमारे पंजाब के लोगों ने सच्चाई समझ ली कि आप आग लगाकर फिर उसी घर पर चले जाते थे कि भाई धुंआ कहां से निकला है, ऐसे पूछने चले जाते थे। आज मैं कहना चाहता हूं कि आप देशभक्ति की दुहाई देते हो। आज भी देश की आजादी के लिए पाकिस्तान की लड़ाई में, चीन की लड़ाई में हमारी बहनों ने, हमारे भाईयों ने छातियों में गोलियां खाईं, परांठे मोर्चों में पहुंचाये और आज भी मैं इस हाउस में कहना चाहता हूं कि हमारा इतना कत्ले-आम हुआ, इतना लूटा गया, इज्जत लूटी गई, लेकिन इस हाउस में दो मिनट के लिए मानवता के नाम पर, हमदर्दी जाहिर करने के लिए क्या दो मिनट के लिए किसी ने अफसोस भी किया? मैं फिर कहना चाहता हूं कि आज भी देश को अगर जरूरत पड़ी तो सबसे पहले किसी का सिर लगेगा तो वह सिर सरदार प्रकाश सिंह बादल का लगेगा, वह सिर लगेगा जत्थेदार गुरचरन सिंह टोहरा का। जो और जरूरत पड़ी तो और सिर लगेगा सरदार सुरजीत सिंह बरनाला का और हमारे सारे साथियों का। जो लोग देशभक्तों का मुखौटा पहने हैं, उनका नहीं।

हम चाहते हैं कि जनता दल वाले, यूनाइटिड फ्रंट वाले लोग हमारे साथ आ जाते। हमने वाजपेयी जी को कहा था कि शिकार कुदरती आ गया है। कांग्रेस अब तक लोगों का मजाक करती रही, अब तक देश का तमाशा देखती रही, लेकिन अब फंस गई है, जैसे बाड़ में बिल्ला फंस जाता है, वैसे फंस गई है। अब इनको इकट्ठे होकर कूट लिया है। हमने सोचा भी मगर हमारे भाईयों ने फिर पता नहीं इन पर कैसे भरोसा कर लिया।

जहां हमें इन्द्र कुमार गुजराल जी के प्रधान मंत्री बनने की खुशी है, उससे ज्यादा दुख हो रहा है, चिन्ता भी हो रही है कि जिसके कंधे पर चढ़कर, जिसकी कनेरी पर चढ़कर ये तरना चाहते हैं, तुरे हैं, उन्होंने इन बेचारों को डुबो देना है। इनकी फितरत ऐसी है, इनकी आदत ऐसी है, इसलिए जब ये डूबेंगे तो हमें बड़ी चिन्ता होगी। उस चिन्ता का हमें बेहद अफसोस है और हमें ऐसे ही देवेगौड़ा जी को उस समय, जब कान्फीडेंस मोशन आया था, हमारी पार्टी के लीडर सरदार बरनाला जी ने बोला था, उन्होंने भी हमारा मशविरा ठीक नहीं समझा और बाद में रिजल्ट जो हम कहते थे, वहीं निकला। आज भी हम गुजराल साहब को वही सलाह देते हैं कि रिजल्ट वही निकलेगा, जो देवेगौड़ा जी का निकला है। सो इन लोगों पर भरोसा मत करो। इन्होंने भरोसा कर लिया, इसलिए हम इनका जो प्रस्ताव है, उसका विरोध करते हैं, इनके साथ नहीं जा सकते।

उपाध्यक्ष जी, आपने समय दिया, धन्यवाद।

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष जी, एक शब्द। मैं यह पूछना चाहूंगा कि कांग्रेस पार्टी ने पंजाब में जुल्म किया, ठीक है। हम उसकी सफाई नहीं देते, लेकिन उत्तर प्रदेश में तराई के क्षेत्र में सिखों की बहू बेटियों की इज्जत, जुल्म और उस पर टाडा किसने लगवाया था? बी॰जे॰पी॰ ने।

उपाध्यक्ष महोदय : यह पर्सनल एक्सप्लेनेशन है या क्या है?

प्रो॰ प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (पटियाला) : डिप्टी स्पीकर साहब, पंजाब में जो सद्भावना का माहौल बना है, जो वातावरण बना है और पंजाब के लोगों ने जनादेश दिया है, वह जनादेश श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने और शिरोमणि अकाली दल ने आगे होकर जो हिन्दू सिख एकता में विघ्न डाला था, जो दफेड़ डाला था, जो मां के दूध में जहर फैलाया था, भाई-भाई को लड़ाया था, उसको इकट्ठा करके इन्होंने ऐसा माहौल किया है, अगर वह माहौल सारे देश में पैदा हो जाये*

मैं आपको इस बात को बता देता हूं।

[अनुवाद]

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : हमें उनके शब्दों पर कड़ी आपत्ति है? हर एक बात की एक सीमा होती है। हम इसे सहन नहीं कर सकते ...*(व्यवधान)*

हमें उनके शब्दों पर कड़ी आपत्ति है। हर चीज की एक सीमा होती है। अब वह क्या कह रहे हैं...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। मैं रिकार्ड की जांच करता हूं।

(व्यवधान)

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : इसकी कोई सीमा है कि नहीं ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया मेरी बात सुनिए।

(व्यवधान)

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : इन्हें अपने शब्द वापिस लेने होंगे ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : मैं इन्हें कार्यवाही-वृत्तान्त से निकाल दूंगा। उन टिप्पणियों को कार्यवाही-वृत्तान्त से निकाल दिया जायेगा।

(व्यवधान)

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : इन्होंने सार्वजनिक रूप से ये शब्द कहे हैं। इन्हें अपने शब्द वापिस लेने होंगे...*(व्यवधान)*

---

* अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही-वृत्तांत से निकाल दिया गया।

उपाध्यक्ष महोदय : इन्हें कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित न किया जाए।

(व्यवधान)

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : हम इसकी अनुमति नहीं दे सकते। हर बात की एक सीमा होती है। क्या सभा में ऐसी भाषा बोली जानी चाहिए? इन्हें अपने शब्द वापिस लेने चाहिए। इन्होंने श्री सुरजीत सिंह बरनाला जैसे नेता की उपस्थिति में ये शब्द कहे हैं।...*(व्यवधान)*

अपराह्न 5.48 बजे

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय : कृपया श्री संतोष मोहन देव को बोलने दें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आपके नेता को बोलने की अनुमति देता हूं। इससे अधिक मैं क्या कर सकता हूं?

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : अध्यक्ष महोदय, एक माननीय सदस्य ने विशेषकर कांग्रेस के लिए सदन में असंसदीय भाषा का प्रयोग किया है। कुछ देर तक तो हमने इसे सहन किया परन्तु उन्होंने कुछ बहुत ही कठोर शब्द कहे हैं।...*(व्यवधान)* मेरे साथ 140 और सदस्य हैं। उनके साथ 160 सदस्य हैं...*(व्यवधान)*

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : उन्हें हमारी पार्टी से क्षमा मांगनी चाहिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप श्री संतोष मोहन देव को क्यों नहीं बोलने देते?

(व्यवधान)

श्री संतोष मोहन देव : मैं जानता हूं कि वे नये-नये सदस्य बने हैं। हो सकता है उन्हें न पता हो कि यहां कैसे बोला जाता है। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं। मैं श्री सुरजीत सिंह बरनाला से निवेदन करता हूं कि वे खड़े हो जाएं और बताएं कि जो कुछ माननीय सदस्य ने कहा है, वे उसे स्वीकार करते हैं या नहीं। मैं जानना चाहता हूं कि माननीय सदस्य को अपने शब्दों पर खेद है या नहीं।...*(व्यवधान)*

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने पहले ही उनके शब्दों को असंसदीय शब्द बता कर कार्यवाही वृत्तान्त से उन्हें निकालने के आदेश जारी कर दिये हैं...*(व्यवधान)*

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : सदस्य को स्वयं खड़े होकर कहना चाहिए कि वे अपने शब्द वापिस लेते हैं।...*(व्यवधान)*

श्री ए॰सी॰ जोस (इदुक्की) : महोदय, मुझे खेद है कि श्री सुरजीत सिंह बरनाला जैसे वरिष्ठ सदस्य इस तरह कह रहे हैं...यह बहुत गलत बात है...*(व्यवधान)*

कई माननीय सदस्य : उन्हें क्षमायाचना करनी चाहिए ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं समझ गया। कृपया बैठ जाएं। यह बड़े खेद का विषय है कि कई माननीय सदस्य ऐसी भाषा बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बीच में क्यों बोल रहे हैं?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री बरनाला, आप कुछ कहना चाहेंगे? अब मुझे अपना विनिर्णय देना पड़ेगा।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : महोदय, उन शब्दों को कार्यवाही वृत्तान्त से निकाल दिया गया।...*(व्यवधान)* यदि सदस्य फिर भी गुस्से में हैं तो वह अपने शब्द वापस लेते हैं...*(व्यवधान)*

श्री रमेश चेन्नित्तला (कोट्टायम) : सदस्य को स्वयं यह कहना चाहिए, श्री बरनाला को नहीं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मुझे लगता है, अब ठीक है

(व्यवधान)

श्री चन्द्रशेखर (बलिया) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने मित्र श्री चन्दूमाजरा से अनुरोध करता हूं कि वे अपने शब्द वापस ले लें।

अध्यक्ष महोदय : मुझे लगता है, पूरी विनम्रता से उन्हें यह करना चाहिए।

[हिन्दी]

प्रो॰ प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : मैं इनके कहने पर वे शब्द विदड्रा करता हूं। चन्द्रशेखर जी ने कह दिया है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रो॰ चन्दूमाजरा, आप मामलों को और जटिल क्यों बना रहे हैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मुझे लगता है, उन्होंने अपने शब्द वापस ले लिये हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यदि आप मेरी बात नहीं सुनना चाहते, मत सुनिए, परन्तु अपने नेता की बात तो सुनिए।

श्री संतोष मोहन देव : अध्यक्ष महोदय, यदि आप संतुष्ट हो जाएंगे, तो हम भी संतुष्ट हो जाएंगे। क्या आप संतुष्ट हैं?

अध्यक्ष महोदय : मुझे लगता, प्रो॰ चन्दूमाजरा जी, आपको विनम्रतापूर्वक अपने शब्द वापस ले लेने चाहिए।

[हिन्दी]

प्रो॰ प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : अध्यक्ष जी, मैं बोल रहा हूं, बीच में टोकते हैं...पहले सुन तो लो...*(व्यवधान)* अगर इनको पिंच हुआ है तो...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप हस्तक्षेप क्यों कर रहे हैं?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री दासमुंशी आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्रो॰ क्या अपने अपने शब्द वापस ले लिये?

प्रो॰ प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : महोदय, मैं अपने शब्द वापस लेता हूं।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। आपने अपने शब्द वापस ले लिए हैं। क्या आपने अपना भाषण पूरा कर लिया ।

प्रो॰ प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : महोदय, मैंने अपना भाषण पूरा कर लिया है।

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने विश्वास मत प्राप्त के लिए आजादी की लड़ाई के बारे में कहा। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि पिछले ।। महीने में चार बार इस सदन में विश्वास मत हासिल करने के लिए सरकार को आना पड़ा है। नई सरकार के नाते और देश के प्रधान मंत्री गुजराल साहब ने आजादी की लड़ाई की चर्चा करते हुए, महात्मा गांधी और पं॰ जवाहरलाल नेहरू का नाम लेते हुए, नमक सत्याग्रह का जिक्र किया। एक मुट्ठी नमक के लिए जो सत्याग्रह हुआ था, वह पूरे देश की आजादी की लड़ाई का आन्दोलन बना। वह सत्याग्रह महात्मा गांधी का धर्म था। लेकिन आज देश का क्या धर्म हो गया है इसकी चर्चा करना चाहता हूं।

प्रधान मंत्री जी ने अपने राजनीतिक जीवन की पृष्ठ-भूमि और परिवार के बारे में बताया और विश्वास मत पर बहस के लिए उन्होंने एक वैचारिक आधार भी दिया। मुझे प्रधान मंत्री जी के बारे में कुछ नहीं कहना है, वे योग्य व्यक्ति हैं। यह सही है, जब कभी भी उनको कोई जिम्मेदारी दी गई, उन्होंने उसको कुशलता से पूरा किया। इसमें दो राय नहीं है। इसके बावजूद भी मैं इस विश्वास मत का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं विरोध इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि कांग्रेस और इनके बीच में समर्थन के संबंध में जो बातें हुई हैं, उन पर विश्वास नहीं जमता है। कहा गया है कि कांग्रेस चार साल लगातार समर्थन करती रहेगी, लेकिन दो महीने में भी समर्थन वापिस ले सकती है, चार महीने में भी समर्थन वापिस ले सकती है और एक महीने में भी समर्थन वापिस ले सकती है। वे साफ कहते हैं कि देवेगौड़ा जी की तरह से गलती नहीं करें। हम जानना चाहते हैं, उन्होंने क्या गलती की थी? कांग्रेस के जितने भी माननीय सदस्यों ने हिस्सा लिया, उनमें से किसी भी सदस्य ने कारण नहीं बताया।...*(व्यवधान)* हां, उन्होंने बताया, लेकिन राष्ट्रपति जी को लिखे गए समर्थन वापसी के पत्र की चर्चा नहीं की। इसीलिए हमने कहा कि आपने मंहगाई और मुद्रास्फीति के सवाल पर समर्थन दिया था।...*(व्यवधान)* इन्होंने समर्थन वापिस लेने के सवाल पर जो भाषण दिया, था उसमें कहीं भी जन समस्याओं की चर्चा नहीं थी।

उससे मेरा जैसा आदमी एक ही बात समझता है और वह यह है कि जो आज अखबारों में बात आई है, मुझे पढ़ने को मिला है कि जब शपथ ग्रहण समाप्त हो रहा था तो कांग्रेस अध्यक्ष होम सेक्रेट्री को डांट रहे थे। उनको आदेश दे रहे थे कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। यही कारण इनका समर्थन वापिस लेने का था। इसलिए गुजराल साहब, इनके जितने भी घोटाले सी॰बी॰आई॰ जांच कर रही है और कोर्ट में चल रहे हैं, अगर इन्होंने उसमें मदद नहीं की तो यह कभी भी समर्थन वापिस ले सकते हैं और अपने व्यक्तिगत हितों के लिये कभी भी देश को अराजकता और तबाही की ओर ले जा सकते हैं। इनसे सावधान रहने की जरूरत है।

अध्यक्ष महोदय, यहां सिद्धांत और नीति की भी बात की गई है। मैं आपके माध्यम से खास कर वामपंथी मित्रों से कहना चाहता हूं कि मैं 30 वर्षों तक कम्युनिस्ट आन्दोलन में रहा हूं। 1964 से विद्यार्थी जीवन से मैं कम्युनिस्ट आन्दोलन रहा हूं, इसलिए मैं वामपंथी मित्रों से कहना चाहता हूं कि आज सी॰पी॰एम॰ के माननीय नेता ...*(व्यवधान)* सोमनाथ चटर्जी जी का दो सवालों पर भाषण केन्द्रित था-एक यह था कि नीतियों के सवाल पर यह सरकार चलेगी और सेक्यूलरिज्म के सवाल पर यह कहते हैं कि हम इनको किसी कीमत पर नहीं आने देंगें। फिर रक्षा मंत्री जी ने कहा कि आप कभी इधर भाजपा की ओर इशारा करते हुए नहीं आइएगा। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि यह सिद्धांत और नीति की बात करते हैं तो सी॰पी॰एम॰ का कार्यक्रम क्या था और क्या है? क्या आपने बदला है? आप पीपल्स डेमोक्रेसी की बात करते हैं। आपके कार्यक्रम में है और आपने कहा है कि उसका नेता मजदूर वर्ग का होगा। आपने यह जो मोर्चा बनाया है, आपके नेता कौन हैं? मजदूर वर्ग की कौन सी पार्टी है?...*(व्यवधान)* कहां हैं आपके नेता, आपके सिद्धांत, आप बताइए।...*(व्यवधान)* आप नेता हैं, आपने कभी ऐसा दिया है कि आपने पीपल्स डेमोक्रेसी में जो बात की है, कहीं संशोधन किया है। आपने अपने कार्यक्रम को जैसे का तैसे रखा है। आपनेकहीं लिखा है कि किसी भी वर्ग को, हम किसी को भी नेता मानेंगे। इंटरवेल के बाद फिर आएंगे। आपने नहीं दिया। आपने मार्क्सवाद के साथ गद्दारी की है, आपने अपने कार्यक्रम के साथ विश्वासघात किया है। आपने मजदूर वर्ग को धोखा दिया है। आपने कम्युनिस्ट मूवमेंट को धोखा दिया है।...*(व्यवधान)*

हम आपसे कहना चाहते हैं, आप नीति और सिद्धांत की बात करते हैं। हम सी॰पी॰आई॰ से कहना चाहते हैं।...*(व्यवधान)* आपकी नेशनल डेमोक्रेसी कहां है? आपके कार्यक्रम में सी॰पी॰एम॰ और सी॰पी॰आई॰ के कार्यक्रम में जो फर्क है मैं उसको कह रहा हूं, आपकी नेशनल डेमोक्रेसी कहां है? आप किस के साथ हैं। मैं बी॰जे॰पी॰ की बात भी करूंगा और करना चाहता हूं, इसलिए क्योंकि सैद्धांतिक सवाल उठे हैं। मैं उस बात की चर्चा कर रहा हूं कि मैं यहां क्यों हूं और यह जस्टीफाई है या नहीं है यह भी कहूंगा। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं।...*(व्यवधान)* अगर मैं इधर समता पार्टी में आ गया

[श्री ब्रह्मानन्द मंडल]

हूं तो उसका कारण व्यावहारिक सिद्धान्तवाद है जिसे आप नहीं समझना चाहते हैं

अध्यक्ष महोदय : आप मेरी तरफ देखकर बोलिये।

[अनुवाद]

श्री मंडल, आप दस, मिनट तक पहले ही बोल चुके हैं। मैं केवल दो मिनट आपको और देता हूं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत कम शब्दों में कहना चाहता हूं। इन लोगों को नीतियों और सिद्धांत से कोई मतलब नहीं है। इस सभा में सिर्फ पाखंड ही चल रहा है और देश की जनता को सही तस्वीर जानी चाहिए। इसलिए मैं इस बात की चर्चा कर रहा हूं। दूसरी बात यह है कि सी•पी•आई• ने कार्यक्रम में कोई परिवर्तन किया है, नहीं किया है। इसलिए मैं सी•पी•आई• के लोगों से कहना चाहता हूं कि आपने बहुराष्ट्रीय कम्पनी की विदेशी पूंजी आने पर राष्ट्रीय कम्पनियों से संबंधित कार्यक्रम में कहा है कि यह देश को आर्थिक गुलामी की ओर ले जायेगा, जो राजनीतिक गुलामी में परिवर्तन हो जायेगा। अब कहां है; राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ राष्ट्रीय जनतंत्र? अब तो आपका चिदम्बरम् जी में अर्थतंत्र विदेशी जनतंत्र के साथ है।

और पूरा रोजगार चला जाएगा, दूसरी तरह की गुलामी आएगी। यह कहां गया? वह अब तो आ रहा है। आप कार्यक्रम बदल लीजिए तो अच्छी बात होगी। आप फिर मोर्चा बनाइए और ठाठ से रहिए, मिनिस्टर बन जाइए, प्राइम मिनिस्टर बन जाइए लेकिन आपने आज तक कार्यक्रम नहीं बदला। आप उस मोर्चे में हैं। वहां रहने का आपको क्या हक है? आप जनता और कार्यकर्ताओं को बताते हैं कि ये हमारी नीतियां और सिद्धांत हैं। आप लोगों ने उन निष्ठावान कार्यकर्ताओं के साथ विश्वासघात किया है।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : अच्छा हुआ, आप वहां चले गए।

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : मैंने क्या किया?...*(व्यवधान)* मोर्चे के साथी पूछते हैं कि आप वहां कैसे चले गए? मैं उनसे कहना चाहता हूं कि कौन जात-पात करता है, कौन बैकवर्ड-फॉरवर्ड करता है, कौन हिन्दू-मुसलमान करता है? मैं ये सब बताना चाहता हूं। जब 1992 में बिहार में हत्या, लूट और डकैती चल रही थी और पूरे बिहार में आतंक का राज कायम होना शुरू हो गया तो मैंने 1993 में लालू सरकार के खिलाफ मुंगेर की सड़कों पर बीस हजार लोगों का डैमनस्ट्रेशन निकाला था। इसमें मैंने क्या गलत किया था? फिर 1994 में आतंक राज के खिलाफ 30 हजार की रैली किया तभी सी•पी•आई• ने मना किया और लालूजी के इशारे पर पार्टी से निकाल दिया।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अब अपना भाषण समाप्त कीजिए।

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : 1994 में राजनीति के शिखर पर बैठे हुए लोग ये सब करा रहे थे। बिहार में जो क्राइम माफिया गावों से शहरों तक था, वे नरसंहार करते थे। ऐसे गिरोहों को चलाने वाली जो शक्तियां थी और जो सत्ता में बैठे हुए लोग थे, उनके खिलाफ 1994 में हमने आन्दोलन किया। जब मैंने आन्दोलन किया तभी मुझको पार्टी से निकाल दिया गया।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना भाषण पूरा कीजिए।

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : उस समय हमने शोषितों, पीड़ितों और दलितों को संगठित करने का काम किया था। वह इसलिए किया था कि कोई अपराधी हत्या करता था, डकैती करता था और आतंक फैलाता था तो सबसे ज्यादा नुकसान गरीबों को होता था। शोषितों, दलितों, पीड़ितों की हत्या होने पर गांव में हाहाकार मच जाता था। इस तरह से आतंक राज में लोकतंत्र खतरे में पड़ गया और इसलिए हमने उसके खिलाफ आन्दोलन किया। सी•पी•आई• ने मुझ से कहा कि आप आन्दोलन नहीं कर सकते वरना हम आपको पार्टी से निकाल देंगे। मैंने आन्दोलन किया और इसलिए मुझे यहां आना पड़ा। आज सी•पी•आई• की क्या हालत है? बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद कहते हैं कि मैं बिलार और सी•पी•आई• चूहा हैं। मैंने न सिर्फ टिकट दिया है बल्कि जीता कर भी लाया हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप पन्द्रह मिनट बोल चुके, अब अपना भाषण सम्पन्न कीजिए।...*(व्यवधान)* बस कीजिए।

श्री नीतीश कुमार (बाढ़) : इन्हें दो-तीन मिनट का और समय दिया जाए।

अध्यक्ष महोदय : इनको बोलते हुए पन्द्रह मिनट हो गए हैं।

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : आज लोकतंत्र को बचाना बहुत आवश्यक है। आज लोकतंत्र को खतरा संयुक्त मोर्चे के घटक जनता दल और समाजवादी पार्टी से है। ये सेकुलर नहीं हो सकते हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप सदन का समय क्यों खराब कर रहे हैं?

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : ये सैकुलरिज्म की बहुत बात करते हैं। जो लोकतंत्र पर हमला करते हैं, वे डैमोक्रेटिक नहीं हो सकते। जो डेमोक्रेटिक नहीं हो सकते वे सेकुलर भी नहीं हो सकते जो शोषितों, पीड़ितों और दलितों की आवाज को बंद कर सकते हैं, वे सैकुलर नहीं हो सकते। इसकी उन्हें जरूरत नहीं। अगर नीति और सिद्धांत की बात होती हैं तो ऐसे लोग बहुत बढ़-चढ़ कर बात करते हैं। सैकुलर कौन

हो सकता है और कौन नहीं हो सकता, इसकी परिभाषा अलग-अलग तरह से की जाती है। कोई कहता है कि राजनीति से धर्म को अलग करना चाहिए, कुछ लोग कहते हैं कि देश से धर्म को साफ कर दो और कुछ लोग कहते हैं कि जो हत्या, डकैती, बलात्कार, नरसंहार, माफिया राज, क्राइम राज कायम कर सकते हैं, वे सैकुलर हो सकते हैं। इसलिए मैं गुजराल साहब को कहना चाहता हूं कि ऐसे नापाक सेकुलरिज्म वादियों पर नजर रखें जिससे कि दिल की धड़कन से इन्हें निकाल बाहर किया जाय।

इसलिये मैं श्री गुजराल साहब से कहना चाहता हूं कि ऐसे ही लोग आपके साथ हैं जो कभी भी आपको धोखा दे सकते हैं। आपने श्री राम विलास पासवान को प्रधानमंत्री क्यों नहीं बनाया? मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि क्यों नहीं आपने एक दलित, शोषित या पीड़ित लोगों के दर्द को जानने वाले को प्रधानमंत्री बनाया? अगर उनको बनाते तो संयुक्त मोर्चा को फायदा होता। चूंकि श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जैसे साफ-सुथरे लोग कैबिनेट में थे, इसलिये उनको निकाल दिया। आज आप लोगों की यह हालत हो गई है कि एक भी साफ-सुथरे आदमी को बरदाश्त नहीं कर सकते।...*(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, इसलिये मैं आपसे थोड़ा और अपील करना चाहता हूं कि कुछ और बातों के लिये मुझे चर्चा उठाने के लिये समय दीजिये।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री मंडल, कृपया समाप्त कीजिए।

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : हमारे रक्षा मंत्री श्री मुलायम सिंह भी एक आन्दोलन के नेता हैं। मेरी उनसे जान-पहचान बहुत नहीं है लेकिन फिर भी मैं इनकी कद्र पहले बहुत करता था कि ऐसे कोई नेता उत्तर प्रदेश में हैं। लेकिन मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि मुज्जफरनगर का कांड दिन के उजाले में इनके राज में हुआ। इस कांड के लिये कौन दोषी है? लखनऊ के स्टेट गैस्ट हाउस में इनके रहते कहर ढाया गया ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यदि आप पूरी रात बैठना चाहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

[हिन्दी]

श्री राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव (पूर्णिया) : आप दानापुर के बारे में कहिये।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : नहीं, श्री पप्पू यादव

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : मैं श्री मुलायम सिंह से पूछना चाहता हूं कि अगर युनाईटेड फ्रंट सरकार मायावती को मुख्यमंत्री बना देती तो आपका क्या बिगड़ जाता? बी॰जे॰पी॰ ने बनाने की कोशिश की और एक दलित महिला को सम्मान दिया लेकिन आपने नहीं बनने दिया। अब आप बतायें दिल विरोधी कौन है? यदि आप उनको बनाते तो आज यह स्थिति पैदा नहीं होती। अब आपको सैकुलर कहलाने का कोई हक नहीं। आप अपने दल के नेता श्री बेनी प्रसाद वर्मा जी को भी प्रधानमंत्री बना सकते हैं। आप सिर्फ अपने के हैं, और किसी के नहीं है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री मंडल, मुझे अगले वक्ता को पुकारना है।

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल : अध्यक्ष महोदय, केवल एक-दो बातें और कहूंगा। आप न दलितों के, न पीड़ितों के, न शोषितों के और न ही अल्पसंख्यकों के हितैषी हैं। आप अपनी ओर से कुछ भी नहीं कर सकते हैं, इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आज जो यहां पर बातें हो रही हैं, उससे डैमोक्रेसी खतरे में है। अगर इसको बचाना है तो इन लोगों के खिलाफ जाना होगा। हम लोगों को संघर्ष करना पड़ेगा। हम प्रधानमंत्री जी से रिक्वेस्ट करते हैं कि वे बतायें कि आने वाले दिनों में इन सब सवालों के प्रति क्या दृष्टिकोण अपनायेंगे जो भारतीय लोकतंत्र नष्ट करने पर तुले हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

[हिन्दी]

कुमारी उमा भारती (खजुराहो) : अध्यक्ष जी, जब श्री शरद पवार बोल रहे थे तो हिन्दू विश्व परिषद के बारे में कहा गया... *(व्यवधान)*

प्रो॰ ओम पाल सिंह 'निडर' (जलेसर) : अध्यक्ष जी, इतना बड़ा आरोप लगाया गया है...*(व्यवधान)*

कुमारी उमा भारती : अध्यक्ष जी, मैं खुले रूप से यह स्पष्टीकरण दे रही हूं कि श्री पवार ने अपने वक्तव्य में हिन्दू विश्व परिषद पर आरोप लगाते हुये कहा कि मथुरा कृष्ण भूमि मुक्ति आन्दोलन चल रहा है तो...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री रमेश चेन्निथला (कोट्टयम) : महोदय, इस सदन में क्या हो रहा है? क्या कोई भी किसी भी समय खड़ा होकर कुछ भी बोल सकता है?

[हिन्दी]

कुमारी उमा भारती : अध्यक्ष जी, ऐसे कैसे चलेगा? यदि मैं स्पष्टीकरण नहीं दूं तो...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये।

कुमारी उमा भारती : *अध्यक्ष जी, इन्होंने कहा कि हिन्दू विश्व परिषद ने मथुरा कृष्ण भूमि के नाम पर...*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कुमारी उमा भारती जी मुझे लगता है आपने अपनी बात कह दी है।

(व्यवधान)

कुमारी उमा भारती : मैं सुधार की बात कर रही हूं।

[हिन्दी]

मैं खाली एक बात को क्लैरिफाइ कर रही हूं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष जी, शरद पवार जी ने कहा है कि विश्व हिन्दू परिषद ने कृष्ण जन्मभूमि के नाम पर करोड़ों रुपया इकट्ठा किया है। यह शरद पवार जी ने सदन में गलत बयानी की है। एक असत्य बात सदन में कही है। या तो इसको रैकार्ड से निकालिए, या शरद पवार जी को कहिए कि माफी मांगें क्योंकि विश्व हिन्दू परिषद ने करोड़ों रुपये का चन्दा कृष्ण जन्मभूमि के नाम पर इकट्ठा नहीं किया है। या तो शरद पवार जी माफी मांगे या इस बात को रैकार्ड से निकालिए। आप मुझे बताइए कि क्या यह बात रैकार्ड से निकाली जाएगी? क्योंकि इनको भी एक 'जानवर' शब्द पर आपत्ति हुई थी।...*(व्यवधान)* यह डिबेट टेलिविजन पर आ रही है। करोड़ों लोग देख रहे हैं। गलत बात सदन में एक सदस्य ने कैसे कही? ऐसे कैसे चलेगा?...*(व्यवधान)*

श्री राजेन्द्र अग्निहोत्री (झांसी) : अध्यक्ष जी, इस पर आप क्या कहना चाहते हैं?

(व्यवधान)

कुमारी उमा भारती : आप आश्वासन तो दीजिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : बहुत हो गया। मैं समझता हूं आपने अपनी बात कह ली है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

कुमारी उमा भारती : या तो शरद पवार जी इसको प्रमाणित करें कि विश्व हिन्दू परिषद ने कृष्ण जन्मभूमि के नाम पर चंदा लिया है, या वह माफी मांगें, या इसको रैकार्ड से निकाला जाए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कुमारी उमा भारती ने इसका खंडन किया है। यही काफी है।

[हिन्दी]

रक्षा मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव) : एक बात सदन में बार-बार कही जा रही है। मैं इन बातों में नहीं पड़ना चाहता और न किसी का नाम लेना चाहता हूं, चाहे गाली-गलौज करें या 'गुण्डागर्दी' कहें, चाहे कुछ भी कहा जाए। माननीय सदस्य अपने को बहुत काबिल और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कैडर के नेता कहते हैं मगर उनको कुछ जानकारी नहीं है। मैं पूछना चाहता हूं कि पहले जब मुझे धोखा दिया गया, हमने राज्यपाल जी से माननीय नरसिम्हा राव जी के जिस मैसेन्जर ने मुझे संदेश दिया, मैंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के समर्थन से नहीं, मेरे समर्थन से मायावती मुख्य मंत्री बनने के लिए तैयार हो जाए और मैंने प्रेस कॉन्फ्रेन्स की।...*(व्यवधान)* बार-बार एक आरोप लगता है। उसके बाद अभी मैंने कहा था कि राज्यपाल जी को लिखकर दे दीजिए कि हम भारतीय जनता पार्टी से कोई संबंध नहीं रखेंगे तो हम समर्थन देने के लिए तैयार हैं।

डा॰ बलिराम (लालगंज) : आप गलत कह रहे हैं। आपके गुण्डे हमें मारने की साजिश कर रहे थे। समर्थन कहां दे रहे थे? ...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर (बलिया) : अध्यक्ष जी, श्री गुजराल जी देश के प्रधानमंत्री चुने गए। वह मेरे पुराने मित्र हैं, राजनीतिक कार्यकर्ता हैं, उनमें सूझ-बूझ है। मैं उनको बधाई देता हूं और मेरी शुभकामनाएं हैं कि वह देश को एक नयी दिशा में ले जाने का प्रयास करें। मुझे उनसे बड़ी आशाएं थीं और हैं, लेकिन आज सवेरे जब उनका वक्तव्य पढ़ा तो मुझे थोड़ी निराशा हुई। उन्होंने अपने भाषण के प्रारंभ में आजादी के दिनों की याद दिलाई। जेल की सीखचों में उन्होंने जो अनुभव किया था, उसकी याद दिलाई, पंडित जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गांधी की याद दिलाई। जिन लोगों ने शहादत दी है, उनकी कुर्बानी की याद दिलाई और साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि गरीबी, बेबसी, पीड़ा, दर्द, दुख को मिटाने का प्रयास करेंगे। लेकिन न मालूम क्या हो गया है हमारे देश को कि जो भी प्रधान मंत्री होता है, वह यहीं से प्रारंभ करता है कि उदारीकरण चलता रहेगा, विदेशी कंपनियां आती रहेंगी, देश की शोभा बढ़ती रहेगी। मैं समझता हूं कि सारी दुनिया का एक अनुभव है। सोमनाथ जी, आप मुझसे ज्यादा समझते हैं कि जहां-जहां विदेशी कंपनियां गई हैं...। हमारे मित्र आ गए। हमारे पुराने वित्त मंत्री और उससे पहले के वाणिज्य मंत्री।

इनकी मैं बड़ी इज्जत करता हूं। यह मेरे पुराने मित्र हैं। इनसे मैंने तब कहा था कि आपके बजट से मैं एक फीसदी भी सहमत नहीं हूं। लेकिन आपकी योग्यता के कारण मैं आपसे निवेदन करता हूं कि सरकार में आ जाइये क्योंकि आप जैसे लोगों के नेतृत्व की जरूरत इस सरकार को है। श्री सोमनाथ चटर्जी कितना ही करें वह इस सरकार को चलाने में कोई योगदान नहीं दे सकते। क्योंकि जिस रास्ते पर यह सरकार चल पड़ी है और हमारे मित्र गुजराल जी ने अपने वक्तव्य में जो कहा है उससे हमें लगता है कि भारत एक ऐसी अंधेरी गली में जा रहा है जहां से इस देश का निकलना कोई आसान काम नहीं होगा। यह कोई सामान्य बात नहीं है। प्रधान मंत्री बनने के बाद उद्योगपतियों के बीच में जाकर उदारीकरण का आश्वासन देकर हम देश की भाषा, परिभाषा, देश की मानसिकता को कैसे बदल सकेंगे। आप स्थायित्व की बात करते हैं। स्टेबिलिटी और स्टेट्स में अंतर होता है। स्थायित्व तो तब आयेगा जब लोगों की पीड़ा से अपनी

नीतियों को आप जोड़ने की कोशिश करेंगे। स्थायित्व तो तब आयेगा जब देश का मानस यह समझे कि कुछ जमाना बदल रहा है। यह चंद लोगों के लिए बजट है। हमारे जो पुराने वित्त मंत्री थे उनके बजट में जो चंद लोगों के भोग की वस्तुएं लाई जा रही हैं। अगर उस पर प्रसन्नता जाहिर की जा रही है, अगर उसी प्रसन्नता को आप भारत की प्रसन्न्ता मानते हैं तो आप याद रखिये कि लोगों की भावनाएं भड़केंगी, अशांति होगी, अराजकता होगी। मार्टिन लूथर किंग ने कहा था

[अनुवाद]

दबी हुई भावनाओं की अभिव्यक्ति ही हिंसा है।

[हिन्दी]

आज देश में लोगों की भावना दबी हुई है, कुचली हुई है और वे हमसे दूसरी आशा करते हैं। अध्यक्ष महोदय, हम आपके जरिये अपने मित्र प्रधान मंत्री जी से कहना चाहेंगे कि थोड़ी भाषा बदलिये। मैं नहीं कहता कि उदारीकरण की नीति को आप बदल सकते हैं या आपको उसका प्रयास करना चाहिए। अगर कोशिश करेंगे तो शायद यह सरकार जितने दिन चलने वाली है, उतने दिन भी नहीं चलेगी। मैं चाहता हूं कि आपकी सरकार रहे। आप कोई ठोस कदम तो नहीं उठा सकेंगे, लेकिन आवाज बदलिये। मैंने तब कांग्रेस के मित्रों से कहा था, कोई दुराव की भावना भी नहीं है, कांग्रेस हमेशा गरीब लोगों की भाषा बोलती रही है, गरीबी के लिए कितना किया मैं इस समस्या, इस विवाद में नहीं जाना चाहता। लेकिन गरीबी हटाओ का नारा, पिछड़े इलाकों की बात पंडित जवाहर लाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी तक बराबर कही जाती रही है। पंडित नेहरू ने कहा था कि आंचलिक विषमता, रीजनल इम्बेलेंस अगर बढ़ता गया तो यह देश टूट जायेगा। मैं समझता हूं प्रधान मंत्री आज की जो आर्थिक नीतियां हैं वे विषमता बढ़ायेंगी। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच में विषमता बढ़ायेंगी, इलाके-इलाके के बीच में विषमता बढ़ायेंगी। हमारे मित्र श्री वेंकट स्वामी व्यर्थ ही हम पर नाराज हुए, उनके अध्यक्ष का नाम मैंने अपने भाषण में कभी नहीं लिया था। मैं तो अपने को इस योग्य नहीं मानता कि मैं उनके बारे में कुछ कहूं। अनायास वह नाराज हो गये। लेकिन मैं उनसे यह जरूर कहना चाहता हूं कि पब्लिक अंडरटेकिंग्स को समाप्त करने के लिए देवेगौड़ा जी उत्तरदायी नहीं थे। उनको समाप्त करने का काम हमारे परम मित्र श्री मनमोहन सिंह जी ने प्रारम्भ किया था। जो यहां पर बैठे हुए हैं आप उन दिनों को याद करें, पब्लिक अंडरटेकिंग डिसइन्वेस्टमेंट के काम के बारे में बड़े जोरों से आप बोलते थे। आज आपकी वाणी चुप क्यों हो गई? इसलिए दूसरे पर आरोप मत लगाइये। कांग्रेस के मित्र हमसे नाराज मत हो। यह कांग्रेस की पुरानी संस्कृति है कि जो जा रहा हो उसको ठोकर मारो और जो आ रहा हो उसको नमन करो। इससे देश नहीं बनता। मैं आपसे पूछता हूं कि उस दिन हमारे मित्र श्री शरद पवार की वाणी मौन थी। आज श्री देवेगौड़ा में सारे अवगुण दिखायी देने लगे। हमारे बुजुर्ग मित्र श्री नरसिम्हा राव के साथ भी आप लोगों ने यही किया है। यह भारत का शिष्टाचार नहीं है, यह कांग्रेस का शिष्टाचार नहीं है। अगर राजनीति में सामान्य शिष्टाचार नहीं रहेगा तो हम कोई नया देश नहीं बना सकते हैं। हमारे राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं। अगर अटल जी की हम इज्जत नहीं करते, अगर श्री सोमनाथ चटर्जी की हम इज्जत नहीं करते, अगर श्री इन्द्रजीत गुप्त की इज्जत नहीं करते, अगर हम श्री नरसिम्हा राव जी को सम्मानसूचक शब्द नहीं कह सकते तो हम और कुछ नहीं कर सकते हैं। जो इन बड़े लोगों को मर्यादा की जिंदगी नहीं दे सकते वे 40 करोड़ बेबस, लाचार लोगों को मर्यादा की जिंदगी देने के कभी हामी नहीं हो सकते। इसलिए मैं कहता हूं कि सामान्य शिष्टाचार का निर्वाह और क्रांतिकारी विचार दोनों में कोई अंतर नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहूंगा, सुषमा जी ने आज बड़ा अच्छा भाषण दिया। मैंने उनको बधाई का नोट लिखकर भेजा। लेकिन सुषमा जी जब अपना भाषण देने लगती हैं तो कभी-कभी गलतफहमी भी बहुत पैदा करती हैं।

मैं उनसे कहना चाहूंगा कि मैं उस लिस्ट में नहीं हूं, जिनका आपने नाम लिया। हमसे कांग्रेस पार्टी ने समर्थन वापस नहीं लिया था। सुषमा जी, आप जानती हैं कि मेरे त्यागपत्र देने के बाद भी, उस समय कांग्रेस के नेता बराबर कहते रहे कि हमने समर्थन वापस नहीं लिया बल्कि चन्द्रशेखर जी ने अपने आप त्यागपत्र दिया है। मैं उसका इंतजार नहीं करता क्योंकि मैं मानता हूं कि चाहे प्रधानमंत्री के पद पर कोई व्यक्ति हो, प्रधानमंत्री का पद सम्मान का पद है, उसके साथ कोई समझौता नहीं हो सकता-चाहे वे देवेगौड़ा हों, नरसिंह राव हों या गुजराल साहब हों क्योंकि वह इस देश के 90-95 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। संतोष मोहन देव जी, अगर आपकी ओर से या मेरी ओर से उसका अपमान होता है तो वह पूरे राष्ट्र का अपमान है। जब तक यह मौलिक बात हम नहीं समझते, संसदीय प्रजातंत्र यहां नहीं चल सकता।

उस दिन भी जब मैंने भाषण दिया था, वह इसी भावना से दिया था कि किसी व्यक्ति से मेरा लेना-देना नहीं है, देवेगौड़ा जी मेरे मित्र हैं। वे उस समय प्रधानमंत्री के पद पर थे। उनका अपमान करके हम इस देश को आगे नहीं बढ़ा सकते। अगर आपको उनसे नाराजगी थी, वह नाराजगी जायज भी हो सकती है, लेकिन समर्थन वापस लेने का दूसरा अवसर भी हो सकता था। मुझे विश्वास है कि आप इस मौलिक बात पर विचार करेंगे। आप सारा दोष कल के वित्त मंत्री पर मत डालिए कि मंहगाई बढ़ी है, निर्यात कम हो गया है। श्री जी॰ वेंकट स्वामी ने ऐसे वित्त मंत्री के खिलाफ पूरी चार्जशीट लगा दी, जो जा रहे हैं। अगर चिदम्बरम जी आज उस कुर्सी पर होते तो शायद कांग्रेस के मित्र उन पर ऐसे चार्ज न लगाते लेकिन इसमें कुछ आपका भी हाथ है, खाली चिदम्बरम जी का नहीं है। चिदम्बरम जी ने इसमें 5 फीसदी योगदान किया होगा, 95 फीसदी योगदान हमारे योग्य मित्र मनमोहन सिंह जी का है, जिन्होंने इस रास्ते पर देश को डाल दिया। इसलिए आप ऐसी बात मत कीजिए कि 10 महीने में सब कुछ हो गया। अगर कोई बुराई आपको नजर आती है, तो उस बुराई पर क्या यह देश जाने-अनजाने में चल पड़ा है।

सोमनाथ जी, इन्द्रजीत जी, मुलायम सिंह जी ने यहां डा॰ राम मनोहर लोहिया की बात की लेकिन देश का भविष्य इन बातों से तय

[श्री चन्द्रशेखर]

नहीं होगा कि कौन धर्म-निरपेक्ष है या कौन साम्प्रदायिक है। धर्म-निरपेक्षता या साम्प्रदायिकता का सवाल तब उठता है, जब हम देखें कि देश के लोगों की भावनाएं किस ओर जा रही हैं। धूप, पीड़ा और दर्द से कराहता व्यक्ति जब अपने लिए कोई भविष्य नहीं देखेगा, जब विकास में उसे कोई साझेदारी दिखाई नहीं देगी तो अपनी पुरानी आइडैन्टिटी के साथ, अपने पुराने अस्तित्व के साथ खुद को जोड़ने की वह कोशिश करता है। आज देश के करोड़ों बेबस लोगों को जब आर्थिक विकास में कोई हिस्सा दिखाई नहीं देता तो वे अपने को जाति और धर्म से जोड़कर अपनी पीड़ा कम करने की कोशिश करते हैं। ये जातिवादी शक्तियां, धर्म के नाम पर राजनीति करने वाली शक्तियां तब तक बढ़ती रहेंगी जब तक यहां अशिक्षा रहेगी, बेबसी रहेगी, शोषण रहेगा और मनुष्य मनुष्य को मर्यादा की जिन्दगी देने के लिए तैयार नहीं होगा। मुलायम सिंह जी ने इस सवालों पर थोड़ी चर्चा जरूर की है, नाम जरूर लिया है लेकिन धर्म-निरपेक्षता की बातें आप इतनी दूर तक मत बढ़ा दीजिए कि कट्टरवादी ताकतें, चाहे एक तरफ की हों या दूसरी तरफ की हों, उन्हें ज्यादा बढ़ावा मिले।

आज मुझे सोमनाथ जी का भाषण सुनकर बड़ा संतोष हुआ, बड़ी प्रसन्न्ता हुई। उन्होंने एक बात जरूर कही कि आज सहयोग की जरूरत है, सहमति की आवश्यकता है, सभी समस्याओं का मिलकर हमें समाधान करना होगा और इस काम में हमें इस तरफ बैठने वाले लोगों का सहयोग भी लेना पड़ेगा, उन्हें समझाने की कोशिश करनी होगी कि हमारे और आपके कार्यक्रम में अंतर नहीं है। चिदम्बरम जी ने बड़ी योग्यता के साथ अपनी बातें कहीं। एक-दो बातों को छोड़कर, केवल सुषमा जी को प्रसन्न करने के लिए आप बजट को पास मत करिए। आपकी दूसरी बातें सब सही हैं। इससे सुषमा जी प्रसन्न हों या न हों लेकिन आडवाणी जी जरूर प्रसन्न हो जाएंगे लेकिन मुरली मनोहर जोशी जी उतने ही दुखी हो जाएंगे-यही हमारी परेशानी है। हम भी क्या करें, ऐसे देश में हमें रहना है। मैं चाहूंगा कि हमें एक दूसरे से मिलकर काम करना चाहिए।

अभी हमारे एक मित्र ने कहा कि जब आप जनता पार्टी में थे तो बी॰जे॰पी॰ का साथ आपने लिया था लेकिन उस समय सामान्य राजनीति नहीं थी, भारत तानाशाही के कगार पर खड़ा हो गया था। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मैम्बर की हैसियत से मैं 18 महीने तक सौलिटरी कन्फाइनमैंट में रहा था। उस समय आपके नेता ने कहा था कि आप क्या समझौता करने के लिए तैयार हैं तो मैंने कहा था कि तानाशाही और जनतंत्र के बीच कोई समझौता नहीं हो सकता। उस समय भी मैंने स्पष्ट रूप से कहा था कि आज केवल जमहूरियत को बचाने का सवाल है। तीसरे विश्व में एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिकी देशों ने, जहां आजादी आई, सबने जनतंत्र का प्रयोग किया लेकिन कुछ समय बाद सभी जगह जनतंत्र का दीपक बुझ गया। अकेले हिन्दुस्तान में जनतंत्र का दीपक टिमटिमाता हुआ जल रहा था, उसे बुझाने की कोशिश पूरी दुनिया ने की और राजनीतिक व्याख्याकारों ने यहां तक कहा कि भारत में जमहूरियत का चिराग बुझ गया।

उस समय हमारे जैसे लोगों के लिए, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे लोगों के लिए, हमारे मित्र बोम्मई के लिए, हमारे मुरली मनोहर जोशी और राम विलास पासवान के लिए, उस चिराग को फिर से जलाने के लिए सबसे हाथ मिलाने की जरूरत थी। वह आपद् धर्म था।

मैंने ऐसा कभी नहीं कहा कि मुझे कोई छुआछूत लग जाएगी बी॰जे॰पी॰ के लोगों के साथ। इस बात को हम अभिमान के साथ कहते हैं कि उस समय हमारे विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो सम्मान प्राप्त किया, एक धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक के रूप में, शायद कम लोगों को वह सम्मान मिला होगा। हम सब मिलकर काम करें, तो सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। हम मिलकर के काम नहीं करना चाहते। अटल जी कम से कम इस बात के गवाह हैं।

बाबरी मस्जिद, जिसके नाम पर बड़ी गालियां बी॰जे॰पी॰ के लोगों को दी जाती हैं। बाबरी मस्जिद का सवाल हल होने को था। मुलायम सिंह जी उसके बारे में जानकार हैं। अगर एक या डेढ़ महीना हमारी सरकार और रहती, तो यह सवाल ही नहीं रहता। किसने इस मामले को हल नहीं होने दिया। मुलायम सिंह जी आप जरा उसको भी कभी कह दें। मैं तो नहीं कह सकता, क्योंकि मैंने वायदा किया है कि प्रधान मंत्री के रूप में जो मैंने जाना है, वह कभी किसी से नहीं कहूंगा, लेकिन आप तो स्वतंत्र हैं। आप कह सकते हैं। अगर उस दिन हमने कुछ संयम से बात की होती, अगर हमारे इन्हीं मित्रों ने उस दिन सरकार को नहीं गिराया होता, तो आज धर्मनिरपेक्षता का सवाल, इस रूप में नहीं उठता।

आइए, आप और हम, फिर भी सोचें। भूलों से कुछ सीखें। और अध्यक्ष महोदय हममें बड़ी कमियां हैं, कमजोरियां हैं, लेकिन अंत में एक ही बात कहूंगा।

श्री रघुपति सहाय फिराक का एक शेर जो मैंने जेल में पढ़ा था, उसको कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा-

इस खंडहर में कुछ दिए हैं टूटे हुए
इन्हीं से काम चलाओ बड़ी उदास है रात।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इससे पहले कि मैं कांग्रेस के किसी सदस्य और विपक्ष के नेता और प्रधानमंत्री को बुलाऊं। मैं यह कहना चाहूंगा कि मेरे पास छह और व्यक्तियों के नाम हैं। सदस्य अपनी बात बहुत संक्षेप में कहें। वे प्रत्येक पांच से सात मिनट तक का समय ले सकते हैं।

अब श्री चित्त बसु जी बोलेंगे। चूंकि आप सभापति के पैनल में हैं इसलिए आपको एक उदाहरण पेश करना चाहिए।

श्री चित्त बसु (बारसाट) : अध्यक्ष महोदय, मैं आज सुबह प्रधान मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। सबसे पहले, मैं इस सदन की संरचना के हमारे मूल्यांकन की बात को दोहराना चाहता हूं। इस सदन की संरचना किसी भी तरह यह साबित नहीं कर सकती कि कोई भी राजनैतिक दल या दलों का समूह

या राजनैतिक गठबंधन इस समय बहुमत का दावा कर सकता है। यह सरंचना लोगों के इस जनादेश के कारण है कि एक दल की सरकार, या एक दल वाले समूह की सरकार का युग समाप्त हो गया है। परिणामतः मोर्चा सरकार का प्रादुर्भाव हुआ।

संयुक्त मोर्चा सरकार इस देश में पिछले दस महीनों से शासन करती आ रही है। जब मैं प्रधानमंत्री को बधाई दे रहा हूं तो मैं उन्हें यह भी स्मरण कराना चाहता हूं कि देशवासियों को संयुक्त मोर्चा सरकार ने यह वचन दिया था कि वे देश की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति को बनाए रखने की हर प्रकार से कोशिश करेंगे। इन्होंने लोगों को यह भी वचन दिया था कि वे राजनैतिक संघवाद की ताकतों को बढ़ाएं, मजबूत और संगठित करेंगे। इन्होंने लोगों को यह वचन भी दिया था कि वे तीव्र आर्थिक विकास और स्वावलंबी अर्थनीति द्वारा उच्च जीवन स्तर, अच्छा जीवन-यापन सुनिश्चित करेंगे। इन्होंने लोगों को यह भी वचन दिया था कि वे सामाजिक न्याय का स्तर बढ़ाएंगे और उस न्याय का सही वितरण सुनिश्चित करेंगे।

महोदय, इसके अलावा उन्होंने लोगों को यह भी वचन दिया था कि वे लोगों को एक प्रतिनिधित्व वाली जिम्मेवार और जवाबदेह सरकार देंगे। मैं प्रधानमंत्री जी को स्मरण कराता हूं कि वह यह सुनिश्चित करें कि ये सब वचन अधिकतर पूरे हों। मैंने प्रधानमंत्री जी से इस सदन में आज और पहले भी व्यक्त की गई भावनाओं का ध्यान रखने का भी अनुरोध करता हूं।

अपराह्न 6.36 बजे

(उपाध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए*)

महोदय, मुझे यह बताते हुए कोई झिझक नहीं हो रही है कि प्रधानमंत्री पूर्व सरकार द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीति के संबंध में इस सदन में इस ओर से उठने वाले विरोधात्मक स्वर का ध्यान रखें। हमारे माननीय नेता श्री चन्द्रशेखर जी ने सरकार को उनके द्वारा और पूर्व सरकार द्वारा अपनाए गए आर्थिक सुधारों की कमियों और नुकसानों का स्मरण कराया। आम जनता के हित में माननीय प्रधानमंत्री जी को इस ओर ध्यान देना चाहिए। अब माननीय प्रधान मंत्री जी उदारीकरण की नीति अपनाने जा रहे हैं। इसका अर्थ है निजीकरण या सार्वभौमिकरण या विपणनीकरण। मैं समझता हूं कि वे देशवासियों से किए गए अपने वादे पूरे कर सकेंगे। उन्हें इस सदन की भावनाओं का ध्यान रखना चाहिए जिसमें मौटे तौर पर हमारे देश के श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व किया गया है।

महोदय, मैं अपने माननीय मित्र, श्री चिदम्बरम के इस कथन का समर्थन करता हूं कि इस सरकार को कुछ महत्वपूर्ण और तात्कालिक प्रकार के कार्य पूरे करने हैं। उनके चार या पांच सूत्री कार्यक्रम का समर्थन करते हुए मैं भी उनके कार्यक्रम में एक या दो बातें और जोड़ना चाहता हूं। मैं उनसे यह आग्रह करना चाहता हूं कि वे केवल इक्यासीवें संविधान (संशोधन) विधेयक, जिसमें महिलाओं के लिए लोकसभा और विधानसभाओं में आरक्षण की व्यवस्था की गई है, को ही न लें बल्कि अन्य विधायी कार्यों को भी मूर्त रूप प्रदान करें जिसके अंतर्गत खेतीहर मजदूरों का विधेयक, लोकपाल विधेयक और व्यापक चुनावी उपाय अपनाया जाना शामिल है। देश में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए भी कठोर उपाय अपनाने चाहिए। जब तक हम उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार समाप्त नहीं करते, तब तक हम लोगों से हमारे बलिदान और दुखों के आधार पर जीने की आशा नहीं कर सकते। वे हमारे पुराने और माननीय मित्र हैं। मैं उनसे एक बार फिर अनुरोध करना चाहूंगा कि इन स्वरों का ध्यान रखा जाए और लोगों को दिए गए वचन अविलम्ब पूरे किए जाएं। तदुपरांत मैं उन्हें साझा न्यूनतम कार्यक्रम का स्मरण कराता हूं। संयुक्त मोर्चा सरकार ने इन उद्देश्यों को देखते हुए एकता, धर्मनिरपेक्षता, स्थिरता, विकास और सभी के लिए न्याय रूपी स्तंभों पर टिकी हुई सरकार के लिए एक कार्यक्रम दिया है। इन वचनों को अधिकतम स्थिति तक पूरा किया जाना है।

महोदय मैं इस बात को कार्यवाही वृत्तांत में शामिल कराना चाहता हूं कि मेरी पार्टी निरन्तर साम्प्रदायिक ताकतों के, विशेषकर भाजपा का, विरोध करती रही है, जिसका दृष्टिकोण विभाजन, अलगाववाद और इस देश का विभाजन करना रहा है।

महोदय, भाजपा का भारतीय राजनीति के प्रति दृष्टिकोण भारतीयता की सच्ची भावना में नहीं है। भारतीयता का अर्थ है संस्कृति का मिला-जुला रूप और हमारे देश का बहुमुखी रूप। बहुसंख्यवाद भारतीयता का मूल दृष्टिकोण रहा है। उनका भारतीय राजनीति के प्रति दृष्टिकोण मौलिक परंपरा और धरोहर का उल्लंघन है। इसका राजनैतिक विचाराधारा के आधार पर भी मुकाबला करना है।

इसके अलावा, मैं कांग्रेस से भी यह कहना चाहता हूं कि हम मूल रूप से उनकी नीतियों, कार्यक्रमों और विचारधाराओं से सहमत नहीं हैं। इस बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। आर्थिक कार्यक्रमों और नीतियों तथा विचारधारा के प्रश्न पर मतांतर है। परंतु ये सब सामंतवादी ताकतों और देश की प्रगति की राह में बाधक ताकतों, साम्प्रदायिक ताकतों तथा प्रतिक्रियावादी ताकतों के विरुद्ध बनी संयुक्त मोर्चा सरकार की राह में नहीं आती। इसलिए, महोदय, हम अब भी यह महसूस करते हैं कि कांग्रेस (आई) अध्यक्ष की ओर से 30 मार्च का पत्र एक दुर्भाग्यपूर्ण कदम था। मैं आशा करता हूं कि यह संकट इस सदन के सभी धर्मनिरपेक्ष वर्गों के उदार सहयोग से टल जाएगा। यह इस देश में धर्म निरपेक्षवाद की अन्ततः विजय की गारंटी देता है।

प्रधानमंत्री जी से मेरा आखिरी अनुरोध यह है। आपकी विदेश नीति को सभी प्रगतिशील राष्ट्रों तथा समूचे राष्ट्र का सहयोग प्राप्त हुआ है। आपके सिद्धातों ने विश्व में भारत की और अधिक महान बनाने की संभावनाएं खोल दी हैं। जब आप भारत के विदेश संबंधों में मूलभूत परिवर्तन लाए तो मैं आपसे यह कहूंगा कि आपका अनुभव आपको आर्थिक नीतियों में भी कुछ परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करेगा। ये आर्थिक नीतियां इस तरह बनाई जाएं, जो देश के मजदूर वर्गों, किसानों और खेतीहरों लोगों को दुखों से मुक्ति दिलाए। ये दुख उनके ऊपर पिछले चार दशकों से अपनाई जा रही गलत और त्रुटिपूर्ण नीतियों द्वारा आए थे। मैं समझता हूं कि आप इससे सबक लेंगे और हमारे देश की न केवल विदेश नीति बल्कि आंतरिक आर्थिक नीति में भी सुधार करेंगे।

[श्री चित्त बसु]

मैं इस सरकार को इस आशा के साथ फिर अपना समर्थन दे रहा हूं कि यह सरकार सांझा न्यूनतम कार्यक्रम में परिकल्पित नीतियों को अपना कर लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करेगी।

श्री प्रमथेस मुखर्जी (बरहामपुर) (पश्चिम बंगाल) : उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे विश्वास प्रस्ताव पर अपने विचार प्रकट करने का मौका दिया। इसके लिए आपको धन्यवाद।

अपनी पार्टी, आर॰एस॰पी॰ की तरफ से मैं माननीय प्रधानमंत्री, इन्द्र कुमार गुजराल द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं प्रस्ताव का समर्थन इसलिए करता हूं क्योंकि मैं धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र का समर्थन करता हूं। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन इसलिए करता हूं क्योंकि लोगों ने पिछले आम चुनावों में जो अस्वाभाविक जनादेश दिया है उसके लिए मेरे मन में बहुत आदर है। यह बहुत जरूरी था। लोगों का यह जनादेश देश में किसी एक पार्टी के पक्ष में नहीं था बल्कि लोगों का यह जनादेश सामाजिक न्याय और आर्थिक प्रगति के आधार पर धर्मनिरपेक्ष सरकार बनाने के लिए एक गठबंधन सरकार का गठन करने के लिए था।

महोदय, क्षेत्रीय और छोटे दल केंद्रीय दलों के साथ सरकार बनाने के लिए मिल गए और संयुक्त मोर्चा सरकार का काम धर्मनिरपेक्षता एवं संघवाद को बनाए रखना, प्रशासन में उच्च स्तर में स्वच्छ छवि प्रस्तुत करना और लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना था।

सहयोग और आपसी समझबूझ के आधार पर उस समय केन्द्र में संयुक्त मोर्चा सरकार स्थापित की गई थी। इसी मजबूरी से हमने संयुक्त मोर्चा सरकार का समर्थन किया था। परंतु वही मजबूरी आज भी राष्ट्र के समक्ष है। इसीलिए मैं माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

पिछले 21 दिनों के दौरान 10 महीनों के अंदर नाटक के प्रथम अंक में हमने अपने राष्ट्रीय जीवन में एक बहुत बड़ा संकट देखा है। वह संकट और कुछ नहीं बल्कि 11 अप्रैल को विश्वास मत के अंतर्गत श्री देवेगौड़ा की सरकार की हार थी। श्री देवेगौड़ा की सरकार की 11 अप्रैल को विश्वास मत में हार का कारण था। इतिहास में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक ही है और यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि कोई भी व्यक्ति अगर मुख्य धारा से या सीधे रास्ते से भटक जाता है तो अंधेरे में गिर जाता है।

मैं एक बहुत ही अच्छी कविता सुनाता हूं, जो गालिब या किसी अन्य शायर या कवि की नहीं बल्कि दांते की है। अगर आपकी अनुमति हो तो मैं केवल इसकी अंतिम चार लाइनें सुनाऊंगा। "डयूरिंग मिडवे अलांग दि जरनी आफ आवर लाईफ-आई वोक टू फाइन्ड माइसेल्फ इन ए डीप डार्क फोर आई है वॉन्डरड ऑफ फ्राम द स्ट्रेट पाथ"

[जीवन यात्रा के मध्य में मेरी तंद्रा उस समय भंग हुई जब मैं गहन अंधकार में डूब चुका था क्योंकि मैं सीधे मार्ग से भटक गया था]

यह दांते की कविता से लिया गया है। इस सदन के मेरे कुछ मित्र अपने वचनों के सीधे रास्ते से भटक गए हैं। 11 अप्रैल को विश्वास मत के अंतर्गत श्री देवेगौड़ा की सरकार के पतन का यही कारण है। मुझे हमारे माननीय मित्र जी चिदम्बरम द्वारा उस दिन कही गई एक बात याद आती है कि इतिहास में पूर्ण विराम नहीं होता। इतिहास एक अनवरत प्रक्रिया है और इतिहास की इसी अनवरत प्रक्रिया द्वारा हमें श्री इन्द्र कुमार गुजराल के नेतृत्व वाली नई सरकार मिली जो लोगों के लिए, धर्म निरपेक्षवाद और संघवाद के लिए उसी रूप में वचनबद्ध है। इसे ही सहयोगी संघवाद कहते हैं और इसी कारण मैं श्री इन्द्र कुमार गुजराल द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

जब मैं हिंसा की राजनीति के संबंध में एक बहुत अच्छी किताब पढ़ता हूं तो मेरे मन में दुख, व्याकुलता और तनाव उत्पन्न होता है। हिंसा की राजनीति के संबंध में यह पुस्तक है : "अयोध्या टू बारमपाड़ा एट बांद्रा स्टेशन इन मुंबई" इस पुस्तक का संपादन तीन प्रमुख लेखकों द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में क्या है? मैंने यह पुस्तक इस संसद के ग्रंथालय से ली है। यह एक प्रामाणिक पुस्तक है और यह इस बात का दावा करती है कि भारतीय राजनीति में हिन्दु कट्टरवाद पनप रहा है। अयोध्या में मस्जिद के तोड़े जाने से लेकर मुंबई में बारमपाडा में नरसंहार होने तक ये सभी बातें इस बात को साबित करती हैं कि हिन्दू कट्टरवाद बढ़ रहा है जिसने भारतीय संस्कृति और राजनीति को आज दूषित कर दिया है।

महोदय, हम सभी तालिबानिजेशन की बात से परिचित हैं। तालिबानों ने अफगानिसतान में सत्ता हथिया ली है। हमने अफगानिस्तान में तालिबानों की भूमिका, उनका आंतक और खून खराबा देखा है। आज हमारी भारतीय राजनीति में हिंदु तालिबानिजेशन का विकास हो गया है। मैं समझता हूं कि यह देश, यह लोकतंत्र, यह धर्म निरेपक्षवाद, भारतीय समाज के हिंदु तालिबागें के हाथ में नहीं दिया जा सकता। इसलिए मैं धर्म निरपेक्षवाद और लोकतंत्र की रक्षा के लिए हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

महोदय, हमारे माननीय मित्र, श्री पी॰ चिदंबरम् ने एक बात यह कही है कि हम सहयोगी संघवाद के युग में जी रहे हैं। महोदय, वे ग्रेट ब्रिटेन के संवैधानिक इतिहास के प्रवर्तक हैं।

आप सभी ग्रेट ब्रिटेन के ऐतिहासिक संघवाद की धारणा से अच्छी तरह अवगत हैं। परंतु ऐतिहासिक संघवाद की धारणा अब समाप्त हो गई है। आज हम सहयोगी संघवाद के दिनों में पहुंच चुके हैं। सहयोगी संघवाद का अर्थ क्या है? अगर हम इंडोनेशिया, मलेशिया या विश्व के अन्य देशों को देखते हैं तो प्रत्येक को यह पता लग सकता है कि आज के युग में संविधान को सहयोगी संघवाद के रूप में अपनाया जाता है। हमने इस सहयोगी संघवाद के पक्ष में मत दिया है। यही एक तथ्य है कि सहयोगी संघवाद ही हमारी भारतीय राजनीति की अधिकांश समस्याओं का समाधान हैं। कई समस्याएं हैं। कई केंद्राभिमुखी ताकतें हैं। हमारे देश में कई केन्द्राभिमुखी ताकते हैं। इन केंद्राभिमुखी और केंद्राविमुखी ताकतों को कौन मिलाएगा? आज की मांग इन केंद्राभिमुखी और केंद्राभिमुखी ताकतों को मिलाना है और

केवल सहयोगी संघवाद ही इस समस्या का सामना कर सकता है। यह इनको मिलाकर राज्य तथा केंद्र को मजबूत बना सकता है। इसीलिए, वह संयुक्त मोर्चा सरकार पूरी तरह से सहयोगी संघवाद की भावना और सिद्धांत को बनाए रखने के लिए वचनबद्ध है। महोदय, इसलिए मैं इस सरकार को अपना समर्थन देता हूं।

महोदय, आपकी अनुमति से मैं एक और बात कहना चाहता हूं। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी एक विख्यात कूटनीतिज्ञ और एक विख्यात विदेश मंत्री के रूप में जाने जाते हैं। मैं इन सभी विषयों और विदेशी मामलों के संबंध में उनसे परिचित हूं। विपक्ष के हमारे माननीय नेता विदेश मामलों संबंधी स्थायी समिति के अध्यक्ष हैं। हम सभी उन सभी तथ्यों से अवगत हैं।

महोदय, संभवतः लोगों की स्मरण शक्ति कमजोर है। हम सभी बातें भूल जाते हैं। इन गुट निरप्रेक्ष वाली भारतीय नीति का गौरवपूर्ण इतिहास पहले ही भुला चुके हैं। हम नेहरू-नासिर टीटो के गौरव पूर्ण इतिहास, गौरवपूर्ण धरोहर को भूल चुके हैं। हम उन दिनों को भूल चुके हैं। हम इस सिद्धांत को भूल चुके हैं क्योंकि पिछले 40 वर्षों के दौरान पूरा देश अधीनता में था। गत 14 या 20 वर्षों के दौरान यह देश यूरो-अमेरिकन साम्राज्यवाद के निर्देशों के अधीन था। यह यूरो-अमेरिकन साम्राज्यवाद की धमकियों के अधीन रहा है। आज, पूरा विश्व विभाजित हो चुका है। दो ध्रुवीय विश्व था परंतु यह दो ध्रुवीय विश्व यूरो-अमेरिकन साम्राज्यवाद की धमकियों के अंतर्गत एक एक ध्रुवीय विश्व बन गया है। सोवियत रूस के विभिन्न राज्यों में विभाजन के बाद पूर्वी यूरोप में समाजवादी राज्यों के विभाजन के बाद हम देखते हैं कि पूरा विश्व एक-ध्रुवीय विश्व में बदल गया है और इसके अलावा हम देखते हैं कि इस एक-ध्रुवीय विश्व में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई देश, आज भी भारत की विदेश नीति का मुंह देख रहे हैं। इसलिए बहुत सारी बातें पूरी तरह भारत की गुटनिरपेक्ष नीति के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन पर निर्भर हैं।

मैं हमारे प्रधानमंत्री जी का आभारी हूं कि वे इस विषय के मर्मज्ञ हैं और उन्होंने यह काम जारी रखा है। यह काम प्रगति पर है। अर्थात् भारत अब अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त कर रहा है। अब भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेता के रूप में अपना खोया गौरव पुनः प्राप्त कर रहा है।

मैं माननीय प्रधानमंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वे गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेता के रूप में भारत के गौरव को बढ़ाने के लिए अपने पूरे ज्ञान और अनुभव को लगा दें।

इस देश ने बहुत दुख झेले हैं। पिछले तीन सप्ताहों के दौरान देश पर काफी दुख आए पेट्रोल पंपों की हड़ताल, ट्रक ड्राइवरों की हड़ताल और अन्य हड़तालों से दाम बढ़ गए। सेन्सेक्स गिर गया है। हमारा आर्थिक जीवन ठप्प हो गया है। इसलिए अब और हानि वांछनीय नहीं है। मैं प्रधानमंत्री जी और इस सरकार से अनुरोध करूंगा कि वे इस ओर ध्यान दें और गुट निरपेक्ष आंदोलन के नेता के रूप में देश का विकास करने की कोशिश करें।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

डा॰ अरविन्द शर्मा (सोनीपत) : उपाध्यक्ष जी, मैं विश्वास प्रस्ताव के समर्थन में खड़ा हुआ हूं। आदरणीय मोर्चा नेताओं, कांग्रेस नेताओं और आदरणीय केसरी जी की सूझबूझ से इस देश को मध्यावधि चुनाव से बचाया जा सका है। हम तो सोचते थे कि दो-तीन हजार करोड़ रुपए का इस देश के ऊपर भार पड़ेगा। लेकिन हमारे आदरणीय जी॰ वेंकट स्वामी जी ने बताया कि कम से कम पांच हजार करोड़ रुपए का देश के ऊपर आर्थिक भार पड़ने वाला था। आज देश को चुनाव की जरूरत नहीं है। आज देश को सामाजिक न्याय, पीने के पानी, बिजली, कपड़ा, रोटी मकान इत्यादि की जरूरत है। आज किसान को उसका हक दिलाने की जरूरत है। आज हरियाणा की अनाज मंडियों को देखिए बिल्कुल खाली पड़ी हुई हैं। आज किसान को गेहूं का समर्थन मूल्य 650 रुपये दिलाने की जरूरत है।

दूसरे, आज देश को गर्व है कि उसको माननीय गुजराल जी के रूप में एक ऐसा प्रधान मंत्री मिला है जिसने आजादी की जंग में खुद ने ही नहीं बल्कि पूरे परिवार ने हिस्सा लिया और आप सबको पता है कि जैसे प्रधान मंत्री ने सुबह बताया कि दस-ग्यारह साल की उम्र में ही जिस इंसान में देशभक्ति की भावना पैदा हो गई हो, वह निश्चित रूप से प्रधान मंत्री के रूप में इस देश को कितना ऊंचा ले जाएगा। यह सिर्फ हम सोच सकते हैं और हमारे प्रधान मंत्री जी इस बात को पूरा करके दिखाएंगे। हमारे पूरे हिन्दुस्तान को पूरी दुनिया के नक्शे में उसको ऊंचे से ऊंचा उठाएंगे, ऐसी हम उम्मीद करते हैं। जिस इंसान को अच्छी तरह से पता है कि कैसे आजादी मिली है, किन-किन को कुर्बानी देनी पड़ी उस आजादी की कीमत क्या है, यह पता है तो हम पूरी उम्मीद करते हैं कि प्रधान मंत्री गुजराल जी के नेतृत्व में यह देश दिन-दूनी रात चौगुना उन्नति करेगा और खास तौर से मैं चन्द्रबाबू नायडू जी को मुबारकबाद देना चाहूंगा जिनकी सूझबूझ और नेताओं की सूझबूझ ने यह दिखाया कि प्रधान मंत्री उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम का नहीं बल्कि प्रधान मंत्री पूरे देश का प्रधान मंत्री होता है। कितनी बड़ी सूझबूझ हमारे नेताओं ने दिखाई है।

तीसरे, मैं यह कहना चाहूंगा कि अगर सभी पार्टीज इसी तरह से आपस में छींटाकशी करती रहेंगी तो इससे देश का काम कैसे चलेगा? आज देश के बारे में सोचने की जरूरत है। आज मिलीजुली सरकारों का जमाना आ गया है। उसका कारण है और जैसा कि हमारे माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पिछली बार बताया था कि रीजनल पार्टीज बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। जो लोगों के साथ जितना जुड़ेगा, यह उतना ही आगे आएगा। जो लोगों की समस्याओं के साथ जुड़ेगा, वह उतना ही ही जनता के करीब आएगा। यही कारण है कि रीजनल पार्टीज लोगों के साथ जुड़ी हैं। वे नित-प्रतिदिन उनका ध्यान रखती हैं। आने वाला समय भी मिली-जुली सरकारों का ही होगा। इसलिए आज हमको सोचने की जरूरत है। आज हमको यह सोचने की जरूरत नहीं है कि मिजीजुली सरकारों को कैसे गिराया जाए, बल्कि यह सोचने की जरूरत है कि मिलीजुली सरकारों को कैसे चलाया जाए?

[डा. अरविन्द शर्मा]

मैं निर्दलीय जरूर हूं लेकिन मेरी भी एक सोच है। मेरी हरियाणा की सोच है। आप बताइए कि सरकारी प्रशासन में कैसे काम चलेगा जब ऐसे-ऐसे वक्तव्य आते रहेंगे? मैं एक छोटा सा उदाहरण आपको बताना चाहता हूं कि देवेगौड़ा जी की सरकार में मैं एक दफ्तर में गया था। कुछ ऐसा वक्तव्य आया कि ऑफिस में कोई काम ही नहीं करना चाहता था। सबका कहना था कि सरकार का पता नहीं है कि कब जाएगी। इसलिए हमें इन चीजों को परस्पर बातचीत करके रोकना होगा। मैं उन भाईयों को जो सरकार को समर्थन कर रहे हैं, मैं अपनी तरफ से और अपने साथियों की तरफ से प्रार्थना करूंगा कि वैसे तो हम गांधीवाद, लोहिया जी और अम्बेडकर जी की बातें करते हैं, बहुत अच्छी बात है। लेकिन हमें उनके आदर्शों पर चलना चाहिए। हर दूसरे वक्ता ने इस सदन में गांधी जी के आदर्शों का जिक्र किया है। लेकिन हमें उनके आदर्शों पर चलना भी चाहिए। अगर दो भाईयों में झगड़ा होता है, कभी-कभी मन-मुटाव भी होता है, विचारों का आदान-प्रदान होता है। बैठकर समस्याओं का हल निकाला जाता है। इसी तरह से हमें देश की समस्याओं पर भी बैठकर बातचीत करने की जरूरत है। अगर गांधी जी किसी से नाराज होते थे तो इस तरह से नाराज नहीं होते थे। वह खाना खाना छोड़ देते थे, बात करना छोड़ देते थे। इन बातों/तरीकों से वह उसे उसकी गलती महसूस कराते थे।

अपराह्न 7.00 बजे

आज हर चीज से ऊपर उठकर देश को बचाने की जरूरत हैं। अपने राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर देश को बचाने की जरूरत है। अगर देश में अन्सरटेंटिटी का माहौल पैदा होता है, तो उससे हमारा नुकसान नहीं होता है, हमारी पार्टी को नुकसान नहीं होता है, किसी भी नेता को नुकसान नहीं होता है, अगर नुकसान होता है, तो देश को नुकसान होता है। आज जरूरत है कि हम मिलजुल कर आगे चलें और इसीलिए सबने मिलकर आदरणीय प्रधान मंत्री, गुजराल जी को समर्थन दिया है। आज जरूरत इस बात की है कि उनको समर्थन देकर हम देश को आगे से आगे बढ़ायें।

मैं एक बात और कह कर अपनी बात समाप्त करूंगा। मैं नार्थ-ईस्ट की समस्या की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। इस समस्या को सरकार को नेशनल समस्या मानना चाहिए। आज हरियाणा में एचवीपी और बीजेपी की कोलिशन सरकार है। इसी प्रकार पंजाब में भी बीजेपी अकाली की कोलिशन सरकार है। इतना होने पर भी हरियाणा के अन्दर जो एसवाईएल कैनाल है, जो किसानों के लिए जीवनदान है, उसकी समस्या को दूर करने के लिए इनको कोई चिन्ता नहीं है। इनको चिन्ता है कि सैन्टर में किस प्रकार सरकार बनाई जाए। इनको लोगों की समस्यायें हल करने की कोई चिन्ता नहीं है।

मैं अपनी ओर से और अपने साथियों की ओर से इस विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और उपाध्यक्ष जी आपने मुझे समय दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

श्री सुरेन्द्र सिंह (भिवानी) : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने विश्वास मत प्राप्त करने के लिए जो प्रस्ताव सदन में रखा है, मैं उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

महोदय, पिछले दस महीने में संयुक्त मोर्चे की तरफ से यह तीसरा विश्वास मत का प्रस्ताव है। इसकी वजह क्या है? तमाम पोलिटिकल वही हैं, तमाम युनाइटेड फ्रन्ट के कान्स्टीचुएन्टस वहीं हैं। हालात इस कदर पैदा हुए कि हिन्दुस्तान के लोगों में इन्सेटनिलिटी और इनसिक्योरिटी की भावना पैदा हुई। इन सब हालात को मद्देनजर रखते हुए, राष्ट्रपति जी ने जो नई सरकार से आग्रह किया कि वे सदन में विश्वास मत प्राप्त करें। ग्यारह तारीख के विश्वास मत पर जो बहस हुई और आज जो बहस हो रही है, उसमें दिन-रात का अन्तर है। वही युनाइटेड फ्रन्ट है, लेकिन पहले देवेगौड़ा जी प्रधान मंत्री थे और आज गुजराल साहब हैं। मैं गुजराल साहब को बहुत लम्बे अर्से से जानता हूं। निर्विवाद रूप से वे धर्मनिरपेक्ष छवि वाले समेकित व्यक्तित्व है।

[हिन्दी]

ये बहुत पुराने कांग्रेसी भी हैं। इन्होंने देश के अलग-अलग भागों में अलग-अलग समाज में अलग-अलग काम किए हैं। लेकिन आज जितनी तकरीर इस सदन में हुई हैं, वह पिछली तकरीरों से बिलकुल भिन्न हैं। पिछली बार जितने भी अटैक्स युनाइटेड फ्रन्ट की ओर से हुए, उनमें कांग्रेस इस कदर अपनी जगह बैठी रही कि जैसे एक मुल्जिम अदालत में बैठता है। आखिर इनस्टेबिलिटी और इनसिक्योरिटी की भावना क्यों पैदा हुई? यह इसलिए हुई कि जब देवेगौड़ा जी इस सदन में पहली मर्तबा कान्फिडेंस लेने के लिए आए, तो नरिसम्हा राव जी इस सदन में कांग्रेस के नेता थे और उन्होंने उठकर प्रधान मंत्री जी की प्रशन्सा की और कहा कि पांच साल तक हम अनकंडीशनल सपोर्ट देते रहेंगे। आज स्थिति दूसरी है, पांच साल तो दस महीने में ही आ गए और आज फिर सुबह शरद पवार जी ने वही भावना व्यक्त की।

वही भाषण था कि आने वाले पांच साल तक हम सपोर्ट करते रहेंगे। अब पांच साल तो इस सरकार के है नहीं, वे पांच साल किस को सपोर्ट करेंगे? अगर आप वेंकट स्वामी जी की तकरीर देखें, बीच में उनका जो थोड़ा सा ट्रेलर सा आया था, अगर उस सारे माहौल को देखें, पांच साल तो दरकिनार रहे मैं तो गुजराल साहब से यह कहूंगा कि आपको हमसे खतरा नहीं है, आपको खतरा कांग्रेस पार्टी से है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो बहुत पुराना कांग्रेसी हूं। मैं तो कांग्रेस में पैदा हुआ था और मैं जितना इनको जानता हूं आप में से उतना इनको कोई नहीं जानता। कांग्रेस पार्टी बगैर सत्ता के रह नहीं सकती। अगर आप हिन्दुस्तान के प्रजातंत्र का, इस संसदीय प्रणाली का इतिहास उठाएं तो कांग्रेस पार्टी कभी बीच में नहीं बैठी। यह या तो वहां बैठती थी या उधर बैठती थी। आखिर क्यों? 1977 में पहली बार कांग्रेस के खिलाफ जनता पार्टी के नाम से फ्रंट बना और जनता पार्टी की सरकार बनी। कांग्रेस पार्टी अकेली यहां बैठी।

उपाध्यक्ष महोदय, अगर आप याद करें तो 1989 में फिर वी॰पी॰ सिंह जी के नेतृत्व में युनाइटेड फ्रंट आया। उस वक्त सभी लोग यहां थे और कांग्रेस पार्टी यहां थी। आज बी॰जे॰पी॰ क्यों मजबूत है, सभी लोग सुबह से बी॰जे॰पी॰ के खिलाफ तकरीर कर रहे हैं। सिर्फ इसलिए, क्योंकि 1977 में जो सारे हिन्दुस्तान के विरोधी कांग्रेस की सत्ता को देखते थे आज वही सब साथी इस तरफ बैठते हुए यह देखते हैं कि आने वाला राज बी॰जे॰पी॰ का होगा। आज चाहे कांग्रेस की तरफ से या फ्रंट की तरफ से किसी की तकरीर आए, वाजपेयी जी को प्रधान मंत्री मान कर तकरीर कर रहे हैं। मैं अच्छी तरह से जानता हूं, राजेश पायलट जी उस दिन कह रहे थे कि कांग्रेस दरियादिल है, लिबरल है, सेक्यूलर है। 1982 में ए॰जी॰पी॰ की इन्होंने मदद की। लोंगोवाल अकार्ड किया।

उपाध्यक्ष महोदय, आप तो हरियाणा से ताल्लुक रखते हैं। 1982 में क्या किया था? मैं कांग्रेस का एम॰एल॰ए॰ था। 1982 में हम 90 में से 36 एम॰एल॰ए॰ जीत कर आए थे और चौधरी देवीलाल जी को गवर्नर, तपासे जी ने ओथ के लिए बुला लिया था लेकिन पता नहीं रातों-रात क्या चमत्कार किया कि भजन लाल जी ओथ लिए हुए मिले। हमारे साथियों का बहुत नरम स्वभाव है। उस दिन देवेगौड़ा जी बोल रहे थे तो यह सब के सब बड़े खुश थे। आज इन्होंने समर्थन खुशी से नहीं दिया। यहां पर जितने नौजवान बैठे हैं, जो पहली बार चुन कर आए हैं, वे यह महसूस करते थे उन्होंने लीडरशिप को कनवे किया कि अगर आप आज सपोर्ट विदड्रा करते हैं और चुनाव हुए तो कांग्रेस की बुरी हालत होगी। मैं तो कांग्रेस में रहा हूं और मैं इनको बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। यह चन्द्रशेखर जी की सपोर्ट क्यों विदड्रा करने जा रहे थे। इन्होंने ऐसा क्यों किया था, इनको एक नारा मिलता है जब यह पावर से बाहर होते हैं तो इनको एक शब्द फीडबैक बहुत अच्छा लगता है। ये क्या कहते हैं, अब फीडबैक यह है कि गौड़ा जी की सरकार गई और चुनाव हुए तो हम मेजोरिटी लेंगे। महोदय, अगर इस बार इनका फीडबैक यह है तो ये गलतफहमी में होंगे। इस बार अगर चुनाव हो गए तो सदन में दो-चार गलती से आएंगे। शरद पवार जी कह रहे थे कि हमने बड़े साफ दिल से सपोर्ट किया।...*(व्यवधान)*

महोदय, मैं एक और सबमिशन करना चाहता हूं, इस मुल्क में इस कदर अगर प्रधानमंत्री जाते रहे तो भूतपूर्व प्रधानमंत्री बहुत ज्यादा होंगे और नई दिल्ली में ट्रेफिक के लिए आम आदमी के लिए एक समस्या हो जाएगी। इसलिए मेरा आपसे यह अनुरोध है कि भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों के लिए एक अलग सी टाउनशिप बना दें और उसके लिए भोंडसी का फार्म वैसे तो बहुत अच्छा है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : आपका सुझाव अच्छा है लेकिन अब आप कंक्लुड कीजिए।

श्री सुरेन्द्र सिंह : इन्होंने हट्स भी बहुत बना रखी हैं। फॉर्मर प्राइम मिनिस्टर्स को बहुत से ऑकेजन्स पर इकट्ठे होना पड़ता है जैसे कभी राजघाट जाना पड़ता है, कभी राष्ट्रपति भवन जाना पड़ता है, कभी संसद में सैंट्रल हाल में आना पड़ता है। इनके लिए अलग से बहुत फर्स्ट क्लास गाड़ी हो। वे उसी एक गाड़ी में बैठ कर आएं। इससे ट्रैफिक भी ठीक-ठाक चलता रहेगा और आम आदमी भी महसूस करेगा कि देश के डिगनेटरीज जिन्होंने देश की सेवा की, वे सब मिल कर इकट्ठे जा रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : आपका सुझाव अच्छा है लेकिन आप जरा कनक्लूड कीजिए।

श्री सुरेन्द्र सिंह : मैं गुजराल साहब से एक अर्ज करूंगा कि जब चन्द्रशेखर जी ने प्रधान मंत्री से त्याग पत्र दिया था, मुझे नहीं पता कि यह बात कहां तक सच या गलत है, किसी सज्जन ने चन्द्रशेखर जी से पूछा कि आप प्रधान मंत्री पद से हट कर कैसा महसूस करते हैं तो इनका बहुत अच्छा जवाब था। इन्होंने कहा था कि हिमालय के एवरैस्ट पर जाकर कोई बस नहीं जाते। झंडा गाड़ दिया और वापस आ गए। आपने देवेगौड़ा जी का झंडा गाड़ दिया। मैं गुजराल साहब से कहूंगा कि इन गिवन सर्कमस्टानसिज इनसे बेहतर कोई पर्सनैलिटी नहीं हो सकती। अगर इनको कोई खतरा होगा तो हमारे लायक दोस्तों से होगा।

मैं एक प्रार्थना करूंगा कि देवेगौड़ा जी प्रो फार्मर और प्रो एग्रीकल्चरलिस्ट थे। उन्होंने गेहूं के दाम तय करते समय किसानों के साथ बहुत ज्यादती की। 415 का भाव और 60 रुपए बोनस देना तय किया। अगर हमें विदेश से गेहूं साढ़े सात सौ रुपए क्विंटल में मिलता है तो यहां कम से कम साढ़े छः सौ में किसानों से क्यों नहीं लिया जाता? मुझे यकीन है कि गुजराल साहब इस बात पर ध्यान देंगे। यह बहुत अहम बात है। इसमें ट्रैजरी बैंचिस की तरफ से पूरा समर्थन हासिल होगा। इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

[अनुवाद]

श्री ई॰ अहमद (मंजेरी) : उपाध्यक्ष महोदय, अपने दल इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग की तरफ से मैं माननीय प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। श्री इन्द्र कुमार गुजराल का इस सदन में इस देश के प्रधानमंत्री के रूप में स्वागत करना एक बहुत ही सौभाग्य और खुशी की बात है।

समय की कमी के कारण मैं इस सदन का अधिक बहुमूल्य समय नहीं लेना चाहता। मैं केवल कुछ मुद्दों के संबंध में ही अपनी बात कहूंगा। प्रधानमंत्री के समक्ष एक बहुत ही बड़ा काम है। इसमें देश की बिगड़ी राजनीति को सुधारना शामिल है। उन्हें इस देश के लोगों में विश्वास पैदा करना है। इस देश का प्रधान मंत्री बनने के बाद लोगों को श्री इन्द्र कुमार गुजराल जी से काफी आशाएं और आकांक्षाएं हैं।

इस देश को एक स्थायी सरकार की जरूरत है। पिछले दस महीनों में यह चौथा विश्वास प्रस्ताव है जो यह दर्शाता है कि यह एक राष्ट्रीय आवश्यकता कि देश में एक स्थिर सरकार होनी चाहिए। अगर राजनैतिक स्थिरता होगी तभी आर्थिक पक्ष में भी स्थिरता होगी। अगर आर्थिक क्षेत्र में स्थिरता होगी तो हमारे लाखों लोगों की दशा सुधारने का रास्ता निकलेगा तथा इस देश में गरीबी हटा कर राष्ट्रीय विकास किया जा सकेगा।

[श्री ई. अहमद]

यह एक मिली जुली सरकार है ऐसी सरकार की शुरूआत, अगर मुझे ठीक-ठीक याद है। साठ के दशक में केरल से हुई थी। उसके बाद सत्तर के दशक में यह बंगाल में हुई। स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नहेरू जी के समय कांग्रेस के श्री शंकर की अध्यक्षता में पी॰एस॰पी॰ के श्री पट्टमथानु पिल्लई के मुख्य मंत्रीत्व में केरल में पहली बार गठबंधन सरकार बनी थी।

कांग्रेस और पी॰एस॰पी॰ ने जो सरकार बनाई थी, उसके अध्यक्ष महोदय मुस्लिम लीग पार्टी से थे। मुस्लिम लीग पार्टी ने स्थिरता प्रदान करने की भूमिका निभाई थी। गठबंधन सरकार में आपसी विश्वास और समझ होनी चाहिए। इसमें कोई कार्यक्रम भी होना चाहिए। इस कार्यक्रम के साथ हमें आगे बढ़ना चाहिए और एक ऐसा नेता होना चाहिए जो सभी दलों और सहयोगियों को साथ लेकर चल सके। जब पिछले कुछ दिनों में बातचीत चल रही थी तो कुछ लोग यह आशा कर रहे थे कि कांग्रेस और संयुक्त मोर्चा सरकार एक साथ नहीं आएंगी। परंतु यह इस देश का सौभाग्य है और इस देश के लाखों लोगों का सौभाग्य है जो केन्द्र में एक धर्मनिरपेक्ष और स्थायी सरकार चाहते हैं। उनकी आशाएं इस आधार पर धूमिल हो गई हैं कि कांग्रेस और संयुक्त मोर्चा सरकार आपस में मिल गए हैं।

महोदय, जो समय गुजर गया गुजर गया। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी से अनुरोध करना चाहूंगा कि वे अब से हम सभी के बीच अर्थात् संयुक्त मोर्चा सरकार और कांग्रेस दल के बीच अधिक संपर्क, अधिक सलाह और मशवरे की नए रूप में शुरूआत करें। तभी इस देश में स्थिर और धर्मनिरपेक्ष सरकार बनेगी। लोग हमसे यही आशा कर रहे हैं।

मेरी माननीय मित्र सुषमा स्वराज ने कहा है कि लोग उन्हें सरकार बनाने के लिए मत देंगे। अगर कांग्रेस पार्टी और अन्य धर्मनिरपेक्ष दल एक साथ मिलकर लोगों के पास जाते हैं तो जनादेश इस देश का धर्मनिरपेक्ष ताकतों के पक्ष में होगा तथा श्रीमती सुषमा स्वराज का यह सोचना केवल सोचना ही रह जाएगा। यह इस देश में सच नहीं हो सकता क्योंकि इस देश के अधिसंख्य लोग केन्द्र में एक धर्म-निरपेक्ष सरकार चाहते हैं।

महोदय, मैं अपनी बातों को स्पष्ट करने के लिए केवल कुछ मिनट का ही समय और लूंगा। अब हमारे प्रधानमंत्री ऐसे प्रधानमंत्री है जो एक दूरदृष्टा हैं। जो राष्ट्र के बारे सोचते हैं। राष्ट्र के प्रति इस दृष्टिकोण के कारण वे इस देश के लिए निश्चय ही अच्छे काम करेंगे। वे एक सफल सूचना और प्रसारण मंत्री थे। उन्होंने विदेश मंत्री के रूप में सफलतापूर्वक कार्य भी किया था। इसलिए, यह देश श्री इन्द्र कुमार गुजराल को एक सफल प्रधानमंत्री के रूप में क्यों न देखने की आशा करें? वे एक सफल प्रधानमंत्री भी होंगे।

महोदय, जी इन्द्र कुमार गुजराल ने हमेशा इस देश के अल्पसंख्यकों की अकांक्षाओं का पता लगाया है। मैं इस देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक वर्ग अर्थात् मुसलमानों की शिकायतों के संबंध में एक दो बातें कहना चाहूंगा। प्रधानमंत्री सहित, जब वे विदेश मंत्री थे, हमारे सभी नेता राष्ट्र की जनता तथा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष जाते हैं और कहते हैं कि भारत को विश्व में दूसरा सबसे बड़ा इस्लामी जनसंख्या वाला देश होने का गर्व है। परन्तु यह दूसरा सबसे बड़ा इस्लामी जनसंख्या वाला देश जिनकी जनसंख्या हमारे देश का लगभग 14 प्रतिशत है, इसमें शिक्षा की कमी है। उनके पास शिक्षा की सुविधा नहीं है और उनके पास काम नहीं है। मैं यह कहना चाहता हूं कि इस देश की सबसे अधिक अल्पसंख्यक जनता को, पिछड़े वर्ग के रूप में सरकार में प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। अब मिल रहा प्रतिनिधित्व बहुत कम है। जब भी इस मुस्लिम समुदाय के पिछड़े वर्ग के शिक्षित युवा रोजगार के लिए दरवाजे खटखटाते हैं उन्हें निराशा ही होती है। यह वास्तविक स्थिति है। मैं चाहता हूं कि श्री गुजराल जी इस मामले पर गंभीरता से विचार करें और आवश्यक कार्रवाई करें।

महोदय, तथ्य यह है कि श्री गुजराल जी इस देश में अल्पसंख्यकों के उत्थान के लिए इंदिरा गांधी जी द्वारा शुरू किए गए 15 सूत्री कार्यक्रम के सूत्रधार थे। इस देश के प्रधान मंत्री के रूप श्री गुजराल जी अल्पसंख्यकों के उद्धार के लिए 15 सूची कार्यक्रम को अच्छी तरह लागू कर सकेंगे। श्री गुजराल एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की छवि को बनाए रखा है।

फासीवादी ताकतों द्वारा बाबरी मस्जिद तोड़े जाने के बाद से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की छवि धूमिल हो गयी है। वह छवि गुजराल जी के सिद्धान्तों के कारण पुनः सही की जा चुकी है। श्री गुजराल जी के सिद्धान्त का आधार क्या है? इसमें सभी देशों के साथ मित्रता का संदेश है। यह विदेश मामलों के क्षेत्र में सबसे अच्छा रास्ता है। उनका सिद्धान्त विदेशी मामलों में मार्ग प्रशस्त करने का है। श्री गुजराल जी के सिद्धान्त ने राष्ट्रों के समक्ष भारत की सर्वोत्तम छवि प्रस्तुत करने में मदद की है। देश के शासन की बागडोर एक ऐसे आदमी के हाथ में है। हम उनकी तथा उनकी सरकार की सफलता की कामना करते हैं। बिना किसी विरोधाभास के मैं यह कहना चाहता हूं कि श्री गुजराल जी की अध्यक्षता में सबसे अच्छी धर्मनिरपेक्ष सरकार होगी जो इस देश के लाखों भारतीयों को स्थिरता प्रदान करेगी। जिसकी वे आशा किए हुए हैं।

महोदय मैं इस सरकार का समर्थन करता हूं और इस देश के भविष्य के लिए उनकी सफलता की कामना करता हूं।

श्री पी॰सी॰ थामस (मुवतुपुजा) : महोदय, केरल कांग्रेस पार्टी की ओर से मैं नए प्रधान मंत्री को बधाई देना चाहता हूं। भारत का इतिहास गौरवशाली रहा है और मुझे पूरा विश्वास है कि भारत का भविष्य स्वर्णिम होगा। फिर भी यह कहा जाता है कि बीता कल इतिहास है, आने वाला कल रहस्य है और आज का दिन एक उपहार है। इसलिए लोग इसे वर्तमान कहते हैं। मैं निश्चिंत हूं कि अब यह उपहार श्री आई॰के॰गुजराल के हाथों में है। यद्यपि मैं महसूस करता हूं कि यह उपहार-असीम सम्भावनाओं वाला वर्तमान-उतना प्रसन्नता प्रदान करने वाला नहीं है जितना कि यह प्रतीत होता है। यह कांटों से भरा है, यह अस्पष्ट है, यह विभिन्नताओं में है और इसके साथ कई समस्याएं जुड़ी है।

महोदय, भारत की समस्याएं अनेक हैं और हमें उनका सामना एकजुट होकर करना है। वही एक मात्र रास्ता है जिसके द्वारा इन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ा जा सकता है। गरीबी, अशिक्षा, सांप्रदायिकता, मजदूरों की समस्याएं, किसानों की समस्याएं, दलितों और आंतकवादियों द्वारा उत्पन्न समस्याएं जिनका हम सामना कर रहे हैं, वे समस्याएं हैं जिनसे निपटा जाना है और इन परिस्थितियों में भारत को शक्तिशाली बनाना है।

अपराह्न 07.22 बजे

(श्री बसुदेव आचार्य *पीठासीन* हुए)

महोदय, हमें अपने बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है और हमें एक लम्बा रास्ता तय करना है। केवल बुनियादी ढांचे के निर्माण द्वारा ही हम प्रगति के बारे में सोच सकते हैं। चाहें हम किसी भी आर्थिक नीति का अनुसरण करें। मैं सोचता हूं कि हमें आशावादी होना चाहिए और मेरे विचार से प्रधान मंत्री एक आशावादी व्यक्ति हैं। परन्तु आशावाद भी कठिनाइयों की ओर ले जा सकता है। यह कहा जाता है कि सुदृढ़ आशावाद शक्ति को बढ़ता है। यदि इसे शक्तिवर्धक पाया जाता है तो इस शक्तिवर्धक को सही दिशा में प्रयोग में लाना चाहिए जिससे कि भारत को बलशाली बनाया जा सके, भारत को और ज्यादा संगठित किया जा सकें, जिससे कि संघवाद की भावना पनप सके जो कि आज के समय की आवश्यकता है जिसे कई वर्षों तक ठण्डे बस्ते में रखा गया जिसे एक वास्तविकता में बदला जा सकता था।

एक शक्तिशाली भारत का निर्माण केवल दिल्ली में बैठने वाले शक्तिशाली लोगों द्वारा नहीं हो सकता। इस अर्थ में शक्तिशाली कि केवल संख्या द्वारा ही हम एक शक्तिशाली भारत के निर्माण की प्रक्रिया में सफल नहीं हो सकते। एक शक्तिशाली भारत और शक्तिशाली केन्द्र का निर्माण राज्यों को संतुष्ट करने के द्वारा ही किया जा सकता है। आज हम जहां पर हैं यही वह स्थिति है और मेरे विचार से यह एक आदर्श वाक्य है जिसे वर्षों पहले प्रतिपादित किया गया था। मुझे प्रसन्नता है कि मैं उस पार्टी से सम्बन्ध रखता हूं जो 1964 में बनी थी और केरल कांग्रेस पार्टी ने उस समय अपने आदर्श वाक्य को व्यक्त किया था। वह आदर्श वाक्य था कि यदि हम एक शक्तिशाली भारत का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें राज्यों को संतुष्ट करना होगा।

मेरे विचार से यह आज की आवश्यकता है। हमारे पास राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाली क्षेत्रीय पार्टियां है और राष्ट्रीय पार्टियां भी हैं। इन राष्ट्रीय पार्टियों को क्षेत्रीय पार्टियों के साथ मिलकर काम करना होगा और यही एकमात्र रास्ता है जिससे कि लोगों की आकांक्षाओं को पूरा किया जा सकें जिन्होंने एक वर्ष पूर्व हुए पिछले चुनावों में जनादेश दिया था। पिछले चुनाव का परिणाम यह था कि विभिन्न राजनीतिक पार्टियां साथ आयें, विभिन्न हित साथ आयें और उनको, जिन्होंने एक दूसरे के विरूद्ध चुनाव लड़ा था, यहां कुछ विशिष्ट और अत्यधिक महत्वपूर्ण उद्देश्यों, जिनकों कि उन्होंने सामने रखा, को पूरा करने के उद्देश्य से साथ आना होगा। मेरे विचार से यह आज की परिस्थितियों का नियम बनने जा रहा है और यह नियम भविष्य में भी भारत में रहेगा।

यह कोई नई बात नहीं है। इसे कई देशों में प्रयोग में लाया जा चुका है। हमारे पास आस्ट्रिया का उदाहरण है, हमारे पास जर्मनी का उदाहरण है, जहां चुनावों में पार्टियों ने एक दूसरे के विरूद्ध लड़ा था परन्तु उन्होंने घोषणा की कि चुनावों के पश्चात् एकजुट होंगें। हमारे पास बड़ी पार्टियों का उदाहरण है कि वे एकजुट होकर सरकार बनाई है। मेरे विचार से हमें एक शक्तिशाली और एक स्थायी सरकार को गठित करना होगा। हमनें पाया कि संयुक्त मोर्चे का प्रयोग, जिसका कि हम भी समर्थन कर रहे हैं, उचित परिणाम लाएगा और भारत को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाएगा।

[हिन्दी]

श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी (हैदराबाद) : चेयरमैन साहब, हुकूमत ने जो एतमाद की तहरीक पेश की है मैं उसकी पूरी-पूरी ताईद करता हूं और खुसूसन एक शरीफ नेक और बेदाग शख्सियत को जो वजीरे-आजम बनाया गया है उससे हमको बड़ी तवक्कात है और खुसूसन मुसलमानों को बड़ी तवक्कात हैं कि वह एक साफ जहन के आदमी हैं, उनके मसाइल को हल करेंगे। अभी मैं वेंकट स्वामी साहब की एक तकरीर सुन रहा था। वह मेरे अच्छे दोस्त हैं। मेरे ही शहर के रहने वाले हैं। मुझे एहसास हुआ कि 10 महीने के अंदर वह कितने बेजार आ गये हैं और 50 वर्ष से जो हमारा लहू बह रहा है, उसके लिए कुछ नहीं कहा। यही मुझे इख्तिलाफ कांग्रेस से है और यही मुझे कहना है कि 50 वर्ष से जो हमारे साथ नाइंसाफी हुई, उसके लिए आपने क्या किया और मैं गुजराल साहब से तवक्को करता हूं कि इंदिरा गांधी के जमाने में जो उर्दू के ताल्लुक से गुजराल कमेटी बनाई गई थी उसको बर्फदान में दाखिल कर दिया। उसको मंजरे-आम पर लाया जाए। उसके ऊपर अमल किया जाए और यह देखा जाए कि आज भी सैकड़ों, हजारों की तादाद में मुसलमान टाडा के अंदर फंसे हुए हैं और चार-चार बरस से वे कैद हैं, बेगुनाह हैं। उन पर अगर आपको मुकदमा चलाना है तो हम एक जम्हूरी मुल्क में रहते हैं। आप जम्हूरी अंदाज में मुराविजा क्वानीन के तहत आप उन पर मुकदमा चलाइये। यह नहीं हो सकता है कि आप इतने जमाने तक उनको कैद में रखें और उन पर मुकदमे चलते रहें। इसी तरीके से आपको यह देखना चाहिए कि आजादी के वक्त सरकारी मुलाजिमतों में मुसलमानों की तादाद 30 फीसदी थी लेकिन आज घटते हुए सिर्फ एक फीसदी हो गई। तो आखिर इसके वजूहात क्या हैं और उनके ताल्लुक से यह तास्सुब क्यों बरता जा रहा है। आज उनकी तालीमगाहों के लिए क्यों रूकावटें पैदा की जाती है। आज सुप्रीम कोर्ट में केस चल रहा है। 11 जजेज बनाये गये हैं और वहां आर्टीकल 31 ।ए के ताल्लुक से बहस हो रही है। लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आज भी वह मुकदमा पैंडिंग में पड़ गया है। कावेरी का मसला आ रहा है और यह देखा जा रहा है कि कई जजेज का वजीफा हो जायेगा उसके बाद शायद कुछ उस ताल्लुक से होगा। मैं यह कहूंगा कि पार्लियामेंट में आप रेजोल्यूशन लाइये और लाकर यह कहिए कि आर्टीकल 31। के अंदर मुसलमानों के लिए यहां की अक्लियतों के लिए क्या मौक्कफ हैं। उसकी वाजह तौर पर तारीफ होनी चाहिए। वरना अगर इस तरीके से कुछ नहीं होगा तो अब आप बताइये कि आखिर हम

[श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी]

लोग जाएं तो कहां जाएं। जब हम यहां फरियाद करते हैं तो हमारी फरियाद सुनने वाला यहां कोई नहीं है। हमारे साथ जो नाइंसाफियां होती हैं आखिर कब तक हम इन नाइंसाफियों को बर्दाश्त करते बैठे रहेंगे। अब बहुत हो चुका।

आपने उस समय एक स्टीयरिंग कमेटी बनाई थी। मैं पूछना चाहता हूं कि जब नेशनल फ्रंट ने हमारे वोटों के ऊपर जीत हासिल की, आप हमेशा हमें सैक्यूलरिज्म से डराकर, बी॰जे॰पी॰ से डराकर वोट लेते रहे लेकिन याद रखिए कि अब ऐसी चीज चलने वाली नहीं है। आपको हमारे तमाम हकीकी मसाइल पर गौर करना पड़ेगा, उन्हें हल करना पड़ेगा। आज हम जब भी कोई तालीमगाह कायम करते हैं तो आप कहते हो कि 50 फीसदी सीटें हमें दीजिए। हम आपको 75 फीसदी देने के लिए तैयार हैं लेकिन क्या आप सरकारी कालेजों में 25 फीसदी सीटें हमें देने के लिए तैयार हैं। मैं जानता हूं कि आप तैयार ही नहीं हो होंगे क्योंकि वहां दूसरी पौलिसी इख्तियार की जाती है। अगर हम अपने पैसे से, खून से कोई कालेज कायम करते हैं तो उसे भी आप हमसे छीन लेना चाहते हैं। आप बताइए कि आखिर यह कौन सी पौलिसी है और क्यों सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा लटक रहा है। इस ताल्लुक से आज कोई आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं है। हम एक-एक मिनिस्टर के पास जाकर अपने तालीमगाहों के लिए कहते हैं लेकिन हमें टाला जाता है। आप समझते हैं कि यह कोई सियासत है लेकिन यह सियासत नहीं है। उसका अंजाम सामने आने वाला है। ऐसी चीजें होने वाली नहीं है। मैं कहूंगा कि तनासुबे आबादी के लिहाज से आप हमारा हक दीजिए।

गुजराल साहब, आप अभी तशरीफ लाए हैं। मैंने इससे पहले कहा था कि इंदिरा गांधी के जमाने में जो गुजराल कमेटी बनाई गई थी, उसकी सिफारिशात को आप इम्पलीमेंट कीजिए, मंजरे-आम पर लाइए और उन पर अमल करने की ऐहकामात जारी कीजिए। आज माइनौरिटी कमीशन बना है लेकिन उसका हमें कोई फायदा नहीं। आपने 500 करोड़ रुपए देने का वायदा किया लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ। मुझे ऐसा मालूम होता है कि वायदे किए चले जाओ और करो कुछ भी नहीं – ऐसी पौलिसी आपने बना ली है। हमारी हालत क्या बन गई है। हम चाहते हैं कि हमारे ताल्लुक से आप एक वाजह पौलिसी बनाइए। आपकी स्टीयरिंग कमेटी में आज एक भी मुसलमान नहीं है। आप बताइए कि जब कांग्रेस और युनाइटिड फ्रंट के लिए एक कमेटी बनाई जा सकती है तो हमारे लिए क्यों नहीं...*(व्यवधान)* फारूख अब्दुल्ला अगर हैं तो कश्मीर की तरफ से हैं, आप ऐसी बातें करके क्यों हमारा दिल बहलाना चाहते हो, टी॰वी॰ पर तमाम मुसलमान देख रहे हैं। इस तरह के जवाब से उनके दिल पर क्या असर पड़ेगा। मैं चाहता हूं कि उर्दू के ताल्लुक से आप कुछ कीजिए। अपनी कमेटी के अंदर आपने सिर्फ एक मसला लाया – बाबरी मस्जिद के ताल्लुक से लेकिन वह भी लेलोनिहार के अंदर खत्म हो गया। आप हमें बताइए कि किस तरीके की पौलिसी नरसिंह राव जी की थी जिससे वहां मस्जिद तो ढहाई गई, मंदिर भी बना दिया गया। आप वहां दोबारा क्यों नहीं मस्जिद तामीर कराते और यह कहते कि जो फैसला होगा उसे कबूल किया जाएगा। लेकिन आपका जहन साफ नहीं था, इसलिए इन लोगों ने ऐसा किया।

मैं चाहूंगा कि हमारे लिए आप वाजह और साफ पौलिसी का ऐलान कीजिए और बताइए कि क्या करना चाहते हैं वर्ना अगर आप कुछ नहीं करेंगे, सिर्फ मीठी-मीठी बातें करना चाहते हैं, फिर यह समझ लीजिए कि हम आपका ज्यादा देर तक साथ नहीं देंगे-यह आप यकीन जान लीजिए कि अब हम धोखे में आने वाले नहीं है। अल्लामा इकबाल ने एक बार कहा था—

जिस खेत से इंसां को मुयस्सर न हो रोटी,
उस खेत के हर गोश-ए-गन्दुम को मिटा दो।

यही चीज़ आपके सामने आएगी। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

श्री शिब्बू सोरेन (दुमका) : सभापति जी, आज सदन में विश्वास-मत पर चर्चा हो रही है और इस चर्चा के दौरान बहुत सी बातें कही गई। देश को चलाने के लिए जो संयुक्त मोर्चा बना है, मैं कहना चाहता हूं कि समय-समय पर बहुत सी बातों पर हम यहां चर्चा करते हैं, मैं यहां छोटे राज्यों के सवाल को उठाना चाहता हूं। जब भी छोटे राज्यों का सवाल सामने आता है, यहां उठता है तो सभी राष्ट्रीय दलों के सदस्य बोलते हैं कि छोटे राज्यों के सिद्धांत को मान्यता मिलनी चाहिए, उनकी समस्याओं पर विचार होना चाहिए।

सभापति महोदय, ऐसा तो नहीं हुआ। अभी तक तो किसी ने छोटे राज्यों की बात नहीं कही। उनसे समर्थन लेकर अपनी सरकार बनाने, चलाने या अपनी कुर्सी को बचाने की ही बात अभी तक हुई है। छोटे राज्यों के मसले के बारे में सारे हाउस को पता है कि हम लोगों को झारखंड औटोनौमस कॉसिल पिछली सरकार ने दी थी। उन्हीं की सरकार पहले भी थी, उन्हीं की सरकार अब भी है और जनता दल की ही संयुक्त सरकार बिहार में है, लेकिन बिहार के मुख्य मंत्री ने, झारखंड औटोनौमस कॉसिल को कोई अधिकार नहीं दिए और एक भी पैसा आज तक नहीं दिया।

सभापति महोदय, हम लोग आदिवासी हैं, दलित हैं, हरिजन हैं, पिछड़े लोग हैं और ऐसे लोगों के लिए भारत सरकार और भारत के बाहर से भी वर्ल्ड बैंक से भी पैसा लेकर पिछड़ों को, दलितों को ऊपर उठाने की बात कही जाती है, लेकिन इनका विकास नहीं होता। बंदरबांट कर के खा जाते हैं। उन समितियों का हम जनप्रतिनिधियों को मैंबर तक नहीं बनाया गया है। वर्ल्ड बैंक से जो पैसा हमारे क्षेत्र के विकास या पठार के विकास के लिए जाता है और जिन समितियों में इस बारे में निर्णय लिया जाता है, उनमें हमें नहीं रखा जाता है। हमने तो कहा है कि जो भी जनप्रतिनिधि एम॰एल॰ए॰ या एम॰पी॰ है, उसे उसका सदस्य बनाओ। चाहे फिर वह बी॰जे॰पी॰ का हो या किसी और पार्टी का हो, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। इससे हम लोगों को बहुत तकलीफ है।

सभापति महोदय, आज पूरे बिहार में क्या हो रहा है। जो आज वहां हो रहा है, वह तकलीफ तो आपको मालूम है। मैं यहां पर सिर्फ आदिवासियों की तरफ से ही कहना चाहूंगा। आदिवासियों की समस्याओं का हल, आपने पिछली सरकार में किया। उस समय दंगे

हुए, खेतों में आग लगा दी, लोग अपने घर छोड़कर भाग गए और दूसरी जगहों पर विस्थापित गए। आज भी वे मारे-मारे फिर रहे हैं। उनको आसाम सरकार भी खाना और कपड़ा मुहैया नहीं करवा रही है। झारखंड इलाके के साथ क्या व्यवहार हो रहा है, वह तो सारे देश को मालूम ही है। किसी प्रकार के सुख और आराम की बात तो हम लोग सोच भी नहीं सकते हैं। आदिवासियों को खाना और कपड़ा तक उपलब्ध नहीं हो रहा है। यह पूरे देश के आदिवासियों, हरिजनों, पिछड़े वर्गों, दलितों की समस्या है। हम लोगों के कष्ट कब दूर होंगे और हम लोग कब शांति से रह पाएंगे, यह कोई निश्चित नहीं है। यहां पर बातें तो बहुत अच्छी-अच्छी हो रही हैं। ये लोग क्या कहते हैं और करते हैं, यह सबको मालूम है। जनता कहती है कि आज सरकार बनाओ और कल सरकार गिराओ, बस इनके पास यही काम है। अपनी कुर्सी को बचाने का ही कार्यक्रम चल रहा है। अब यह कुर्सी रहेगी और सरकार बनेगी और चलती भी रहेगी, यह तो किसी के वश की बात नहीं है। यह तो संविधान की बात है। यह संविधान का मामला है। लेकिन जो जैन्यूडन बात है, जो उचित सवाल है, उसको देखना पड़ेगा, उस पर ध्यान देना पड़ेगा।

सभापति महोदय, अभी पिछली सरकार के माननीय प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा जी ने उत्तराखंड की घोषणा की, लेकिन आज उत्तराखंड का कहीं अतापता नहीं है। उसकी कोई आवाज नहीं उठा रहा है। उसको बनाने की आज कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ रही है। क्यों पहले इन बातों को कह दिया जाता है और फिर क्यों बाद में इन चीजों को इगनोर किया जाता है? हम लोग गरीब आदमी हैं। हम लोग कोई बिजनैस करने के लिए झारखंड की बात नहीं कर रहे हैं। अभी यहां माननीय चन्द्रशेखर जी भी बैठे हैं। ये भी प्रधान मंत्री बने थे। इन्होंने भी कहा था कि सबसे पहले अधिकार ले लो। हमने कहा ठीक है, सर, हमें अधिकार ही दिलाइए, लेकिन वह बात नहीं हुई। बात टलती गई और अब आदिवासियों, अल्पसंख्यकों और दलितों की बात की जाती है, लेकिन उनके कल्याण के लिए कुछ नहीं किया जाता है। उनके ऊपर चारों तरफ से अत्याचार ही अत्याचार किए जाते हैं। कहीं पर कोई कायदा कानून नहीं है। उनके लिए कोई भी कायदे-कानून की बात नहीं कर रहा है। सब जगह बदले की भावना से कार्रवाई हो रही है। जब हमारे मन में विश्वास नहीं होगा, हमारे मन में शांति नहीं होगी, तो हमारा विकास और उन्नति कैसे होगी। किसी को हमारी बातों पर विश्वास नहीं होगा, तो कैसे काम चलेगा। आज आपकी बातों से और कामों से सारा देश दुखी है। आखिर हम यहां क्या कहना चाहते हैं और क्या करना चाहते हैं, इस बात को सारा देश देख रहा है।

सभापति महोदय, हम लोग सरकार में नहीं जाना चाहते हैं। हमें कोई उम्मीद भी नहीं है कि हमें सरकार में शामिल किया जाएगा, लेकिन जो सच्चाई है, उसको तो सुना जाए और माना जाए। मैं 1980 से सांसद हूं। हम लोगों को बोलने का मौका भी कम मिलता है। यदि हम लोग 5 मिनट बोलेंगे तो दूसरे लोग 50 मिनट बोलेंगे, लेकिन हम उसमें भी संतोष कर लेते हैं। मैं धर्मनिरपेक्षता का पक्षधर हूं और आज से नहीं शुरू से रहा हूं। ये लोग जो बी॰जे॰पी॰ वाले संस्कृति का नाम लेकर उसे बचाने के नाम पर संस्कृति को नष्ट करने में लगे हुए हैं। हमारे झारखंड को जंगलखंड बोल दिया।...*(व्यवधान)* उत्तराखंड को बोल दिया।...*(व्यवधान)* यह नाम बदलते हैं। हमारी संस्कृति का नाम नहीं बदलना चाहिए। अगर हमारे पिता का नाम बदल जायेगा तो हमको जमीन हाथ नहीं लग सकती। इसलिए झारखंड का जो नाम है वह झारखंड ऑटोनोमस कौंसिल रहे। प्रधानमंत्री जी बहुत अनुभवी है। हम आशा करते हैं कि वह हमारी बातों पर जल्द से जल्द विचार करेंगे। हमें जनता के बीच में जाकर इन कार्यक्रमों को लाना होगा, योजनाओं को लागू करना पड़ेगा। क्या मतलब है? हमारे बिहार में राज कैसा चल रहा है? वहां कुछ नहीं चल रहा है। मैं सच बोलता हूं और अगर सच के खिलाफ बोलूं...

सभापति महोदय : आपका समय खत्म हो गया है।

श्री शिबु सोरेन (दुमका) : मैं ज्यादा बोलने के लिए खड़ा नहीं हुआ हूं। मैं इतनी ही बात कह रहा हूं कि यह अलग राज्यों का सवाल क्यों उठ रहा है? हमने एक रैली को संगठित करने के लिए अपने जिले से 800 आदमी भेजे थे। वह रैली बाद में कैंसिल कर दी गयी क्योंकि उस समय देश में सरकार नहीं थी लेकिन वहां फिर भी लोग आ गये। यह अलग राज्य का मसला बहुत कठिन है। आखिर यह बात क्यों उठी है? तेलेंगाना में अलग राज्य के नाम पर 10 एम॰पी॰ बने थे परन्तु वह फिर कांग्रेस में मिल गये तो अलग राज्य खत्म हो गया। इसलिए 12 राज्यों के लोगों को मिलाकर हम देश में जुटाव कर कर रहे हैं। यह जो सत्ता चलाने वाले हैं उनके बारे में कुछ न कहा जाये। वह क्या कर रहे हैं? हर स्टेट में यह सवाल क्यों उठा है? इतना ही कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हम यहां पर देश के बारहवें प्रधान मंत्री श्री आई॰के॰ गुजराल में अपने विश्वास को प्रकट करने के लिए एकत्रित हुए हैं। आज लगभग आठ घण्टे की चर्चा हो चुकी है। यह बहुत ही उदात्त वाद-विवाद था। मेरे विचार से सभी ने सोचा होगा कि श्री गुजराल, जो कि प्रधान मंत्री के रूप में उपस्थित हैं, को हम सभी के द्वारा पर्याप्त समर्थन दिया जाना चाहिए जिससे कि वे सरकार को चला सकें।

अपराह्न 7.43 बजे

(*अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए*)

इस सभा में कुल 542 में से 292 सदस्य ऐसे सदस्य हैं जो नए हैं। ये 292 सदस्य आज प्रसन्न हैं सभी पार्टियों के कई नेताओं की गैर जिम्मेदाराना गतिविधियों के बावजूद भी। हम यह जानते हैं क्योंकि हम एक-दूसरे से मिलते हैं। हम इस पक्ष के पीछे बैठने वालों और उस पक्ष के पीछे बैठने वालों और साथ ही सामने बैठने वालों सब के विचारों को जानते हैं।

सबसे पहले मैं इस सभा की ओर से भारत के राष्ट्रपति के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता को संप्रेषित करना चाहता हूं जिन्होंने हमें कुछ और समय, कितने दिन के लिए मैं नहीं जानता, के लिए जीवनदान दिया।

[श्री संतोष मोहन देव]

अध्यक्ष महोदय, आप उत्तर-पूर्व से सम्बन्ध रखते हैं। मैं बहुत अच्छी तरह से कई तरह से निभाई गई आपकी भूमिका को जानता हूं...*(व्यवधान)* मैं जानता हूं इस सज्जन ने क्या किया। मैं इसे बांटना नहीं चाहता। मैं इसे बांट नहीं सकता। परन्तु इसके साथ ही साथ मुझे गर्व होता है कि आप पूर्वोत्तर के है आपने देखा होगा कि हम कम से कम इस महीने के वेतन को उठा सकते हैं।

संवैधानिक प्रमुख के रूप में आपको बधाई देने के बाद मैं श्री गुजराल की प्रशंसा नहीं करूंगा। क्योंकि उनकी प्रशंसा सभी ने की है। उन्होंने कहा, 'कल मैं अकेला शपथ लूंगा।' उनके विरूद्ध मध्यरात्रि में विद्रोह हुआ। सभी मंत्री आए और सब ने शपथ ली। वह अपना वचन नहीं निभा सकें।

यह खराब प्रशासक का संदेश है। कम से कम इन्हें अपने वचनों का आदर करना चाहिए था। फिर क्या हुआ? हम अखबारों में पढ़ चुके हैं कि हमारे अच्छे मित्रों श्री राम विलास पासवान और श्री श्रीकांत जेना को निकालने के प्रयास किए जा रहे हैं, हम नहीं जानते कि क्या यह बात सही है या नहीं। यहां पर श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव नहीं है। श्री नीतीश कुमार उनकी पार्टी में शामिल होने के लिए उनके पीछे हैं। उन्हें मत शामिल कीजिए। वे शायद ही शामिल हो या न हो। यह एक अच्छा संकेत नहीं है। आपको कांग्रेस के अलावा जिसके 140 सदस्य है 13 पार्टियों को संचालित करना है...*(व्यवधान)* हमेशा श्री सीताराम केसरी का नाम मत लेते रहिए। श्री केसरी ने कांग्रेस में प्राण फूंके। देश की जनता जानती है कि कांग्रेस जीवित है मरी नहीं है। आप शायद प्राविधि को पसंद नहीं कर सकते हैं।

श्री प्रमोद महाजन (मुम्बई-उत्तरपूर्व) : यह अच्छी प्रशंसा है।

श्री संतोष मोहन देव : श्री प्रमोद महाजन आप शायद इसे पसंद नहीं करेंगे। प्रमोद का अर्थ होता है प्रसन्नता और महाजन का अर्थ होता है व्यापारी। व्यापारी महोदय शायद आप इसे नहीं जानते हैं। परन्तु कांग्रेस को इस प्रक्रिया की बहुत आवश्यकता होगी। उस प्रक्रिया में एक व्यक्ति को नुकसान हुआ है और वह है श्री देवेगौड़ा। मेरी उनसे अच्छी मित्रता है।...*(व्यवधान)* हां उन्होंने मुझे कई चीजें दी है। परन्तु उन्होंने अपना अन्तिम वादा नहीं निभाया। मैं इस सभा में कुछ भी नहीं कहूंगा। मेरी उनसे फोन पर हुई पिछली वार्त्ता में मैंने उनसे अनुरोध किया, 'महोदय, उदार बनिए और सभा में व्यक्तिगत बातें मत ले आइए।' उन्होंने मुझसे कहा था कि उन्होंने 62 पृष्ठ का भाषण तैयार किया है। परन्तु उसमें किसी भी नाम का उल्लेख नहीं है। वे इतना अधिक क्यों बोले? ऐसा हमारे कारण नहीं हुआ परन्तु दस मुख्य मंत्रियों के कारण जो उनसे मिलने गए जब वे अपने निवास से आ रहे थे और कहा, 'आपको त्यागपत्र देना होगा।' एक घायल सिपाही यहां पर आया था। उन्होंने कहा, 'मैं त्यागपत्र नहीं दूंगा। जब मैं त्यागपत्र देना चाह रहा था आपने कहा कि आपको त्यागपत्र देने की आवश्यकता नहीं है। जब मैंने कहा मुझे जाने दो तो आप सबनें कहा था कि आप मेरे साथ एक चट्टान की भांति खड़े रहिए।' अन्ततः क्या हुआ था? वे लोग कह रहे थे कि हमने श्री पी॰वी॰ नरसिम्हा राव के पीठ में छुरा घोंपा। परन्तु इन सब लोगों द्वारा श्री देवेगौड़ा की पीठ पर वार किया गया।

श्री चंद्रशेखर ने कांग्रेस के प्रति काफी कठोर शब्दों का प्रयोग किया। मैं उनको दोष नहीं देता। वे मुझसे अपने बेटे के समान व्यवहार करते हैं। कभी-कभी अपने भाई के समान मुझसे व्यवहार करते हैं। जब बेटा घर से बाहर जाता है तो वह कोशिश करता है कि वह पिता के प्रति अलोचन-दृष्टि रखे। श्री चन्द्रशेखर कांग्रेस में पैदा हुए और बड़े हुए उन्होंने इन्दिराजी से लड़ाई लड़ी थी। इसमें कोई गलत बात नहीं थी। परन्तु उन्हें इतने ज्यादा दुर्विनीत होने का प्रयास नहीं करना चाहिए था। हम उतने शक्तिशाली नहीं है कि उनका सामना कर सकें। मैं आपसे अत्यधिक न्यायसंगत होने का अनुरोध करता हूं।

प्रधान मंत्री महोदय, आपको सभी 15 पार्टियों के साथ बहुत अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना है। आज एक मूलभूत परिवर्तन हो गया है। श्री सोमनाथ चटर्जी नें मेरे सभी प्रयासों पर पानी फेर दिया है। मैं उनकी पार्टी और उनके सहयोगी दलों को आड़े हाथों लेने की तैयारी करके आया था। परन्तु उन्होंने हमारी पार्टी के विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा। मैं नहीं जानता उन्हें क्या हुआ।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं चाहता था कि आप में कुछ समझ होनी चाहिए।

श्री संतोष मोहन देव : जब कांग्रेस 140 सदस्यों के साथ 188 सदस्यों वाले इस मोर्चे का समर्थन करती है तो आप धर्मनिरपेक्ष है। परन्तु जब निर्णय लेने के लिए हिस्सेदारी का प्रश्न होता है तो आप धर्मनिरपेक्ष नहीं है। यदि कांग्रेस का इसमें स्वागत होता है तो मैं संयुक्त मोर्चे में नहीं रहूंगा। हम सत्ता के लिए लालायित नहीं हो रहे हैं।

पूर्व वित्त मंत्री को क्या हुआ? उन्हें इस सभा को स्पष्टीकरण देना होगा कि उन्होंने मंत्रि-मण्डल में स्थान क्यों नहीं ग्रहण किया और यह भी कि वे कब शामिल होंगे।

हमारे आपके साथ कई मतभेद हैं। परन्तु 188 के इस समूह में केवल कुछ ही समर्थ मंत्री है और आप उनमें से एक हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि आप कांग्रेस पार्टी से गए हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : वह कांग्रेस पार्टी को छोड़ने के बाद समर्थ बने हैं।

श्री संतोष मोहन देव : श्रीमती सुषमा स्वराज ने श्री चिदम्बरम से शिशु की देखभाल करने के लिए कहा है। आप एक अच्छी आया हैं। उत्तर प्रदेश में हमारा शिशु आपके पास है। हमने इसे उपहार में आपको दिया है। श्री वाजपेयी वहां गये थे; श्री आडवाणी और दूसरों की मदद किए जाने पर उन्होंने श्री कल्याण सिंह को नर्स के रूप में नियुक्त किया। परन्तु उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया। इसी कारण आप श्री चिदम्बरम के बजट की आया क्यों नहीं बन जाती हैं? कृपया ऐसा बनने की कोशिश कीजिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं क्यों बनूं?

श्री संतोष मोहन देव : अध्यक्ष महोदय, आज सभा में राहत की अनुभूति होती है। परन्तु जब तक कि 15 पार्टियों का यह समूह अपनी

गलतियों से नहीं सीखता तब तक यह बहुत कठिन होगा। अब हम समर्थन देंगे; परन्तु कार्यक्रमों को क्रियान्वित करना अत्यधिक कठिन होगा। ऐसा न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम है : हम इसका समर्थन करते हैं। हमारे नेता ने इस सभा में स्वयं कहा है कि साझा न्यूनतम कार्यक्रम हमें स्वीकार्य है परन्तु मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी हमें स्वीकार्य नहीं है। परन्तु मुझे यह सारी बातें समाचार पत्र से क्यों पता लगनी चाहिए।

आपने इस पर सोमनाथ बाबू के साथ चर्चा की, आपने इस पर श्री चित्त बसु से चर्चा की; आपने इस पर चर्चा उन लोगों से भी की जो अपनी पार्टियों के एक मात्र सदस्य हैं। परन्तु 141 सदस्यों वाली यह पार्टी इसके बारे में नहीं जानती है; और हमें इसके बारे में समाचार पत्रों के माध्यम से जानकारी मिलती है।

श्री गुजराल, आपको भी याद होगा कि जब मेरी पार्टी के दो अत्यधिक प्रभावी सदस्यों—श्री पी॰आर॰ दासमुंशी और कुमारी ममता बनर्जी—ने खड़े होकर कहा कि वे इससे सहमत हैं। परन्तु इस सभा में आने से पहले मैंने अपने नेता से पूछा कि क्या इस पर आपके साथ चर्चा की गई है। उन्होंने कहा, "नहीं"। वे हमारी सहायता लेना चाह रहे थे; और इसका सारा श्रेय स्वयं लेना चाहते थे। ऐसा संयुक्त मोर्चा कर रहा है। उन्होंने जो भी उपलब्धियां हासिल की हैं उसका आनुपातिक श्रेय हमें भी मिलना चाहिए। जो भी उनकी गलती है उसके लिए वे उत्तरदायी हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : एक बहुत ही अच्छे कांग्रेसी हैं आप।

श्री संतोष मोहन देव : मैं उस सज्जन के बारे में कुछ भी कहना नहीं चाहूंगा जो इस सभा में उपस्थित नहीं है। ऐसा करना कांग्रेस की संस्कृति नहीं है। परन्तु केवल एक बात, जिसकी अनुमति मैं श्री चन्द्र शेखर से ले चुका हूं, कहना चाहूंगा। उन्होंने किसी बात का उल्लेख किया था।

यह वह स्थान है जहां पर पण्डित जवाहर लाल नहेरू, श्री मोरार जी देसाई, श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री चरण सिंह, श्री चन्द्रशेखर और श्री पी॰वी॰ नरसिम्हा राव बैठा करते थे। इन व्यक्तियों द्वारा ग्रहण किये गए पद की परम्पराओं को भूलते हुए क्या उनका यह कहना 'एक व्यक्ति आने की जल्दी में है" उचित था। वे सभा में अनुपस्थित लोगों के नामों को उल्लेख नहीं करने की परम्परा रखते थे। अनुपस्थित व्यक्तियों के नामों का उल्लेख करना उचित नहीं है। मेरे पास श्री देवेगौड़ा के विरोध में कहने के लिए कुछ भी नहीं है। वह एक घायल सिपाही हैं। उन्होंने श्री पी॰वी॰ नरसिम्हा राव से लाभ उठाया। यह एक अच्छी बात है। परन्तु उन्होंने भी दोषी ठहराने का प्रयास किया। ऐसा मैं नहीं कह रहा हूं। उन सभी मामलों के बारे में, जो वहां पर थे, लाभान्वित व्यक्ति कह रहा था। तो वह उनको सही क्यों नहीं किया था। यदि आप श्री पी॰वी॰ नरसिम्हा राव के इतने अच्छे पसंदीदा व्यक्ति थे तो फिर उन्होंने कार्यों को ठीक क्यों नहीं किया। आपकी क्या गलती है? उस दिन वहां पर झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का मामला था, हम वहां गए थे और विरोध करते हुए कहा था कि संसदीय कार्य संबंधी मामले न्यायालय की विषयवस्तु नहीं हो सकते।

सोमनाथ दा एक दिन आप उपस्थित थे जब हमने इस पर अध्यक्ष के प्रकोष्ठ में चर्चा की थी। क्या हुआ? दूसरे दिन जब सरकार के गिरने का खतरा था तो आपके प्रवक्ता ने हमारे भूतपूर्व संसद सदस्य श्रीमती कृष्णा साही से क्या कहा था? यह कहा गया था कि दो बजे तक 80 सदस्य उनकी पार्टी को छोड़ रहे हैं। जिसके कारण मुझे व्हिप तुरन्त जारी करना पड़ा। क्या आपको यहां से कोई सदस्य मिले? कांग्रेस जानती है कि उन्हें कैसे संगठित रखना है। जब भी भिन्नता होती है हम सदैव संगठित हो जाते हैं। आप हमें तोड़ नहीं सकते। कई लोग प्रयास कर चुके। परन्तु आजकल भाजपा के हमारे मित्र हमें उपदेश दे रहे हैं कि हम तोड़ने के प्रयास में यहां वहां जा रहे हैं। आपने ऐसा क्यों किया? आपके पास कोई विकल्प नहीं था। हैदराबाद में श्रीमती लक्ष्मी पार्वती थी। हरियाणा में आपने बन्सीलाल को चुना। पंजाब में आपने अकाली दल को चुना और असम में आपने ए॰जी॰पी॰ को मिलाने का प्रयास किया। "आइए और राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक मोर्चे में शामिल होइए" के जैसा अन्तिम प्रयास किया था। लखनऊ में इसकी घोषणा श्री वाजपेयी द्वारा की गई थी। उत्तर प्रदेश में फिर से आपने कुमारी मायावती से सांठ-गांठ की। यह अच्छी बात है।

[हिन्दी]

प्रो॰ रासा सिंह रावत : आपकी क्या हालत है?

श्री संतोष मोहन देव : हमारी हालत बहुत बुरी है। कांग्रेस 1977 में चली गई, फिर वापस आई। देश की जनता जानती है कि कोई पार्टी अगर इस देश में रूल कर सकती है तो वह सिर्फ कांग्रेस ही है। वक्त-वक्त पर उसको पनिशमेंट देती है, फिर लौटा लाती है। देखेंगे जब चुनाव आयेगा तो कितने आदमी, कितने वोट मिलेंगे। अभी तो 10 प्रतिशत, 18 प्रतिशत वोट लेने वाली पार्टियां रूल कर रही हैं और कांग्रेस 28 प्रतिशत लेकर उनको कह रही है कि चलाओ। वक्त-वक्त पर हम लोग भी इनको पनिशमेंट देते हैं, लेकिन आपकी तरह हम लोग नहीं जाएंगे।

[अनुवाद]

उस दिन मेरे अच्छे मित्र श्री प्रमोद महाजन ने बहुत ही अच्छा भाषण दिया। वह एक चुनावी भाषण था। यहां तक कि मेरी पत्नी ने भी कहा कि वे एक अच्छे वक्ता थे। वे हंसते रहते हैं। प्रमोदजी, 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के जलगांव संस्करण में एक समाचार शीर्षक छपा है। आपने उस दिन मुझसे या मेरी पार्टी से पूछा और इस बात की ओर इंगित किया कि हमें हिसाब-किताब रखने की जानकारी नहीं है। यह समाचार शीर्षक 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के जलगांव प्रकाशन के दिनांक 18.9.95 का है। श्री अमिताभ मित्रा ने इसे लिखा है। जलगांव की जनसंख्या कितनी है? इसकी जनसंख्या एक लाख है। श्री वाजपेयी जी वहां गए थे। उन्होंने आपने चुनाव कोष के लिए 51 लाख रुपए का दान किया। मैं वह कला जानना चाहता हूं जिससे आप ने यह कार्य किया था। आपने राम बाबू या श्याम बाबू के नाम में भी लिया था। मैं जानता हूं कि बड़े आकार का ब्रीफकेस आपको पहुंच रहा है और छोटा ब्रीफकेस मुझे मिल रहा है। आप उस धन का

[श्री संतोष मोहन देव]

विनियमन किस प्रकार करेंगे? आप इंस्पेक्टरों के बारे में कहते हैं। हम आयकर का प्रबन्ध नहीं कर सकते हैं। हम प्रबन्ध करना भी नहीं चाहते। क्या हुआ? कुमारी उमा भारती अनुपस्थित हैं। वह कुछ कह रही थी। जब आपने गांव-गांव से धन लिया था, मैंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में देखा, प्रत्येक ग्रामवासी अपने सिर पर ईंट को लेकर हाय राम, हाय राम...कहते हुए जा रहा था...*(व्यवधान)* भाजपा मुख्यालय के कार्यालय में आइए। श्री चिदम्बरम, मुझे आशा है कि आप शीघ्र ही वित्त मंत्री का कार्यभार सम्भालेंगे। मैं चाहता हूं आप इस संबंध में जांच करें। एक श्री गुप्त ने 420 करोड़ रुपया जमा किए जाने के संबंध में सूचना दी थी। श्री वाजपेयी और अन्य श्री वी॰पी॰ सिंह के पास गए थे और कहा कि यदि वे उनका समर्थन चाहते हैं तो उन्हें उस आयकर अधिकारी का तबादला करना होगा और उस रिपोर्ट को वापस लेना होगा। तब श्री वी॰पी॰ सिंह ने पूछा था, "यदि धन भगवान के नाम पर आया तो आपने क्या किया है?" उन्होंने कहा था, हमने सारा धन अपने हाथों में लिया, हमने उसे ऊपर उछाला भगवान से कहा कि उन्हें जितने की आवश्यकता हो उतना वो ले लें और बाकी बचा धन हम हमारे चुनाव कोष के रूप में ले लेंगे।"...*(व्यवधान)* यदि आपने किया है...*(व्यवधान)*

अपराह्न 8.00 बजे

श्री चिदम्बरम, जब आप सूचना के संबंध में बोल रहे थे, आपने कहा, "श्री संतोष मोहन देव, मैं 31 मार्च के पहले कुछ भी नहीं कर सकता हूं।" मैं इस बात की प्रशंसा करता हूं। मैं आपसे नाराज नहीं हूं। ऐसा भी एक वित्त मंत्री है जो चट्टान की तरह अड़ा रहा। आप मुझसे कहिए, "यह करें और वह करें।" मैं आपकी सहायता करूंगा। मैं नहीं जानता कि क्या आप वापस आएंगे और मेरी सहायता करेंगे। यही जनादेश है। मैं चाहता हूं कि आप वापस आएं...*(व्यवधान)*। यही सब बातें हैं जो घट रही हैं। अध्यक्ष महोदय मैं एक लम्बा भाषण नहीं देना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : आप दे सकते हैं।

श्री संतोष मोहन देव : उस दिन किसी ने कहा, "हमने देश पर 10 महीने शासन किया जो कि 45 वर्षों के कांग्रेस के शासन से बेहतर है।" देश में वह "शासन" कैसा था? यदि आप बिहार के किसी अस्पताल में जाते हैं तो आपको दवाई लिखवाने के लिए कागज और पेन्सिल ले जाना होगा। वहां कुछ भी उपलब्ध नहीं है। वहां पर कौन सी सरकार शासन चला रही है? क्या वह जनता दल की सरकार है। यदि आप आन्ध्र प्रदेश को जाते हैं, वहां आप पाएंगे कि जब एक पुलिस का वाहन पेट्रोल को जाता है तो उधर पर्ची मान्य नहीं है। पेट्रोल पम्प का मालिक कहेगा, "पैसे दीजिए और ईंधन लीजिए।" उस राज्य के मुख्य मंत्री संयुक्त मोर्चा के नेता हैं। यदि आप असम जाते हैं वहां पर पिछले एक या दो वर्षों से शिक्षकों को वेतन नहीं मिल रहा है। धन को विकास निधि में लगाया जा रहा है। ऐसी स्थिति किसने पैदा की है। इस पार्टी के बेहतरीन 10 महीनों के शासन ने। यदि इस बात के लिए हम उन्हें दोषी ठहराते हैं तो वह कहते हैं कि ऐसी स्थिति कांग्रेस ने पैदा की है।

मैं आशा करता हूं श्री गुजराल पांच वर्षों के लिए प्रधान मंत्री के रूप में कार्य करेंगे। वह एक राजनयिक भी थे। उन्होंने प्रभावी ढंग से इस देश को चलाया था। मैं आशा करता हूं कि वे इसे भी प्रभावी ढंग से चलाएंगे। कल उन्होंने भारतीय उद्योग परिसंघ के सदस्यों को सम्बोधित किया। रात के समय एक उद्योगपति मेरे पास आए थे। मैंने उनसे पूछा था, "बैठक कैसी रही?" उन्होंने जानना चाहा, "क्या कोई आस-पास तो नहीं है?" मैंने कहा, "नहीं, आप मुझे कह सकते हैं।" उन्होंने मुझसे कहा कि वह प्रधानमंत्री के भाषण को दस महीनों बाद समझ पाए। ऐसा क्यों हुआ? कलकत्ता के एक समाचारपत्र में एक सोते हुए राजनेता का कार्टून छपा है। उसकी पत्नी आयी और पूछा, "आप यहां क्या कर रहे हैं? आप जल्दी जाइए। आप प्रधान मंत्री बन सकते हैं।"

हम पर हुक्म मत चलाइए। पिछले 10 दिनों से कांग्रेस को आलोचना का लक्ष्य बनाया जा रहा था। उस दिन जब हम कुछ भी नहीं बोले तो वह हमारी उदारता थी और हमारी कमजोरी नहीं थी। हम एक ऐसे घायल व्यक्ति, जो कि इस सभा से बाहर जा रहा था, को और ज्यादा चोट नहीं पहुंचाना चाहते थे। ऐसा करना कांग्रेस की संस्कृति नहीं है। मैं उस दिन बहुत अच्छा नहीं बोल पाया था। मैं उस दिन हुई बहुत सी वार्ताओं में भाग ले सकता था। एक या दो मेरे सुझाव थे। मैं श्री एच॰डी॰ देवेगौड़ा को दोषी भी नहीं ठहराना चाह रहा था...*(व्यवधान)* सभा से बाहर जाते समय उन्होंने अच्छा व्यवहार नहीं किया था। इसलिए उन्होंने कुछ कहा था। मुझे आशा है वे वापस आना चाहते हैं।

मैं कई चीजों के बारे में बात कर सकता हूं। मैं श्री गुजराल से यह कहना चाहूंगा, "जब हम एक दूसरे से मिलें तो आप अपनी उंगली का प्रयोग न करें। ऐसा न करें। ऐसा करें। मैं आपको देख लूंगा। मैं ऐसा कभी भी नहीं करूंगा। मैं जा रहा हूं।" हम इकट्ठा रहना चाहते हैं। हमारे पास एक सुन्दर मंत्री, श्री राम विलास पासवान है। कभी-कभी वे कुछ भी नही करते हैं फिर भी हम सभी को संतुष्ट कर देते हैं...*(व्यवधान)* आपके पास एक अन्य मंत्री, श्री श्रीकान्त जेना है जो कि अत्यधिक सौम्य है। आप भी अत्यधिक सोम्य व्यक्ति हैं। मैं आपको 1980 से जानता हूं। आपको शायद याद होगा कि 1980 में मैं जब श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा भेजा जा रहा था। आप यू॰एस॰एस॰ आर॰ में राजदूत थे। आप एक अच्छे मेजबान हैं। मैं कैसे और क्यों इसे नहीं स्पष्ट करूंगा।

परन्तु अब आप 140 सदस्यों के मेजबान हैं। जब वे आप से मिलने आएं तो कृपया उनसे मिलिए। कृपया अपने मंत्रियों से कहिए कि वे आपके बंधक नहीं हैं। आप उनका तुच्छ उपयोग मत कीजिए परन्तु उन्हें अपना मित्र मानिए और उनके निर्वाचन क्षेत्रों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास कीजिए। सोमनाथ जी यहां पर उपस्थित हैं। जब सोमनाथ जी और ममता जी दमदम विमानपत्तन पर पहुंचते हैं तो वे एक दूसरे से बात नहीं करते हैं।

श्री सोमनाथ एक ओर से चलते हैं तो कुमारी ममता बनर्जी दूसरी ओर से चलती हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : ऐसी बात नहीं है। आप पूरी तरह से गलत है। उनसे मेरी कोई शिकायत नहीं है।

श्री संतोष मोहन देव : प्रधान मंत्री महोदय, आपको इन 141 सदस्यों का ध्यान रखना है। मैं मांग नहीं कर रहा हूं। मैं आपसे केवल एक अनुरोध कर रहा हूं। सदस्य मेरे पास आते हैं और मुझसे कहते हैं कि वे कुछ मंत्रियों से मिलना चाहते हैं और मंत्री अपने मित्रों से बातचीत में व्यस्त रहते थे और उन्हें आधे घण्टे बाद आने के लिए कहते थे। यह अच्छी बात नहीं है। मैं यह आपकी खिंचाई करने के लिए नहीं कह रहा हूं। मैं यह निवेदन यह सुनिश्चित करने के लिए कर रहा हूं कि-कम से कम अगले चार वर्षों तक आपको यहां नहीं आना है-कम से कम चार वर्षों के लिए तो हम इकट्ठा रह सकते हैं। मैं आपको स्पष्ट रूप से कह रहा हूं कि दस महीनों में मैंने अपना कर्तव्य गम्भीरतापूर्वक निभाया है। कई बार जब आपके संसदीय कार्य मंत्री और अन्य यहां पर उपस्थित नहीं रहते थे तो मैं उनका कार्य किया करता था और क्या आप चाहते हैं कि मंत्री के पद पर न होते हुए भी मैं उस कार्य को करता रहूं?

मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि आप कृपया हमारे सदस्यों के हितों का ध्यान रखें। वे सम्मान और गरिमा चाहते हैं। प्रत्येक सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्रों के दस लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। वे ऐसे ही अपने निर्वाचन क्षेत्रों को वापस नहीं जा सकते हैं और यह नहीं कह सकते हैं कि संतोष मोहन देव ने व्हिप जारी किया था और इसी कारण उन्हें सभा में पार्टी के व्हिप के अनुसार मतदान करना पड़ा था परन्तु मैं आपको केन्द्र सरकार की एक नौकरी नहीं दे सकता हूं। वे अपने निर्वाचन क्षेत्रों को ऐसे ही वापस नहीं जा सकते हैं और अपने निर्वाचकों से यह नहीं कह सकते कि वे आई॰आर॰डी॰पी॰ और एन॰आर॰ई॰पी॰ योजनाओं के अन्तर्गत धन को प्राप्त नहीं कर पाए और यह कि वह धन ऐसे क्षेत्रों को चला जाएगा जिनका कि प्रतिनिधित्व संयुक्त मोर्चे के सदस्यों द्वारा किया जाना है। वे ऐसा नहीं कह सकते कि वे इन्दिरा आवास योजना के अन्तर्गत मकान नहीं दे सकते है।

स्थायी समिति की हमारी रिपोर्ट में हमने सिफारिश की कि संसद सदस्यों को 50 प्रतिशत विनिर्दिष्ट करने की अनुमति दी जानी चाहिए। स्थायी समिति के अध्यक्ष के रूप में मैंने सुनिश्चित रोजगार योजना की सिफारिश की है।

[हिन्दी]

श्री राम नगीना मिश्र (पडरौना) : महोदय, जो सुझाव दिया है, उसके मुताबिक 141 इलाके हैं और 180 उनके हैं, क्या केवल इतने ही एमपीज की बात सुनी जाएगी और जो और एमपीज हैं, उनकी बात नहीं सुनी जाएगी।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव : अब श्री बरनाला, मैं उस नोट, जो कि मुझे माननीय सदस्य, श्री चन्दूमाजरा ने भेजा है, के बारे में उल्लेख करना चाहूंगा। मैं इसे यहां पर पढ़ना नहीं चाहूंगा। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप माननीय सदस्य को इस बात के लिए राजी करें कि वे भविष्य में संसद में ऐसी भाषा का प्रयोग न करें। यह अच्छी बात नहीं है। हम इस बात को भूल चुके हैं कि क्या हो चुका है। उन्हें कांग्रेस की भर्त्सना करने दीजिए, मैं इस पर ध्यान नहीं दूंगा परन्तु उन्हें ऐसी असंसदीय भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए था।

अन्ततः प्रधानमंत्री महोदय, इस सरकार के विरूद्ध मुझे एक गम्भीर शिकायत है। आजकल क्या हो रहा है? आपके और मेरे बीच आपकी पार्टी और मेरी पार्टी के बीच सैकड़ों मतभेद हो सकते हैं परन्तु कोई भी इस बात को कैसे सहन कर सकता है कि स्वर्गीय इन्दिरा गांधी और जनरल वैद्य के हत्यारों का देश में सम्मान किया जा रहा है?...*(व्यवधान)* ऐसा कौन कर रहा है? अकाली ऐसा कर रहे हैं और भाजपा उनका समर्थन कर रही है। मैं आशा करता हूं कि श्री वाजपेयी इसके बारे में कुछ कहेंगे। मैं नहीं जानता यदि श्री वाजपेयी इसके बारे में जानते हों। जहां तक मैं जानता हूं श्री वाजपेयी ऐसी बातों को कभी भी स्वीकार नहीं कर सकते हैं।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : महोदय मैं इस पर कुछ कहना चाहूंगा। श्री संतोष मोहन देव को इस बात को यह समझना चाहिए कि जब लोगों की सामूहिक हत्या की जा रही है तो उनकी पार्टी राज्य में राज्य कर रही थी। ऐसी सामूहिक हत्याओं के आरोपी पुलिस वालों को नौकरियां दी जा रही हैं। वे संसद के सदस्य बन रहे हैं और उन्हें नौकरियां दी जा रही हैं और वे कांग्रेस सरकार में मंत्री बन जाते हैं। इस कारण दिल्ली में ही हजारों लोगों की मौत के जो जिम्मेदार हैं वे हमसे स्पष्टीकरण चाह रहे हैं।

श्री श्रीबल्लभ पाणिग्रही (देवगढ़) : इसका अर्थ है कि आप उन हत्यारों को सम्मान दिए जाने को औचित्यपूर्ण ठहरा रहे हैं। क्या आप इसे औचित्यपूर्ण बता रहे हैं? क्या आपको इसके लिए शर्म नहीं आती है?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : उन्हें उस पर एक वक्तव्य देना चाहिए।...*(व्यवधान)*

श्री संतोष मोहन देव : यदि बरनाला इसे उचित ठहराना चाहते हैं तो यह उन पर है। मैं नहीं जानता कि देश के लोग उनके बारे में क्या धारणा बनाएंगे। मैं इसके अतिरिक्त उन्हें और कुछ नहीं कहना चाहूंगा कि यदि वे ऐसा करना जारी रखते हैं तो ऐसे धर्मान्धों का एक और समूह होगा जो ऐसी बातों का सहारा लेगा जो देश की भलाई में न होगी। इस बात को मत भूलिए।

मेरी अन्तिम बात है, सभा में प्रश्न पूछे गए कि कांग्रेस ने समर्थन वापस लेने के लिए यह विशेष समय क्यों चुना। श्री पासवान कह रहे हैं : कुछ भी मत बोलिए।" जब श्री पासवान विपक्ष में थे, श्रीमती इन्दिरा गांधी भ्रमण पर गई हुई थीं, उनके विरूद्ध दो बार अविश्वास प्रस्ताव पेश किया गया था। उस समय विपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव को उस समय पेश करने में कोई बुराई नहीं मानी जब वो देश के प्रधान मंत्री के रूप में विश्व का भ्रमण कर रही थीं। इसी कारण समय निर्धारण समय निर्धारण है। एक फुटबाल मैच में यदि आप भलीभांति समय निर्धारण करते हैं तो आप स्कोर कर सकते हैं और यदि आप भलीभांति समय निर्धारण नहीं करते हैं तो आप स्कोर नहीं कर पायेंगे। आपने स्कोर किया था और इसलिए आप यहां पर एक बार फिर हैं।

[श्री संतोष मोहन देव]

कल मैंने वर्तमान प्रधान मंत्री और हमारे पार्टी अध्यक्ष के बीच 'महा आलिंगन' देखा था। मैं नहीं जानता कि क्या उन्हें ऐसा करने के लिए कहा गया था, परन्तु मुझे वहां हुए 'आलिंगन' को देख अत्यधिक प्रसन्नता हुई थी। जब तक आप दोनों के बीच यह निकटता बनाए रखते हैं तब तक कोई समस्या नहीं होगी। इन दो आदमियों के बीच का समन्वय वास्तविक समन्वय होगा। मैं श्री शरद पवार, वगैरह-वगैरह भी होंगे परन्तु सब कुछ आप पर निर्भर है और उन लोगों के बीच है जो 75 वर्षों से ज्यादा आयु वाले हैं। देश को चलाने के लिए 75 वर्षों से अधिक आयु वाला व्यक्ति होना चाहिए जो एक वयस्क राजनीति के रूप में देश को चलाए।

यदि मैं कुछ गलत कह गया हूं तो कृपया मुझे उसके लिए क्षमा कीजिए। मैं एक अच्छा वक्ता नहीं हूं और इसलिए मेरी पार्टी मुझे बोलने की अनुमति नहीं देती। श्री शरद पवार इसे जानते हैं। वे वक्ताओं की सूची पर निर्णय करते हैं। मैंने स्वयं आज कहा था क्योंकि मेरा नाम नहीं था। मैंने उनसे मैंने अनुमति देने का अनुरोध किया था क्योंकि मुझे कुछ महत्वपूर्ण बातें कहनी थीं। वे सोच रहे थे कि शायद मैं राष्ट्रीय स्तर पर सभी केन्द्रों पर प्रसारित किया जाऊंगा और इस कारण किसी बात के लिए एक दावेदार बन जाऊंगा। मैं किसी चीज में रूचि नहीं रखता।

इन शब्दों के साथ मैं आप सभी को धन्यवाद देता हूं और सभा में वापस लाए जाने के लिए भारत के राष्ट्रपति को धन्यवाद देता हूं। हमें अपने अध्यक्ष पर गर्व होता है आप एक हंसमुख अध्यक्ष हैं और आप वहां पर बने रहें।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपके द्वारा प्रस्ताव के समर्थन का क्या हुआ?

श्री संतोष मोहन देव : जी हां, मैं अपनी पार्टी के सभी सदस्यों के साथ पूर्ण हृदय से विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, मैंने आज दिन भर हुई चर्चा को बड़े ध्यान से सुना। चर्चा में रोशनी कम थी, कभी गर्मी ज्यादा थी तो कभी हास-परिहास ज्यादा था। नये प्रधान मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विश्वास के प्रस्ताव पर गंभीरता के वातावरण में चर्चा होनी चाहिए थी।

आखिर दस महीने के बाद देश को नए प्रधान मंत्री की आवश्यकता क्यों पड़ी? हम दावा करते हैं कि भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। संख्या की दृष्टि से वह है भी लेकिन राजनैतिक अस्थिरता इस देश के बारे में कोई सही संदेश नहीं देती है।

आज कांग्रेस के मित्रों ने मुंह खोला लेकिन बात साफ-साफ नहीं हुई। यह कहना कि वह उस दिन इसलिए नहीं बोले क्योंकि वे देवेगौड़ा जी का लिहाज कर रहे थे, यह बात किसी के गले के नीचे नहीं उतरेगी। देवेगौड़ा जी को आपने अपना निशाना बनाया था और सारा विरोध देवेगौड़ा जी तक केन्द्रित कर दिया था। राष्ट्रपति महोदय को लम्बी चार्जशीट देने के बाद भी और मैं उसका उल्लेख करना चाहूंगा कि जो पार्टी पिछले पचास साल से किसी न किसी रूप में शासन से सम्बद्ध रही है, क्या उसे इस तरह का आचरण करने की छूट दी जा सकती है? क्या जनता के प्रति उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है? 30 मार्च का रहस्य अभी तक उद्घाटित नहीं हुआ है। अभी श्री संतोष मोहन देव कह रहे थे कि हमें जिस दिन सबसे ज्यादा लाभ होगा, हम उसी दिन खेलेंगे। यह कोई क्रिकेट का खेल नहीं है। यह देश की 90 करोड़ जनता की तकदीर के साथ खिलवाड़ करना है।

हमने पहले भी कहा था और आज फिर दोहराते हैं कि यह ठीक है कि चुनाव में किसी एक दल को बहुमत नहीं मिला लेकिन जिस तरह की सरकार बनी, उसके लिए भी जनादेश नहीं था। अभी जो संयुक्त मोर्चे का नया रूप नए प्रधान मंत्री के साथ आया है, वह भी टिकाऊपन का आश्वासन नहीं देता। प्रधान मंत्री बदल गए। श्री चिदम्बरम जी मंत्रिमंडल में नहीं हैं। उन्होंने बहुत अच्छा भाषण दिया। बस एक बात छोड़ दी कि मैं सरकार में क्यों शामिल नहीं हुआ हूं? पहले टी॰एम॰सी॰ संयुक्त मोर्चे में शामिल थी, आज भी शामिल है, शासन में भागीदार थी, आज नहीं है, इससे मोर्चा दुर्बल होता है या शक्तिशाली होता है। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका में कोई अन्तर नहीं है। वह बाहर से समर्थन करेंगे, सत्ता में भागीदार नहीं बनेंगे।

देश में एक नई चातुर्वर्ण व्यवस्था स्थापित हो रही है और कम्युनिस्ट उसमें नए ब्राह्मण हैं जो विधान देंगे, जो निर्देश देंगे कि किस को छुआ जाए, किस को न छुआ जाए, इसका निर्धारण करेंगे, कौन अस्पृश्य है, कौन स्पृश्य है, इसके बारे में फैसले देंगे, फतवे देंगे, मगर एक साथ बैठ कर, कैबिनेट की एक टेबल पर बैठकर आदान-प्रदान नहीं करेंगे, खाना-पीना नहीं करेंगे क्योंकि वह नई व्यवस्था के ब्राह्मण हैं। क्षत्रिय भी हैं जो समझते हैं कि राज करना उनका अधिकार है और इस सदन में खड़े होकर, लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में खड़े होकर, फासिस्ट भाषा बोलते हैं कि हम अमुक पार्टी को आने नहीं देंगे। आप रोकने वाले कौन हैं? अगर देश की जनता ने तय कर लिया है कि हम वहां आएं तो आप रोक नहीं सकते। और यह भाषा जब मैं ऐसे माननीय सदस्य के मुंह से सुनता हूं जिस पर देश की सुरक्षा का भार, मगर जिसके साथ केवल 17 एम॰पीज हैं। तो मैं स्तब्ध रह जाता हूं। यह भाषा लोकतंत्र की भाषा नहीं है। हम आपकी कृपा से नहीं आये।

श्री मुलायम सिंह यादव : हम भी आपकी कृपा से नहीं आये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हमने कभी नहीं कहा। हम यह भाषा कभी नहीं बोलते। श्री चन्द्रशेखर जी ने मर्यादा में रहकर सारी बहस को एक ऊंचे धरातल पर रखने की कोशिश की। यह सबसे ऊंचा लोक-प्रतिनिधि संस्थान है। शब्दों के प्रयोग में तो शालीनता होनी चाहिये। मैंने पसंद नहीं किया। हमारे अकाली दल के मित्र के मुंह से जो निकल गया था, उन्होंने उसे वापस लिया। हम अपने सदस्यों को हमेशा रोकते हैं। एक स्थान तो ऐसा होना चाहिये जहां गहरे मतभेद

भी शालीन भाषा में प्रकट हो सकें और यह ऐसा ही स्थान है। लेकिन यहां चुनौतियां दी जा रही हैं।

अध्यक्ष महोदय, यह संयुक्त मोर्चा दस महीने पहले जितना शक्तिशाली था, आज उतना शक्तिशाली नहीं है। आप कहेंगे कि आपको क्या चिन्ता है? हमें चिन्ता यह है कि कहीं दस महीने बाद फिर से विश्वास का प्रस्ताव न आ जाये। टी॰एम॰सी॰ शामिल नहीं है, सी॰पी॰एम॰ अलग है और कांग्रेस भी सत्ता के बाहर है। कांग्रेस के माननीय सदस्यों ने जिस तरह के भाषण दिये हैं, उससे सत्ता में बैठे हुये लोगों के कान खड़े होने चाहिये। अगर जनता ने कोईलीशन के लिये वोट दिया था तो माईनौरिटी गवर्नमेंट के लिये वोट नहीं दिया था। कोईलीशन ऐसा हो सकता था, होना चाहिए था जिसमें बड़े दल भी शामिल हों। आज राष्ट्रपति जी का नाम लिया गया। इसलिये मैं उनके नाम का उल्लेख कर रहा हूं। हमने राष्ट्रपति जी से कहा कि आप कांग्रेस को इस बात के लिये तैयार करिये, संयुक्त मोर्चे को भी इस बात के लिये तैयार करिये कि मिली-जुली सरकार बनायें। 142 का दल बाहर है, सी॰पी॰एम॰ बाहर है, टी॰एम॰सी॰ बाहर है। अगर ये सब जोड़ दिया जायें तो 215 होते हैं। हम 204 हैं जिनमें बी॰जे॰पी॰, शिव सेना, शिरोमणि अकाली दल, समता पार्टी, हरियाणा विकास पार्टी, बी॰एस॰पी॰ भी अलग है। हमारा तो सरकार में शामिल होने का सवाल ही नहीं है इस प्रकार यदि 204 और 215 जोड़ लिये जायें तो 419 सत्ता से दूर हैं। 546 के सदन में 419 सदस्य सत्ता से अलग हैं। यह सत्ता कैसे टिकेगी? इसमें तो अस्थिरता, अन्तर्भूत है, अन्तर्निहित है। जब संयुक्त मोर्चा बना तो कांग्रेस ने समर्थन देने का फैसला किया, वातावरण अच्छा था। आज वातावरण कटुता भरा हो गया है। श्री देवेगौड़ा की बलि चढ़ाई गई है। मोर्चा ने नेता को छोड़ दिया। 'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धम् त्यजति पण्डिता'-जब सब कुछ जाता दिखाई दे तो आधे को छोड़ देना चाहिये-ऐसा शास्त्र वचन है। श्री देवेगौड़ा जाते हैं, जाने दीजिये, सत्ता रहनी चाहिये। लेकिन सत्ता में दरारें पड़ रही हैं। इस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। ऐसी मिली-जुली सरकार क्यों नहीं बन सकती कि जिसमें एक विचार वालों की भागीदारी हो? हमने भी बाहर रहकर सत्ता का समर्थन करने का, सरकार का समर्थन करने का प्रयोग किया है।

अपने अनुभव के आधार पर हम कह रहे हैं कि सत्ता में भागीदारी आवश्यक है, बाहर के समर्थन मात्र से काम नहीं चलेगा। जो बाहर से समर्थन देते हैं, थोड़े दिनों में उनकी कठिनाइयां सामने आएंगी, उनके मन में परेशानियां पैदा होंगी। सत्ता में हिस्सेदारी में क्या आपत्ति होनी चाहिए? पहले भी कांग्रेस ने समर्थन दिया था और समर्थन वापस लिया। मैं उसमें नहीं जाना चाहता। मैं यह आरोप नहीं लगा रहा हूं कि कांग्रेस ऐसा ही करती रही है। मैं एक अलग धरातल पर अपनी बात रख रहा हूं।

कानून ने अस्पृश्यता खत्म कर दी मगर राजनीतिक अस्पृश्यता पनप रही है, बढ़ रही है। मैं श्री शरद पवार के वक्तव्य का स्वागत करना चाहता हूं जिसमें उन्होंने कहा कि हम राजनीतिक अस्पृश्यता में विश्वास नहीं करते। मगर हमारे मित्र करते हैं और इसलिए मैंने कहा कि नयी जाति और वर्ण व्यवस्था के ब्राह्मण अगर कम्युनिस्ट हैं तो हमारे कुछ दल जो सत्ता में रहना चाहते हैं और किसी को आने नहीं देना चाहते, वह क्षत्रिय हैं, कांग्रेस वैश्य है और नये शूद्र हम हैं। हम अस्पृश्य हैं, हमें छुओ मत! लेकिन हम इस देश के ही वासी हैं। लोकतंत्र में हमारी निष्ठा है। हम चुनाव लड़कर आते हैं। हम जब इस सदन में दो रह गए थे, तब भी हमने मर्यादाएं नहीं तोड़ी और आज हम सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरे हैं तो इसलिए नहीं कि हम संप्रदायवाद को बढ़ावा देते हैं। आपकी लड़ाई में संप्रदायवाद का मसला कितना बड़ा मसला था? कांग्रेस पार्टी ने जो चार्जशीट लगाई है, उसमें क्या-क्या कहा था?

अभियोग नबंर एक-कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ी है। कांग्रेस को उस पर चिन्ता है। अभियोग नंबर दो-अर्थव्यवस्था दिशाहीन है जिसके परिणामस्वरूप कीमतें बढ़ी हैं और बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। अभियोग नंबर तीन में जरूर सांप्रदायिकता का उल्लेख है। सांप्रदायिक संकट और गहरा हुआ है। अभियोग नंबर चार-सरकार के व्यवहार में सामंजस्य की कमी है। अभियोग नंबर पांच-मंत्रिपरिषद् के सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धांत को पूरी तरह उपेक्षित कर दिया गया है जो किसी भी संसदीय स्वरूप की सरकार के लिए बनाए रखना आवश्यक है। आगे जाकर पत्र में यह भी कहा गया है कि देवेगौड़ा सरकार ने आवश्यक राष्ट्रीय मुद्दों को पीछे फेंक दिया है। आगे यह भी कहा कि कानून और व्यवस्था ध्वस्त हो चुके हैं। पत्र में गृह मंत्री के उस बयान का सहारा भी लिया गया है जिसमें उन्होंने कहा था कि उत्तर प्रदेश में अराजकता है, अव्यवस्था है और उत्तर प्रदेश विनाश की ओर जा रहा है। मामला इतने अभियोग लगाकर ही नहीं रुका। उसमें राष्ट्र की सुरक्षा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न पर भी देवेगौड़ा सरकार को कटघरे में खड़ा किया गया है। पत्र में कहा गया है कि संवेदनशील रक्षा के मामलों तथा सुरक्षा की आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया। यह भी कहा गया है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ सिविल ऐडमिनिस्ट्रेशन का मनोबल टूट रहा है और सरकार के जो अलग-अलग ऑर्गन्स हैं, वे हतोत्साहित हो रहे हैं। सरकार में न सामंजस्य है, न सरकार की कोई दिशा है, न राज्य चलाने की इच्छाशक्ति है, जिससे दिशाहीनता की स्थिति पैदा हो गई है।

यह अभियोग-पत्र है। यह सहयोगी दल का अभियोग-पत्र है। कांग्रेस के अध्यक्ष अपनी शिकायतें लेकर, अगर नेता को बदलने की मांग भी थी, तो उसे लेकर स्टियरिंग कमेटी में नहीं गए, यूनाइटेड फ्रंट के नेताओं के पास नहीं गए। राष्ट्रपति के पास जाने की क्या जरूरत थी? राष्ट्रपति को इस सारे विवाद से अलग रखा जा सकता था। बजट सत्र चल रहा था। कांग्रेस पार्टी कभी भी कटौती प्रस्ताव लाकर सरकार को चुनौती दे सकती थी। मेरे मित्र श्री जार्ज फर्नान्डीज नहीं बैठे हैं। बजट सत्र के प्रारंभ में उनका सुझाव था कि अविश्वास का प्रस्ताव लाएं। हमने उन्हें कहा कि थोड़ा आगे बढ़ा दीजिए। अध्यक्ष महोदय, यह आपको मालूम है। कांग्रेस स्वयं अपना अविश्वास प्रस्ताव ला सकती थी। सदन में फैसला हो सकता था। राष्ट्रपति जी को लपेटने की क्या जरूरत थी? उससे सदन की गरिमा बढ़ती और लोकतंत्र पुष्ट होता।

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

लेकिन आपके संबंध इतने बिगड़ गये कि सीधे राष्ट्रपति भवन पहुंच गये। बात करने का भी सिलसिला नहीं चला। ठीक है अगर श्री देवेगौड़ा जी से संबंध बिगड़ गये थे तो पूरा मंत्रिमंडल तो था। श्री देवेगौड़ा जी को छोड़कर सब वापस आ गये। मैं उन्हें दोष नहीं देता। उन्हें आखिर देश की देखभाल करनी है। अपने इस दायित्व को वह कैसे छोड़ सकते हैं। लेकिन कांग्रेस ने 30 तारीख को समर्थन क्यों वापस लिया, यह प्रश्न अभी तक अनुत्तरित है और जिस ढंग से वापस लिया, उस ढंग को क्यों अपनाया? इस सवाल का जवाब आना अभी बाकी है। मुझे चिंता हुई है जिस तरह के भाषण आज कांग्रेस के मैम्बरों ने किये हैं। सरकार टिकाऊ होनी चाहिए, देश की प्रगति के लिए यह आवश्यक है। लेकिन हमें नहीं लगता कि इस स्थिति में टिकाऊ सरकार बनेगी। अगर बनेगी तो मिली-जुली सरकार का रूप बदलना पड़ेगा। रूप बदलने के लिए आप तैयार नहीं है। मतभेदों को ताक पर रखकर मिलकर काम करें, यह कठिन है। आखिर तो राजनीति सत्ता का खेल है, उसमें भागीदारी होनी चाहिए। मैं समझता था कि आज कांग्रेस के सदस्य बोल रहे हैं, वे थोड़ी सी रोशनी डालेंगे कि क्यों 30 तारीख चुनी गयी...*(व्यवधान)* 29 क्यों नहीं? 30 मार्च के बाद भी रुक सकते थे। इस पर अभी तक परदा पड़ा हुआ है और पारदर्शिता तथा विश्वास की बातें हो रही हैं...*(व्यवधान)* हमें नहीं मालूम, हम तो आपसे पूछ रहे हैं। आपने शासन का भार संभाला है और आपने समर्थन देने का फैसला किया है। लेकिन हम उत्तर चाहते हैं, देश उत्तर चाहता है।

अगर देवेगौड़ा का आखिरी भाषण कोई संकेत है तो मैं थोड़ा सा उसमें जाना चाहूंगा। देवेगौड़ा जी ने इस आरोप का खंडन किया कि वह कांग्रेस को बांटना चाहते थे। किसी ने खड़े होकर नहीं कहा कि हां वह कांग्रेस को बांटना चाहते थे, इसलिए संकट पैदा हुआ है। कहते हैं कि हम देवेगौड़ा जी का लिहाज कर गये। उन्हें प्रधान मंत्री के पद से हटाने में लिहाज नहीं किया और सदन में सही जवाब देने में लिहाज कर गये। देवेगौड़ा जी ने यह कहा कि जिस दिन कांग्रेस ने समर्थन वापस लिया मैंने उसके दूसरे दिन संयुक्त मोर्चे में शामिल सभी दलों को एकत्र करके पूछा था और उन दलों ने कहा था-

[अनुवाद]

> "नहीं, नहीं, आपको हर्गिज इस्तीफा नहीं देना चाहिए। आपको सभा में जाना होगा। हमें परीक्षण अवश्य करना चाहिए और देखना चाहिए कौन कितने पानी में हैं।"

इस आश्वासन पर देवेगौड़ा जी सदन में आये थे। वह तो समर्थन वापस लेते ही इस्तीफा देने के लिए तैयार थे, ऐसा उनका कहना है और इस्तीफा दे भी देना चाहिए था। लेकिन उन्हें आश्वासन दिलाया गया कि चिंता मत करो और उस दिन जिस तरह से देवेगौड़ा जी के भाषण पर तालियां पीटी जा रही थीं तो मुझे लगा कि यह सचमुच में वास्तविक समर्थन है। उस दिन दासमुंशी ने भी कहा था मैंने बिल्कुल उन पर दोषारोपण नहीं किया। ये दासमुंशी जी के शब्द हैं। अगर पूरे मंत्रिमंडल के खिलाफ चार्जशीट थी तो फिर देवेगौड़ा जी को अकेले निशाना क्यों बनाया गया। अगर कानून और व्यवस्था ध्वस्त हो गयी थी तो क्या उसके लिए गृह मंत्री जिम्मेदार नहीं हैं? कामरेड इंद्रजीत गुप्त वापस आ गये, गृह मंत्रालय संभल रहे हैं। आप संतुष्ट हैं। कानून और व्यवस्था पहले से बिगड़ी है कि सुधरी है? पिछले तीन हफ्तों में देश की हालत में बिगाड़ हुआ है या सुधार हुआ है? आपने सुरक्षा का मामला भी नहीं छोड़ा, रक्षा मंत्री यहां बैठे हैं। क्या रक्षा मंत्री अपने कर्तव्यपालन में विफल रहे, क्या राष्ट्रीय रक्षा के तकाजों को नहीं देखा गया? आपका आरोप यही था?

वह आरोप किसी छोटी अदालत में नहीं लगाया गया, राष्ट्रपति जी के यहां लगाया गया। वह चार्जशीट कहां गई। चार्जशीट के बाद, क्या सब कुछ जैसे का तैसा चलेगा-ऐसी आप आशा करते हैं।

युनाइटिड फ्रंट ने देवेगौड़ा को बलि चढ़ा दिया लेकिन बुनियादी ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। देवेगौड़ा जी के बारे में कहा गया कि वे एक घायल सिपाही थे उन्हें किसने घायल किया? हमने तो नहीं किया। अपने हाथों भी वे घायल नहीं हुए। आप उनके समर्थक थे और और वे उनकी फौज के सिपाही थे-क्या आप दोनों ने मिलकर या दोनों ने अलग-अलग उन्हें घायल नहीं किया। उन दिन कितनी पीड़ा से, कितनी वेदना से वे बोले। मैं मानता हूं कि जिस तरह से केसरी जी का उल्लेख उस दिन हुआ, वैसा नहीं होना चाहिए था लेकिन उनका उल्लेख करने से बच भी कैसे सकते हैं।

राष्ट्रपति जी को कांग्रेस अध्यक्ष ने एक पत्र लिखा, कांग्रेस अध्यक्ष पद पर केसरी जी हैं। अगला अध्यक्ष बनने की शायद आप तैयारी कर रहे हैं। अब बनेंगे या नहीं, मैं नहीं जानता और आगे क्या होगा, वह भी मैं नहीं कह सकता। इसकी भविष्यवाणी करना बहुत मुश्किल है लेकिन देवेगौड़ा जी ने उस दिन जो कुछ कहा, उसे मैं आपके सामने उद्धृत करना चाहता हूं।

[अनुवाद]

"...अब, मैं किन परिस्थितियों में प्रधानमंत्री बना? एक ओर तो सी•बी•आई• की जांच चल रही थी...*(व्यवधान)* एक ओर,, सी•बी•आई• की जांच चल रही थी...*(व्यवधान)*

कर्नल राव राम सिंह (महेन्द्रगढ़) : किस संबंध में जांच होती है?...*(व्यवधान)*

श्री एच•डी• देवेगौड़ा : कई मामले हैं। मैं उनके विस्तार में नहीं जाना चाहता...*(व्यवधान)* पिछले दस वर्षों के दौरान मैंने किसी एक भी राजनीतिक नेता के खिलाफ एक भी मामले का आदेश नहीं दिया। ये इससे पूर्व के मामले थे...*(व्यवधान)*

कर्नल राव राम सिंह : प्रधानमंत्री जी, श्री राजेश पायलट का पत्र क्या है?"

राजेश पायलट जी अभी यहां दिखाई दिए थे।

प्रश्न तो यही था? श्री राजेश पायलट के पत्र का विषय क्या है?

श्री एच•डी• देवेगौड़ा : न तो मैंने किसी के विरूद्ध विगत दस महीनों में किसी जांच के आदेश दिए हैं, और न सी•बी•आई• द्वारा

किसी जांच के आदेश दिए हैं। परन्तु किसी भी मामले में कोई हस्तक्षेप भी नहीं किया है। यहां तक कि अपनी पार्टी के मुख्यमंत्री के मामले में भी जहां मेरी पार्टी की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। सब काम ठीक-ठाक हो रहे हैं या नहीं। इस पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता।"

[हिन्दी]

वे चीफ मिनिस्टर कौन हैं, जिनका उल्लेख पूर्व प्राइम मिनिस्टर ने किया, जिनका नाम नहीं लिया? जिनके बारे में पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि मैंने इंटिरफीयर नहीं किया। इसका मतलब है कि जब वे प्रधानमंत्री थे, उस दौरान उनसे इंटरफीयर करने के लिए कहा गया था, मगर उन्होंने इंकार कर दिया-क्या इसीलिए नाराजगी हुई, क्या इसीलिए उन्हें हटाने का षडयंत्र किया गया?

श्री शरद यादव (मधेपुरा) : अध्यक्ष जी, मैं ऐसा महसूस करता हूं कि अटल जी ठीक बोल रहे थे और निश्चित तौर से उन्होंने जो कुछ कहा, उस भावना को लेना चाहिए। उनकी पार्टी के लोग भी बहुत से केसों में फंसे हुए हैं। उन्होंने किसी भी मामले में हस्तक्षेप न करने की बात कही थी, अपने दिल से कही थी, उस दिन वे अपने दिल से बोले थे, इसलिए उसे इस संदर्भ में इधर-उधर मोड़ना वाजिब बात नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं कोई तोड़-फोड़ नहीं कर रहा हूं बल्कि शब्दों का सीधा-सादा अर्थ निकाल रहा हूं। उन्होंने साफ तौर से कहा था कि जिन पर आरोप है और जिनकी जांच हो रही है, उसमें उनकी ही पार्टी के एक मुख्यमंत्री भी हैं-यही मैं कह रहा हूं-मगर यादव जी, आपको तो मुझसे थोड़ा ज्यादा पता होना चाहिए। आप कृपा करके सदन को बता दीजिए कि वह मुख्यमंत्री कौन हैं?

श्री शरद यादव : अटल जी यह बात आप भी जानते हैं कि लालू प्रसाद जी हमारे अध्यक्ष हैं। फाडर स्कैम की इन्क्वायरी चल रही है और इन्क्वायरी के कोई नतीजे नहीं आए हैं। उसके पहले ही शक कर देना, उसके पहले ही किसी चीज का इशारा कर देना, वाजिब नहीं है।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं कोई इशारा नहीं कर रहा हूं। ...*(व्यवधान)*

श्री शरद यादव : जब आडवाणी जी पर आरोप लगा, हम में से किसी भी मैम्बर ने कुछ नहीं कहा। जब वे बरी हो गए, तब भी हम में से किसी मैम्बर ने कुछ नहीं कहा। आज मैं कह रहा हूं, इन्क्वायरी चल रही है और अभी उसका कोई फैसला नहीं हुआ है। उसके पहले यदि आप कोई मोटिव रखेंगे, तो यह वाजिब नहीं है। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरे मित्र श्री शरद यादव, श्री लालू प्रसाद यादव जी की श्री आडवाणी जी के साथ तुलना न करें। आडवाणी जी पर आरोप लगा, आडवाणी जी ने लोक सभा की सदस्यता छोड़ दी। पार्लियामेंट आने से मना कर दिया और कहा कि जब तक आरोप हटेगा नहीं मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा। आपके मुख्य मंत्री यह घोषणा कर रहे हैं कि यदि मुझे जेल में भी भेज दिया जाएगा, तो मैं वहां से भी मुख्य मंत्री का काम चलाऊंगा।...*(व्यवधान)*

श्री शरद यादव : अटल जी, आप ऐसा मत समझिए। इस पार्टी में भी लोग थे। मैं भी सदन में था। आप कंपैरिजन की बात करते हैं। हमने कोई गुनाह नहीं किया, लेकिन हमें भी फंसाया गया। आज बिहार के जो सच्चे लोग हैं, उनके बारे में दूध का दूध और पानी का पानी जब आपके सामने आएगा, तब आप मानेंगे। इसलिए उसके पहले कोई ऐसी बात करना ठीक नहीं है। हां, यह ठीक है, हम लोग हजार वर्ष में पहली बार आए हैं। इसलिए आपकी और हमारी तुलना नहीं हो सकती है। आपकी जुबान बहुत बढ़िया है, यह पूरा सदन और हम सब जानते हैं। लेकिन हमारे ऊपर जब तक आरोप सिद्ध नहीं हो जाते हैं, तब तक ऐसी बात मत कहिए और अपने आप निष्कर्ष मत निकालिए। अगर हमारे ऊपर आरोप सिद्ध हो जाएं, तो आप कहिए, मैं आपको नहीं रोकूंगा।

आप ये जो कंपैरीजन और तुलना करने की बात कह रहे हैं, हमारी और आपकी तुलना नहीं हो सकती है क्योंकि हम जब बोलेंगे, तो हमारी बात नहीं छपेगी और आपकी पूरी की पूरी बात छपेगी। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह आप क्या बात कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री शरद यादव : हम सब जानते हैं। आप भी इस सदन में बोले और मैं भी इस सदन में बोला। मेरी पांच लाइन नहीं छपी और आपका पूरा भाषण देश के सभी अखबारों में छपा। हम में और आप में जरूर अन्तर है और बहुत अन्तर है। आप जो वर्ण व्यवस्था की बात कर रहे थे।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हां, फिर वही वर्ण व्यवस्था की बात आ गई।...*(व्यवधान)*

श्री शरद यादव : अटल जी आप वर्ण के और प्रवाह के आदमी हैं। इसलिए आप मौज में हैं। हम में और आप में जरूर अंतर है। इसमें कोई शक नहीं कि हमारी और आपकी तुलना नहीं हो सकती। ...*(व्यवधान)*

श्री राम कृपाल यादव : आप अमीर हैं और हम लोग गरीब हैं।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुझे अफसोस है कि इस सारे विवाद में मीडिया को घसीटा जा रहा है। यह तरीका ठीक नहीं है। कभी-कभी मेरा वक्तव्य भी नहीं छपता और आपका पूरा छप जाता है।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : जो आपने कहा वाजपेयी जी, मैं उस बारे में कहना चाहता हूं। कृपया एक मिनट के लिए मेरी बात सुन लें।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हां, मैंने जो कहा, वह ठीक कहा। मैं यील्ड नहीं कर रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं स्थान ग्रहण नहीं कर रहा हूं।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : लेकिन अदालत ने जब मुजफ्फरनगर की घटना से मुझे बरी कर दिया और निर्दोष साबित कर दिया, तो उस मामले को रोजाना क्यों कहते रहे...*(व्यवधान)* अगर यह बात निकली, तो और बातें भी निकलेंगी। आप ऐसा मत समझिए और बातें भी निकलेंगी। आपने मुजफ्फरनगर की घटना के संबंध में अदालत का जो जजमेंट आया उमसें हमारे ऊपर कोई आरोप नहीं था, उसके बाद भी आप बोलते रहे और रोजाना बोला जाता रहा। अगर ऐसी बात है, तो एक-एक फाइल देखी जाए। इन सारी बातों का पता चल जाएगा।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं तो नए प्रधान मंत्री से सिर्फ इतना आश्वासन चाहता हूं कि जिनके खिलाफ अभियोग हैं, सी॰बी॰आई॰ जांच कर रही है या जांच करने लायक केस हैं, उनकी ठीक तरह से जांच हो। मामले जहां अदालत में हैं, वहां किसी तरह का दबाव डालने का प्रयास न किया जाए। किसी मामले पर लीपापोती नहीं होनी चाहिए। मैं इतना सा आश्वासन ही चाह रहा हूं और इसलिए मैंने बीच में आज सवेरे जब प्रधानमंत्री जी भाषण कर रहे थे, उन्होंने कहा कि विच हंटिंग नहीं होनी चाहिए तो मैंने पूछा था कि क्या विच हंटिंग हो रही है? अगर नहीं हो रही तो फिर यह कहने की जरूरत ही नहीं थी कि नहीं होनी चाहिए। यह तो स्वाभाविक है और अगर हंटिंग होगी तो उसे रोकने के लिए भी अदालत है। न्यायालय हस्तक्षेप करेगा। निर्दोष दंडित नहीं होना चाहिए और दोषी छूटना नहीं चाहिए, यह न्याय का तकाजा है। कोई कितना भी बड़ा हो लेकिन श्री देवेगौड़ा जी ने उस दिन जो कुछ कहा, उसको मैंने आपके सामने उद्धृत कर दिया है और वह शब्द स्वयं बोलते हैं। वह संकेत देते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक प्रश्न का और उल्लेख करूंगा-साम्प्रदायिकता का सेक्युलरवाद खतरे में हैं। इसलिए जो भी सेक्युलरवाद के हामी हैं, वे सब इकट्ठे हो जायें। इकट्ठे होने के बाद आपस में लड़ते भी जायें। फिर जब इकट्ठे हों तो सेक्युलरवाद का नाम लें। यह कब तक चलेगा। हम बढ़ रहे हैं और जो सेक्युलरवाद की जरूरत से ज्यादा दुहाई दे रहे हैं, वे पीछे हट रहे हैं देश को सेक्युलरवादी तो होना चाहिए। मैंने उस दिन भी कहा था और यह देश हमेशा सेक्युलरवादी रहेगा। लेकिन इस सवाल पर कोई आत्ममंथन है? कोई अपने गिरेबान में मुंह डालकर देखने को तैयार है कि यह हो क्या रहा है?

हमारे कांग्रेस के मित्र ज्यादा ध्यान से सुनें। गाडगिल साहब उनके प्रवक्ता हैं। मैं उनकी किताब में से उद्धृत कर रहा हूं। कुछ लम्बे उद्धरण हैं मगर मैं अपने को रोक नहीं सकता। इसलिए मैं उद्धृत कर रहा हूं।

[अनुवाद]

इस पुस्तक का शीर्षक है : "1996 मेनडेट-इट्स मीनिंग एण्ड मैसेज" वी॰एन॰ गाडगिल। मैं उद्धृत करता हूं :—

> "अब 1996 के लोक सभा चुनावों में हार के पश्चात् मैं यह मांग नहीं कर रहा कि धर्म-निरपेक्षता पर पुनर्विचार किया जाए। मैं तो केवल यह आग्रह कर रहा हूं कि कांग्रेस के द्वारा जिस धर्म-निरपेक्ष-वाद पर अमल किया जा रहा है उसकी विषय-वस्तु की पुनःजांच परीक्षण किया जाए। मेरे और श्री वाजपेयी के बीच में यही मूल अन्तर है। श्री वाजपेयी चाहते हैं कि धर्म-निरपेक्षता पर पुनर्विचार किया जाए।" चाहे मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। "मैंने धर्म-निरपेक्षता पर पुनर्विचार की मांग नहीं की। श्री वाजपेयी इस विषय पर राष्ट्रीय बहस चाहते हैं। मेरी मांग सीमित है चूंकि कांग्रेस की हार का मूल और अधिक महत्वपूर्ण कारण कांग्रेस द्वारा अनुसरण किए जा रहे धर्म-निरपेक्षता का अस्पष्ट और अनिश्चित स्वरूप है, अतः मैं कांग्रेस के अन्दर ही इस विषय पर की मांग करता हूं।"

श्री पी॰आर॰ दासमुंशी : यह भी गाडगिल का मत है, कांग्रेस का नहीं। मैं आपकी ऐसी बहुत सी पुस्तकों के उद्धरण दे सकता हूं जो बी॰जे॰पी॰ के विचारों जैसे नहीं हैं...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री इलियास आजमी (शाहबाद) : 40 साल तक वोट दिया। ...*(व्यवधान)* एक बार वोट नहीं दिया...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : ठीक है, उनके विचारों से आपका कोई नाता न हो। मैं बुरा नहीं मानूंगा। आप ऐसा कर सकते हैं। मेरे भाषण में बाधा मत डालिए। श्री गाडगिल आपके प्रवक्ता हैं। सुनिए उन्होंने क्या कहा है :—

> "धर्म-निरपेक्षता के स्वरूप के विषय में कांग्रेस पार्टी के सदस्य-गण बहुत भ्रम में है। इतना ही नहीं, आगे वे कहते हैं :—
>
> "धर्म-निरपेक्षवाद का कांग्रेस स्वरूप अत्यन्त अनिश्चित और अस्पष्ट है जो कांग्रेस की हार का दूसरा मुख्य कारण है। क्या इसका अर्थ धर्मनिरपेक्षता है या सर्व-धर्म-समभाव? धर्म-निरपेक्षता से यह प्रभाव इंगित होता है कि कांग्रेस किसी भी प्रकार के धर्म की विरोधी है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि कांग्रेस नास्तिक है। परिणामस्वरूप हिन्दु और मुसलमान दोनों ही वर्ग के लोग-धर्मनिरपेक्षवाद की इस विचारधारा-धर्मनिरपेक्षता से दूर हो जाते हैं। यदि सेक्युलरिज्म से कांग्रेस का अर्थ सर्व-धर्म-समभाव है-तो न तो हिन्दु और न मुसलमान इसे कांग्रेस के कार्य-व्यवहार में विद्यमान पाते हैं। मेरे बहुत से मुसलमान मित्र मुझे कहते हैं कि अयोध्या के मन्दिर का ताला कांग्रेस-शासन के दौरान तोड़ा गया, शिलान्यास भी इस शासन के दौरान किया गया और मस्जिद भी इसी शासन-काल के दौरान नष्ट-भ्रष्ट की गई। क्या यह सेक्युलरिज्म है? दूसरी ओर हिन्दु कहते हैं जब मुस्लिम लोग हज के लिए जाते हैं तो उन्हें हवाई यात्रा किराये में रियायत दी जाती है और राष्ट्र को इसके

लिए 60 करोड़ रुपये का भार वहन करना पड़ता हैं परन्तु इसी प्रकार से जब हिन्दु तीर्थ यात्री नेपाल के पशुपति मन्दिर में दर्शनों के लिए जाते हैं तो उन्हें रेल-भाड़े में रियायत नहीं दी जाती। क्या कांग्रेस का धर्म-निरपेक्षवाद यह है? अतः कांग्रेस की सेक्युलरिज्म की विचारधारा की विषयवस्तु पर पुनर्विचार किया जाना बहुत आवश्यक है।

अब यह सत्य नहीं है कि बी॰जे॰पी॰ केवल ब्राह्मणों और बनियों की पार्टी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अयोध्या की कार-सेवा में हजारों दलितों ने भाग लिया। बी॰जे॰पी॰ ने 29 अनुसूचित जाति की सीटें और 14 आदिवासी सीटें जीती हैं। क्या इन तथ्यों से हम कोई सबक नहीं सीख सकते?

महोदय, एक और पैरा है। मैं उसे उद्धृत करता हूं :—

> सेक्युलरिज्म की कांग्रेस विचारधारा धर्म की राजनीति से अलग करती है। परन्तु राजनीति को जातिवाद से अलग करने के सम्बन्ध में कांग्रेस ने कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं अपनाया। सम्प्रदायवाद से ज्यादा तो जातिवाद ही धर्म-निरपेक्षता के लिए एक खतरा बन गया है। ऐसा कहा जाता है कि श्री राम विलास पासवान ने कहा कि संयुक्त मोर्चे की सरकार पहली ऐसी सरकार है जिसमें ऊंची जाति का एक भी मंत्री नहीं है। अतः प्रश्न तो यह उठता है "क्या सेक्युरिल्म के सम्बन्ध में कांग्रेस की विचार-धारा में जातिवाद सम्प्रदायवाद की तरह खतरनाक नहीं है?"

जब कुछ कांग्रेसी महाराष्ट्र की सरकार को बी॰जे॰पी॰-शिवसेना गठबन्धन सरकार कहने की बजाय उसे 'जोशी', 'महाजन' और 'ब्राह्मण' की सरकार कह सकते हैं, तो क्या कांग्रेसी वास्तव में स्वयं को धर्म-निरपेक्षवादी कह सकते हैं?

[हिन्दी]

ये हमारे विचार नहीं हैं। कांग्रेस के जो नेता हैं, प्रवक्ता हैं, ये उनके विचार हैं। थोड़ा इस पर मंथन कीजिए, आत्मालोचन कीजिए। ...*(व्यवधान)* जिस अनुपात में आपका कोसना बढ़ रहा है उसी अनुपात में हमारा प्रभाव बढ़ रहा है, शक्ति बढ़ रही है। यह सैकुलरवाद की पराजय नहीं हो रही। सर्वधर्म-समभाव की आवश्यकता है। सम्प्रदाय-निरपेक्षता सही अनुवाद है। सैकुलरिज्म का सही अनुवाद सर्वधर्म समभाव सम्प्रदाय निरपेक्षता है, धर्मनिरपेक्षता नहीं। यह देश कभी अधार्मिक नहीं हो सकता, धर्मविरोधी नहीं हो सकता, इसको समझना चाहिए।...*(व्यवधान)*

कृषि मंत्री (श्री चतुरानन मिश्र) : क्या आप एक मिनट यील्ड करेंगे?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हां, पंडितजी महाराज, आप जरूर बोलिए।

श्री चतुरानन मिश्र : सर्वधर्म समभाव तो आप ठीक बात बोल रहे हैं। लेकिन क्या उसमें यह ऐलाउड है कि किसी की मस्जिद तोड़ें और रोज-रोज धमकी दें कि यहां मंदिर तोड़ेंगे? हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि मथुरा का, बनारस का, आपके मुताबिक आप जो सिद्धान्त दे रहे हैं, उसी में हो रहा है और वही सर्वधर्म समभाव है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : जो प्रश्न खड़ा किया जा रहा है, पंडितजी महाराज, उस प्रश्न का उत्तर आपको मालूम है। हम कई बार यह स्पष्ट कर चुके हैं कि अयोध्या में जो कुछ हुआ, वह एक दुर्घटना थी, वह एक हादसा था।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी : यह आप उन सब लोगों को बताइए जो आपका समर्थन करते हैं...*(व्यवधान)* आप देखिए उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है।

श्री संतोष मोहन देव : महोदय, मुझे एक मिनट का समय दीजिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री वाजपेयी की बात सुनिए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : यह उनको कहिए जो आपका समर्थन कर रहे हैं।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : आप इस सच्चाई से इंकार नहीं कर सकते कि देश में कुछ धर्मस्थान ऐसे हैं जिनके बारे में विवाद है। आपने अभी प्रस्ताव पास किया, एक कानून बनाया। उसमें भी आपने अयोध्या को छोड़ दिया। क्यों? काशी और मथुरा का समावेश है, अयोध्या का नहीं है।...*(व्यवधान)*

श्री चतुरानन मिश्र : काशी और मथुरा का है लेकिन उसके खिलाफ आप वहां थपथपाते हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आपने अयोध्या क्यों छोड़ा? जो थपथपाते हैं उन्हें थपथपाने दीजिए। मगर आप साम्प्रदायिकता को थपथपाने का गुनाह मत कीजिए। एक तरह की साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर दूसरे तरह की साम्प्रदायिकता से नहीं लड़ सकते, यह ध्यान रखिए।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव : महोदय, उन्होंने मुझसे एक ऐसा प्रश्न पूछा था जिसका मैं संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकता। मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी से पूछना चाहता हूं "क्या आप सदन को यह बताने का कष्ट करेंगे कि बाबरी मस्जिद को गिराने के लिए 6 दिसम्बर, 1992 को ही खास मौका क्या था?" यह काम 5 या 7 दिसम्बर को क्यों नहीं किया गया?...*(व्यवधान)* कृपया हमें बताने का कष्ट करें। मैं इसे समझना चाहता हूं...*(व्यवधान)* मैं राजनीति में अभी नया-नया आया हूं।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, उस समय कांग्रेस की सरकार थी, नरसिंह राव जी प्रधानमंत्री थे, अगर जानकारी प्राप्त करनी है तो पड़ोस से जानकारी ले लीजिए, इतनी दूर की यात्रा क्यों करते हैं?

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : अध्यक्ष महोदय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी कृपया जवाब दें। यह एक ऐसा मामला है जिसे मेरे मित्र अयोध्या का एक ढ़ाचा कहते हैं जिसे हम बाबरी मस्जिद कहते हैं। यह न्यायिक प्रक्रिया से सम्बन्धित विषय-वस्तु है। राज्य सरकार ने सर्वोत्तम न्यायलय और राष्ट्र को इसे बचाने एक का आश्वासन दिया था। आपने क्या किया? उसे बचाने के लिए आपकी सरकार और आपकी पार्टी ने क्या किया?...*(व्यवधान)*

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे (ठाणे) : यह कितने वर्षों तक जारी रहेगा? वे इसके लिए क्या मांग रहे हैं?

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : इस घटना की निन्दा के लिए एक भी शब्द नहीं कहा गया। हम जानना चाहते हैं आप ऐसा कैसे कह सकते हैं...*(व्यवधान)*

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे : उनके पास कहने के लिए एक ही शब्द है कि वे धर्म-निरपेक्ष हैं...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, आप मुझे बोलने का अवसर दीजिए। मैं इसका उत्तर नहीं दे रहा। एक बहस होने दीजिए। आप एक समय निर्धारित कीजिए और हम इस पर व्यापक चर्चा करेंगे...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूं। समाप्त करने से पहले मैं एक बात कहना चाहता हूं। मैं समाप्त कर रहा हूं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : सर्वोच्च न्यायालय के पास लम्बित मामले के कारण उस विधेयक में अयोध्या की मस्जिद का जिक्र नहीं किया गया। यह उत्तरदायित्व लिया गया था कि मजिस्द की सुरक्षा की जायेगी। अतः इनके पास इसका कोई उत्तर नहीं है।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं नये प्रधान मंत्री के इस वक्तव्य का स्वागत करता हूं कि देश आम-सहमति के आधार पर चलना चाहिए, मुठभेड़ की भावना से नहीं, संघर्ष की भावना से नहीं। देश में विदेश नीति के सवाल पर आम-सहमति बहुत पहले से रही है और श्री गुजराल ने विदेश मंत्री के नाते से आम सहमति से आगे बढ़ने का प्रयास किया है, उसको पुष्ट करने का प्रयास किया है। उन्हें सफलता भी मिली है। पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध सुधरें, हम भी यह चाहते हैं। हम इसी बात की ओर संकेत दे रहे हैं कि कहीं हमारी उदारता को पड़ोसी हमारी दुर्बलता न समझे, उसका अनुचित लाभ उठाने की कोशिश न करे। ताली दोनों हाथों से बजती है।

लेकिन जहां तक देश को चलाने का सवाल है, अगर नये प्रधान मंत्री आम सहमति के आधार पर सब को साथ लेकर चलना चाहते हैं तो हम उन्हें अपने रचनात्मक सहयोग का आश्वासन देते हैं और हम चाहेंगे कि देश आगे बढ़े। मतभेदों के बावजूद आगे बढ़े, सत्ता के संघर्षों के बावजूद आगे बढ़े और उसे आगे बढ़ाने का एक तरीका है कि इतना बड़ा देश, इतनी विविधता, इतना पुराना देश अगर चलेगा तो आम सहमति के आधार पर ही चलेगा और प्रधान मंत्री अगर उस रास्ते पर जाना चाहते हैं तो हमें बहुत दूर नहीं पाएंगे।

प्रधान मंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : अध्यक्ष महोदय ...*(व्यवधान)*

बहुत अच्छे। नहीं मुझे हिन्दी प्रयोग में कोई मुश्किल नहीं है। मैं सिर्फ यह सोच रहा था...*(व्यवधान)* आपकी आवाज मैंने सुन ली है। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप सब शोर क्यों मचा रहे हैं? भाषान्तरण सुविधा यहां उपलब्ध है। आप इस तरह अपनी मांग नहीं रख सकते। प्रधान मंत्री जिस भाषा में बोलना चाहें वह उनकी इच्छा है।

श्री आर॰ ज्ञानगुरूस्वामी (पेरयाकुल्लम्) : उन्हें अंग्रेजी में बोलना चाहिए।

श्री एस॰के॰ कारवींधन (पलानी) : उत्तर अंग्रेजी में क्यों न हो?

अध्यक्ष महोदय : आप इस तरह का मोन नहीं कर सकते।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : अध्यक्ष जी, मैं कह रहा था कि मैंने आपकी आवाज सुन ली है और सुबह से मेरे बोलने के बाद मेरे मित्र मुझे मिले भी थे, उन्होंने इस बात की सराहना की थी कि मैंने इस पद से पहली तकरीर जो की है, वह मैंने हिन्दी में की है।

हिन्दी मेरी भी मातृभाषा है, मैं भी उसी जुबान में पला हूं और उसी संस्कृति की नुमाइन्दगी मैं भी करता हूं, जिससे यह भाषा पैदा होती है। देश में यह भाषा बाहर से नहीं आई थी, चाहे बात हिन्दी की हो, चाहे बात उर्दू की हो, इसी धरती से पैदा हुई थी,

अपराह्न 9.00 बजे

इसलिए जब मैं वह भाषा बोलता हूं जो आम आदमी समझता है तो मैं न कोई पंडित हूं, न ज्ञानी हूं, न मौलवी हूं। मैं तो सिर्फ एक बात समझता हूं, वह यह कि इस पद से जो भी बोले, चाहे किसी भी भाषा में बोले उसका लाइन आफ कम्युनिकेशन अपने लोगों के साथ होना चाहिए। मैं अंग्रेजी में इसलिए बोलने की कोशिश कर रहा था कि हमारे देश में बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो आज भी हिंदी को नहीं

समझते। क्योंकि मैं यहां से बात कर रहा हूं, सुबह मैंने हिंदी में जिक्र किया था, अगर आप इजाजत दें तो मैं इस वक्त अंग्रेजी में बात करूं ताकि उन लोगों तक भी मेरी बात पहुंच सके।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय, सदन में विश्वास मत प्राप्त करते हुए जो कुछ मैंने सुबह कहा था, उसको आगे जारी रखते समय, किसी का बचाव अथवा किसी की आलोचना करने का मेरा कोई विचार नहीं, वह मेरा उद्देश्य ही नहीं था। मेरा मूलतः यदि उद्देश्य था कि सुबह सदन में मैंने जिन वचनबद्धताओं का उल्लेख किया था, उन पर दृष्टिपात करूं। चर्चा इस रूप में उजागर हुई है, कि जिससे दो बातें उभर कर सामने आई हैं। पहला यह कि सदन के सभी वर्गों ने अपने भाषणों में मेरे नाम का उल्लेख करने का प्रयास किया है जिसके लिए मैं आभारी हूं और इससे मुझमें और विनम्र भाव पैदा हुआ है। इस स्थान पर खड़े होकर बोलते हुए जब मैं इसके इतिहास को देखता हूं कि मुझे तीन विचार दिखाई देते हैं। सर्वप्रथम यह कि जवाहर लाल नेहरू ने इसी पद को सुशोभित किया। दूसरा विचार कि श्रीमती इन्दिरा गांधी इसी पद पर आसीन रहीं। तीसरा कि लाल बहादुर शास्त्री ने भी इस पद को सुशोभित किया। महान हस्तियों के समक्ष मैं अपने को अदना व्यक्ति पाता हूं। परन्तु आपने मुझे सम्मानित किया है; अतः मैं आपका आभारी हूं। आप जितना अधिक मुझे सम्मान देते हैं उतना अधिक ही मैं विनीत होता हूं।

[हिन्दी]

जिसे हिन्दी में नम्रता कहते हैं। मैं नम्रता से बात करता हूं और कहना चाहता हूं जो वादे मैंने सुबह किए थे, उन पर कायम रहना चाहता हूं। दूसरी बात आने से पहले एक बात साफ कर दूं कि मैंने सुबह से एक बात शुरू की थी।

[अनुवाद]

आज सुबह मैंने कहा था कि मैं भारत की स्वतन्त्रता की पचासवीं वर्षगांठ पर बोल रहा हूं। यह पचासवां वर्ष केवल संख्या मात्र नहीं है क्योंकि वर्ष तो बीतते ही जाते हैं। आप इस प्रक्रिया को नहीं रोक सकते; चाहे हम किसी व्यक्ति की आयु के बारे में सोचें; राष्ट्र के विकास के बारे में सोचें या इतिहास के विकास के परिप्रेक्ष्य में देखें। कुछ कारक ऐसे हैं जो हमारी पहुंच से बाहर हैं और सालों के बीतने की प्रक्रिया इसका एक उदाहरण है। अतः भारतीय स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूरा होने के अवसर पर केवल मैं नहीं—मेरे विचार से सदन के सभी वर्ग, अतीत की ओर तथा वर्तमान की एक झांकी देखना चाहेंगे।

सुबह भी मैंने अपने मित्रों को याद दिलाया था, कि केवल मैं अकेला ही नहीं परन्तु मेरे वे मित्र भी जो यहां बैठे हुए हैं स्वतन्त्रता संग्राम की विरासत पर गर्व से दृष्टिपात करेंगे। स्वतन्त्रता संग्राम केवल मात्र एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लड़ी गई। केवल एक विशिष्ट पार्टी द्वारा नहीं : चाहे कांग्रेस ही उसका नाम रहा हो। कांग्रेस तो एक मंच था, और उसके आयाम इसके कहीं बड़े थे, जितना आज पार्टी समझती है।

मुझे नहीं पता सदन के कितने सदस्य उस परम्परा का स्मरण करना चाहेंगे जब कांग्रेस न केवल यह बता रही थी कि वह उपनिवेशवाद से क्यों लड़ रही है और इसका क्यों विरोध कर रही है अपितु साथ-साथ ही साथ वह कदम-दर-कदम भारतीय के भविष्य का भी निर्माण कर रही थी। विश्व में अन्य स्वतन्त्रता संग्रामों की तुलना में हमारा स्वतंत्रता संग्राम एक अर्थ में एक अद्वितीय था क्योंकि हम साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष करते हुए भारत के भविष्य का निर्माण कर रहे थे।

हमारे पूर्वजों अथवा संविधान के निर्माताओं जो भी उन्हें कहें, चाहे वह महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल या मौलान आजाद थे, उन्होंने भारत के भविष्य को नई दिशा दी। भारत का संविधान मात्र एक दस्तावेज नहीं है। चाहे हम इस बात में गर्व महसूस करते हैं कि हमारे संविधान का निर्माण करने में बाबा साहेब अम्बेडकर का भारी योगदान था, तो भी यह केवल एक पुस्तक मात्र नहीं; परन्तु इसमें स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान किए गए वायदे को बताया गया है।

इसमें एक वायदा था-लोकतंत्र। दूसरा था—भारत की एकता और इस एकता में विभिन्नता का तत्व विद्यमान रहना। इसको इस रूप में निरूपित किया गया है कि जैसा कि सुबह मैंने हिन्दी में कहा कि हम अलग-अलग धर्मों के मानने वाले हैं। हमारे रहन सहन के ढ़ंग अलग-अलग हैं, हम भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं : परन्तु फिर भी हम एक हैं। स्वतत्रता संघर्ष ने हमें संगठित किया—यह स्वतन्त्रता संग्राम की देन में से एक देन है। जैसे कि मेरे मित्र श्री चिदम्बरम कह रहे थे इस संघर्ष ने हमें उदारवादी दृष्टिकोण भी दिया। यह उदारवादी दृष्टिकोण, मेरे स्कूल या कालेज की पढ़ाई से नहीं उपजा; न यह मेरे द्वारा तैयार किया गया। यह मुझे स्वतन्त्रता संघर्ष करने वाले नेताओं से मिला। उनका मानना था कि बगैर दिलों-दिमाग को खुला रखे, अपने विचारों और दृष्टिकोण को व्यापक बनाए, अन्यथा आप भारत का नेतृत्व नहीं कर सकते। हम इसी का अनुसरण करने की कोशिश कर रहे हैं। यह भारत की विरासत में विद्यमान है। मैं तो आपसे केवल इतना कहना चाहता हूं कि चाहे इतिहास से या भाग्य से मैं इस पद पर पहुंचा हूं, मैं इस विरासत को अक्षुण्य रखना चाहता हूं।

इसी विरासत ने भारत के भविष्य सम्बन्धी उपधारणाएं भी रची हैं। जैसा कि मैंने कहा इसने अनुसूचित जाति और जनजाति समुदाय से भी कुछ वायदे किए थे। जब मैं युवावस्था में था, आप में से कुछ भी उस समय इसी युवावस्था में होंगे जब स्वतन्त्रता संघर्ष चल रहा था, गांधी जी ने आमरण अनशन किया था। उन्होंने भूख-हड़ताल क्यों की? जवाहर लाल नेहरू ने उस समय इस विषय पर एक लेख लिखा और मुझे वह लेख याद है। गांधी जी ने उपवास क्यों किया? उस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सोचा कि गांधी जी स्वतन्त्रता संग्राम की गाड़ी को पटरी से उतार रहे हैं। उन्होंने कहा, "शायद वे लोगों का ध्यान मुख्य संघर्ष से हटाना चाहते हैं।" वे इस बात पर जोर देने के लिए उपवास पर रहे थे कि "प्रत्येक मनुष्य को मन्दिर जाने का हक है।" यह गांधी जी का व्याख्यान था इसीलिए वह महात्मा बने और इसी तत्व ने उन्हें बाकियों से ऊपर रखा। जब वह अपने से ऊपर उठे तो उन्होंने उस व्यक्ति की व्यथा को देखा जिसे मन्दिर में घुसने की

[श्री इन्द्र कुमार गुजराल]

अनुमति नहीं थी। उन्होंने देखा कि किस प्रकार उसको दबाया जाता है। और जब उन्होंने उस व्यक्ति के अनादर और उसके प्रति की गई अमानवता को देखा तो उन्होंने कहा, "इससे तो अच्छा है कि मैं जीवन बलिदान करूं, जब तक वह मन्दिर में प्रवेश न कर पाएं।" गांधी जी स्वयं कभी मन्दिर नहीं गए। वह धार्मिक प्रवृत्ति वाले इन्सान थे परन्तु मन्दिर जाने वालों में नहीं थे। वे सुधारवादी नहीं थे, वे धार्मिक पुनर्जागरण के पक्षधर भी नहीं थे। वे इतिहास के ऐसे सर्वाधिक आधुनिक व्यक्ति जिन्होंने धरती पर जन्म लिया है। उन्होंने हमारे सामाजिक चिन्तन को बिल्कुल बदल दिया।

मुझे फिर याद आता है यदि मैं जरा सा आत्म-संस्मरणों की ओर अभिमुख होता हूं कि जब पहली बार मेरी मां जेल गई तो मेरी दादी कई दिनों तक रोती रही और उन्होंने कहा वे इसलिए नहीं रो रही कि उनकी बेटी जेल गई हैं, अपितु इसलिए कि वे अपने गांव वालों को अपना मुंह दिखाने के काबिल नहीं रही क्योंकि वे कहेंगे "आपकी बेटी तो जेल गई है।" गांधी जी ने जेल जाने की महत्ता को बड़ा दिया और जेल जाना इज्जत का प्रतीक हो गया। उन्होंने हमारे मूल्यों में आमूल परिवर्तन कर दिया। उन्होंने मूल्यों को इसलिए बदला ताकि मनुष्यों के साथ मनुष्यों जैसा व्यवहार हो। हम हिन्दु हो सकते हैं, हम मुसलमान हो सकते हैं; मैं जातियों का बखान नहीं कर रहा वे तो बहुत हैं परन्तु फिर भी भारत में एकता है। भारत की एकता कभी भौतिक एकता नहीं हो सकती, हम यहां के कानूनों या संविधान बनाने के अर्थों में राष्ट्र को संगठित नहीं बनाते; हम दिलों को एक करते हैं।

वहां पर बैठे मेरे मित्र मुसलमानों की स्थिति के बारे में पूछ रहे हैं, कुछ सिक्खों की स्थिति के बारे में पूछ रहे हैं, और अन्य अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की स्थिति के बारे में पूछ रहे हैं। वे सब मनुष्य मात्र के द्योतक हैं। वे सब आकांक्षाओं के द्योतक हैं। वे सब इस राष्ट्र में अपने अस्तित्व को प्रतिपादित करते हैं; उन्हें जोड़ों और भारत जुड़ जाएगा, उन्हें तोड़ो और भारत बिखर जाएगा।

आज हम क्या चर्चा कर रहे हैं? क्या हम सेकुलरिज्म की परिभाषा देने का प्रयास कर रहे हैं? क्या हम इस 'वाद' और उस 'वाद' और उस 'वाद' को परिभाषा देने का प्रयत्न कर रहे हैं? क्या हम पी•एच•डी के लिए थीसिस लिख रहे हैं? क्या हम हारवर्ड विश्वविद्यालय जा रहे हैं उन्हें यह बताने कि हम उनके विषय में क्या सोचते हैं? हमने अपने अनुभवों की परिधि में यह सब विस्थापित कर दिया है, हमने अपनी विरासत के अर्थों में उसे अभिव्यक्त कर दिया है। यदि इन तीन बातों को ध्यान में रखा जाएं तो सब काम अपने आप सही चलेंगे।

सदन में हम सबकी राय भिन्न-भिन्न हो सकती है। मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी का बहुत आदर करता हूं। जब वे विदेश मंत्री थे तो मैं राजदूत था। मैं उनके मूल्यों से परिचित हूं। मैं जानता हूं कि उनकी आस्थाएं क्या हैं और इसी कारण मैं उनका आदर करता हूं। हम सबके विचार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं और यही तो लोकतंत्र है। यदि विचारों में भिन्नता हो तो क्या किया जा सकता है?

श्रीमती सुषमा स्वराज यही बैठी हुई हैं। वे भाषणकला में बहुत निपुण हैं। मुझे नहीं पता कि कैसे उत्तर दूं। उर्दू का एक शेर मुझे याद आता है :—

[हिन्दी]

तुम मुखातिब भी हो, करीब भी हो
मैं तुमको देखूं या तुमसे बात करूं।

स्थिति यह है। परन्तु मैं सोचता हूं हम एक ऐसे स्तर पर पहुंच गए हैं जहां हमें बहुत सी बातें देखनी होती हैं। सुबह हम भारत की सुरक्षा के बारे में बात कर रहे थे। हम जानते हैं कि सोवियत यूनियन जैसा एक विशाल देश बिखर गया। यह क्यों हुआ? मुझे लगता हैं मेरे से अधिक तो यह बात श्री अटल बिहारी वाजपेयी बता सकते हैं। मैं उनके समाज में पांच वर्ष तक रहा उसमें सब कुछ था जो लम्बे अरसे तक चलता, जिसमें टैंक थे, विमान थे परन्तु फिर भी सब बिखर गया। आन्तरिक सुरक्षा वहां नहीं थी। लोग आन्तरिक सुरक्षा में आस्था खो चुके थे।

अभी-अभी मैं वहां गया और मैंने उन दिनों के एक पुराने मित्र को, जो नई प्रणाली में महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत है, पूछा, "मुझे तो बहुत अचम्भा हुआ है। मैं पांच वर्ष तक यहां रहा सब कुछ सामान्य लगा फिर ऐसा क्यों हुआ?" मैं इस सज्जन का नाम नहीं लेना चाहता क्योंकि शायद वह इससे झेंप जाए परन्तु उन्होंने मुझे बताया कि वह केवल एक ही बात बता सकते है कि उनके वहां राज सत्ता कभी नहीं थी केवल पार्टी की सत्ता रही और जब वह पार्टी दूर गई, तो राज्य भी बिखर गया।

इस परिस्थिति से हम बचाव करना चाहते हैं। हम ऐसी कोई स्थिति पैदा होने नहीं देना चाहते जिससे राष्ट्र का महत्व किसी अन्य से कमतर हो। राष्ट्र सर्वोच्च निकाय है और वह किसी एक पार्टी की सम्पत्ति नहीं है; राष्ट्र किसी एक विचारधारा का बन्दी नहीं होता, वह किसी एक भी धर्म का अनुयायी भी नहीं होता; वह हम सबका है और यह भारत देश, जो अब तक हमेशा जिन्दा रहा है—वह शानदार भारत देश है और हम सब की उसमें आस्था है। अब राष्ट्र लोगों के माध्यम से चलता है; देश संस्थाओं के माध्यम से चलता है और न्यायपालिका इन्हीं का एक हिस्सा है। यदि हम न्यायपालिका से कोई वायदा करते हैं और इसे पूरा नहीं करते तो इससे देश को, राष्ट्र को नकुसान होगा। आइये, हम ऐसा न करें। राष्ट्र इस सदन के माध्यम से भी अभिव्यक्त होता है। यदि हम वास्तविकता का निरूपण नहीं करते और उसका आदर नहीं करते, तो आप मेरे साथ नहीं चल सकते और राष्ट्रपति जी मुझे गिरफ्तार नहीं करवा सकते, परन्तु इससे देश का, राष्ट्र का अहित होगा। जब राष्ट्र का अहित होगा तो मेरे विचार से देश का भविष्य भी खराब होगा। यदि बहुत से लोगों की देश में आस्था समाप्त हो जाती है तब भी देश का अहित होता है; जब युवा बेरोजगार रहते हैं तो भी देश का अहित होता है; देश में इसकी आस्था समाप्त हो

जाती है—पहले सरकार में, फिर देश में। किसी सरकार को आप विश्वास मत के विरूद्ध वोट देकर गिरा सकते हैं; लेकिन उससे राष्ट्र को क्षति पहुंचती हो। अतः क्षति पहुंचाने की इस प्रक्रिया पर रोक लगाई जानी चाहिए।

जब हम धर्म-निरपेक्षता की बात करते हैं अथवा अपने बीच किसी प्रकार की एकता के बारे में चर्चा करते हैं तो वास्तव में हम राष्ट्र की सुरक्षा करना चाहते हैं। फिर यह एक प्रकार की वचनबद्धता है जिसे मैं पूरा करना चाहूंगा। परन्तु साथ ही साथ मैं यह भी कहना चाहूंगा कि हमारे सामाजिक जीवन के भी बहुत से आयाम हैं। हम हमेशा इस तथ्य पर गर्व महसूस करते हैं कि हमारे देश में किसानों का महत्व हैं वाकई, है। इसीलिए लाल बहादुर शास्त्री जैसे व्यक्ति ने कहा, "जय जवान, जय किसान" इस नारे से वह कुछ कहना चाहते थे, यह मात्र नारा नहीं था। वह भारत का निर्माण कर रहे थे। वे जानते थे, कि भारतीय समाज में इन दो घटकों का विशेष महत्व होगा। मैं भी इसके प्रति अपनी वचनबद्धता दोहराता हूं।

उन सब मामलों के प्रति भी मैं अपनी वचनबद्धता देता हूं जो नीतियों से सम्बन्धित है। अटल जी ने यह बिल्कुल सही कहा, मैं उनसे सहमत हूं और मैं इसका समर्थन करना चाहता हूं। हमारी विदेश नीति की सफलता का रहस्य क्या है? वह इसलिए सफल नहीं हुई क्योकि जवाहर लाल नेहरू ने इसका निर्माण किया; यह इसलिए सफल हुई क्योंकि जब अटल जी उसी पर आसीन हुए तो उन्होंने भी वही बात दोहराई। जब मैं इस पद पर पहुंचा तो मैंने भी वही बात कही और जब श्री नरसिंह राव उस आसन पर आए तो उन्होंने भी वही बात कहीं, जब श्री चन्द्रशेखर उस पद पर आसीन हुए तो उन्होंने भी वही बात कही; इसी का नाम भारत है और यही भारत की विदेश नीति की सफलता का रहस्य है। कभी-कभी ब्यौरों के सम्बन्ध में हम सबने मतभेद हो सकते हैं और कभी-कभी प्रारूपण के समय भी परन्तु सर्वसम्मति का मूल अर्थ यही है कि हम उसे बरकरार रखते हैं। श्री नरसिंह राव हर वर्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी को संयुक्त राष्ट्र संघ पें क्यों भेजते रहे? वे मुझे मानव अधिकार आयोग में क्यों प्रतिनियुक्त करते रहे जब एक ऐसे पड़ोसी से हमारा मुकाबला चलता रहा जिसके नाम का उल्लेख मैं नहीं करना चाहता।

उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह एक ऐसा संदेश देना चाहते थे जो प्रत्येक प्रधानमंत्री को देना चाहिए। जब भी मैं विदेश जाऊंगा तो मैं वह संदेश हमेशा देता रहूंगा कि हम भारतीय हैं और हम एक हैं। हम दलों के प्रतिनिधि मात्र नहीं हैं; हम मात्र मतभेदों को अभिव्यक्त करने वाले नहीं; हम भारतीय एकता के प्रतीक हैं। यही कारण है कि यदि संयुक्त राष्ट्र संघ के अगले सत्र के शुरू होने तक मेरा यह सौभाग्य हुआ कि मैं इस पद पर आसीन रहूं तो मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि तब भी श्री अटल बिहारी वाजपेयी ही हमारे प्रतिनिधि-मंडल का नेतृत्व करें, उन्होंने इतनी अच्छी तरह यह कार्य अंजाम दिया कि मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ। केवल इतना ही नहीं, वे स्वाभाविक उच्च सम्पन्न व्यक्तित्व के स्वामी हैं। हम भारत-वासियों को इस तथ्य पर गर्व है और हमारे लिए यह गौगर्व का विषय है। हमें इस बात पर गर्व है कि जब कभी भी हम विदेश जाएं, चाहे मैं जाऊं या श्री पी॰वी॰ नरसिंह राव या मेरे मित्र श्री चन्द्रशेखर या मेरे मित्र श्री शरद पवार वे वहां वैसा ही आचरण करेंगे जैसा श्री विंस्टन चर्चिल ने एक बार निम्नलिखित शब्दों में बयान किया था :—

> "विदेश में मैं कभी अपने देश की आलोचना नहीं करूंगा और देश के अन्दर आलोचना करनी कभी छोडूगा नहीं।"

अतः यह हमारा आगे बढ़ने का ढ़ंग है और इसी आधार पर हमारे राष्ट्र का निर्माण हुआ है।

हर विभाग जो नए-नए प्रधानमंत्री को नोट भेजता है, मैंने भी वह मंगाए थे। अध्यक्ष महोदय, चूंकि आप स्वयं एक मंत्री रह चुके हैं; अतः आप इस प्रक्रिया से अवगत रहे होंगे। आप जानते हैं कि इस प्रारूप को न तो मैं तैयार करता हूं न आप तैयार करते हैं यह हमारे पास आते हैं। मैं इन्हीं नोटों का विस्तार दे सकता था और यही समय हर विभाग की नीति बताने में व्यतीत कर सकता था। परन्तु मैं जानता हूं कि समय पूरा हो चुका है। इस उद्देश्य के लिए अब मैं आपका समय नहीं लूंगा। अगले सप्ताह जब बजट पर बहस होगी तब मैं कुछ समय लूंगा क्योंकि नीति-निरूपण का सही समय मेरे लिए तब होगा। इस समय तो मुझे कुछ उपधारणाओं का निरूपण करना है और राष्ट्र को दो बातों के लिए आगाह करना है।

मैं फिर उर्दू का शेर सुनाता हूं :—

[हिन्दी]

> *"आईने नौ से डरना, तरजे कोहन पे अड़ना,*
> *मंजिल भी कठिन है, कौमों की जिन्दगी में।"*

यह हमारे लिए मुश्किल की घड़ी है और हमें इस मुश्किल की घड़ी को पार भी करना है, इससे ऊपर भी उठना है और इस संकटपूर्ण स्थिति रूपी नदी को इकट्ठे तैर कर पार करेंगे। अपने इतिहास में हमने ऐसे क्षण भी देखे हैं जब हमने गल्तियां कीं, परन्तु यदि हमने वो गल्तियां न की होती तो हम उन परिस्थितियों को पार भी न कर पाते।

फिर से एक उर्दू के शेर की ओर आपका ध्यान दिलाकर मैं अपना भाषण सम्पन्न करूंगा :—

[हिन्दी]

> *"वो वक़्त भी देखे हैं तवारीख की राहों ने*
> *लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई।"*

[अनुवाद]

मैं राष्ट्र को नष्ट नहीं होने देना चाहता। मैं केवल एक वचन देता हूं। इस राष्ट्र में जो मेरी निष्ठा है, इस राष्ट्र की विरासत में जो मेरी निष्ठा है और श्री जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्र में जिस विश्वास की जो प्रतिज्ञा की थी, उसके प्रति जो मेरी मूल निष्ठा है, उसमें से मेरी यह वचनबद्धता उपजती है। उन्होंने अपने लिए इसका निरूपण नहीं

[श्री इन्द्र कुमार गुजराल]

किया; उन्होंने हम सबके लिए वह प्रतिज्ञा की; उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए वह प्रतिज्ञा की। मुझे लगता है कि अब यह उत्तरदायित्व हमारे ऊपर आ पड़ा है कि हम उसे साकार करें। हम इक्कीसवीं शताब्दी के सपने को साकार करें, हमें राजनीतिक दूरदर्शिता अपनानी चाहिए। दूरदर्शिता हमेशा दोषशून्य साबित होगी। यह आदर्श आईने हैं। जहां तक राजनीतिक विचारधारा का सम्बन्ध हैं, मैं इन्हें पहने रखने का प्रयास करता हूं। चलिए हम सब एक दूसरे से भिन्न-भिन्न विचारधारा रखें। कभी-कभी तो भिन्न-भिन्न विचार रख सकते है; कभी-कभी हम असहमत हो सकते हैं। परन्तु चलिए हम हर समय यह स्मरण रखें कि भारतीय स्वतन्त्रता की आजादी की इस पचासवीं वर्षगांठ वाले वर्ष में हम कैसे भारत का निर्माण करना चाहते हैं। मैं जिस सर्वसम्मति कार्यान्वित करने का प्रयास करता हूं, उसी को अमलीजामा पहनाने की कोशिश करता रहूंगा और मुझे खुशी है कि अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत की विदेश नीति के इस पहलू की प्रशंसा की है। इस सर्वसम्मति के आधार पर मुझे दृढ़ विश्वास है कि आने वाले वर्षों में भी हमें भारत पर नाज रहेगा।

अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है :

> "कि यह सभा मंत्रि-परिषद् में अपना विश्वास प्रकट करती है।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अपराह्न 9.28 बजे

[अनुवाद]

सभा की बैठकों के बारे में घोषणा

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, इस बात को दृष्टिगत रखते हुए कि लोक सभा के कार्य संचालन और प्रक्रिया के नियम 33 के अन्तर्गत आवश्यक दस दिन की न्यूनतम निर्धारित अवधि, प्रश्नों को पटल पर रखने के लिए, 30 अप्रैल और 2 मई, 1997 के लिए नहीं है, अतः इन दो दिनों के लिए मैंने प्रश्न काल न रखने का निर्णय लिया है। 5 मई, 1997 से प्रश्न काल नियमित रूप से शुरू हो जायेगा। प्रश्नों की सूचना देने की अन्तिम तारीखों और उनके बैलेट की तारीखों को दर्शाने वाला पुनरीक्षित चार्ट सदस्यों में परिचालित कर दिया गया है तथापि कुछ माननीय सदस्यों के अनुरोध पर 21 अप्रैल से 9 मई तक के लिए मूल तथा पूर्व निर्धारित बजट सत्र के दूसरे चरण के लिए पहले से दिए गए प्रश्न की सूचनाओं पर तारीखों के उचित तालमेल के पश्चात् स्वीकृति हेतु विचार किया जायेगा।

अब सभा 30 अप्रैल, 1997 को पूर्वाह्न 11.00 बजे पुनः समवेत होने तक के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 9.21 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा बुधवार 30 अप्रैल, 1997/10 वैशाख, 1919 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

© 1997 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय
लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (आठवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और डाटा प्वांईट कम्प्यूटिंग टैक्नोलोजी (इंडिया) प्रा.लि., जनक पुरी, नई दिल्ली–58 द्वारा मुद्रित।